'विदेह' ३०६ म अंक १५ सितम्बर २०२० (वर्ष १३ मास १५३ अंक ३०६)

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA



Join Videha googlegroups

१. *गजेन्द्र ठाकुर*

....

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

Videha e-Learning



MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL)

UPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

BPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

मैथिलीक वर्तनी

१

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई उपयोगी आ पर्याप्त अछि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

MAITHILI (OPTIONAL)

TOPIC 1 (Place of Maithili in Indo-European Language Family)

TOPIC 2 (Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

....

GENERAL STUDIES (PRELIMINARY & MAINS)

GS (Pre)

TOPIC 1

....

GS (Mains)

NCERT-ENVIRONMENT CLASS XI-XII

NCERT PDF I-XII

TN BOARD PDF I-XII

....

OTHER OPTIONALS

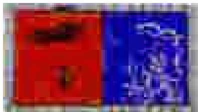
IGNOU eGYANKOSH

....

....

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

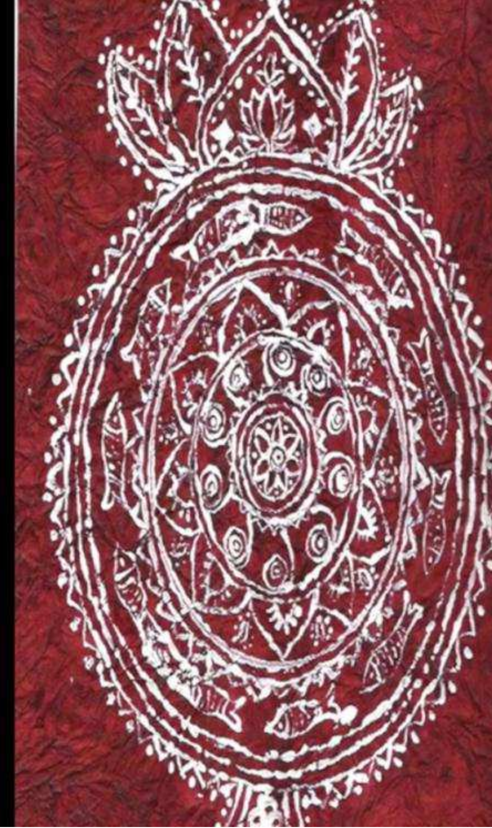
ISSN 2229-547X VIDEHA

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

Videha e-Learning



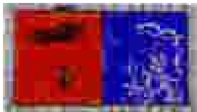






रिसोर्स सेन्टर

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

शब्द-व्याकरण-इतिहास

MAITHILI DICTIONARY- RAMDEO JHA

ENGLISH MAITHILI COMPUTER DICTIONARY

MAITHILI ENGLISH DICTIONARY

MAITHILI BOOKS/ PICTURE-AUDIO-VIDEO ARCHIVE

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमाकान्त मिश्र मिहिर

अणिमा सिंह

Shishu_Geet_Khel_Anima_Singh.pdf

डॉ. ललिता झा
मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली

डॉ. रमण झा

मैथिली काव्यमे अलङ्कार

अलङ्कार-भास्कर

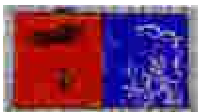
आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा "रमण")

मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

राधाकृष्ण चौधरी
A Survey of Maithili Literature

....

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मूलपाठ

दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

....

समीक्षा

सुभाष चन्द्र यादव

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा "टिल्लू"
अंशु-समालोचना

रामदेव झा
सव्यसाची (अभिनन्दन ग्रन्थ)

मैथिली लोकसाहित्य: स्वरूप ओ सौन्दर्य- डॉ. रामदेव झा

दत्त-वतीक वस्तु कौशल- डॉ. श्रीरामदेवझा

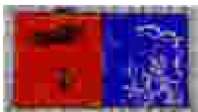
उमापतिक "मैथिलेश"क अप्रमाणिकता- डॉ रामदेव झा

उमापति- डॉ रामदेव झा

मायानन्द मिश्र- डॉ रामदेव झा

परिचय निचय- डॉ शैलेन्द्र मोहन झा

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

चन्द्रनाथ मिश्र अमर- समीक्षा

डॉ बचेश्वर झा

B_JHA_Nibhand_Nikunj.pdf

डॉ. देवशंकर नवीन
Adhunik_Sahityak_Paridrishya.pdf

डॉ. रमण झा

भिन्न-अभिन्न

प्रेमशंकर सिंह

मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

हिआओल

अखियासल

दुर्गानन्द मण्डल

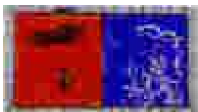
संचयिका

....

अतिरिक्त पाठ

पहिने मिथिला मैथिलीक सामान्य जानकारी लेल एहि पोथी सभकेँ पढ़ू:-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

राधाकृष्ण चौधरी
मिथिलाक इतिहास

THE POLITICAL AND CULTURALHERITAGE OF MITHILA

फेर एहि मनलग्गू पोथीकेँ सेहो पढ़ू:-

केदारनाथ चौधरी

अबारा नहितन

कुमार पवन (साभार अंतिका)
पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

योगेन्द्र पाठक वियोगी

विज्ञानक बतकही

रामलोचन ठाकुर
मैथिली लोककथा

SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

VIDYAPATI- RAMANATH JHA

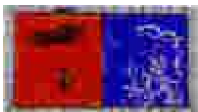
सीताराम झा- लेखक भीमनाथ झा

जगतप्रकाशमल्ल- लेखक रामदेव झा

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

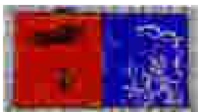
http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

..

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHp7A

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

(अनुवर्तते)

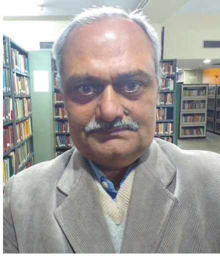
-गजेन्द्र ठाकुर

२. गद्य

२.१.रबीन्द्र नारायण मिश्र- धारावाहिक उपन्यास-लजकोटर (६ म खेप)

२.२.ज्ञानवर्द्धन कंठ- ३ टा बीहनि कथा

२. ३.आशीष अनचिन्हार- फेसबुकक दू टा फीचर आ दू टा भ्रम

**रबीन्द्र नारायण मिश्र- धारावाहिक उपन्यास-लजकोटर**

लजकोटर

(प्रवासीक जीवनपर आधारित)

(६ म खेप)

-

-6-

झलफल भए रहल छल ।मालती दिनभरि असगरेपिहुआकेँ लेने समय कटलक । मंदिरमे लोकक आवागमन बहुत कमे छलैक । ओही परिसरमे एकटा कोनपर बनल ओकर कोठरीमे अन्हार पसरि रहल

छलैक । बिजलीक लाइन कटल छलैक आ लाल्टेनमे तेल नहि रहैक । राति घनगर होइत गेल । मुदा किशुन लौटि नहि आएल । मालतीक धैर्य टुटि गेलैक । ओ हमरा फोन केलक ।

" हम मालती बजैत छी ।"

"कोना छी?"

"की कहू?"

"की भेल?"

"काल्हि नेनाक जन्म भेलैक ।सोचैत रही जे छटिहारमे बजाएब। मुदा..."

"मुदा की...?"

" ओ भोरे कतहु काज करए गेलखिन से एखन धरि नहि लौटलथि। घर अन्हार छैक । कतहु किओ नहि छैक । नेनासे कानि रहल अछि । किछु नहि फुरा रहल अछि?"

"चिंता नहि करू । हम चोट्टे आबि रहल छी।"

हम अखनेडेरा आएल रही । स्टोपपर चाह खौल रहल छल । ओकरा बंद कए ठामहि बिदा भेलहुँ । हमर डेरा बसस्टापसँ सटले छल । तुरंत बस भेटि गेल । ओहिठामसँ मंदिर पहुँचएमे आधाघंटा लागल । मंदिरलगक चौकपर चाह-पानक दोकानबला हमरा जनैत छल। ओकरासँ किशुनक हालचाल पुछलिऐक ।

" हुनकाभोरे किछुगोटेक संगे ट्रकपर चढ़ैत देखने रहिआनि । तकरबाद नहि देखलिअनि ।"-ओ बाजल ।हम धरफराएल आगू बढ़लहुँ । मंदिर लग पहुँचि भगवानके गोहरेलहुँ । मालती कोठरीमे एसगरि नान्हिटा टेल्हसंगे पड़ल छलि। रातिक साढ़ेदस बाजि रहल छल । घरअन्हारछल । मोबाइल फोनसँ इजोतकेलहुँ । हमरा देखिते ओकर जान-मे-जान आएल ।हम ओहि नेनाकेँ देखैत रहि गेलहुँ । अनमन मालतीसन लगैत छल । मोबाइल फोनसँ इजोत कतेक कालधरि केने रहितहुँ? रहि-रहि कए ओ कोठरी अन्हार गुप्प भए जाइत छल ।रातिभरि हम खोठरीक बाहर पटिआपर बैसल रहि गेलहुँ । मालती हमरा ओना बैसल देखि कै बेर टोकथि मुदा कोनो आओर उपाय नहि छल । भोरे हमरा काजपर जेबाक रहए। मालतीक खेबाक हेतु किछु ओरिआन कए हम काजपर चलि गेलहुँ ।

साँझमे फेर मालतीक फोन आएल -

" हुनकर तँ किछु पता नहि चलि रहि अछि?ने अएला,ने कोनो खबरि केलाह ।एसगरि हमरा बहुत डर लागि रहल अछि ।"

"अच्छा हम अबैत छी ।"-से कहि हम फोन राखि देलिऐक आ बस पकड़ि मंदिर दिस बिदा भेलहुँ । एहिबेर चाहबलाकेँ हम की पुछबैक, ओएह पुछलक-

" की बात छैक?"

"हौ की कहिअह?किशुन काल्हि गेलासे अखन धरि नहि घुरलाह ने कोनो खबरि केलाह अछि।"

"हमरा ओ आदमीसभ नीक नहि बुझाए । हम हुनका किछु कहए चाहने रहिअनि मुदा से मौका नहि भेटल ।"

"आब की करी? ओकर परिवार असगरे छैक । नान्हिटा टेल्ह सेहो भेलैक अछि । घर सुन्न छैक।"

बड़ चिंताक गप्प अछि ,मुदा कएल की जाए ?"

"पुलिसमे कहिऐक की?"

"एक-दू दिन ठहरि जाउ । की पता कोनो काजमे बाझि गेल होथि?"

"मुदा फोन तँ कए सकैत छलए?"

“बात तँ सही कहि रहल छी ।"

चाहबलासँ किछु बिस्कुट,मोमबत्ती ,चाहक पत्ती कीनलहुँ आ मंदिर दिस पहुँचलहुँ तँ देखैत छी जे मालती कोठरीक आगूमे ठाढ़ि छथि । मोन-मोन भगवानकेँ गोहरबैतमालती लग पहुँचलहुँ। हमरा देखितहिकहए लगलीह -

" हम आब एहिठाम नहि रहि सकैत छी। किशुनक किछु समाचार नहि भेटि रहल अछि।दिनभरि एसगरे नेनाकेँ धरु कि हुनकर चिंता करू किछु नहि बुझा रहल अछि?"

" अगुताउ नहि । हम आइ विजयसँ भेंट करबाक प्रयास करब ।किछु तँ बात हेतैक नहि तँ ओ एना किएक चंपत भए जाइत?"

" जे होइक मुदा हमरा आब एहिठाम एसगर एहि नेनासंगे रहब मोसकिल बुझा रहल अछि ।"

हम गुम्म पड़ि गेलहुँ ।

साँझमे कारखानासँ निकलि कए हम सोझे विजय लग गेलहुँ। हमरा देखितहि ओ कहए लागल-

"हमअहींकेँ फोन लगबैत रही। किशुन तँ पकड़ा गेल?"

" की भेलैक?"

काल्हि रातिमे कनाटप्लेसमे गहनाक दोकानमे डकैती भेलैक । संयोग एहन भेलैक जे पुलिस डकैतसभकेँ रेलवेटीसनपर ट्रेनमेचढ़ैत काल पकड़ि लेलकैक ।"

“मुदा किशुन कोना फँसि गेल । ओ तँ एना नहि लगैत छल?"

“की पता? ककर बुद्धि कखन केहन भए जाएत तकर कोन ठेकान?"

अखन ओ अछि कतए? -हम पुछलिऐक ।

विजय हाजति दिस इसारा केलक । पुलिस हाजतिमे पाँच गोटे बंद छल । सभ सँ पाछा कोनमे किशुन पड़ल छल । लगैत छल जेना सभगोटेकेँ बढ़िआँसँ मरम्मति भेलैक । सभके पुलिसक मारिसँ दोदरा फूटल छल । हमरा देखितहि किशुन हिचुकि-हिचुकि कए कानए लागल ।किशुन अपन पीठ देखाबए लागल। विजय कहलथि “ दुखक बात जे ई सभ अपने ओहिठामक छथि। मानलहुँ जे परेसानीमे रहल हेताह मुदा तकर माने तँ ई नहि जे डकैतीसन कुकर्म करी ।"

“आब की हेतैक?"-हम कहलिऐक । विजय तमसाएल छल । चुप्पे रहि गेल । असलमे पुलिसकेँ ओकरासभ केँ पछोड़ करबामे बेस मेहनति भेल रहैक । ऊपर सँ अधिकारीसभ फोन-पर-फोन करैत छल । आखिर ओ सभ पकड़ल गेल ।हम बुझि गेलहुँ जे विजयसँ अखन गप्प करबाक उचित समय नहि अछि । लाख ओ अपना ओहिठामक लोक अछि मुदा अछि तँ पुलिसे। असलमे हमरा मोनमे बेर-बेर ई होअए जे किशुन एहन लोक नहि अछि आ जरूर कोनो षड़यंत्रसँ ओकरा फँसा देल गेल अछि ।

डकैतीक गंभीर आरोपमे किशुनकेँ फँसि गेलाक बाद कतेकोदिन हम थाना,कोट कचहरीक चक्कर लगबैत रहलहुँ । मुदा ओकरापर ततेक गंभीर धारासभ लागल छल जे जज जमानत देबाक हेतु तैयार नहि भेलैक। हमरा पास जेकिछु टाका छल से खर्च भए गेल । एहिमास गामो मनीआर्डर नहि कए सकलिऐक

। माएक तगादा आबि चुकल छल । ओमहर मालतीक हालत बेहालत छलैक । नान्हिटा टेल्हसंगे महानगरमे बिना कोनो सहाराकेँ ओ कतेक दिन रहि सकैत छलि मुदा जाइत कतए । सासुरमे झगड़ा कए आबि गेल छलि। घरबला जहल पहुँचि गेल रहैक । काज कोनो रहैक नहि । तखन ...

थानासँ हम अपन काज पर चलि गेलहुँ ।साँझमे जखन मंदिरपर पहुँचलहुँ तँ मोन आशंकासँ भरि गेल। आगा बढ़लहुँ । खोठरी भम्म पड़ैत छल । किओ कतहु नहि । कतए गेल ई सभ। किछु कहबो नहि केलक । आपस गेटपर चाहबला लग अएलहुँ । ओ हमरा देखिते कहए लागल-" किछु पता लागल?

"की?"

"किशुन तँ डकैतीमे पकड़ल गेल आ जहलमे बंद अछि।"

"आ ओकर परिवार?"

" ओकरासभकेँ पुलिस दूपहरिआमे ट्रकपर चढ़ाकए लए गेलैक?"

"कतए?"

"किछु पता नहि? मुदा थानेदार ओकरासभकेँ देखि कए बेर-बेर मोंछ फेरिरहल छलैक।"

हम चोट्टे थाना पहुँचलहुँ । हमरा देखितहि विजय हँसि पड़लाह । हम कहलिअनि-

" किशुनक घरबाली मालतीकेँ पुलिस घरसँ उठा अनलकै ।"

" से अहाँ कोना बुझैत छी?खामखा अपन जान संकटमे किएक दए रहल छी ? ई महानगरी छैक ।अपन काजसँ मतलब राखू।"

" सेकी?"

"बेसी बुधिआरी महग पड़ि सकैत अछि?"

"हम की केलहुँ?"

"तेँ ने कहि रहल छी जे अपन काजसँ मतलब राखू । सीआइडी रिपोर्टमे अहूँक नाम आबि रहलअछि ।"

हमरा तँ लागल जेना माथपर नब्बेमोन पानि पड़ि गेल हो । विजयकँ कहलिऐक-"हम तँ मानवतावश ओकरासभक मदति कए रहल छी ।"

"मुदा जखन फँसब तँ किओ काज नहि देत ।"

हम विजयक बात सुनैत रहि गेलहुँ ।हमरा चुप देखि ओ कहलक-"अपन लोक छी,नीक बुझाइत छी,तँ कहि देलहुँ ,नहि तँ हमरा कोन मतलब । हम तँ सरकारी आदमी छी,अपन काज करब की लोकक निबेरा करैत रहब ।"

विजयक बात सुनि माथपर हाथ दए थानासँ बिदा भए गेलहुँ ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**ज्ञानवर्द्धन कंठ- ३ टा बीहनि कथा**

१

हॉर्लिक्स

दूनू भाय-बहिन पढ़ै लेल बैसल रहय।दाइ पुछलथिन - "तोरा सभक लेल हॉर्लिक्स बना दियौक?"बहिन कहलकैक- "बौआ कँ द' दहीक।हमरा समय लागत।एखन चारि पन्ना लिखबाक अछि।" दाइ चाहक लेल एक कप दूध राखि शेष मे हॉर्लिक्स घोरि पोता कँ द' एलथिन।ओ पढ़ितो रहय आ पिबितो रहय।कनी कालक बाद बहिन कँ लीखल भ' गेलैक।बाजलि-"दाइ! हमरो हॉर्लिक्स द' दे!" एके कप दूध

बाँचल रहैक।दाइ पुछलथिन- "पानि मे बना दियौक आकि दूध मे?" पोती कहलकैक- "दे ने।जथी मे मोन छौ,तथी मे!" हॉर्लिक्स पिबैत बहिनक ध्यान भायक गिलास पर गेलैक।बाजलि- "बौआ, तोरा दाइ बेसी मानैत छथुन।तोरा दूधबला आ हमरा पानिबला हॉर्लिक्स!"दाइ सुनि लेलथिन।आँखि सँ नोर बहय लगलनि।पोता लग मे आबि कहलकनि-"दाइ, हम जनैत छियौक जे दूध कम रहौक,तैँ...।तोरा मोन मे कोनो बात नहि, मुदा आगाँ सँ ध्यान रखिहें।दीदी दोसर घर चलि जेतौक।ओकरा बेसी मान-दान हेबाक चाही।" दाइ हिचुकय लगलीह।

२

मेंटल

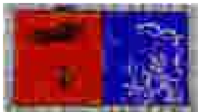
भूलेकाका निछच्छ बहीर छथि।केकरो किछु सुनै छथिन?अपने धुन मे अर्र-दर्र बजैत रहै छथिन।लोक कहै छैक जे भूलेकाका बड़ड बिसरभोर सेहो भ' गेलाह अछि।लोक कैँ नहि चीन्है छथिन।अवस्था गुने प्रतिविशेष भ' गेलनि अछि।साफ 'मेंटल' छथि,'मेंटल'।

ठीके।ओहिदिन हुनकर अँगना कोनो काज सँ गेल रही।कोठली सँ भूलेकाकाक स्वर आबि रहल छलनि।अकानैत देखि प्रशांत बाजल-"बाबूजी छथि।एहिना चिकरा-भोकरी करैत रहैत छथि।कोनो चीजक अख्यास नहि रहैत छनि।नूएँ-बस्तर घिना दैत छथिन।" गेलहुँ।गोर लगलियनि।नहि चिन्हलाह।हमर बाबूजीक नाम सँ हमरा संबोधित करैत कहलाह-"के छियह?बच्चन हौ?देखह ने,छौड़ा सभ ओंगरी भोंकि मेंटल फोड़ि-फाड़ि दै जाय छह।तखन राति पेट्रोमैक्स कोना जरतह?कतबो मटिया तेल भरने रहबह आ पोकर सँ खोद-बीद करबह, आगि त' धरेबह मेंटले मे?वैह अपने जरि सौंसे इजोत करतह?आकि नहि?बाजह।मेंटले फोड़ि-फाड़ि देबहक,त' इजोत हेतह?जाबत मेंटल छह, ताबते पेट्रोमैक्स इजोत करतह।तैँ कहै छियह,धीया -पूता कैँ बुझाबह।नहि त' सभटा मेंटल फाड़ि क' अन्हार क' देतह।अन्हार घर साँपे-साँप!"

भूलेकाका सँ भेँट क' क' अपन आँगन एना बड़ी काल भ' गेल,मुदा 'मेंटल' कतहु मोन मे हड़बिर्रो मचेने अछि।

३

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

बुढ़िया दाइ

बुढ़िया दाइक अपन भाषा छनि।भाव सँ भरल।अपन गढ़ल शब्द छनि।जखनि बजैत छथि, लोकक ठोर पर मुसकी आनि दैत छथिन।जेना;

-"रौ चेंगरा सभ! अजगज्जर(अजगर) जकाँ सूतल रहबें कि उठबें आबो?बाबन बजे निन्न खुगतौ?"

-"रौ बज्रेश(ब्रजेश)!तोरा बुधि नहि हेतौक कहियो!"

-"के छियैक?बेलभद्दरक(बलभद्र) बेटी?"

-"यौ किशुनमा!अहूँ बड्ड बेकूफ छी यौ?"

-"रौ किरकिट देखै जाइ छें?वैह देतौ खाय लेल?"

आदि-आदि।

एक दिन भगवान कें पूजा करैकाल जोर सँ बाजलि बुढ़िया दाइ- "यौ भगमान!हमर पोता कें एहि बेर 'आइ टी आइ' पास करा दियौक!" पोता लगे मे ठाढ़ रहैक।कहलकैक-"गै बुढ़िया,सभटा नाश करेमे तों?'आइ आइ टी' के 'आइ टी आइ' कहि देलकै बुढ़िया नहितन!" दाइ कहलथिन- "भगमान हमर बात अपने पकड़ि लेथिन।हम हुनकर सभटा गलती- सलती माफ क' देने छियनि!"

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आशीष अनचिन्हार

फेसबुकक दू टा फीचर आ दू टा भ्रम

मैथिलीमे बहुत रास भ्रम छै आ ताहूमे लगभग 99% भ्रम व्यक्तिगत भ्रम छै। मुदा मैथिल बहुत चालाक होइत छथि आ ओ अपन व्यक्तिगत भ्रमकेँ सार्वजनिक भ्रम बना देबाक कला जानै छथि। मैथिलीमे सोशल मीडिया तँ एकै मुदा ओकरासँ संबंधित भ्रम सेहो एलै आ लोक ओकरा अपन व्यक्तिगत भ्रम बना पसारहो लगलै। आइ अइ ठाम हम फेसबुकसँ संबंधित दू टा भ्रमपर विचार राखब--

1) People You May Know--- मैथिल ई भ्रम पोसने रहै छै जे लोक हमर प्रोफाइल नुका कऽ देखैए तँइ हमरा 'People You May Know' मे लोक सभ देखाइए। किछु लोकक ईहो विचार छनि जे जँ हम केकरो प्रोफाइल नुका कऽ देखबै तँ हमरो ई देखाएत। हमरा समझिसँ ई पूर्णतः भ्रम छै। भ्रमसँ बेसी आत्ममुग्धता कहल जेतै। ओना ई भ्रम आनो समाजमे छै आ गूगलपर एकर समर्थनमे सेहो लेख भेटि जाएत मुदा फेसबुकक हिसाबसँ देखल जाए तँ ओहन लोक जे कि अहाँक कोनो मित्रक लिस्टमे छथि तकरा फेसबुक 'People You May Know' मे देखाबै छै तेनाहिते जँ कियो ग्रुपमे छथि तँ ओहि ग्रुपक सभ सदस्यकेँ एक-दोसर 'People You May Know' बला खंडमे समय-समयपर देखाइ पड़तनि। फेसबुक स्थान, शिक्षण संस्थान, रुचि, कार्य आदिक आधारपर सेहो 'People You May Know' मे दै छै। सभसँ बेसी मजा केर बात ई जे 2014 मे फेसबुक ह्वाट्सएपकेँ कीनि लेलकै। आब ह्वाट्सएप कोना काज करै छै से देखियौ। जखन कियो ह्वाट्सएप शुरू करै छै तखन ह्वाट्सएप प्रयोगकर्तासँ पूछै छै जे कि ह्वाट्सएप अहाँक फोटो, कान्टेक्ट, कैमरा आदिक प्रयोग कऽ सकैए आ समान्यतः हम सभ ओकरा एलाउ कऽ दैत छियै। असल खेला एहू ठाम छै। मानू जे अहाँक कान्टेक्ट लिस्टमे एहनो आदमी छथि जे कि अहाँ संग फेसबुकपर नै छथि मुदा फेसबुक ओहि आदमीकेँ 'People You May Know' बला लिस्टमे देखेतै। एहिठाम ई धेआन राखए बला बात ई जे स्थान, शिक्षण संस्थान, रुचि, कार्य आदिक आधारपर फेसबुक लोकक सजेशन दै छै से कियो भऽ सकैए जँ इच्छा अछि तँ जूड़ू अन्यथा ओकरा रीमूभ कऽ दियौ। जुड़बै कोना जखन कि अहाँ ओकर प्रोफाइल चेक करबै आ जँ मनोनुकूल हएत। जँ मनोनुकूल नै भेल तँ अहाँ अपना घर आ लिस्ट बला तँ अपना घरमे अछिए। मुदा ई साक्षात भ्रमे छै जे 'People You May Know' बला लिस्टमे वएह आदमी आएत जे कि अहाँक प्रोफाइल चेक करत।

2) २) प्रोफाइल रीचमे कमी-- प्रोफाइल रीच केर मतलब भेल जे अहाँक पोस्ट कतेक लोक धरि पहुँचै छै मुदा जँ पोस्टपर कोनो लाइक-कमेंट नै कएल जाए तँ पोस्टकर्ता ई नै बूझि पाबै छथि जे कतेक लोक पोस्ट देखलाह (स्टोरी एवं कोनो प्राइभेट ग्रुपमे के-के देखलाह से आबि जाइत छै, भीडियोमे कतेक लोक देखलाह से आबि जाइत छै) तँइ साधारणतः लोक लाइक-कमेंटमे कमीकेँ "प्रोफाइल रीचमे कमी" मानि लै छथि। समान्यतः फेसबुक शुरूआतमे कोनो आदमीक लिस्टक अधिकाशं लोकक पोस्टकेँ देखाबैत छलै। लोक स्क्रोल करैत छल आ ओकर लिस्टक पोस्ट देखाइत छलै तेनाहिते दोसरो आदमीकेँ हमर वा अहाँक पोस्ट देखाइत

छल हेतै। मुदा बादमे फेसबुक लोकक रुचि एंव ओ अपने कतेक दोसर लोकक पोस्टपर जाइत छै ताही अनुरूप रीच दै छै। ई बदलाव लगभग 2015 केर बाद भेलै आ ताहि समयमे वा एखनो भाजपाक सरकार छै। तँइ संभवतः लोककेँ 'प्रोफाइल रीचमे कमी' केर समस्या तकनीकी नै राजनैतिक लागए लगलै। मुदा ई रीच केर समस्या भारतेमे नै आनो देशमे भेलै। ओना सभ सरकार अपना समयमे मीडियाकेँ दबा दै छै तँइ वर्तमान भाजपा सरकार सेहो केने हेतै मुदा जे बदलाव फेसबुक अपने कए रहल छै ताहि लेल राहुल-मोदी-अमित-सोनियाकेँ जिम्मेदार नै ठहराएल जा सकैए। मैथिलीमे ई समस्या ओहने लोक सभ लग छनि जिनका अपन ज्ञानक दाबी छनि आ ओ अपन हरेक पोस्टक अपन लिस्टक हरेक लोकक लाइक-कमेंट चाहै छथि मुदा ओ अपने कहियो गलतियोसँ आन लोकक पोस्टपर नै जाइ छथि। जँ हम लिस्टमे 1000 लोक छथि आ हम सभ लोकक पोस्टपर जइए (भने लाइक-कमेंट करियै कि नै करियै) तँ हमरो पोस्ट ओहि सभ लोक लग पहुँचबे टा करतै। जँ हम हजारमेसँ 200 लोकक पोस्टपर जेबै तँ हमरो पोस्ट ओही 200 लोक लग पहुँचतै आ 800 लग दस-बीस दिनमे एकटा। फेसबुकक ई वर्तमान स्वरूप बेसी व्यावहारिक छै (लोक एकरा राजनैतिक बना देलकै से बात अलग)। तँइ सी फर्स्ट आप्शन रहितो लोक ओहन पोस्टकेँ नै देखि पाबै छै। बहुत लोक अपन लिस्टमे मित्र तँ राखै छथि मुदा ओ मित्र सभ हुनका अनफालो केने रहै छनि। एहनो स्थितिमे पोस्टक रीच कम हेतै। एहिठाम लोक पेड रीच लऽ कऽ सेहो भ्रममे छथि। पेड रीच प्रोडक्ट लेल छै प्रोफाइल लेल नै मुदा बहुत लोक अपनाकेँ प्रोडक्ट बना पेड रीच केर सुविधा लऽ लै छथि। आन लोककेँ बुझाइ छनि जे हुनकर रीच बेसी आ हमर कम अछि। हरेक राजनीतिक दल केर पेज पेड रीच छै ताहूमे जे बेसी दाम देने छै ताहि पेजक रीच बहुत हेतै आ ओकर पोस्ट फेसबुक लेल महत्वपूर्ण हेतै। बहुत संभव जे भाजपा केने हो मुदा सोचियौ जँ कांग्रेसक सरकार बनतै तँ कि ओ ई सुविधा छोड़ि देतै? सोझ बात बुझियौ जे आब प्रोफाइल रीच एहि बातपर निर्भर करैत छै जे अहाँ आन कतेक लोकक पोस्टपर गेलियै एवं आन कतेक लोक अहाँक पोस्टपर आएल। दूनूमेसँ जँ कोनो एकटा शर्त पूरा हेतै तखने रीच बनल रहतै।

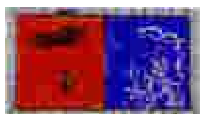
ओना उपरक दूनू तथ्य सर्वज्ञात छै मुदा तकर बादो भ्रम पसरल छै।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३. पद्य

३.१.प्रियंवदा तारा झा- हम गाम छी

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

३.२.ज्ञानवर्द्धन कंठ- रहमत आजु उपासल,बिरजू पियासल हे...

३.३.आशुतोष-कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देश अछि।

**प्रियंवदा तारा झा**

हम गाम छी

हम गाम छी ,सभ्यताक पहिल वास

अति गौरवमय अछि हमर इतिहास

हम शास्त्रार्थक चर्चित भूमि

मंडन ,वाचस्पतिकेर ई धराधाम।।

शस्य-श्यामल क्षेत्र हमर

सरिता सिंचित भूमि हमर

विकासक असीम संभावना सऽ ओत-प्रोत

मानव संसाधन केर हम अमल स्त्रोत।।

कला , साहित्यक हम छलहुं धनी

हास-परिहास सऽ सदति गुंजित अवनि

मधुर-भाखा ,संस्कारक मधुरावलि

स्नेह,सौजन्यक रमनगर संगम-स्थली।।

मुदा नहि जानि ई की भेल ?

ककर नजरि लागि गेल

सुन्न भेल जाइत अछि दलान

कतय हेरायल सौहार्दक अनुदान ?

धिया-पुता सब होइत छथि हरान

शिक्षा, रोजगार हेतु भटकैत छथि देश-विदेश

नहिं पबै छथि समयानुकूल समावेश

लखियो मायक नोर पड़ाइ छथि परदेश।।

हम विकासक डेगमे छी पाछू पड़ल

बाढि ,रौदी,उद्योगक कमी सऽ पस्त

स्वास्थ्य सुविधा केर घोर अभाव

की की कहू ,भेल छी लाचार।।

रहि गेलहुं गौरवमय अतीत क अवशेष मात्र

अछि सिहन्ता पबितहुं विकासक आयाम

रोकि रखितहुं अप्पन संततिकेँ निजकोर

पुनि पबितहुं गत-गौरव ,स्वावलंबन ओ सम्मान।।

हम गाम छी ,आशमे बैसल

दुर्दशा सऽ विकल

उपेक्षा सऽ व्यथित

हम गाम छी ,आशमे बैसल।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

**ज्ञानवर्द्धन कंठ**

रहमत आजु उपासल,बिरजू पियासल हे.......

रहमत आजु उपासल, बिरजू पियासल हे,

धनी हे, दिय' चारि रोटी निकालि, खोआकय खायब हे।

गाम थिक एक परिवार,केकर मुँह ताकब हे,

धनी हे,हिलि-मिलि रहि देब संग,सभक दुख बाँटब हे।

चलतइ चाक चकाचक,बासन बनायब हे,

धनी हे,बेचि धनिक घर आयब,नीक-नीक खायब हे।

कण-कण जोड़ि जुटायब,महल बनायब हे,

धनी हे, रानी बनाकय राखब,नथिया गढ़ायब हे।

लछमी अपन सुलच्छिन, नीक घर बियाहब हे,

धनी हे, शुभ दिन शुभ शुभ आओत,मंगल गायब हे।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

आशुतोष

कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देश अछि।

राजू क गाल पर तीन थप्पड़ लगवैत

गुरू जी बजलाह

उल्लू पाजी गदहा

डूवि मर लाज नञि होइत छौक

छोट छिन बात

भारत एक कृषि प्रधान देश अछि

याद नञि रहैत छौक

हिचकैत राजू बाजल

लाजे त होइत अछि

अहि बात क क्लेश अछि

तीन साॅझ क भूखल छी

कोना कहू?

भारत एक कृषि प्रधान देश अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

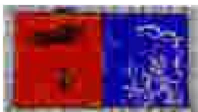
विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

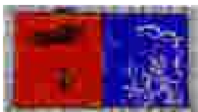
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

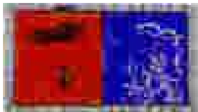
Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

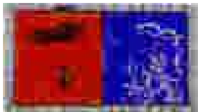
Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

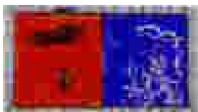
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

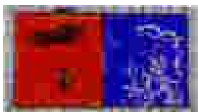
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

विदेह सम्मान*: सम्मान-सूची*

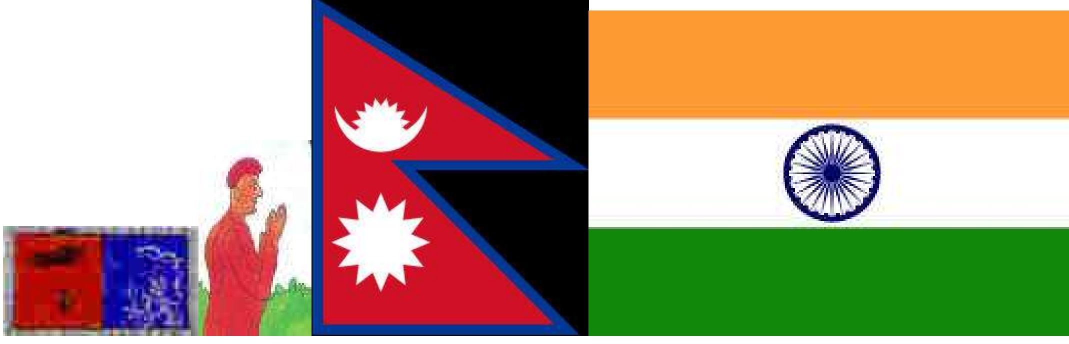
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

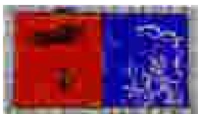
ISSN 2229-547X VIDEHA



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि)editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकें छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैं ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तें रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकें देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकें श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकें ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Maithili Literature Syllabus – Civil Services Mains Exam UPSC :
Optional Subject consists of 2 papers. Each paper is of 250 marks, making a total of 500 marks. MAITHILI
PAPER-I
History of Maithili Language and its Literature (Answer to be written in Maithili) PART-A
History of Maithili Language
1. Place of Maithili in Indo-European language family.
2. Origin and development of Maithili language. (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili)
3. Periodic division of Maithili Language. (Beginning, Middle era, Modern era)
4. Maithili and its different dialects.
5. Relationship between Maithili and other Eastern languages (Bengali, Assamese, Oriya).
6. Origin and development of Tirhuta Script.
7. Pronouns and Verbs in Maithili Language.
PART-B
History of Maithili Literature
1. Background of Maithili Literature (Religious, economic, social, cultural).
2. Periodic division of Maithili literature.
3. Pre-Vidyapati Literature.

4. Vidyapati and his tradition.
5. Medieval Maithili Drama (Kirtaniya Natak, Ankai Nat, Maithili dramas written in Nepal).
6. Maithili Folk Literature (Folk Tales, Folk Drama, Folk Stories, Folk Songs).
7. Development of different literary forms in modern era.
(a) Prabandh-kavya
(b) Muktak-kavya
(c) Novel
(d) Short Story
(e) Drama
(f) Essay
(g) Criticism
(h) Memoirs
(i) Translation
8. Development of Maithili Magazines and Journals.
PAPER-II
(Answers must be written in Maithili)
The paper will require first-hand reading of the prescribed texts and will test the critical ability of the candidates. PART-A
1. Vidyapati Geet-Shati-Publisher : Sahitya Akademi, New Delhi (Lyrics- 1 to 50)
2. Govind Das Bhajanavali-Publisher : Maithili Academy, Patna (Lyrics – 1 to 25).

3. Krishnajanm – Manbodh
4. Mithilabhasha Ramayana – Chanda Jha (only Sunder-Kand)
5. Rameshwar Charit Mithila Ramayan – Lal Das (only Bal-kand)
6. Keechak-Vadh-Tantra Nath Jha.
7. Datta-Vati-Surendra Jha ‘Suman’ (only 1st and 2nd Cantos).
8. Chitra-Yatri
9. Samakaleen Maithili Kavita – Publisher : Sahitaya Akademi, New Delhi.
PART-B
10. Varna Ratnakar – Jyotirishwar (only 2nd Kallol)
11. Khattar Kakak Tarang – Hari Mohan Jha.
12. Lorik-Vijaya-Manipadma
13. Prithvi Putra-Lalit
14. Bhaphait Chahak Jinagi-Sudhanshu ‘Shekar’ Choudhary.
15. Kirti Rajkamlak-Publisher : Maithili Academy, Patna (First Ten Stories only).
16. Katha-Sangrah-Publisher : Maithili Academy, Patna.



डाउनलोड बिहार लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा पाठ्यक्रम

वैकल्पिक विषय

मैथिली भाषा और साहित्य (Maithili Language and Literature)

खण्ड- I (Section - I)

भाग- 01. मैथिली भाषाक इतिहासः-

(1) मैथिली भाषाक उद्गम।
(2) भारोपीय भाषा परिवार में मैथिलीक स्थान।
(3) मैथिली भाषाक ऐतिहासिक विकासक्रम।
(4) हिन्दी, बंगला, भोजपुरी, मगही एवम् संथाली भाषाक संग मैथिलीक सम्बन्ध।
(5) मैथिलीक विभिन्न बोली।
(6) मानक मैथिलीक भाषाक विशेषता।

भाग- 02. मैथिली साहित्यक इतिहासः-

(1) मैथिली साहित्यक काल विभाजन एवम् विभिन्न कालक प्रवृत्तिगत विशेषता।
(2) आधुनिक मैथिली कविताक विकास।
(3) आधुनिक मैथिली उपन्यासक विकास।
(4) आधुनिक मैथिली नाटकक विकास।
(5) आधुनिक मैथिली लघु कथाक विकास।
(6) आधुनिक मैथिली निबन्ध एवम् आलोचनाक विकास।

खण्ड- II (Section - II)

एहि-पत्र में निर्धारित पाठ्य पुस्तक सभक मुख्य रूप से अध्ययन अपेक्षित होएत आओर एहेन-प्रश्न सभ पूछल जाएत जाहिसँ परीक्षार्थिक समीक्षा- क्षमताक परीक्षा ‘‘भ’’ सकृएं

(1) विद्यापति- विद्यापति गीतावली- मैथिली अकादमी, पटना- पद संख्या- 01 से 50 धरि।
(2) गोविन्ददास- गोविन्द भजनावली- मैथिली अकादमी, पटना- पद संख्या- 01 से 50 धरि।
(3) मनबोध- कृष्णजन्म।
(4) चन्दा झा- मिथिला भाषा रामायण- सुन्दर काण्ड मात्र।
(5) यात्री- चित्रा।
(6) आर॰सी॰ प्रसाद सिंह- सूर्यमुखी।
(7) मुंशी रघुनन्दन दास- मिथिला नाटक।
(8) प्रो॰ हरिमोहन झा- कन्यादानओ द्विरागमन।
(9) प्रो॰ रामनाथ झा- प्रबन्ध संग्रह।
(10) राजकमल- ललका पाग।

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Join Dhyeya IAS Whatsapp Group by Sending "Hi Dhyeya IAS" Message on 9205336039.

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

Step by Step guidance for Subscription:

- **1st Step:** Fill Your Email address in form below. you will get a confirmation email within 2 min.
- **2nd Step:** Verify your email by clicking on the link in the email. (Check Inbox and Spam folders)
- **3rd Step:** Done! you will receive alerts & Daily Free Study Material regularly on your email.

Enter email address

Subscribe



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
मुफ्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध है

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने
के लिए 9355174441 पर "Hi Dhyeya IAS"
लिख कर मैसेज करें

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं
www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने के लिए **9355174441** पर **"Hi Dhyeya IAS"** लिख कर मैसेज करें

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

-3 (MAIN) EXAM, 2010

Sl. No. 366

A–DTN–K–JM–10

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt ALL questions.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili (Devanagari Script) unless otherwise directed.

In the case of Question No. 3, marks will be deducted if the précis is much longer or shorter than the prescribed length.

1. निम्नलिखित विषयमे सँ कोनो एक विषय पर लगभग *300* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

   (क) की कानून 'मानरक्षा हत्या'कें रोकि सकैत अछि?

   (ख) खाद्य मिलावटक खतरा

   (ग) अन्धविश्वास बनाम तर्कपरकता

   (घ) शिक्षा आ सामाजिक परिवर्त्तन

   (ङ) की सूचनाक अधिकार अधिनियम स्वच्छ एवं न्यायपूर्ण प्रशासन सुनिश्चित कऽ सकैत अछि?

2. निम्नलिखित गद्यांशकें ध्यानपूर्वक पढ़ि गद्यांशक अन्तमे देल गेल प्रश्न सभक उत्तर लिखू। उत्तर स्पष्ट, सटीक आ संक्षिप्त होयवाक चाही : 10×6=60

सौर ऊर्जा, जे सम्पूर्ण ऊर्जा नवीकरणक हिस्सा अछि, प्राचीन इन्धन पर हमरा सभक निर्भरता कम करवाक एकमात्र रास्ता अछि। पुरान इन्धन किछु समयोपरान्त अधिक महग आ विरल होभय जा रहल अछि। सौर ऊर्जाक उपयोग हमरा पृथ्वी ग्रहक पर्यावरणीय संतुलन आ 'ग्रीनहाउस'क प्रभावकें कम करवाक एकमात्र कुंजी अछि। सौर ऊर्जाक उपयोगी गुणक बावजूदो एखनतक, नहि तऽ एकर व्यापक स्तर पर व्यवहार कैल जा रहल अछि आ ने पुरान इन्धनक विकल्पक रूपमे एकरा स्वीकृति प्राप्ति भऽ रहल छैक। एकर कारण छैक, प्रौद्योगिकीक अपेक्षाकृत अधिक महग हैब। एकरा प्रौद्योगिकीमे युगान्तकारी सुधार कैल जा रहल अछि, जे एकरा दरमे कमी आनि रहल अछि। निश्चित रूपमे चाहे मंद गति सँ ही सही, एकरा एक व्यवहार्थ विकल्प बना रहल अछि। सरकार द्वारा प्रवर्त्तित 'जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रिय सौर मिशन' एहि दिशामे एक धारणीय तथा ऊर्जाक स्वच्छ स्रोतक प्राप्तिक आदर्शवादी कदम अछि।

सौर ऊर्जाक क्षेत्र रोजगार सृजित करवाक दिशामे आशा जगबैत अछि। ई शोध क्षेत्रमे एवं प्रौद्योगिकीक नव विधानमे भारी निवेश करैत छैक तथा रोजगारक दिशामे उच्च आ विशेषज्ञक पद सृजित करैत छैक।

यद्यपि विद्युत उत्पादनमे भारत विश्वमे छठम स्थान पर अछि तथापि भारतमे एखनो गंभीर विद्युत संकट अछि। सौर ऊर्जेटा विद्युत संकट घटा सकैत अछि। ई सम्पूर्ण परिस्थितिजन्य तंत्रक गठन करैत ऊर्जाक उत्पादनक क्षेत्रमे मांगक बढ़ोत्तरी करत। आजुक अत्यधिक मांगवला सौर पद सौर ऊर्जा यंत्र स्थापना आ अभियांत्रिकीय परिरूप विधिक क्षेत्रमे अछि। एहि उद्योगक

विकासक लेल आवश्यक अछि जे नव कौशलक वृद्धिद्वारा उत्पादनक दाममे कमी कय तथा व्यापारक दामक संतुलन सँ मूल्यमे कमी आनल जाय।

(क) हमरालोकनिकेँ पुरान इन्धन पर अपन निर्भरता कम कियाक करवाक चाही?

(ख) सौर ऊर्जाक उपयोगक की लाभ अछि?

(ग) सौर ऊर्जाक प्रयोग एतावधि लोकप्रिय कियाक नहि बनाओल गेल अछि?

(घ) सौर ऊर्जाकेँ सामान्यजनक पहुँचक क्षेत्रमे आनवाक हेतु की की कैल जा रहल अछि?

(ङ) हमरालोकनिक युवाक हेतु उच्च पद, सौर ऊर्जा क्षेत्रमे कोना उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि?

(च) सौर ऊर्जा कोन प्रकारे कम महग कैल जा सकैत अछि?

3. निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण मूल गद्यांशक शब्द संख्या सँ एक-तिहाई शब्द संख्यामे प्रस्तुत करू। शब्द-सीमाक पालन नहि भेला पर अंक काटल जा सकैत अछि। संक्षेपण फराक सँ देल गेल कागज पर करू एवं ओकरा नीक जेकाँ उत्तर पुस्तिकाक संग बान्हि लिअ : 60

यदि कलाक प्रत्येक विशेष युगकेँ अभिव्यक्त करवाक अछि तऽ निश्चित रूप सँ ओकरा बीतल युगक सीमाकेँ तोड़य पड़तैक आ पुरान कल्पनाक सीमा आ मानसिकताकेँ झटका देबय पड़तैक। जीवन एक सतत प्रवाह अछि। ओकर गति क्रान्तिक प्रक्रियाक काल त्वरित होइत अछि जखन परिवर्त्तन तेज आ आमूलचूल होइत अछि। एहन समयमे सामाजिक आवश्यकता अग्रगामी सांस्कृतिक प्रवृत्तिक हेतु दबाव बनबैत छैक—एक तरहेँ पुरान जड़िकेँ ढील करैत जे पुरान प्रारूप आ नवजनम लयवलाक मध्य एक द्वन्द सृजित करैत अछि।

प्राचीन संस्कृतिक समर्थक परिवर्त्तन सँ डरि जी तोड़ि प्रयास सँ यथास्थितिमे रहबाक यत्न करैत छथि। ओ स्वयं अपनाकेँ नैतिक मूल्य आ सभ्यताक संरक्षक घोषित कऽ दैत छथि एवं नहि आवयवला प्रत्येक प्रवाहकेँ टालैत रहैत छथि। एकरा परिवर्त्तनक समर्थक नहि चाहैछ। ओ लोकनि पुरान मान्यता आ नियमक अवज्ञा करैत छथि। सामाजिक परिवर्त्तनक प्रत्येक आकृति एक सांस्कृतिक प्रारूपक मांग करैत अछि। जे अपन आवश्यकताकेँ स्वयं व्यक्त करैत अछि। जेना कि 'प्राचीन' जकरा विगत युगमे रचल गेल छल आब नव शक्ति आ नव तकनीकक उपयोग नहि कऽ पाबि रहल अछि एवं अपन स्थापित धारणामे नव आदर्शकेँ प्रतिबिम्बित नहि कऽ सकैछ। एहि संदर्भमे पुरान संस्कृतिक समर्थक असांस्कृतिकेटा नहि बर्बरतापूर्ण तरीका सभकेँ अपनाबैत छथि, जकर ओ स्वयं एक समय उपेक्षा आ भर्त्सना कैने छलाह। जखन कोनो शक्ति प्रगतिशील नहि रहि पबैत अछि ओ दमनकारी बनि जाइत अछि। नवीने समाजटा संस्कृति आ विज्ञानक प्रत्येक शाखामे कलाकारकेँ सम्पूर्ण विकासक हेतु अवसर प्रदान कऽ सकैत अछि।

आजुक समयमे अव्यवस्थित समाजक कारणेँ जीवन संश्लेषण टूटि चुकल अछि। जाहिमे प्रत्येक शाखाक गतिविधि एक-दोसरा सँ अलग भऽ गेल अछि। दार्शनिक वैज्ञानिक सँ अलग भऽ गेल अछि। कलाकार ईंजिनियर सँ तथा एक अथवा सब अविभक्त जीवनक महान स्पंदमान जालकेँ झटकि अलग भऽ गेल अछि। जखन कि प्रत्येक संतुलन सौन्दर्य आ पूर्णताक रेखाकेँ जोड़यवला कारक अछि। उदाहरणार्थ एखन यांत्रिक यंत्रो रूढ़ गणितीय रेखामे विषादमय हवा आ धुआँकेँ अचेतन आवेगहीनक कर्त्ता नहि मानल जाइत अछि। ओकरा सामान्य रूप सँ नीचाँ धरती आ उपर महाव्योमक समाने स्वीकार कैल जाइछ। जेना कि प्राचीन पुराणक कथामे नैपुण्य आ जीवन्तताकेँ गतिमान आ नायकत्वपूर्ण वृत्त स्वीकार कैल गेल अछि। यंत्र आई मनुष्य अंगक विस्तार बनि गेल अछि। ओ देखबैत अछि जे मनुष्य निसर्ग पर अपन वर्चस्व स्थापित कैल अछि। यैह तत्त्व आदि पर ओकर

विजय अभियानक गाथा अछि। इहो लड़ाई मनुष्येक समान पुरान अछि। ई संघर्ष परिपूर्ण सौन्दर्य, लय, संगीत एवं रंग सँ भरल पूरल अछि।

अगर मनुष्य अपना कमजोरी सँ यंत्र के स्वयं पर प्रभुत्व देने छथि तऽ ई यंत्रक दोष नहि थिक, जकर सृजन स्वयं मनुष्य कैने अछि। ओकरे द्वारा बनाओल गेल अछि आ नष्टो कैल गेल अछि। परनिंदाक भूख स्वयं मनुष्येकें ग्रसित कऽ लेत। रेडियो केवल मनुष्यक फेफड़ाक ध्वनि विस्तारक अछि, टेलीफोन ओकर कानक। हवाईजहाज पर आँखि टेढ़ करब आ खड़खड़ाइत ग्रामीण बैलगाड़ीक गीत गायब कवित्वक प्रति न्यायो नहि थिक। ई केवल दकियानुसी साम्प्रदायिकता थिक। हइर एकटा युगान्तकारी आविष्कार अछि जेना कि ट्रेक्टर अछि। नव उपकरणकें गढ़बाक मानवक अक्षय प्रतिभाक उपेक्षा करब परिवर्त्तनक नियमक उपेक्षा करब थिक। कोनो कलाकार एहन उपेक्षाक सामर्थ नहि जुटा सकैछ। ''एक कलाकार जैविक प्रयोजनक समान उत्पादन करैत अछि।'' एहन मान्यता छैक प्रख्यात मेक्सिकोवासी कलाकार रिवेरा डियागोक ''जेना एकटा वृक्ष फूल आ फल दैत अछि आ वर्ष भरिक पत्र पतन पर विलाप नहि करैत अछि।'' ओ जानैछ जे नव मौसममे ओ पुनः फुलायत आ फल देत। कलाकें सिर्फ की थिक सँ नहि चित्रित करबाक अछि। अपितु की हेतैक सामान्य आकांक्षाकें जे मिलावटी अछि, ने सिर्फ हताश करयवाली पराजयकें बल्कि रूपान्तरित करयवाली संभावनाकें अभिव्यक्त करैछ।

4. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

The world does not need extraordinarily talented people. It does not need highly skilled people either. It has plenty of super-intelligent people. We need ordinary people with extraordinary motivation. M. K. Gandhi was an ordinary man with amazing motivation to establish truth and justice. The Wright brothers were ordinary people with a dream of flying.

You can also achieve exceptional results if you are inspired with a higher ideal. Replacing 'inspiration' with 'information' has led to knowledge being viewed as drudgery rather than as pleasure. Education has degenerated to data being transmitted from teacher to the taught without igniting the minds of the young with a higher purpose.

How many of us wake up inspired, looking forward to a day of service? Who among us finds exhilaration in contributing to society? Life changes magically from boredom to excitement when you are inspired to serve. You redefine norms and achieve the impossible, paving the way to outstanding success. You find happiness at work, not in escaping from it. Most importantly, you evolve spiritually and attain Godhood.

Inspiration gives ordinary people the courage and hope to make life better for themselves and for the posterity. Find inspiration and life will transform into an exciting adventure of self-discovery.

5. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अंग्रेजीमे अनुवाद करू : 20

आई विज्ञानक सामाजिक दायित्वक हेतु बाजैत हम ओहि चीजक लेल सेहो बाजब जे युवाक हेतु अपेक्षाकृत आसान अछि परन्तु उम्रदराज लोकक समझमे कठिन। कारण जे युवा एक गुण सँ सम्पन्न अछि जे सामान्य रूप से किछु साल बाद शिथिल पड़ि जाइत अछि। ओ अछि कल्पनाशीलताक गुण। कल्पनाशीलता एहन गुण अछि जे विज्ञानक अपरिहार्य अंग अछि आ नैसर्गिक रूप सँ युवाकेँ प्रदत्त अछि। दुखद बात ई अछि जे बढ़ैत उमरक संग ई गुण सुखा जाइत अछि। तथापि ई गुण थिक जकर आजुक अपना सभक संसारकेँ प्रचुर मात्रामे जरूरत अछि।

गत तीन सदी सँ विज्ञानक खोज समाज पर अपन प्रभाव छोड़ने अछि परन्तु सामान्यतः लोक ई नहि बुझलैक जे हमरा सभद एहि विश्वकेँ ओ कोना प्रभावित कैलक। ओ लोकनि एकर परवाह नहि कैलनि। न्यूटनक समय सँ मनुष्यकेँ बोध भेलैक कि प्रौद्योगिकी, जे कि विज्ञानक खोज पर आधारित अछि, प्रचुर आराम आ लाभ लेल जा सकैछ। तखन लोक जानव आरम्भ कैलन्हि जे विज्ञानक संसर्ग सँ बनल दबाई सँ चिरायु जीवन जील जा सकैत अछि।

लियोनार्दो द विंशिक समय सँ लोक सभ सराहना कैलन्हि जे विज्ञान युद्धमे विजय प्राप्तिक भौतिक सहयोगी बनि सकैत अछि। जेना-जेना साल बीतैत गेल एक प्रौद्योगिक भौतिकवाद विकसित भेल। नव-नव उद्योगक ज्ञानक मांग खूब तेजी सँ बढ़ल। अधिक सँ अधिक लोक वैज्ञानिक आ तकनीकी विशेषज्ञ बनय लगलाह।

6. (क) संज्ञाक परिभाषा अपना शब्दमे लिखू तथा संज्ञाक कतेक भेद अछि, सोदाहरण स्पष्ट करू। 10

(ख) उपसर्ग आ प्रत्ययमे की भेद अछि? दोनहुक परिभाषा लिखैत उदाहरण प्रस्तुत करू। 10

(ग) निम्नलिखित मुहावरा ओ लोकोक्ति सबमे सँ मात्र पाँचक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्यमे प्रयोग करू : 4×5=20

(i) ओझा लेखेँ गाम बताह

(ii) छोट मुँह पैघ बात

(iii) चलय न आबय आंगन टेढ़

(iv) भूत बेताल जेकाँ

(v) गामक गाछी भुताह

(vi) अन्हेर नगरी चौपट राजा

(*vii*) लूटि लायब खूब खायब

(*viii*) राम नाम सत होयब

(*ix*) डपोरसंख

(*x*) जान छैक त जहान छैक

★ ★ ★



CS (MAIN) EXAM, 2011

Serial No. | F–DTN–L–SAD–J

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours | *Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

*Candidates should attempt **ALL** questions.*

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

*Answers must be written in **Maithili** (Devanagari Script) unless otherwise directed.*

*Prescribed word limit must be followed for Q. No. 3. The precis must be attempted **only** on the special precis sheets attached to this question paper. These precis sheets are to be carefully detached from the question paper and securely attached to the answer book.*

1. निम्नलिखित विषय मे सँ कोनो एक विषय पर लगभग **300** शब्द मे निबंध लिखू :— 100

(क) राजनीति आ व्यक्तिगत नैतिकताक प्रश्न !

(ख) सामाजिक विकास लेल मुख्य प्रेरक के–धर्म आ कि विज्ञान ?

(ग) सभ लेल भोजन : हमर सबहक प्रजातांत्रिक प्रणाली लेल एकटा चुनौती !

(घ) त्वरित गतिक संस्कृति हड़बड़ी आ अपराधवृत्ति कें जन्म दैत अछि !

(ङ) कृत्रिम बुद्धि, मानव बुद्धिक विकल्पक रूप मे !

2. निम्नलिखित गद्यांश कें ध्यानपूर्वक पढ़ि गद्यांशक अंत में देल गेल प्रश्नक उत्तर लिखू। उत्तर स्पष्ट, सटीक आ संक्षिप्त हेवाक चाही :— $6 \times 10 = 60$

हमरा सभ औद्योगिकताक तीव्र दौर सँ गुजरि रहल छी आ अपन उद्योग मे बेसी सँ बेसी संख्या मे नोकरी से हो दऽ रहल छी। भारत मे एकर कोनो महत्व नहि रहि गेल अछ जे अहाँ जाहि विशेष कार्य कें करवा लेल चाहैत छी ओकर विषय मे कतेक जनैत छी, अहाँ किनका जनैत छी से बेसी महत्वपूर्ण अछि ताकि रोजगार भेटवा मे अहाँ ओहि प्रभाव केर उपयोग कऽ सकी। लोग ई नहि सोचैत अछि जे नीक परिणाम लेल योग्यता कतेक आवश्यक अछि। हमर सबहक शिक्षा मे उत्कृष्टताक विकासक सुनिश्चित महत्व अछि मुदा, हम यदि उत्कृष्टता कें मोजर नहि दैत छी तँ एहि सँ योग्यताक अवमानना होयत अछि। एहि कारण हमर शिक्षा-पद्धति एक दिसि तँ विषाक्त आ दूषित भऽ रहल अछि एवं दोसर दिसि सामाजिक शिक्षाक लेल आंदोलन प्रारम्भ करवाक इच्छाक गर घोंटि देल जायत अछि।

जखन कोनो पुलक निर्माण कयल जाइत अछि आकि सड़क बनाओल जाइत अछि तँ बौल, सीमेन्ट, चून आदिक उचित मिश्रण लेल एकटा निश्चित अनुपातक अनुसरण कयल जाइत अछि जाहि सँ सड़कक निर्माण नीक सँ भऽ सकय आ बेसी काल धरि स्थायी रहि सकय ! मुदा, हमर अनुभव एहि विषय मे हमरा सभ कें एकर अधोगतिक कथा सुनवैत अछि, जखन हमरा ज्ञात होइत अछि जे कोनो बाँध में कटैया लागि गेल आ कि कोनो सड़क बरखाक पानि मे बहि गेल।

ई विषय गुणवत्ता नियंत्रण सँ जुड़ल अछि जकर संबंध खाली भौतिक सामग्री सँ नहि मुदा, मनुख आ ओकर अपन उत्तरदायित्वक ज्ञान सँ सेहो अछि। अभाग्यवश हमर प्रजातांत्रिक व्यवस्था किछु एहेन परिस्थितिक निर्माण करैत अछि जाहि मे योग्यता केँ व्यवस्थित रूप सँ उपेक्षित कयल जायत अछि आ लोगबाग बजैत छथि जे एहि देश मे गुणक कोनो महत्व नहि। एहि बात सँ मोने इएह भाव अबैत अछि जे एहि ठाम योग्यता, कार्यक्षमता आ नैतिक औचित्य केँ कोनो मोजर नहि दऽ लोकसेवाक कोनो पद प्राप्त कयल जा सकैत आ सार्वजनिक काज सेहो कयल जा सकैत अछि।

(क) एहि देश मे लोग नीक रोजगार पएबाक हेतु की सोचैत अछि ?

(ख) हम योग्यताक प्रति सम्मान करून स्खलित कऽ दैत छी ?

(ग) योग्यताक प्रति असम्मानक दुष्परिणाम की होयत छैक ?

(घ) जखन हम आन लोगक उत्तरदायित्व-बोध केर सम्मान नहि कऽ सकैत छी तँ एकर की परिणाम होयत छैक ?

(ङ) योग्यता, कार्यक्षमता आ उत्तरदायित्वक प्रति उपेक्षाक की कारण भऽ सकैत अछि ?

(च) गद्यांश में रेखांकित वाक्यांशक अर्थ अपन भाषा मे समझाबू।

3. निम्नलिखित गद्यांशक करीब **190—210** शब्द मे संक्षेपण तैयार करू। शब्द-सीमाक उल्लंघन भेला पर अंक कटि जायत। अपन संक्षेपण फराक सँ देल कागत पर लिखू आ ई संक्षेपण **150** शब्द सँ कम आ **250** शब्द सँ नम्हर भेला पर अंक एकदम्मे नहि देल ना सकैत अछि :— 60

हम ओहि समय लगभग सात बरखक होयब जखन हमर पिता राजस्थानिक न्यायालयक सदस्य बनवा लेल पोरबंदर सँ राजकोट चलि ए लाह। ओहि ठाम हमरा प्राथमिक पाठशाला मे भरती करा देल गेल। ओहि पाठशाला मे हमरा पढ़वऽ वला शिक्षक

सबहक नाम एवं अन्य विशेषता हमरा नीक जकाँ मोन अछि। जहिना पोरबंदर मे छल व एह सभ तँ एहि ठामो हमर पढ़ाईक विषय मे कोनो खास उल्लेखनीय गप्प नहि छल। हम तँ औसत प्रतिभाक एकटा विद्यार्थी मात्र छलहुँ। एहि पाठशाला सँ हम एकटा उपनगरीय पाठशाला में गेलहुँ आ ओहि ठामसँ हाईस्कूल। तखन धरि हम बारह बरखक भऽ गेल छलहुँ। हमरा मोन नहि पड़ैत अछि जे एहि थोड़बा काल मे हम अपन अध्यापक आ कि सहपाठी सँ कहियो फुसि बाजल होयब। हम बड़ लजकोटर छलहुँ। सभ तरहक लोग सँ काते रहैत छलहुँ। हमर पोथी आ हमर पाठ हमर एकमात्र संगी छल। ठीक समय मे स्कूल गेनाय आ स्कूल बंद होयतहि घर भागि कें आबि जायत छलहुँ। ई हमर प्रतिदिनक हिस्सक छल। सरि पहुँ, हम केकरो सँ गप्प नहि कऽ सकैत छलहुँ तैं भागि के घर आबि जायत छलहुँ। हमरा एहि बातक भय सेहो होयत छल जे केओ हमर उपहास नहि करऽ लागैक।

एकटा घटना बड़ उल्लेखनीय अछि जे हमर हाईस्कूलक पहिलुक बरख मे घटल छल। शिक्षा निरीक्षक मिस्टर जाइल्स निरीक्षण लेल आयल छलाह। वर्त्तनी अभ्यास (spelling exercise) लेल ओ हमरा सभ कें पाँच शब्द लिखवा लेल देलनि। एहि मे सँ एकटा शब्द छल 'Kettle'। हम ओकर वर्त्तनी गलतिए लिखि देने छलौं। हमर अध्यापक अपन जूताक द्वारा हमरा ओहि शब्द कें ठीक करबाक लेल संकेतक प्रयास केलनि। मुदा, ओ सहायता नहि लेवाक छल। ई गप हमरा बुझवा मे नहि आबि रहल छल जे ओ चाहैत छलाह जे लग मे बैसल छात्रक स्लेट सँ नकल कऽ अपन गलती ठीक कऽ ली।

हम तँ इएह बुझैत छलहुँ जे अध्यापक सभ नकल करवा सँ रोकवा लेल हमर सबहक निरीक्षण करैत छथि। परिणाम ई भेल जे हमरा छोड़ि सभ विद्यार्थीक लिखलाहा प्रत्येक शब्दक हिज्जे सही पाओल गेल। एकटा हम हीं बेकूफ बनि रहि गेल हुँ। बाद मे शिक्षक महोदय हमर एहि बेकूफीक लेल हमरा समझएवाक

(Contd.)

प्रयत्न केलनि। मुदा, हमरा पर एकर कोनो प्रभाव नहि पड़ल। हम नकल करवाक कला कहियो नहि सीखि सकलहुँ।

एहेन नहि जे एहि घटना सँ हमरा अपन अध्यापकक प्रति सम्मान एकदम्मे कम भऽ गेल होय। हमर स्वभावे एहेन छल जे हम आन कें दोख नहि दैत छलहुँ। बाद मे एहि अध्यापक महोदयक कतेको दुर्बलताक पता लागल मुदा, हुनका प्रति हमर सम्मान पूर्ववत छल।

हम अपना सँ पैधक आज्ञाक पालन करवा लेल सीखने छलहुँ ओकर विश्लेषण कहियो नहि कयल हुँ—आ इएह कारण छल।

एहि कालावधि सँ जुड़ल दुई टा आर घटना हमर स्मृति मे अक्षुण्ण रहल। विद्यालय लेल निर्धारित पोथीक अतिरिक्त आर किछु पढ़वा मे हमरा अरुचि रहैत छल। प्रतिदिनक निर्धारित अध्ययन तँ हमरा करवाके छल कारण जे हमरा अध्यापक द्वारा दंडित भेनाय ओतवे नापसिन्न छल जतवा कि हुनका धोखा देनाय! एहि कारण हम बड़ मनोयोग सँ अपन पाठ पूरा कऽ लैत छलहुँ। जखन कि हमर पाठे सम्यक रूप सँ पूर्ण नहि होयत छल तँ अतिरिक्त अध्ययनक प्रश्ने कतऽ छल ? मुदा, हमर पिताजी द्वारा कीनल एकटा पोथी पर हमर दृष्टि निक्षेप भेल, ओ पोथी छल 'श्रवण पितृ-भक्ति नाटक' (अपन मातापिताक लेल श्रवणक भक्ति-भाव केर नाटक) हम बड़ गहीर भऽ कऽ ओ पोथी पढ़लहुँ। ओहि समय हमरा ओतऽ घूमंतू कलाकार आयल छलाह। ओ हमरा चित्र सभ देखेलन्हि जाहि मे एकटा चित्र श्रवण केर छल जे अपन कान्ह पर राखल झोराक मदति सँ अपन आन्हर माता-पिता कें तीर्थयात्रा पर लऽ जा रहल छलाह। ई पोथी आ ई चित्र हमरा पर अभूतपूर्व प्रभाव छोड़लक। हम स्वयं सँ बाज लहुँ ई एकटा एहेन उदाहरण थीक जकर नकल हमरा करवाक चाही'। श्रवणक मृत्यु पर हुनक मातापिताक करुण रोदन एखनहुँ हमर स्मृति मे सजल अछि। द्रवित करऽ बला ओकर धुन हमरा अन्तरतम धरि प्रभावित केलक आ एहि धुन कें हम पिताजी द्वारा कीनल बाजा पर बजओने छलहुँ।

(Contd.)

4. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिली मे करू :— 20

Tulasidas's imagery covers a vast range. No poet of medieval period — not even his great contemporary Surdas — can vie with Tulasidas in respect of the infinite variety of imagery employed by him. He has collected his images from peasant life, court life, priestly environments, rural and civic life, philosophical treatises, literary classics, mythological works and folk literature. His poetry is a vast gallery of all kinds of images ranging from exquisite miniature paintings to large frescoes. Normally he likes simple and integrated images, but is quite capable of creating complex imagery as well. What he seems to abhor is a truncated image of which we can hardly search out a single example. His whole poetic creation is an endless endeavour to give a concrete tangible form to the abstract — to impart physical charms and mental qualities of human personality to an absolute concept. Actually the very conception of Personified Godhood is a grand exercise in image-making. In this context, what is of special relevance to the modern reader in Tulasidas's art is his unconventional approach to literary-cultural tradition and religion. A number of poets in other Indian languages have also produced great literature in this regard, but Tulasi appears to have surpassed them all.

5. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अनुवाद अंग्रेजी मे करू :— 20

ई सर्वविदित अछि जे विश्वक निर्माण, विकास आ रक्षा प्रकृति

 (Contd.)

पर निर्भर छैक आओर प्रकृतिक निर्माण आ रक्षा में वृक्ष, बोन, लत्ती, पादप, गुल्म, तृणक बड़ पैघ महत्व छैक। सरिपहुँ, मनुखक अस्तित्व वृक्षे, बोन आदि पर आधारित अछि। गाछ बीरीछ माटिक मुख्य रक्षक सेहो अछि। ओ अन्हड़-बिरड़ो केर वेग कें रोकैत अछि आ माटि कें उड़वा सँ बचबैत अछि।

गाछ बीरीछ पहाड़क क्षरण कें सेहो रोकैत अछि एवं ओकरा स्थिर राखवा मे समर्थ अछि। जंगले सँ माल-जाल, चिड़ै चुनमुनक रक्षा होयत अछि आ 'पारिस्थितिक' संरक्षण से हो। बरखाक कारणो इएह थीक। जाहि ठाम गाछ बेसी होयत छैक, बरखो ओहि ठाम बेसिए होइत छैक। मुदा, मरुभूमि ओहि बरखालेल तरसि जायत छैक। बरखा सँ अनाजक उत्पादन सेहो संभव होइत छैक। अन्ने पर तँ मनुक्ख जीवित रहैत अछि।

नाना प्रकारक गाछ बीरीछक पात सभ खाय माल-जाल सेहो जीवित रहै'छ। गाछहि सँ हमरा सभ कें जारन आ घर बनेवा लेल लकड़ीक जोगार सेहो होयत अछि। रेलगाड़ी, पानिक जहाज, हवाईजहाज आदिक निर्माण करवा लेल गाछ-बीरीछ सँ प्राप्त लकड़ी सेहो उपलब्ध होइत अछि।

नाना प्रकारक दवाय, गोंद, क़ागत, सलाइ संगहि भाँति भाँति केर रसगर आ पौष्टिक फल-फलहारिक अक्षुण्ण स्रोत अछि गाछ-बीरीछ। गाछक शीतल छाहरि मे हमरा सभकें घाम-पसेना सँ मुक्ति भेटैत अछि। एकर फूलक सुरभि हमर सबहक मोन मस्तिष्क मे नव ऊर्जा सेहो भरैत अछि।

6. (क) सर्वनामक परिभाषा अपन शब्द मे लिखू तथा सर्वनामक कतेक भेद अछि, सोदाहरण स्पष्ट करू। 10

(ख) अनेक शब्दक बदला एकटा शब्द लिखू मात्र **पाँच** टा चुनिकें :— $2\times5=10$

(i) जे माटिक बरतन बनवैत अछि

(ii) कम बाजयबला

(iii) जकरा मे स्वार्थक भावना होय

(iv) जे बहु बजैत अछि

(v) कम खरच करय बला

(vi) जाहि मे कोनो गुण नहि

(vii) नीचा लिखल

(viii) जे मीठ बजैत अछ

(ix) जकरा संतान नहि अछि

(x) जकर मुँह मे बाजब नहि।

(ग) निम्नलिखित मोहावरा मे सँ कोनो **पांचक** अर्थ स्पष्ट करैत वाक्य मे प्रयोग करू :— 4×5=20

(i) बड़ बड़ गेला तँ मोछ बला एला

(ii) तामसे माहुर भेनाय

(iii) मियाँ बुझलक पियौज

(iv) डुमरिक फूल

(v) घाह पर नोन छीटब

(vi) बहिरा नाचे अपने ताल

(vii) नाच ने जाने तँ अंगने टेढ़

(viii) चान उगब

(ix) जान ने पहिचान बड़का मियाँ सलाम

(x) बावनं हाथक अंतड़ी।

Sr. No. [ ]

F–DTN–L–SAD–J

अपना अनुक्रमांक इन पत्रकों पर न लिखें

DO NOT WRITE YOUR ROLL NO. ON THESE SHEETS

MAITHILI
(Compulsory)

सार लेखन के लिए विशेष पत्रक

SPECIAL SHEETS FOR PRECIS

इस पत्रक के दोनों ओर लिखिए। प्रत्येक खण्ड में एक शब्द और प्रत्येक पंक्ति में पांच शब्द लिखिए। अपने उद्धरण में सामान्य रूप से विराम आदि चिन्ह लगाइए और यदि आवश्यक हो तो प्रत्येक पैराग्राफ के अन्त में एक पंक्ति खाली छोड़ते हुए इसे पैराग्राफों में विभक्त कीजिए। यदि चाहें तो उत्तर-पुस्तिका के साधारण कागज पर पहले एक कच्चा प्रारूप तैयार कर सकते हैं। अपनी उत्तर-पुस्तिका दे देने से पहले कच्चे कार्य को आर-पार पंक्ति डालकर काट दिया जाना चाहिए। आप सारपत्रक को अपनी उत्तर-पुस्तिका के अन्दर सुरक्षित रूप से बांध दीजिए।

Use both sides of this sheet. Write one word in each division and five words in each line. Punctuate your passage in the usual way and divide it into paragraphs, if necessary, leaving a line blank at the end of each paragraph. You may make a rough copy first, if you so wish, on ordinary paper in the answer-book. The rough work should be scored through before you hand over your answer-book. You should fasten the precis sheet securely inside your answer-book.

शीर्षक Title					इस हाशिए में न लिखें Do not write on this margin
					10
					20
					30
					40
					50
					60

[कृ.पृ.उ./P.T.O.]

					70
					80
					90
					100
					110
					120
					130
					140
					150
					160
					170
					180

					190
					200
					210
					220
					230
					240
					250
					260
					270
					280
					290
					300

Sl.] **E–DTN–M–JMD–10**

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt ALL questions.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili (Devanagari Script), unless otherwise directed.

Prescribed word limit must be followed for Question No. 3. The précis must be attempted *only* on the special précis sheets provided separately. These précis sheets are to be securely attached to the answer-book.

Important Note

Whenever a question is being attempted, all its parts/sub-parts must be attempted contiguously. This means that before moving on to the next question to be attempted, candidates must finish attempting all parts/sub-parts of the previous question attempted. This is to be strictly followed.

Pages left blank in the answer-book are to be clearly struck out in ink. Any answers that follow pages left blank may not be given credit.

1. निम्नलिखित विषयमेसँ कोनो **एक** विषय पर लगभग *300* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

(क) भारत : व्यापारिक विकासक एक बढ़ैत क्षेत्र

(ख) हमर महानगर महिला सभक लेल कतेक सुरक्षित अछि?

(ग) वन-जीवक संरक्षण ओ प्रबन्धन

(घ) भारतमे व्यावसायिक शिक्षा

(ङ) फिल्मक मिथकीय संसार

2. निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि गद्यांशक अन्तमे देल प्रश्नक उत्तर लिखू। उत्तर स्पष्ट, सटीक आ संक्षिप्त भाषामे होएवाक चाही : 10×6=60

पाठकक बहुसंख्या या त' क्षणिक मनोरंजनक लेल पढ़ैत अछि या फेर ओहि विश्रान्तिक लेल जे पुस्तक हुनका प्रदान करैत छनि। दोसर शब्दमे ओ सामान्यतः समयकटबाक लेल पुस्तक पढ़ैत छथि। समय जेना कि हमेशा आँकल जाइत अछि एक विरल वेशकीमती खजाना अछि। एहि वेशकीमती खजानाकेँ पाठकगण व्यर्थमे खर्च कए दैत छथि। अविश्वसनीय सन लगैत अछि कि समय वा काल पाठकक उपर बहुत भारीपनसँ लादल रहैत अछि आओर फेर ओ खोज कए पबैत छथि। समयक ओहि अतिरिक्त बोझसँ छुटकाराक, जकर हुनका आवश्यकता छनि, ई पुस्तके दिआ सकैत अछि। एतेक त' पर्याप्त स्पष्ट अछि जे ओ कोनो दोसर प्रयोजनक हेतु नहि पढ़ि सकताह। यदि ओ एहन करताह त' ओहि पढ़बसँ हुनका अपना लेल किछु हासिल भए सकैत छनि। मुदा एहन कोनो संकेत नहि अछि कि पढ़बाक कोनो अन्य प्रयोजन हो। पढ़लासँ हुनका पर किछु प्रभाव अवश्य पड़ैत होएतनि मुदा ओहि प्रभावक सम्बन्धमे ओ अनभिज्ञ छथि। प्रभाव लाभप्रद भए सकैत अछि, निर्णायक भए सकैत अछि—ई निष्कर्ष हम नहि बहार कए सकैत छी, एकर प्रमाण इएह अछि जे पढ़बाक कारणेँ ओ

अपना संग कोनो एहेन वस्तु नहि लए जएताह जे बादमे कहि सकथि जे हुनकालोकनि अमुक चीज पढ़ने छथि।

(क) लोकक द्वारा पुस्तक सभ पढ़बाक कारणक सम्बन्धमे लेखक की कहैत छथि? अधिकांश लोक पोथी कियैक पढ़ैत छथि?

(ख) लेखक एहेन कियैक अनुभव करैत छथि जे पाठक अपन समयक मूल्यक आकलन नहि करैत छथि?

(ग) एहि तथ्यक संकेत की अछि जे पाठकक समयक सही उपयोग नहि भेल?

(घ) पढ़ब समाप्त कएलाक उपरान्त लेखकक की अपेक्षा छनि जे पाठकगण की करथि?

(ङ) असजग पढ़बाक प्रति लेखकक प्रतिकूल दृष्टिकोण कियैक छनि?

(च) लेखक केहन लक्ष्यक पाठक चाहैत छथि?

3. निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण मूल गद्यांशक शब्द संख्यासँ एक-तिहाई शब्द संख्यामे प्रस्तुत करू। शब्दसीमाक अन्तर्गत संक्षेपण नहि कएल गेला पर अंक काटल जा सकैत अछि। संक्षेपण फराकसँ देल गेल कागज पर करू आ ओकरा नीक जकाँ उत्तर-पुस्तिकाक संग बान्हि लिअ : 60

पानि पृथ्वीक धरातलीय क्षेत्रक 70% भागमे सामान्य रूपसँ पर्याप्त मात्रामे पाओल जाय वला पदार्थ अछि। वैश्विक पानिक उपलब्धि 1·386 बिलियन क्यूबिक किलोमीटर अछि जाहिमेसँ 97% नुनगर पानि अछि आओर मानव उपयोगक हेतु उपयुक्त नहि अछि। शेष मात्र 3% पानि स्वच्छ ओ पीबाक योग्य अछि। मुदा ओकर 68·5% पानि ग्लेशियरक हिमशीर्ष ओ शाश्वत बर्फमे अछि जे मानव उपयोगक हेतु उपलब्ध नहि अछि। लगभग 30% धरातलीय पानि अछि जकर 0·9% नदी, झरना ओ

झीलमे अछि। हम अधिकांशतः 70 क्यूबिक किलोमीटर स्वच्छ पानि पर प्रतिदिन निर्भर करैत छी जे हमरा नदी, झरना आ झीलक अन्तःस्रोतसँ प्राप्त होइत अछि ओ प्रतिदिन 70 क्यूबिक किलोमीटर पानि भूगर्भ मध्यस्थ जलाधार होइत बहैत अछि। एहि प्रकारक सुविधा आदिकालसँ निरन्तर प्राप्त भए रहल अछि। मुदा पछिला किछु दशकसँ खासकए घरेलू आवश्यकता, खेती ओ औद्योगिक गतिविधिक कारणेँ पानिक माँग तेजीसँ बढ़ैत जा रहल अछि। 1940 मे जखन संसारक जनसंख्या 2 बिलियन छल, प्रतिवर्ष पानिक आमद प्रतिव्यक्ति 1000 क्यूबिक मीटर धरि सीमित छल। 2000 धरि जनसंख्या 6 बिलियनक आँकड़ा पार कए गेल छल आओर प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष खपत 6000 क्यूबिक मीटर बढ़ि गेल जाहिसँ जलप्राप्तिक संसाधन पर अतिरिक्त दबाव पड़ए लागल, खासकए सघन जनसंख्या वला क्षेत्र आ ओहि स्थान पर जाहिठाम पानि बहुत कम अछि। कृषि 70%, औद्योगिक क्षेत्र 22% आ घरेलू क्षेत्र 8% पानिक खपतक आँकड़ा दर्ज करैत अछि। स्वच्छ जल विश्वक जनसंख्याकेँ तेजीसँ बढ़ए आ पीबा योग्य पानिक माँग बढ़एक कारण अप्राप्त संसाधन बनए जा रहल अछि। प्रतिवर्ष कुल उपलब्ध पानिक आधा हिस्सा प्रयोगमे आबि रहल अछि। ई 2050 धरिक जनसंख्याक माँग बढ़लाक कारणेँ 74% धरि बढ़ि सकैत अछि। जँ सभ स्थानक लोक सामान्य अमेरिकावासी जकाँ पानिक खर्च करए लगताह जे पानिक खर्चक सम्बन्धमे जे अपने अधिक खाउलोक छथि, तखन उपयोग 90% बढ़ि सकैत अछि।



स्वच्छ जलकेँ रेखांकित करए वला पक्ष ई अछि जे ओकर उपलब्धता सम्पूर्ण संसारमे समान रूपसँ विभाजित नहि अछि। पानिक भरपूर स्रोतक अनेक देश अछि संगहि पानिक उपलब्धताक लेल अनेक गरीब देश सेहो अछि। प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति उपलब्धता यदि ग्रीनलैण्डमे 10767 मिलियन क्यूबिक मीटर अछि त' कुवैतमे ओ मात्र 10 क्यूबिक मीटर अछि। भारतमे 1951 मे प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति पानिक उपलब्धता 5177 क्यूबिक मीटर



छल जे 2001 मे घटि कए 1820 क्यूबिक मीटर रहि गेल अछि। 2001 मे त' भारत गरीब देशक श्रेणीमे आबि गेल छल। 2025 धरि प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति खपत 1340 क्यूबिक मीटर धरि घटिकए आबि जएतैक।

विश्वक अनेक पैघ ओ ओकर सहायक नदी सभ एकसँ अधिक देशक बीचसँ बहैत अछि। उदाहरणक लेल गंगा आ ओकर सहायक नदी नेपाल, भारत आ बंगलादेश होइत बहैत अछि। सिन्ध ओ ओकर सहायक नदी सभ त' भारत आ पाकिस्तान होइत बहैत अछि। देन्यूब जाहिठाम जर्मनीसँ बहार होइत अछि अस्ट्रिया, स्लोवाकिया, हंगरी, क्रोएशिया, सर्बिया, रोमानिया, बल्गारिया, माल्देविया ओ यूक्रेन भए बहैत अछि। जाम्बेजी नदी जाम्बिया, अंगोला, नामेबिया, बोट्सवाना, जिम्बावे आ मोजाम्बीक भ' कए बहैत अछि। मिस्रक जीवनधारा नीलक उद्गम आठ देशमे अछि—सूडान, इथियोपिया, केन्या, रवांडा, बुरूण्डी, युगाण्डा, तंजानिया आ जायरे। जखन कोनो एक नदी एकसँ अधिक देश भए बहैत अछि तखन अनेक विवाद जन्म लैत अछि। एहेन विवाद ईसापूर्व 3000 वर्षसँ दक्षिण आ मध्यएसिया, मध्ययूरोप तथा मध्यपूर्वक क्षेत्रमे उठैत अछि। कृषि, उद्योग आ घरेलू उपयोगक हेतु पानिक माँग बढ़िते जा रहल अछि। एहिसँ सम्बन्धित विवाद सेहो गम्भीर स्थितिक जन्म दैत अछि आ कखनो काल कए ई आक्रामक रूप ग्रहण कए लैत अछि।



एकहि देशमे बहए वाली नदी सभक पानिक हिस्सा-बखरामे स्थानीय आ क्षेत्रीय स्तर पर संवेदनशील समस्या अछि। गौतम बुद्ध (563–483 ईसापूर्व) के शाक्य ओ कोटिया सभक बीच रोहिणी नदीक पानिक हिस्सेदारीक हेतु हस्तक्षेप करए पड़ल छलनि।



4. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

I remember my father starting his day at 4 a.m. by reading the namaz before dawn. After the namaz, he used to walk down to a small coconut grove we owned, about 4 miles from our home. He would return, with about a dozen coconuts tied together thrown over his shoulder, and only then would he have his breakfast. This remained his routine even when he was in his late sixties.

I have throughout my life tried to emulate my father in my own world of science and technology. I have endeavoured to understand the fundamental truths revealed to me by my father, and feel convinced that there exists a divine power that can lift one up from confusion, misery, melancholy and failure, and guide one to one's true place. And once an individual severs his emotional and physical bondage, he is on the road to freedom, happiness and peace of mind.

5. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अनुवाद अंग्रेजीमे करू : 20

अस्पतालक उदय अत्यन्त प्राचीन समयमे भेल होएत, ईसाई काल-गणनासँ बहुत पूर्व, एहि तथ्यमे एहन मानल जाइत अछि जे अस्पतालक उदय यूनान, मिस्र आ भारतमे भेल। विश्वक अनेक देशमे आब अनेक पैघ सर्वरोगोपचारी अस्पताल अछि जाहिठाम सभ प्रकारक समस्या पर ध्यान देल जाइत अछि आ ओहिठाम सभ प्रकारक प्रशिक्षण एवं शोधक साधन उपलब्ध अछि। आब त' छोट-पैघ अनेक महत्त्वपूर्ण संस्था सभ अछि जे विशेष

प्रकारक बीमारी सभक कारगर उपचार करैत अछि। किछुएक त' स्वयंकेँ बच्चा आ स्त्रीक लेल समर्पित कएने अछि। ब्रिटेन आ संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामे त' अस्पतालमे रोगोपचारक हेतु राज्य वा नगर निकाय सहयोग राशि प्रदान करैत अछि। एहन प्रकारक पद्धतिसँ नहि मात्र कार्य होइत बाधा दूर भेल भेल अछि अपितु वित्तीय कठिनाईकेँ कएल गेल अछि जे सम्पूर्ण समुदायक कष्ट निवारण कएलक अछि। एहिसँ उर्जाक सदुपयोग सम्भव भए सकल अछि। संगहि एहि विधि द्वारा एक प्राणहीन, यांत्रिक, आत्मविहीन दिनचर्या एवं कार्य-कुशलताक घटैत स्तर संकटकेँ कम कएल जा सकैत अछि जे उर्जस्वी आलोचना आ बेकारखर्च पर लगाम नहि लगौल जएवाक कारणेँ बढ़ैत अछि।

6. (क) समास ककरा कहल जाइत अछि? समासक भेद सोदाहरण स्पष्ट करू। 10

(ख) निम्नलिखित शब्दमेसँ कोनो **पाँचक** विपरीतार्थक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) चिरंतन

(ii) तामसिक

(iii) आयात

(iv) संधि

(v) कनिष्ठ

(vi) प्रसारण

(vii) अनुग्रह

(viii) अभिज्ञा

(ix) नश्वर

(x) सुदूर

(ग) निम्नलिखित मोहावरा ओ लोकोक्तिमेसँ कोनो **पाँचक** अर्थ स्पष्ट करैत वाक्यमे प्रयोग करू : 4×5=20

(i) आगिमे घी ढारब

(ii) पैरमे तेल लगाकए सूतब

(iii) ठेला पड़ब

(iv) बावन हाथक अतड़ी

(v) लंका छोट हाथ उनचास

(vi) अस्सी मोन पानि पड़ब

(vii) बिनु पेनक लोटा

(viii) कागजी घोड़ा दौड़ाएब

(ix) बाड़ीक पटुआ तीत

(x) फूलिकए तुम्मा होएब

★ ★ ★

A-BRL-M-NBJC

C.S.(M) 2013

MAITHILI
(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours | Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question is indicated against it.

Answers must be written in **Maithili** unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the answer book must be clearly struck off.

Q.1. **प्रत्येक विषय पर 300 शब्दमे निबंध लीखू :—** **50×2=100**

Q. 1(a) व्यक्ति कृतिसँ जीबैत अछि, जीवनकालसँ नहि। 50

Q. 1(b) समय पर न्याय मिलने बिना कोनो समाज स्थिर नहि रहि सकैत अछि। 50

Q.2. **निम्नलिखित अंशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ू आ तकरे आधार पर निम्नांकित प्रश्नक स्पष्ट, सटीक आ संक्षिप्त उत्तर दिअ :—** **6×10=60**

"पत्रकारक वैचारिक मतभिन्नता प्रशासन लेल सुविधाजनक साधन अछि। एकर अर्थ ई जे प्रेसशक्तिक स्वर विविधताक कारणेँ छिड़िआ गेल छैक, बंटि गेल छैक। जोरसँ बाजब महत्वपूर्ण नहि, श्रोताक संख्या जकरा सुनाओल जाइत छैक, से समाचार पत्रक प्रभावी होयबाक सही मापदण्ड छैक। प्रेस-शक्ति एकटा कपट/छलावा थिकै और ई ने त समाचार पत्रक बिकीसँ पाइ कमाइ बलाक थिकै, आ, ने त ओकर जे सर्वाधिक प्रचार-प्रसारक बल पर अर्थ कमाइ अछि। प्रचार-प्रसारमे योगदान जनता द्वारा देल जाइत छैक आ, एही दुर्बलताक लाभ ओ उठबैत अछि आ तकरा बढ़ावा दैत छैक। सिनेमाक बौक्स-आफिस अपील लेल ई आवश्यक छैक। सिनेमा हौल धरि दर्शककेँ धीच क' ल' जायबला चरित्र बहुमुखी होइत छैक जे दर्शक केँ देखाओल जाइछ। सिनेमाक

व्यावसायिक सफलता बिल्कुल अलग छैक, ओकर अपूर्वता आ संगहि कलात्मकता आ इन्स्ट्रूमेंटलक सटीक प्रदर्शनक सन्दर्भमे। फिल्मक बनावट/सजावट प्रशंसाक हकदार छैक जे सामान्य दर्शकसँ प्राप्त नहि होइत छैक। ई प्राप्त होइत छैक, आ से भेटैत छैक खास-विशिष्ट दर्शकसँ, जकर संख्या कम छैक। एहि खास विशिष्ट व्यक्तिक चुनाव करब आ तकर प्रशंसा प्राप्त होयब कठिन छैक, संघर्षपूर्ण छैक, ओकर तुलनामे जे आम दर्शक सिनेमाकेँ मनोरंजन लेल देखैत छैक। समाचारपत्र आ प्रकाशकक ई आन्तरिक उद्देश्य होयबाक चाही जे ओ दोसर वर्गक लोककेँ शिक्षित-विकसित करय। दुनूक लेल एके प्रकारक प्रयास कयल जयबाक चाही। प्रलोभनसँ ऊपर उठब दुनूक लेल समान अछि।''

प्रश्न :

Q.2(i) लेखक कोन दू वस्तुक मध्य तुलना क' रहल छथि ? 10

Q.2(ii) समाचार पत्रक प्रति जनता कोन तरहेँ प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करय जे ओकरा लेल विचारशील छैक ? 10

Q.2(iii) लेखक 'इक्विपमेंट'क रूपमे कोन वस्तुक संकेत-सन्दर्भ दे रहल छथि ? 10

Q.2(iv) लेखकक विचारमे समाचार पत्रक लक्ष्य की होयबाक चाही ? 10

Q.2(v) लेखक कोन कोटिक व्यक्तिसँ सहमत नहि छथि ? 10

Q.2(vi) कोन अधलाह प्रवृत्ति समाचार पत्रक गुणवत्ताकेँ प्रभावित क' सकैत छैक ? 10

Q.3. निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण मूल गद्यांशक शब्द संख्यासँ एक तिहाइ शब्द संख्यामे करू। गद्यांशक शीर्षक दैने आवश्यक नहि छथि। शब्द सीमाक अन्तर्गत नहि रहला पर अंक काटल जा सकैत अछि :— 60

एहि समकालीन विश्वमे राष्ट्र आ राष्ट्र-राज्यक (nation and nation-state) अवधारणा मध्य बहुत पैघ आ सर्वव्यापी भ्रम व्याप्त छैक। राष्ट्र-राज्यकेँ परिभाषित करब अपेक्षाकृत आसान छैक — ओ विश्व राजनैतिक संगठनक एकटा आधारभूत इकाई छैक। ओ सभ प्राय: सार्वभौम देशक समरूप अछि, ओ सभ एहन इकाई अछि जकरा युनाइटेड नेशन्सक सदस्यता प्राप्त छैक, अंग्रेजीमे ओकरा सभक लेल देश शब्दक प्रयोग कयल जाइत छैक। ई सुविधाजनक होयत यदि हम सभ सोझ शब्दमे ओकरा स्टेट्स (States) कहो, किन्तु ई शब्द दुर्भाग्यसँ किछु देशक छोट इकाई यथा राज्य-प्रान्तक लेल व्यवहृत होइत छैक, ने कि राष्ट्र-राज्यक (nation-state) लेल।

राष्ट्र-राज्य आ सार्वभौम राज्यकेँ एक दर्जा देब स्पृहणीय अछि, किन्तु ई गलत धारणा उत्पन्न क' सकैत अछि, कारण एहि आधुनिक दुनियामे सार्वभौमिकताकेँ उच्च प्रकृतिक प्रवहमान गति द' देल गेल छैक। वस्तुत: प्रत्येक राष्ट्र-राज्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनक समक्ष किछु सीमा धरि आत्मसमर्पण क' देने अछि, एहि संस्था सभकेँ छोड़िओदी त' यू. एन. (U.N.) एकटा अभूतपूर्व उदाहरण अछि एतय जे अपन अधिकार ल' लेलक, लेकिन अधिकार दैत नहि अछि — एहि प्रकारक किछु राज्यसँ सम्बन्ध सम्पर्क बनौने राखबाक लेल एक कठोर आ संगठित व्यूह रचना छैक जे अपन प्रभुत्व प्रदर्शन द्वारा अनुबन्ध कराबैत छैक। एक दिस तकर परिणाम ई होइत छैक जे खास-खास पैघ स्टेट्सकेँ अत्यधिक आ व्यापक स्तरक प्रभुत्व द' दैत छैक। दोसर दिस कइयेक छोट स्टेट्स शक्तिशाली पड़ोसी देश आ अन्तर्राष्ट्रीय संगठनक छत्रछायामे आबि जाइछ और स्वतंत्र क्रिया-कलापक वस्तुत: कोनो अवकाश/मार्ग नहि रहि जाइत छैक।

अधिकांश राष्ट्र-राज्य स्वयंकेँ 'नेशन्स' रूपमे उल्लेख करैत छथि, तखन कियेक नहि हमहूँ सभ हुनका ओ ही रूपमे ली आ कही जे नेशन-स्टेट्स आ नेशन्स दुनू एके थीक। ई संभव नहि थिक कियेक त' ओ ध्यान हटयबाकु लेल ई सभ करैत छथि, नेशन-स्टेट्सक वैधानिक रूपसँ परिभाषित अस्तित्व छैक आ नेशन एकटा जनसंख्या थिकै। जखन कि आधुनिक जनसंख्या जे स्वयंकेँ नेशन रूपमे स्वीकार करैत अछि आ सामान्यत: नेशन-स्टेट्सक रूपमे एकटा राष्ट्रक क्षमता-योग्यता प्राप्त कर' चाहैत अछि, एक नेशनक परिभाषा रूपमे जे दावा चाहैत अछि, ओकर अपन नेशन-स्टेट्स अत्यधिक नियंत्रित छैक, अधिकांश प्रतिक्रिया व्यक्त कयनिहार स्वीकार करताह जे पूर्वक सोवियत युनियनक अधिकांश युनियन रिपब्लिक, जेना कि जौर्जियन्स, लिथुआनिन्स आ यूक्रेनियन्स रिपब्लिक्सक पूर्वेसँ स्वतंत्र राष्ट्र रहय और ओ सभ जनसंख्या जे सुपरिभाषित क्षेत्रक स्टेट्स अछि, जेना कि स्कौटलैण्ड, ओ बहुमतसँ विचार करैत छथि जे हुनका सभकेँ नेशन स्टेट्स (nation-states) प्राप्त छथि और हुनका सभकेँ ओही रूपमे स्वीकृति भेटय। दोसर रूपमे एकरा कहब जे स्वायत्तता अथवा स्वतंत्रताक लेल इच्छा करब पर्याप्त अछि।

यद्यपि राजतंत्र सतही तौर पर प्राचीन आ आधुनिक नेशन-स्टेट्सकेँ एकरूपता दैत अछि। सहस्राब्दि पूर्व विश्वक किछु भागमे जेना कि चीन, भारत आ मेडिटेरेनियन बेसिन, ई सभ संगठन मूलरूपमे बहुत प्राचीन भू-भाग छल जे विशिष्ट द्वारा संचालित छल। ई सभ पूर्वक राजतंत्र विकसित भेल आ आधुनिक नेशन-स्टेट्स द्वारा विस्थापित कयल गेल, एखनहुँ शनै: शनै: आधुनिक काल धरि पहचान जीवित अछि ऑस्ट्रो-हंगेरियन, रशियन और ऑटमन शासक जे 1917/1918 धरि जीवित रहि सकलाह, ओ सभ निश्चित रूपसँ वंशवादी शासक रहथि, जतिक जनसंख्यामे सामूहिक राष्ट्रीय पहचान/अस्तित्वक भाव नहि रहैक और सोवियत यूनियन शासक जे 1991 इस्वी धरि वास्तविक अर्थमे कइयेक परम्पराकेँ जीवित रखलनि, कइयेक देशकेँ संवैधानिक रूपसेँ संगठित-एकत्रित राखलनि। सम्प्रति आइओ कइयेक उदाहरण प्रस्तुत करब संभव छैक जतय कि नेशन-स्टेट्स और नेशन्समे योगायोग नहि छैक। अनेक राष्ट्रक सरकार वस्तुत: अपन-अपन नेशन-स्टेट्स राजतन्त्रकेँ नेशन्स रूपमे उल्लिखित करैत छथि, कइयेक राष्ट्र जनसंख्योकेँ धारण करैत तकरा प्रख्यापित कयल, जे राष्ट्रीय पहचानक रूपमे स्वीकृत नहि छैक, ब्रिटेनमे बहुत स्कॉट और वेल्स अनुभव करैत छथि जे ओ स्कॉटिश अथवा वेल्स छथि ने कि बिटिश अथवा हुनका स्कॉटिश-ब्रिटिश या वेल्स-ब्रिटिश राष्ट्रीयता छनि। अरब देशमे बहुत लोक ई अनुभव करैत छथि जे ओ अरब नेशनकवासी छथि, ने कि जेना अधिकांश अरब स्टेट्स स्वयंकेँ इराकसँ मोरक्को और साउथ यमन धरि जोड़ैत परिभाषित करैत छथि।

कइयेक व्यक्तिक लेल राष्ट्र या जाति सम्बन्धी पहचान ततेक मजगूत अछि जे ओ राष्ट्र द्वारा निर्धारित (state oriented) राष्ट्रीय पहचानकेँ समर्पित क' दैत छैक, ओ गौण म' जाइत छैक। एतय प्रथम अमेरिकन (First American) अथवा अफ्रिकनक राष्ट्र या जाति सम्बन्धी समूहक (tribes) उदाहरण देल जा सकैत छैक।

यद्यपि नेशन-स्टेट्स और नेशन्स एक नहि छैक, तथापि दुर घनिष्ठ रूपसँ जुडल छैक। एन्थनी स्मिथ (खासक' Smith 1991 देखू) राष्ट्रकेँ (nations) रूपमे विभक्त करैत छथि, जे मुख्यत: राष्ट्र या जाति सम्बन्धी रूपसँ विकसित भेल, स्वयंकेँ रूपान्तरित कयल, अपन राष्ट्र या जातीय स्वरूपकेँ आगाँ बढ़बैत एक

वृहत् जनसंख्या धरि पहुँचौलनि। और दोसर ओ जे अपन खास राष्ट्रीय भावकें राष्ट्रीय पहचान/अस्तित्व रूपमे विकसित कयल आ अपन विविधतासें परिपूर्ण जनसंख्याकें बहुत ऊपर धरि उठौलनि आ राष्ट्रीय परिवृत्त बनौलनि। **(467 शब्द मे)**

Q.4. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू :— **20**

Raman completed school when he was just eleven years old and spent two years studying in his father's college. When he was only thirteen years old, he went to Madras (which is now Chennai) , to join the B.A. course at Presidency College. Besides being young for his class, Raman was also quite unimpressive in appearance and recalls, '.....in the first English class that I attended, Professor E.H. Elliot addressing me, asked if I really belonged to the junior B.A. class, and I had to answer him in the affirmative'. He, however, stunned all the sceptics when he stood first in the B.A. examinations.

Seeing what a brilliant student he was, his teachers asked him to prepare for the Indian Civil Services (ICS) examination. It was a very prestigious examination and very rarely did non-Britishers get through it. Yet Raman had impressed his teachers so much that they urged him to take it up at such an early age. In spite of their student's brilliance, the plan was not to work. Raman had to undergo a medical examination before he could qualify to take the ICS test and the Civil Surgeon of Madras declared him medically unfit to travel to England ! This was the only examination that Raman failed, and he would later remark in his characteristic style about the man who disqualified him, 'I shall ever be grateful to this man,' but at that time, he simply put the attempt behind him and went on to study Physics.

Q.5. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अनुवाद अंग्रेजीमे करू :— **20**

टाकाकें कोनो रूपमे परिभाषित कयल जा सकैत अछि जे एक दो सराक हाथें सहजतासँ क्रय करबाक एक साधन थिक। बदलैन अथवा रूपैआक बदलामे वस्तु देबाक प्रथाकें टाकाक उपयोग द्वारा बदलि देल गेल छैक, जकर प्रक्रिया अत्यन्त असुविधाजनक आ कठिन रहैक वस्तुक समान मूल्यांकन ओ विनिमय करबाक लेल, संगहि लेमयबला आ देमयबलाक मध्य लेन-देनक सहमति होयब। विनिमयक सुविधा भेलासँ श्रमिकक श्रम वैशिष्ट्यकें टाका सहयोग करैत छैक, जे उत्पादनक आधार छैक, पैध पैमाना पर। टाका कोनो तत्त्वक रूपमे भ' सकै छ अथवा ओहि कोनो रूपमे जकरा कानून अथवा प्रथा-रेवाज द्वारा सहमति होइ, किन्तु एकटा आवश्यक तथ्य ई जे ओ सर्व व्यापक आ सहज रूपमे मान्य होइक। आदिम समाजमे एहि प्रकारक वस्तु सभ रहैक, यथा — मवेशी, शंख, चाउर, चाहक पत्ती — जकर उपयोग अदला-बदलीमे होइत छलैक, किन्तु आधुनिक सभ्य समाजमे प्राय: धातु अथवा कागतक उपयोग एहिलेल होइछ। ई सिक्का अथवा नोटक रूपमे अछि, मुद्राक रूपमे इयह स्पृहणीय छैक। कारण, ई राखबामे आसान टिकाउ, गुणवत्तामे एकसमान आ सभकें स्वीकार्य छैक। एहिलेल जे धातु मुख्य रूपसँ प्रयोग कयल जाइछ, ओ थिकै—सोना, चानी, तामा आ निकेल। नोट विभिन्न रूप आ तरीकासँ निर्गत कयल जाइछ।

एकर सभक अतिरिक्त विनिमयक एक माध्यम रूपमे रूपैआ/टाका गुणवत्ताक मापदण्ड थिक, अत: अन्य सभ गुणवत्ताक तुलनामे स्तरीय मानदण्डक रूपसँ अलगसँ अदायगीक लेल राशि — जेना कि ऋण राशि और राशिक संभरण रूपमे। एकटा मुख्य अन्तर छैक स्तरीय (standard) टाका आ टोकेन (Token) टाकामे, आ ओ ई छैक जे कोनो एक वस्तु जकर तुलना दोसरसँ कयल जा सकैत छैक, तकर मूल्यांकन करबाक हेतु। स्तरीय (standard) टाकाक मूल्य वस्तु पर निर्भर करैत छैक किन्तु टोकेन (token) टाका रूपैआक स्थितिमे कानून आ प्रथा-रेवाज द्वारा. निर्धारित अपन मूल्य ल' लैत छैक, एहि बातक ध्यान देने बिना जे एकर तात्त्विक मूल्य की होयतैक।

Q. 6. **सभ प्रश्नक उत्तर दिअ :—**

Q. 6(a) क्रियाक परिभाषा सोदाहरण लीखू। **10**

Q. 6(b) **पाँच शब्द पर्यायवाची शब्द लीखू :—** **2×5=10**

(i) शाश्वत 2

(ii) पर्यावरण 2

(iii) वन 2

(iv) सूर्य 2

(v) पृथ्वी। 2

Q. 6(c) **कोनो पाँच टाक अनेक शब्दक बदलामे एक शब्द लीखू :—** **2×5=10**

(i) जे तेल पेड़ैत अछि। 2

(ii) जे सभ जनैत अछि। 2

(iii) जकरामे बड़ गुण छैक। 2

(iv) बहुत तेज गतिसँ दौड़य बला। 2

(v) जे नहि सुनैत अछि। 2

Q. 6(d) **निम्नलिखितमे सँ कोनो चारि टाक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्यमे प्रयोग करू :—** **2½×4=10**

(i) अलखक चान होयब। 2½

(ii) अपने मुँह मियाँ मिट्ठू। 2½

(iii) कदुआ पर सितुआ चोख। 2½

(iv) ने तीन मे ने तेरह मे। 2½

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

1. निम्नलिखित कोनो **एक** विषय पर लगभग *600* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

(a) राजनीतिमे स्त्रीगणक भूमिका

(b) की भारतकेँ चीनक अर्थ-व्यवस्थामे विकाससँ भयाक्रान्त रहबाक चाही?

(c) भारतीय समाजमे तलाकक स्वीकार्यतामे वृद्धि

(d) की कठोर कानून नैतिकताकेँ अवरुद्ध कए सकैछ?

2. निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर अन्तमे देल गेल प्रश्नक सटीक एवं स्पष्ट उत्तर अपना शब्दमे लिखू : 12×5=60

कतिपय शताब्दीपूर्व वैश्विक स्तर पर लोकक एक स्थानसँ दोसर स्थान पर प्रवासक प्रक्रिया प्रारम्भ भेल जखन मानवजाति समूहमे एक क्षेत्रसँ दोसर क्षेत्रमे अनेक कारणवश भ्रमण करय लागल जेना गोचर भूमिक अभाव किंवा एहन भूमि जाहि पर बिक्रीक लेल अन्नक उत्पादन नहि होयबाक कारणे आदि आदि। तेँ मानसिक अशान्ति अथवा अन्य प्रकारक अत्याचारसँ बचबाक हेतु, अपन आस्था ओ विश्वासक स्वतंत्रताक हेतु, अभिव्यक्तिक निरंकुशताक हेतु अथवा अपन सुख-दुःखक संगीक विछोहक दुःखसँ त्राण पयबाक हेतु स्थानान्तरणक योजना आवश्यक बुझि पड़लैक। परिणामस्वरूप एहि अप्रवासीलोकनिक अपन सांस्कृतिक धरोहरक सेहो स्थानान्तरण भेलैक, इयह ओकर तात्कालिक पूँजीक रूपमे नव-नव स्थानमे पल्लवित-पुष्पित होबय लगलैक। मार्गमे ओहि अप्रवासीवृन्दकेँ अन्य जनजातिसँ सम्मिलित होयबाक क्रममे किछु विरोधक अवसर सेहो अयलैक। युद्ध, व्यापार अथवा विवाह-सदृश कतिपय अवसर पर सामना सेहो करय पड़लैक तेँ प्रारम्भमे किछु दिन धरि तनावक स्थिति सेहो रहलैक मुदा कालान्तरमे शान्तिक स्थापना क्रमशः सेहो कलाकृतिक विकासक संगे होबय लगलैक। सम्बन्धक प्रगाढ़ता लेन-देनसँ बढ़य लगलैक। स्वाभाविक छैक जे कोनो संस्कृति अथवा एक समूहविशेषक सांगठनिक क्षमताक वृद्धि स्वतंत्र एवं शान्तिमय वातावरणेमे होइत छैक आ प्रत्येक वर्ग अथवा संगठनक विकास उत्तरोत्तर होबय लगैत छैक। तेँ ई संभव छैक जे मंगोलियन अलास्काक क्षेत्रमे प्रवेश कय गेल होयत आ तेँ ब्रिटेनमे संयुक्त रूपसँ नव संस्कृतिक उद्‌भव भेलैक आ लोकक समूह झुंड बनाकय एहन भूमि पर विस्थापित होबय लागल जे स्वीकृत नियमक अनुकूल छलैक। तेँ प्रायः कोलम्बस यूरोपीय देशक एही परिप्रेक्ष्यमे नेतृत्व करबाक अभियान वैश्विक खोजक रूपमे कयलनि। ओयह उपनिवेशीकरण अन्य राष्ट्र पर अधिकार प्राप्त करबाक साधन बनल एवं विजयी सम्राटक अधीन ओहने संस्कृतिक अनुरूप रहबाक बाध्यता सेहो भेलैक। आइ एक देशसँ दोसर देशमे अधिकांश प्रवास करबाक कारण अछि व्यापार आ व्यवसाय ई सभ उदाहरण अछि एक-दोसराक बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदानक कारणेँ संस्कृतिक मिश्रणक। प्रत्येक समूह अपन पूर्वजक संस्कृतिक रक्षा करय चाहैत अछि। अतीतक सुखद प्रसंगक स्मृतिमे विषादक भावना स्वाभाविक छैक मुदा एके-दू पुस्त वितला पर पूर्वजक ओ प्राचीन रंग-रूप नव रंग-रीतिमे आत्मसात भए जाइत छैक। संभव छैक जे अगिला किछु शताब्दीक बाद विश्वक प्राचीन संस्कृति-सभ्यताक विस्मरण भए जाइक कारण लोक जतहि बसैत अछि ताही ठामक गाछ-वृक्ष, पशु-पक्षी ओकरा प्रिय लागय लगैत छैक तेँ अपन प्राचीन संस्कृति विश्वक धरोहर

बनि जाइत छैक। किछु एहन कट्टर लोक अवश्य अछि जे ओकरा पर दोसर रंग नहि चढ़ैत छैक मुदा ई बन्धन आब अपरिहार्य नहि रहलैक अछि। लोकक दृष्टिकोण उदार भय रहल छैक, विश्व-बन्धुत्वक भावना उमरि रहल छैक तेँ भावनाक धरातल पर सेहो आब विश्वक दूरी समटा रहल अछि कारण कोनो पुरुष अथवा स्त्री एकान्तमे नहि रहि सकैत अछि ओ एक सामाजिक प्राणी अछि तेँ अपकेन्द्री अथवा अभिकेन्द्रीक नियम आब चलय बला संभव नहि लगैत अछि, किछु कालक हेतु भनहि ओ लागू होअय। अनगिनित पुस्त किएक ने प्रार्थना कयने होअय एहि अस्तित्वक रक्षाक हेतु, अपन विश्वास आ श्रद्धाक भावकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु वाह्य प्रभावक विरोध किएक ने भेल होअय मुदा जेना हमरालोकनि नीक जेकाँ जनैत छी जे कतवो भावनात्मक आधार किएक ने होउक मुदा ओकर प्रभाव ककरो पड़य बला कथमपि नहि छैक भनहि ओ केहनो दुर्बल होअय। ओकरामे केहनो त्रुटि रहौक मुदा ओकर शरीरक जे 'डी० एन० ए०' अथवा 'आर० एन० ए०' छैक जो आब ओकरा स्वीकार नहि करतैक। आब ओकर शरीर आ आत्मा सरलतासँ प्रभावित होइत छैक जे विश्वमे केहन बसात बहैत छैक, लोक की बजैत अछि, ओ की करैत अछि तकर व्यापक प्रभाव सर्वथा स्वाभाविक छैक कारण अज्ञानतासँ डर उत्पन्न होइत छैक, डरसँ घृणा बढ़ैत अछि, घृणा आत्म-विश्वासकेँ नष्ट करैत अछि आओर अन्ततः तकर परिणाम होइत छैक विनाश आ मृत्यु। कतिपय प्राचीन संस्कृति एहि प्रकारक दुष्परिणाम भोगि चुकल अछि आ ओकर अन्त भ' चुकल छैक। जीवाक हेतु आनक संग रहब आवश्यके हेतैक भनहि ओ स्थान नर्क किएक ने होउक।

(a) प्रवास करबाक क्रममे नव स्थान पर सर्वप्रथम प्रवासीलोकनिकेँ एक-दोसराक संग वार्त्ता करबामे कोन-कोन समस्याक सामना करय पड़लैक?

(b) प्राचीन कालमे एक स्थानकेँ छोड़ि दोसर स्थान पर बसबाक की कारण रहैक? प्रवासक प्राचीन समयक कारण एवं आधुनिक कालक प्रवासक कारणमे की अन्तर छैक?

(c) विभिन्न संस्कृति कोना एक-दोसराक संग मिश्रित भ' जाइत अछि?

(d) कतिपय प्राचीन संस्कृतिक विलोप कोना भ' गेलैक अछि?

(e) लेखक कोन आधार पर कहैत छथि जे कोनो संस्कृतिक लेल ई संभव नहि छैक जे ओ असम्पृक्त रहि जाय?

3. निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण मात्र एक-तेहाइ शब्दमे लिखू। शीर्षकक उल्लेख करबाक प्रयोजन नहि अछि : 60

जखन हम कोनो जीविकाक हेतु आवेदन दैत छी आ अपन आत्म-विवरणिका प्रस्तुत करैत छी, तँ हमरालोकनि सामान्यतया प्रयास करैत छी जे अपन प्रत्येक अनुभवक सद्‌गुण निवेदित कय दी, अपन समस्त पृष्ठभूमिक। अधिकांश लोक अपन त्रुटिक उल्लेखकेँ गुप्त रखैत छथि जे ओ अपन जीवनमे भोगने छथि आ मात्र सफलताक चर्चा जमि कय करैत छथि। जखन नियोजक एहि प्रकारक विवरणिका देखैत अछि, ओ प्रायः इयह अनुभव करैत छथि जे आवेदकमे तँ सब अपन पैघे लोकक वर्णन देखौने अछि। हमरालोकनि प्रयास करैत छी जे अपनाकेँ एहि रूपमे प्रस्तुत करी जे जीविका प्राप्त भए जाय।

एहि प्रसंग क्रीड़ा-जगतक एकटा रोचक आ सत्य घटना अछि। एकटा विश्वविद्यालयक टीम फुटबॉलक हेतु अभ्यास करैत रहय। एक गोटे 'लाइनमैन'क स्थान पर रहय। ई सभसँ अधिक तेज धावकक रूपमे जानल जाइत छल। एक दिन ई अपन कोचसँ पुछलक जे की ओ थोड़ेक दूर तेजसँ दौड़ि सकैत अछि? कोच ओकरा आज्ञा देलकैक।

ओ 'लाइनमैन' प्रतिदिन दौड़बाक लेल जाइत छल मुदा विलम्बसँ घुरैत छल। दिन-दिन एहिना दौड़ैत रहल, दिन-दिन पछुआ जाइत रहल। ई एहि लेल आश्चर्य नहि लगैत छलैक जे कोनो लाइनमैन तेज धावक नहि होइत अछि।

कोच एकर दिन-दिनक पराजय देखलाक बाद ओ मोनेमोन सोचलक जे आखिर ई लाइनमैन किएक एहिमे सम्मिलित होइत अछि जखन सभ दिन पछुआ जाइत अछि ई तँ भने लाइनमैनक भूमिकामे उपयुक्त अछि। कोच किछु दिन धरि निरीक्षण करैत रहल आ एक दिन ओकरासँ पुछबाक निर्णय कयलक। ओ लाइनमैनकेँ कहलकैक जे अहाँ तँ भने लाइनमैन छी, अहाँ तेज धावकक प्रतियोगी किएक बनैत छी? ओकरा ओहि लाइनमैनक उत्तर सुनि आश्चर्य भेलैक जखन ओ कहलकैक—''हम एहि ठाम लाइनमैनकेँ पराजित करबाक हेतु इच्छुक नहि छी, हम सेहो नीक जेकाँ ई बुझैत छी जे ई कार्य हमरा लेल बेसी सुलभ अछि मुदा हमरा तँ ई सिखबाक लालसा अछि जे कोना हम तेज धावक बनि सकैत छी आ अपने देखैत होयब जे हम कनेके कमसँ पछुआ जाइत छी।''

ई घटना आन्तरिक शक्तिक सूचक अछि। एहि संसारमे हमरालोकनि निरन्तर नीक बनबाक इच्छा रखैत छी मुदा हम अपनाकेँ जे बुझी ईश्वर सभ बुझैत छथि। भगवानो ओकरे सहायता करैत छथिन जे प्रयासरत रहैत अछि तेँ अपन सत्यकेँ ईश्वरसँ नुका कय नहि राखि सकैत छी। ओ फुटबॉल खेलाड़ी अपन त्रुटिक ज्ञान रखैत छल आ ओकरा सुधारबाक प्रयासमे लागल रहल। ओ इयह बुझलक जे ओ अपनाकेँ तखने सुधारि सकैत अछि जखन अपन दुर्बल पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करत। तखने अपन दुर्बलता पर विजय प्राप्त कय सकैत अछि। ओहि व्यक्तिकेँ तेज धावककसंग प्रतियोगितामे सम्मिलित भेलासँ अपन दुर्बल पक्षक ज्ञान भेलैक आ ओकरा सुधार करबाक ओ प्रयास कयलक। ओकरा कोनो पुरस्कारक अभिलाषा नहि अपितु अपन त्रुटि-मार्जनक प्रबल लालसा रहैक। ओ तेज धावकक नीक गुणसँ प्रेरणा लेलक आ अपन क्षमतामे वृद्धि करबाक सफल प्रयास कयलक। तेँ जखन हम अपन त्रुटि पर ध्यान दैत छी तखन ओहिसँ नीक करबाक प्रेरणा भेटैत अछि। निरन्तर सत्प्रयाससँ असफलता कम आ सफलता दिशि लोक अधिक अग्रसर होइत अछि। एक दिन एहन अबैत छैक जखन त्रुटि समाप्त भ' जाइत अछि आ सफलताक उच्चतम शिखर पर लोक आरूढ़ भ' जाइत अछि।

तेँ हम अपन त्रुटिकेँ, दुर्बलताकेँ ईश्वरसँ नुका कय नहि राखि सकैत छी, ओ सर्वान्तरयामी छथि। जखन परमात्मा ई देखैत छथिन जे केओ अपन कर्त्तव्यक पालन दृढ़तासँ करैत अछि तँ ओहो ओकर सहायता करैत छथि, सभ अवगुण गुणमे परिवर्तित भ' जाइत छैक। तेँ यदि हम संघर्षरत छी तँ निश्चये एक दिन भगवानक कृपासँ सफलता प्राप्त होयबे करत। ईश्वर सर्वशक्तिसम्पन्न छथि आ सभक उन्नतिमे सहायक होइत छथि।

4. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

Most people involved in the film production industry know that there is a constant evolution. The change is in the way movies are made, discovered, marketed, distributed, shown, and seen. Following independence in 1947, the 1950s and 60s are regarded as the 'Golden Age' of Indian cinema in terms of films, stars, music and lyrics. The genre was loosely defined, the most popular being 'socials', films which addressed the social problems of citizens in the newly developing state. In the mid-1960s, camera technology revolutionized the documentary method by enabling the synchronized recording of image and sound. Today, CINEMA 4D users are free to create scenes without worrying about the size of objects or how many objects are in the scene, shaded settings, texture size, multipass-rendering or eye-catching particle systems.

Until the 1960s, filmmaking companies, many of whom owned studios, dominated the film industry. Artistes and technicians were either their employees or were contracted on a long-term basis. Since the 1960s, however, most performers went the freelance way, resulting in the star system and huge escalations in film production costs. Financing deals in the industry also started becoming murkier and murkier, since then. According to estimates, the Indian film industry has an annual turnover of ₹ 60 billion. It employs more than 6 million people, most of whom are contract workers as opposed to regular employees. In the late 1990s, it was recognized as an industry.

More money impacted the perception, visual representation, and definitions of reality. Like any other media of mass communication, the themes are relevant to their times.

Thus, filmmaking became more expensive and riskier. As opposed to the time of the Gemini Studio, when only 5 percent of a movie was shot outdoor, filmmakers often select overseas locations in order to create greater realism, manage costs more efficiently or source people and props. Filmmakers spend considerable time scouting for the perfect location.

5. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अनुवाद अंग्रेजीमे करू : 20

हास्य लोकक क्षमता अथवा गुण अछि, वस्तु अथवा परिस्थिति जे आनन्दक भावनाकेँ उद्वेलित करैत अछि। ई मनोरंजनक एहन रूपकेँ प्रस्तुत करैत अछि अथवा मानवीय भावनाक आदान-प्रदानक एहन माध्यम अछि जे एहन संवेगकेँ जगबैत अछि जाहिसँ लोक हँसैत-हँसैत गदगद भ' जाइत अछि।

आलोचना तँ निर्णयक एक प्रक्रिया अछि अथवा सूचित कयल गेल व्याख्या। रचनात्मक समालोचना अभिव्यक्तिक एक प्रकार अछि जाहिसँ लोक अनकर व्यवहारमे सुधार अनबाक प्रयास करैत अछि एक अनधिकृत रीतिसँ, आओर सामान्यतया कूटनीतिक एहन पहुँच जाहिसँ समाजमे अनुचित कार्य नहि होअय, आ ई 'सृजनात्मक' अछि जे सर्वथा अपमान, अनादरक विपरीत जाहिमे आदेशक कोनो गंध नहि। एकर अभिप्राय होइछ सुधार एक शान्तिपूर्ण एवं सुहृत्सम्मित पद्धितसँ।

व्यंग्य तँ एक एहन यंत्र अछि जे समालोचक द्वारा प्रयुक्त कयल जाइछ। सामान्यतया एकर एक सुनिश्चित लक्ष्य रहैत छैक, ओ कोनो खास व्यक्तिक अथवा व्यक्तिसमूहक प्रति एक एहन धारणा अथवा एक एहन प्रवृत्ति, एक संस्था अथवा एक सामाजिक संस्थाक प्रति जे ओकर त्रुटि पर दृष्टि देब उद्देश्य होइछ। कारण व्यंग्य कखनो क्रोध आ हास्य दुनूकेँ बान्हि दैत अछि जे अधिक अधलाह लगैत अछि एवं निश्चितरूपसँ व्यंग्यात्मक होयबाक कारणेँ बेसीकाल एकर लोक अर्थ उनटा लगबैत अछि यद्यपि एकरा कटाक्ष कहल जाइत अछि।

ई एक प्रकारक कलात्मक रूप अछि जे मनुष्य अथवा व्यक्तिक दुराचार, व्यसन, विवेकहीन क्रियाकलाप, गारि-फज्झति, अन्य अवगुण केर भर्त्सना, उपहास अथवा अन्य माध्यमसँ गंजन कयल जाइछ, कखनो एकर उद्देश्य सुधारात्मक रहैत छैक। साहित्य एवं ताहूमे नाटक एकर मुख्य संवाहक होइछ मुदा ई सिनेमा, दृश्यकाव्य एवं राजनीतिक कार्टून द्वारा सेहो प्रचारित कयल जाइत अछि। होरेसक मतानुसार व्यंग्यकार एक भद्र पुरुष एहि विश्वक होइछ जे सर्वत्र अधलाह कार्य पर दृष्टि रखैत अछि मुदा ई विनम्र हास्यक बदला क्रोध सेहो उत्पन्न करैत अछि।

6. *(a)* निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 10

(i) अनुलोम

(ii) मूक

(iii) शुक्ल

(iv) स्थूल

(v) प्रवृत्ति

(b) निम्नलिखित शब्दयुगलमे भेद स्पष्ट करू : 10

(i) अड़ाँच—अड़ाँची

(ii) कलोल—कल्लोल

(iii) गत—गात

(iv) ठेसी—ढेही

(v) तम—ताम

(c) निम्नलिखित लोकोक्तिकें वाक्यमे प्रयोग करू : 10

(i) उठान हारब

(ii) बिनु पेनक लोटा

(iii) कान काटब

(iv) तीनमे की तेरहमे

(v) पट्टी पढ़ाएब

(d) निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू : 10

(i) स्मृति जननिहार

(ii) सब दिन चलनिहार व्रत

(iii) जकरा लगले फूरि जाइक

(iv) आगाँ जन्म लेनिहार

(v) पातक बनल कुटी

★ ★ ★

C–AVZ–O–NBUC

CS (Main) Exam:2015

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

1. निम्नलिखित कोनो एक विषय पर लगभग *600* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

(a) युवामे बढ़ैत असहिष्णुता

(b) असफलता सफलाताक प्रथम सीढ़ी थिक

(c) पढ़बाक आदत समाप्त भऽ रहल अछि

(d) अन्धविश्वासक विरोधमे संघर्ष और समाज

2. निम्नलिखित गद्यांशकें ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर अन्तमे देल गेल प्रश्नक सटीक एवं स्पष्ट उत्तर अपना शब्दमे लिखू : 12×5=60

रिपोर्ट कहैत अछि जे भारतवर्षक महाविद्यालयसँ उत्तीर्ण भेनिहार 80 प्रतिशत लोक बेरोजगार छथि। युवा-पीढ़ीक सम्पर्कमे रहनिहारमेसँ एक, हम मुदा एहि आँकड़ासँ असहमत छी। युवावर्गक सम्पर्कक आधार पर हम मात्र एतेक कहि सकैत छी जे लगभग 90 प्रतिशत युवाक बेरोजगारीक कारण थिक हुनक अस्पष्ट और उत्तरदायित्वहीन दृष्टिकोण। वर्तमानमे युवावर्ग, कतहुँ पार्श्वमे रहैत गलतिक आरम्भ अशिष्ट आचरणसँ भरल आत्मविश्वाससँ करैत छथि। ओ बिना किछु प्रयास कयने अति धन कमाबय चाहैत छथि।

एकर अर्थ ई नहि जे हुनकामे क्षमताक अभाव अछि, ओ बढ़ियाँ अंग्रेजी बाजि सकैत छथि और अपना संबंधमे अति विश्वाससँ भरल छथि। ओ नवीनतम रिंग-टोन, सिनेमा और चुटकुलाक जानकार छथि मुदा जखने कियो थोड़ेक आगाँ बढ़ैत अछि तऽ ओ अपन रिक्त आँखिसँ हमरा दिस देखय लगैत छथि। ओ बहुत पैसा अर्जित करय चाहैत छथि, जाहि लेल मीडिया-हाइप और नियमित प्रकाशित होमय बला वेतन-सर्वेके धन्यवाद, मुदा हुनका ओ दक्षता नहि छनि, जे एहि प्रकारेँ धन अर्जित करबामे हुनक सहयोगी होनि। हुनक डिग्रीक सम्मान करैत स्नातक-स्तरक विषयक प्रश्न जौं हुनकासँ पूछल जाय तऽ अधिकांश विचलित भऽ जाइत छथि। विषयक अतिरिक्त हुनका कोनहुँ विषयक जानकारी नहि रहैत अछि अथवा ओ पढ़ैत नहि छथि। मुदा एतय किछु प्रश्न और अछि। सदाचार और व्यवहारक संबंधमे प्रश्न, अहाँमे और की बढ़ियाँ अछि, अहाँ अपन अतिरिक्त समय कोना व्यतीत करैत छी, और तखन एहन आश्वस्त लड़का-लड़किकसमूह हमरा एहि संशयसँ ग्रसित देखाइ पड़ैत छथि—हमरा एहि प्रश्नक की उत्तर देबाक चाही? हुनका कहब उचित नहि अछि जे ई हुनक अपन जिन्दगी थिक और हुनका अपना संबंधमे हमरा स्वयं कहय चाहियनि। कियैक तऽ ओ हरदम बनल-बनायल उत्तर देमय चाहैत छथि, एहन भाव रहैत छनि जेना हुनका एहिसँ मुक्ति देल जाय। ओ कहैत छथि जे—"जौं हम पर्याप्त मात्रामे अभ्यास करब तऽ एहन अवश्य प्रमाणित कऽ देब।" एवम् प्रकारेँ युवावर्ग लोलुप पाठक, गिटार-वादक, स्टार-बल्लेबाज और एतेक धरि जे माली धरि भऽ जाइत छथि। हमरा आश्चर्य होइत अछि, जौं कोनो नासमझ भेंटकर्त्ता हुनक आधा-अधुरा कथा पर विश्वास करैत अछि तऽ।

यद्यपि भारतवर्ष आगाँ बढ़ि रहल अछि और हमरा समक्ष एहन उत्तरदायित्वहीन पीढ़ी तैयार अछि, जकर एकमात्र लक्ष्य बिना प्रयासक बढ़ियाँ जिन्दगी जियब अछि। एना प्रतीत भऽ रहल अछि जे हम एहन फौज निर्मित कऽ रहल छी, जे बिना किछु दर्शन, बिना वचनबद्धता या सदाचारसँ भरल अछि। अपन चमड़ीके बचायब और किछु उपयुक्त करबामेसँ कोनो एकटाक चुनाव करय हेतु कहला पर, अधिकांश युवाक जवाब वस्तुतः अपनाकेँ बचायब होयत। एना मानल जाइत अछि जे जखन हम युवा रहैत छी तऽ हमरा भीतर किछु आदर्शवाद विद्यमान रहैत अछि, यद्यपि हमर विचार ठोस नहि होइत अछि तथापि हम कोनहुँ प्रयोजनक प्रति ठाढ़ रहबाक इच्छुक तऽ रहैत छी। आई-काल्हि युवावर्गमे कोनहुँ प्रयोजनक प्रति भावावेश नहि अछि। एहि पीढ़ीक अत्यन्त पूर्वाभ्याससँ विनिर्मित उत्तर सुनि हम बुझैत छी जे नव मंत्र मात्र रुपया थिक। एकर अतिरिक्त जों और कियो किछु महत्त्वपूर्ण बात कहैत छथि तऽ ओ पुरातन थिक।

(a) ओ की कारण थिक जाहिसँ युवा रोजगार हेतु अयोग्य छथि?

(b) वर्तमानमे युवा लेखकसँ की अपेक्षा रखैत छथि?

(c) लेखकक अनुसार, वर्तमानमे युवा पीढ़ीक एकमात्र प्रयोजन की थिक?

(d) आजुक युवाक बीच विचारणीय नव मंत्र की थिक?

(e) वर्तमान युवा पीढ़ीक आदर्शवादक प्रति की दृष्टिकोण अछि?

3. निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण मात्र एक-तेहाइ शब्दमे लिखू। शीर्षकक उल्लेख करबाक प्रयोजन नहि अछि। संक्षेपण अपन भाषामे लिखू : 60

रक्षा क्षेत्रमे विदेश पर निर्भरता कम करब और आत्मनिर्भरता प्राप्त करब सामरिक और आर्थिक दुनू कारणसँ वर्तमानमे विकल्पक अपेक्षा आवश्यकता थिक। अतीतमे सरकार हमर सशस्त्र बलक आवश्यकता पूर्ण करबाक हेतु आयुध निर्माण कयलक और सार्वजनिक क्षेत्रक उपक्रमक रूपमे उत्पादन क्षमताक निर्माण कलयक। यद्यपि, विभिन्न रक्षा उपक्रमक उत्पादन क्षमताकेँ विकसित करबाक लेल भारतमे निजी क्षेत्रक भूमिका बढ़यबा पर बल देबाक आवश्यकता अछि। विभिन्न वस्तुक निर्माणकेँ बढ़ावा देबाक हेतु 'मेक इन इन्डिया' सदृश महत्त्वपूर्ण पहल कयल गेल अछि। अन्य वस्तुक अपेक्षा रक्षा उपकरणक घरेलू उत्पादनक अधिक आवश्यकता अछि, कियैक तऽ एहिसँ नहि मात्र बहुमूल्य विदेशी मुद्राक बचत होयत, अपितु राष्ट्रीय सुरक्षाक चिन्ताकेँ सेहो दूर कयल जा सकत।

रक्षा क्षेत्रमे सरकार एकमात्र उपभोक्ता थिक। अतः 'मेक इन इन्डिया' हमर खरीद नीति द्वारा संचालित होयत। सरकारक घरेलू रक्षा उद्योगकेँ बढ़ावा देबाक नीति, रक्षा खरीद नीतिमे नींक जकाँ परिलक्षित होइत अछि। जतय 'बाइ एंड मेक

इन्डियन' तथा 'बाइ इन्डियन' श्रेणिक बाइ ग्लोबलसँ पूर्व स्थान अबैत अछि। आबय बला समयमे आयात दुर्लभसँ दुर्लभतम भेल जायत और आवश्यक व्यवस्थाक निर्माण और विकासक हेतु सर्वप्रथम अवसर भारतीय उद्योगकेँ प्राप्त होयत। भनहिं वर्तमानमे भारतीय कम्पनिकेँ प्रौद्योगिकीक संबंधमे पर्याप्त क्षमता नहि होमय, ओकरा विदेशी कम्पनिक संग संयुक्त उद्यम, प्रौद्योगिकी हस्तांतरणक व्यवस्था और गठबंधन हेतु प्रोत्साहित कयल जाइत अछि।

एखन धरि रक्षा क्षेत्रमे घरेलू उद्योगक प्रवेश हेतु लाइसेन्स और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रतिबन्ध आदिक सन्दर्भमे कतेक बाधा छल। रक्षा विनिर्माणक क्षेत्रमे निवेशक प्रक्रियाकेँ आसान बनयबाक हेतु आब कतेको नीतिकेँ उदार बनाओल गेल अछि। सभसँ महत्त्वपूर्ण रक्षा क्षेत्रमें प्रत्यक्ष विदेशी निवेशकेँ बढ़ावा देबाक हेतु एफ० डी० आइ० नीतिकेँ उदार बनाओल गेल अछि। लाइसेन्स नीतिकेँ सेहो उदार बनाओल गेल अछि और आब घटक, हिस्सा-पुर्जा, काँच-माल, परीक्षण उपकरण, उत्पादन मशीनरी आदिकेँ लाइसेन्सक क्षेत्रसँ बाहर राखल गेल अछि। जे कम्पनि एहि प्रकारक वस्तुक उत्पादन करय चाहैत अछि, आब ओकरा लाइसेन्सक आवश्यकता नहि होयत।

रक्षा क्षेत्रमे घरेलू और विदेशी दुनू निवेशक हेतु एकटा पैघ अवसर उपलब्ध अछि। एक दिस जतय सरकार निर्यात, लाइसेन्सिंग, एफ० डी० आइ० सहित निवेश और खरीद हेतु नीतिमे आवश्यक परिवर्तन कऽ रहल अछि, ओतहिं उद्योगकेँ सेहो आवश्यक निवेश और प्रौद्योगिकीक संबंधमे उन्नयन करबाक चुनौतीकेँ स्वीकार करबाक हेतु समक्ष अयबाक चाही। रक्षा एकटा एहन क्षेत्र थिक जे नवाचारसँ संचालित होइत अछि और जाहिमे भारी निवेश और प्रौद्योगिकीक आवश्यकता अछि। वस्तुतः उद्योग के सेहो अस्थायी लाभक अपेक्षा विस्तृत अवधि हेतु सोचबाक मानसिकता बनबय पड़त। हमरा अनुसन्धान विकास तथा नवीनतम विनिर्माण क्षमता पर अधिक ध्यान देमय पड़त। सरकार, घरेलू उद्योग हेतु एकटा एहन पारिस्थितिकी प्रणाली विकसित करबाक हेतु प्रतिबद्ध अछि, जाहिसँ ओ सार्वजनिक और निजी दुनू क्षेत्रमे बराबरक स्तर पर व्यावसायिक उन्नति कऽ सकय।

4. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अंग्रेजीमे अनुवाद करू : 20

अरब देशक बेसी हिस्सा रेगिस्तान अछि। एतय चारु दिस रेत और चट्टान अछि। रेत अथवा बाउल एतेक गर्म होइत अछि जे दिनमे खाली पैर अहाँ ओहि पर चलि नहि सकैत छी। रेगिस्तानमे एम्हर-ओम्हर पानिक स्रोत अछि, जे धरतीक बहुत नींचा प्रवाहित होइत अछि, ओ एतेक नींचा अछि जे सूरज सेहो ओकरा सोखि नहि सकैत अछि। अछि तऽ ओहन स्रोत बहुत कम, मुदा जतय कतहुँ कोनो एकहुटाँ स्रोत अछि ओतय नम्हर गाछ होइत अछि और ओ अत्यन्त सुन्दर देखाइ दैत अछि। स्रोतक चारु दिस छायादार हरियर गाछी बनबैत स्थानकेँ नखलिस्तान कहल जाइत अछि।

अरबवासी जे शहरमे निवास नहि करैत छथि, बरख-भरि रेगिस्तानेमे रहैत छथि। ओ तम्बुमे रहैत छथि, जे आसानीसँ गाड़ल और उखाड़ल जा सकैत अछि, जाहिसँ ओ एक नखलिस्तानसँ दोसर नखलिस्तान धरि अपन भेड़, बकरि, उँट और घोड़ाक लेल घास-पानिक हेतु जा सकैत छथि। रेगिस्तानवासी अरब खूब पाकल अंजीर और खजूर खाइत छथि, जे खजूरक गाछमे फड़ैत अछि। ओ ओकरा सुखाबैत छथि और भरि बरख खाद्य पदार्थक रूपमे ओकर उपयोग करैत छथि।

एहि अरबवासी लऽग संसारक सर्वोत्तम घोड़ा रहैत अछि। एकटा अरबवासी अपन सवारी घोड़ाक कारणेँ अपनाकेँ गौरवान्वित अनुभव करैत अछि और घोड़ाकेँ अपन पत्नी और बच्चा सदृश प्रेम करैत अछि। उँट तऽ ओकर अत्यन्त सुन्दर घोड़ासँ बेसी उपयोगी अछि, अत्यन्त विशाल और ताकतवर सेहो। एकटा उँट लगभग दूटा घोड़ासँ बेसी सामान उठा सकैत अछि। अरब लोकनि अपन उँटकेँ सामानसँ खूब लादैत छथि और रेगिस्तानमे मीलक मील सवारी सेहो करैत छथि। जेना ओ सच्चेमे 'रेगिस्तानक जहाज' होमय। बेसी काल ओकरा अहिना सम्बोधित कयल जाइत अछि।

5. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

Language and communication are something that children learn by talking to one another. But schools consider this an act of indiscipline. Instead, we have a special grammar class to learn language! One educationist remarked, "It is nice that children spend just a few hours at school. If they spend all 24 hours in schools, they will turn out to be dumb!" In most schools, teachers talk, children listen. The same is true for other skills also. Children learn a great deal without being taught, by tinkering and pottering on their own.

Changes in the school system, if they are to be of lasting significance, must spring from the actions of teachers in their classrooms, teachers who are able to help children collectively. New programmes, new materials and even basic changes in organizational structure will not necessarily bring about healthy growth. A dynamic and vital atmosphere can develop when teachers are given the freedom and support to innovate. One must depend ultimately upon the initiative and respectfulness of such teachers and this cannot be promoted by prescribing continuously and in detail what is to be done.

In education, we can cry too much about money. Sure, we could use more, but some of the best classrooms and schools I have seen or heard of, spend far less per pupil than the average in our schools today. We often don't spend well what money

we have. We waste large sums on fancy buildings, unproductive administrative staff, on diagnostic and remedial specialists, on expensive equipment that is either not needed, or underused or badly misused, on tons of identical and dull textbooks, readers and workbooks, and now on latest devices like computers. For much less than what we do spend, we could make our classrooms into far better learning environments than most of them are today.

6. *(a)* निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) अनुकूल

(ii) उत्कृष्ट

(iii) आत्मवादी

(iv) उत्कर्ष

(v) परमार्थ

(b) निम्नलिखित शब्दयुगलमे भेद स्पष्ट करू : 2×5=10

(i) जड़–जर

(ii) तप–ताप

(iii) चालि–चाली

(iv) चानि–चानी

(v) पुरान–पुराण

(c) निम्नलिखित लोकोक्तिकें वाक्यमे प्रयोग करू : 2×5=10

(i) कनही गायक भिन्ने बथान

(ii) कारी अक्षर महिस बरोबरि

(iii) गदहा खसलाह स्वर्गसँ, रुसलाह गामक लोकसँ

(iv) चट मँगनी पट बिआह

(v) चोर कतहु इजोत सहय

(d) निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) जे कम बाजय

(ii) जे पालन करय

(iii) जकर दमन कठिन हो

(iv) जाहि पुरुषक पत्नी नहि हो

(v) सत्य बजनिहार

★ ★ ★

M–ESC–CU–MTL

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

मैथिली

(अनिवार्य)

समय : 3 घंटा

पूर्णांक : 300

प्रश्नपत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व देल गेल निर्देशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू

सभ प्रश्न अनिवार्य अछि।

प्रत्येक प्रश्न/भागक अंक ओकरा सामने अंकित अछि।

उत्तर **मैथिली** (देवनागरी लिपि) मे लिखू, जाधरि कि प्रश्नमे कोनो दोसर निर्देश नहि हो।

प्रश्नमे शब्दक संख्याक ध्यान राखू, अधिक वा कम शब्दमे उत्तर लिखला पर अंक काटल जा सकैत अछि।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिकामे रिक्त छोड़ल स्थानकेँ स्पष्ट रूपसँ अवश्य काटि दी।

1. निम्नलिखित कोनो **एक** विषय पर लगभग *600* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

(a) संस्कृति किऐक महत्त्वपूर्ण अछि?

(b) स्मार्ट नगर आ अनस्मार्ट नागरिक

(c) न्यायिक सक्रियता (activism) बनाम न्यायिक असीमितता (overreach)

(d) स्कूली बच्चामे धरोहरक (विरासत) प्रति श्रद्धा

2. निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर अन्तमे देल गेल प्रश्नक सटीक एवं स्पष्ट उत्तर अपना शब्दमे लिखू : 12×5=60

ई कहल जाइत छैक जे स्त्री आधा आकाश छापि लेलक अछि। एहिमे संशोधन कए एना कहि सकैत छी जे ओ एहिसँ अधिक स्थानक अधिकारी अछि। तथापि, प्रत्येक देशक विभिन्न कालक इतिहासमे, संस्कृति ओ परम्परा, क्षेत्र, धर्म, जाति, वर्ग, श्रेणी, नस्ल, वर्ण, वैविध्यपूर्ण अतीत एवं वर्तमानमे सेहो स्त्रीक जीवनकेँ प्रत्येक क्षेत्रमे पुरुषसँ कम महत्त्व देल गेलैक अछि। ओकरा संग निरन्तर भोजन, कार्य, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं विकासमे प्रतिभागी होयबाक अवसर, नेतृत्व आ अपन महत्त्वाकांक्षाकेँ साकार करबाक अवसर देबामे भेद-भाव कयल जाइत रहलैक अछि। ओ सही अर्थमे विश्वक सभसँ विशाल 'अल्पसंख्यक' कहल जा सकैत छथि।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्रीकेँ एकटा व्यक्तिक रूपमे नहि देखैत छैक, जकर अपन निज पहचान होइक ओ एकटा व्यक्तिक रूपमे, सम्पूर्णतामे सेहो नहि देखल जाइत अछि। ओकर अपन सम्मान, स्वायत्तता छैक, ओ सम्मानक अधिकारिणी अछि आ सामाजिक व्यवस्थामे, कानूनमे एवं संस्थामे ओकरा समान अधिकार देल गेल छैक। एहि सभक अतिरिक्त ओ पुरुषक एकमात्र ओहन औजारक रूपमे देखल जाइत अछि, बूझल-भानल जाइत अछि जे पीढ़ीकेँ आगाँ बढ़ा सकय, सेवा-भाव राखय, यौनतृप्तिक पूर्तिक साधन आ परिवारक सामान्य सम्पन्नताक वाहक रूपमे मान्य अछि। स्त्रीक सांस्कृतिक स्वीकृति केवल एहि रूपमे छैक जे ओ कोनो पुरुषक पुत्री, पत्नी अथवा माय अछि। एकर अतिरिक्त ओकर अन्य कोनो पहचान नहि छैक आ निज पहचान, अस्तित्व नहि रहबाक कारणेँ ओकरा हेय दृष्टिसँ देखल जाइत छैक।

एसकरि स्त्री एहि वृत्त/परिधिसँ बाहर बुझाइत छथि। एहि श्रेणीमे ओ सभ सम्मिलित छथि जे सांस्कृतिक रूपसँ स्वीकार्य विवाहयोग्य अवस्थाक छथि—मुदा एखन धरि अविवाहित छथि अथवा जे विधवा छथि, तलाक दए देल गेल छैक या लए नेने अछि। पुरुषक सुरक्षा परिधिसँ बाहर रहनिहारि स्त्रीकेँ समाज सम्मानक दृष्टिसँ नहि देखैत छैक। ई असम्मान तखन और बढ़ि जाइत छैक जखन ओ पुरुषक सुरक्षा वृत्तकेँ अस्वीकारि दैत छैक अथवा ओ अपन जीवनसंगीकेँ दुघर्टना अथवा बीमारीक कारण गमा चुकल छैक। पुरुषकेँ सर्वाधिक द्वेष ओहि स्त्रीसँ होइत छैक जे ने मात्र एसकरि रहैत अछि आ ने पुरुषक छाहरिसँ भिन्न अपन अस्मिताक संग जीवन बितबैत अछि।

सर्वाधिक विकसित देशक महिला सेहो 60–80 प्रतिशत धरि भोजन बनबैत छथि और विश्वक आधा भोज्य पदार्थक उत्पादनकर्त्ती होयबाक श्रेय सेहो हुनके छनि। सांस्कृतिक रूपसँ सेहो यदि देखल जाय तँ अधिकांश घरमे स्त्रीए भोजन-प्रदाता अछि। तथापि भारतवर्षक सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा ई सुनिश्चित करैत छैक जे स्त्री कम मात्रामे भोजन ग्रहण करैत छथि आ प्रायः एहनो भ' जाइछ जे स्त्रीक लेल भोजन बचिते नहि छैक। एहन घर जतय पर्याप्त मात्रामे भोजन त' छैक, मुदा ओतय सेहो स्त्रीकेँ पौष्टिक भोजन नहि भेटैत छैक। एसकरि स्त्री सेहो सामाजिक बन्धन आ अतिरिक्त भेद-भावक कारणेँ एहि श्रेणीमे आबि जाइत अछि, जखन कि ओ एसकरि अपन बल पर दुनियाँमे संघर्ष कए रहलि अछि।

भारत ओहन देशमेसँ एक अछि, जतय पुरुषक तुलनामे स्त्रीक संख्या कम छैक। देशक जनसंख्यामे ओकर प्रतिशत विगत शताब्दीसँ निरन्तर कम भए रहल छैक। 2001 क जनगणनासँ ई ज्ञात भेलैक अछि जे प्रत्येक 1000 पुरुषक समानान्तर 933 स्त्री छैक। यदि पुरुष जकाँ स्त्रियोकेँ समान जीवन-यापनक अवसर प्राप्त होइक, संग-संग ओकर स्वास्थ्य और पोषणक ध्यान राखल जाइक त' ई संभावना बढ़ि जयतैक जे पुरुष और स्त्रीक संख्या समान भए जायत। सम्प्रति 2001 मे पुरुषक अपेक्षया स्त्री 3 करोड़ 50 लाख कम रहैक। ई अनुपात 2011 क तुलनामे किञ्चित् सुधरलैक, अर्थात् 933 क अपेक्षाकृत 940 भ' गेलैक। एक पैघ चिन्ताक विषय ई अछि जे 2001 मे 6 वर्ष धरिक नेनामे बालकक संख्या बालिकाक तुलनामे, जन्मदर 927 पर आबि गेलैक आ, 2011 मे पुनः कम भ' कए 914 रहि गेलैक। एहि आँकड़ासँ ज्ञात होइत अछि जे सामाजिक और सांस्कृतिक विसंगति एवं विकसित तकनीकक कारणेँ निरन्तर स्त्रीक जीवन जीबाक अवसर न्यून होइत जा रहल छैक। कहल जा सकैत अछि जे भारतीय समाजमे नियमित रूपसँ लाखक लाख कन्या एवं स्त्रीकेँ मारल जा रहल छैक।

(a) जनगणनाक आँकड़ा बालिका आ स्त्रीक सम्बन्धमे की संदेश दैत अछि?

(b) भोजन एवं स्त्रीक सन्दर्भमे प्राप्त होमए वला असमानताक विडम्बना की अछि?

(c) ''ई तर्क कएल जा सकैत अछि जे स्त्रीक आधासँ अधिक आकाशमे छाएल छथि।'' एहि कथनसँ लेखकक की अभिप्राय छनि?

(d) पितृसत्तात्मक समाजमे कोना स्त्री मात्र औजारक रूपमे रही गेल अछि?

(e) लेखकक अनुसार एसकरि स्त्रीकेँ अपना समाजमे कोना आसानीसँ क्षति पहुँचाओल जा सकैत छैक?

3. निम्नलिखित अनुच्छेदक सारांश लगभग एक-तिहाई शब्दमे लिखू। एकर शीर्षकक उल्लेख करब आवश्यक नहि अछि। सारांश अपनहि शब्दमे लिखू : 60

हमरा सभमेसँ अधिकांश लोक एहि बातसँ सहमत होएताह जे विश्वसनीय होएब प्रशंसनीय अछि। हम अपन परिवारक प्रति, मित्रक प्रति तथा अपना देशक प्रति विश्वसनीयताक अनुशंसा करैत छी। वास्तवमे एहि सभ व्यक्तिगत लोक तथा समूहक प्रति हमरा वफ़ादार होएबाको चाही जकरा प्रति हम आभारी होइत छी। जखन हम विश्वासक गप्प करैत छी त' हमर अभिप्राय ई होइत अछि जे जखन ओ कठिनाईमे अथवा कोनो विपदामे हो त' हम ओकर सहायताक लेल प्रस्तुत रहियैक। संगहि प्रतिक्षण हम ओकर भलाईमे अभिरुचि रखियैक।

आम तरहेँ ई हो स्पष्ट रूपसँ पाओल जाइत अछि जे कियो व्यक्ति विवश तखन होइत अछि जखन ओ अपन माता-पिताक प्रति उदासीन रहैत अछि अथवा ओ अपना देशक सेनाक विरुद्ध विद्रोह करैत अछि आ अपन देशक लोककेँ अन्धाधुन मरघट धरि पहुँचबैत अछि। एहि प्रकारक लोककेँ हम अधिकांशतः अनुमोदित नहि करैत छी।

मुदा, अनेकों बेर एहन स्थिति उत्पन्न भए जाइत छैक जखन एहन निर्णय करब कठिन भए भए जाइत छैक जे के विश्वासी अछि आ के कृतघ्न। एक चतुर बच्चा अपन माता-पिताकेँ शिक्षा छोड़ि कए धन कमएवाक आग्रहक विरोध कए सकैत अछि। ओकर ई विश्वास छैक जे ओ अपन शिक्षाकेँ किछु आर वर्ष धरि चलबैत भविष्यमे अपन माता-पिताकेँ आर अधिक नीक जकाँ किछु वापस दए सकैत अछि। जँ ओ अपन शिक्षाकेँ स्थगित कए दैत अछि त' ओकर प्रतिभा विनष्ट भए जएतैक आ ओकर लाभ ककरो नहि भेट सकैत अछि।

किछु अपतपनीय लोकेँ एहि प्रकारक निर्णय लेमय वला लड़का-लड़कीक निन्दा करताह। मुदा आमतरहेँ एहि प्रकारक बच्चा यदि कर्त्तव्यनिष्ठ एवं संवेदनशील हो त' ओकर सहायता करबाक चाही आ ओकरा प्रोत्साहितो कएल जएबाक चाही, नहि कि ओकर आलोचने कएल जएबाक चाही। दोसर दिस किछु विशिष्ट परिस्थितिमे जँ कियो बच्चा अपन गरीब माता-पिताक सहायता सम्बन्धी आग्रहकेँ ठोकरा दैत अछि त' ओकरा कृतघ्न बुझल जाइत छैक। जँ ओ भविष्यमे सफलता प्राप्त करैत अछि त ओ अपन युवावस्थाक कृतघ्नता पर प्रायश्चित करैत अछि।

कखनो काल कए ई समस्या तखन गम्भीर भए जाइत अछि जखन कोनो व्यक्तिकेँ अपन देशक सरकारसँ जोड़ि कए एहि सम्बन्धमे देखल जाइत अछि। अपना देशमे गम्भीरता आ दायित्वक निर्वहनक संग रहए वला लोकक ओ समूह, जे अपना देशकेँ प्रसन्न एवं समृद्ध देखए चाहैत अछि। कखनो कालक सरकार विरुद्ध ई सोचिकए कए विद्रोह कए दैत अछि जे ओ सरकार निकम्मा अछि। ओकरा लग ओहि सरकारकेँ खसैबाक अतिरिक्त कोनो अन्य विकल्पो नहि छैक। एहेन लोककेँ सरकार तत्काल विद्रोही आ प्रपंची घोषित कए दैत छैक। भए सकैत अछि जे ओ विद्रोही हो, मुदा ओकरा प्रपंचक कहब उचित नहि लगैत अछि। भए सकैत अछि जे ओ समूह अपन देशवासीक प्रति अधिक विश्वासी हो, संगहिं ई हो जे ओ सरकारक प्रति विश्वासी हो।

दुर्भाग्यसँ ता धरि ई कहब बहुत कठिन अछि कि ओहि समूहक विद्रोह देशक प्रति विश्वास कारणेँ प्रेरित हो अथवा ओकर निजी स्वार्थक कारणेँ। जखन कि ओ विद्रोह सफल नहि भए जाए। तखन ई प्रश्न उठैत अछि कि जा धरि विद्रोह सफल भए जाए, आ नव सरकार नहि बनाली, त' कि ओ ई स्वीकार कए लेताह जे देशक समस्त जनसंख्या आ सभ राजनीतिक शत्रुओक किछु अधिकार अवश्य छैक, जेना अपन मतक पूर्ण आजादीसँ प्रस्तुत करबाक अधिकार आ लोकप्रिय सहमति जुटएबाक प्रयत्नक अधिकार अथवा ओ समूह जे अपन शक्तिक उपयोग राजनीतिक शत्रुकेँ समाप्त करवामे कए रहल छथि। जँ ओ पहिल आचरण कए रहल छथि त' बुझू जे ओ अपन देशक प्रति पूर्ण विश्वासी छथि; नहि कि ओ अपन समूहकेँ लाभक प्रति विश्वासी छथि आ जँ ओ दोसर प्रकारक आचरण कए रहल छथि त' हमरा लोकनिकेँ ई बूझक चाही कि ओ जाहि सरकारकेँ खसा कए आयल छथि, ताहूसँ अधिक विश्वास देशक प्रति ओहो नहि कए रहल छथि। ई बोध हमरा लोकनिकेँ अत्यधिक विलम्बसँ होइत अछि।

4. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अंग्रेजीमे अनुवाद करू : 20

एकटा अमीर शेख जखन अपन जहाजमे यात्रा कए रहल छल, तखने खूब भयंकर तूफ़ान उठि गेलैक। जहाज पर एकटा दास (Slave) जे पहिने समुद्री यात्रा नहि कएने छल से डेराकए आ भयभीत भए कए जोर-जोरसँ कानए लागल। ओ कनेक काल धरि कनैत रहल ओकरा कियो चुप नहि करौलकैक। क्रोधित होइत ओ अमीर शेख बाजल—''की कियो एहिठाम नहि अछि जे एहि नीच-कायरकेँ चुप कए सकत?''

एकटा दार्शनिक सेहो ओहि जहाज पर यात्रा कए रहल छल। ओ अमीरसँ बाजल—''हम एहि आदमीकेँ चुप करा सकैत छी। महोदय, अहाँ हमरा एहि बातक अनुमति दिअ कि हम जे चाही से एकरा संग कए सकैत छी।'' अमीर बाजल—''अपनेकेँ अनुमति देल जाइत अछि, अहाँ जे चाही, करी।''

दार्शनिक किछु नाविककेँ बजौलनि आ हुनका लोकनिकेँ आदेश देलनि कि एहि गुलामकेँ समुद्रमे फेक देल जाय। नाविक लोकनि एहिना कएलनि। निरुपाय भए ओ गरीब आदमी भयवश चिकरैत अपन हाथ-पैर तेजीसँ चलाएब आरम्भ क' देलक। मुदा किछुए कालमे दार्शनिक नाविक लोकनिकेँ ई आदेश देलनि जे एहि गुलाम (दास)-केँ जहाज पर वापस आनि लेल जाय। जहाज पर अबैत देरी पस्त आ डेराएल गुलाम एकदम चुप भए गेल। अमीर एहि आकस्मिक परिवर्त्तन पर चकित भए गेल। ओ दार्शनिकसँ एकर कारण पुछलक। दार्शनिक बाजल—''हम कखनो ई नहि बुझैत छी कि हम कोन स्थितिमे ठीक-ठाक छी जखन कि हम कोनो बत्तर स्थितिमे नहि पहुँचि जाइत छी।''

20

5. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू :

Man has always been fascinated by dreams. He has always tried to find explanations for his dreams. Perhaps dreams tell us about the future or the past, perhaps they tell us about our deepest fears and hopes. I don't know. Today, I want to give you a completely different explanation. But before I do so, I must give you one or two facts about dreams. First of all, everybody dreams. You often hear people say, 'I never dream', when they mean, 'I can never remember my dreams'. When we dream, our eyes move rapidly in our sleep as if we were watching a moving picture, following it with our eyes. This movement is called REM, that is Rapid Eye Movement. REM sleep is the sleep that matters. Experiments have proved that if we wake people throughout the night during REM, they will feel exhausted the next day. But they won't feel tired at all if we take them at times when they are not dreaming. So the lesson is clear : it is dreaming that really refreshes us, not just sleep. We always dream more if we have had to do without sleep for any length of time.

If that is the case, how can we explain it? I think the best parallel I can draw is with computers. After all, a computer is a very primitive sort of brain. To make a computer work, we give it a programme. When it is working, we can say it is 'awake'. If ever we want to change the programme, that is to change the information we put into the computer, what do we do? Well, we have to stop the computer and put in a new programme or change the old programme.

2×5=10

6. *(a)* निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू :

(i) झण्डा

(ii) दुर्गा

(iii) भ्रमर

(iv) वायु

(v) पार्वती

2×5=10

(b) निंम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू :

(i) इन्द्रिय पर विजय प्राप्त कयनिहार

(ii) एक घर मात्र

(iii) व्याकरण शास्त्रक जाननिहार

(iv) एक-एक क्षण कय

(v) जे मोक्ष चाहय

(c) निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) ऐश्वर्य

(ii) वाद

(iii) घरैया

(iv) घात

(v) गुप्त

(d) निम्नलिखित शब्द-युग्ममे भेद स्पष्ट करू : 2×5=10

(i) लाश-लास

(ii) बाँझ-बाँझी

(iii) नामि-नामी

(iv) पातर-पाँतर

(v) शंकर-संकर

★★★

CS (MAIN) Exam : 2017

STH–C–MTLI

मैथिली

(अनिवार्य)

समय : 3 घंटा

पूर्णांक : 300

प्रश्नपत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व देल गेल निर्देशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू

सभ प्रश्न अनिवार्य अछि।

प्रत्येक प्रश्न/भागक अंक ओकरा सामने अंकित अछि।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखू, जाधरि कि प्रश्नमे कोनो दोसर निर्देश नहि हो।

प्रश्नमे शब्दक संख्याक ध्यान राखू, अधिक वा कम शब्दमे उत्तर लिखला पर अंक काटल जा सकैत अछि।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिकामे रिक्त छोड़ल स्थानकेँ स्पष्ट रूपसँ अवश्य काटि दी।

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

1. निम्नलिखित कोनो **एक** विषय पर *600* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

(a) तकनीकक अत्यधिक प्रयोगसँ उत्पन्न खतरा

(b) धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्रक शक्ति अछि

(c) नोटबन्दीसँ भारतीय अर्थव्यवस्थाकेँ दीर्घअवधिमे होबयबला लाभ

(d) आयुर्वेद-पद्धतिक प्रति पाश्चात्य देशक आकर्षण

2. निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर अन्तमे देल गेल प्रश्नक सटीक एवं स्पष्ट उत्तर अपना शब्दमे लिखू : 12×5=60

मस्तिष्कक सर्वोत्तम भोजन पुस्तक अछि। एक चिन्तकक कहब अछि जे मानवजाति जे किछु सोचलक अछि, कयलक अछि आओर प्राप्त कयलक अछि, ओ पुस्तकमे सुरक्षित अछि। मानव-सभ्यता एवं संस्कृतिक विकासक सम्पूर्ण श्रेय पुस्तककेँ छैक। पुस्तकक महत्त्व आ मूल्य बेजोड़ अछि। पुस्तक अन्तःकरणकेँ दीप्तिमान करैत अछि। नीक पुस्तक मनुष्यकेँ पशुत्वसँ देवत्वक दिशि अग्रसर करैत अछि, ओकर सात्विक वृत्तिकेँ जगाकय पथच्युत होयबासँ वंचित करैत अछि आओर मनुष्य, समाज एवं राष्ट्रकेँ मार्गदर्शन करैत अछि। पुस्तकक हमरा मोन आ मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव पड़ैत छैक एवं ओ प्रेरणादायक होइत अछि।

पुस्तक मनोरंजनक क्षेत्रमे सेहो मानवक सेवा करैत अछि। एतय मनोरंजनक अभिप्राय कोनो हास-विलाससँ नहि अछि अपितु मनोरंजनक अर्थ व्यापक अछि। जे पुस्तक पाठककेँ मोहि लैत अछि आ ओकर मोनकेँ रमा दैत अछि ओ यथार्थ अर्थमे मनोरंजक पुस्तक अछि। जे पुस्तक पाठककेँ जतेक दूर धरि ल' जाइत अछि ओ ओतबे आह्लादकारी होइत अछि। ओना हलुको-फलुको साहित्यक महत्त्व कम नहि अछि। एहन साहित्य मनुष्यक तनावकेँ बहुत अंशमे कम क' दैत अछि एवं ओकर उदास मोनकेँ प्रफुल्लित क' दैत अछि।

नीक पुस्तक मनुष्यजातिकेँ ज्ञान आओर मनोरंजन प्रदान करैत अछि। विज्ञान, वाणिज्य एवं कानूनक पुस्तक मानवक ज्ञानकेँ वृद्धि करैत अछि। एकरा पढ़िकय मनुष्य अपना भीतरमे आन्तरिक शक्तिक अनुभव करैत अछि। सत्य बात तँ ई छैक जे पुस्तक हमर यथार्थ मार्गदर्शक अछि। ओ हमरा नव-नव क्षेत्रसभक आ गूढ़ रहस्यक तँ ज्ञान करबितहिं अछि संगहि चिन्तन आओर मननक लेल सेहो बाध्य करैत अछि। पुस्तक मनुष्यक असमंजसकेँ समाप्त कय दृढ़ संकल्प जगबैत अछि। गाँधीजी 'गीता'केँ मायकेर संज्ञा दैत छलाह कारण ओ हुनका प्रत्येक कठिन परिस्थितिमे मार्गदर्शन करैत छल। पुस्तक एहन मार्गदर्शक अछि जे नेतँ दंड दैत अछि, ने तमसाइत अछि आ ने बदलामे किछु मँगैत अछि मुदा संगहि अपन अमृत-तत्त्वक वितरण करबामे कोनो कंजूसी नहि करैत अछि।

पुस्तक मनुष्यकेँ यथार्थ सुख आ विश्रान्ति प्रदान करैत अछि। पुस्तक-प्रेमी सबसँ अधिक सुखी होइत अछि। ओ जीवनमे कखनो रिक्तताक अनुभव नहि करैत अछि। पुस्तक पर पूरा भरोस राखल जा सकैत अछि।

विचारक संग्राममे पुस्तके अस्त्र होइत अछि। पुस्तकमे सन्निहित विचार सम्पूर्ण समाजकेँ बदलि देबामे समर्थ होइछ। आइ-काल्हुक संसार विचारेक संसार अछि। समाजमे जखन कोनो परिवर्त्तन अबैत छैक अथवा क्रान्ति होइत छैक, ओकर जड़िमे कोनो ने कोनो विचारधारा होइत छैक। श्रेष्ठ पुस्तक समाजमे नवचेतनाक संचार करैत अछि आ समाजमे जन-जागरण अनबामे अपन महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत अछि। पुस्तक पढ़लासँ मनुष्यक दृष्टिकोण व्यापक भ' जाइत अछि एवं ओकरामे उदात्त-भावना आबि जाइत छैक।

पुस्तक एहन अमरनिधि अछि जे पछिला पीढ़ीक अनुभवकेँ अविकल रूपमे अगिला पीढ़ी तक पहुँचा दैत अछि। एहिमे सन्निहित ज्ञानकेँ केओ विनष्ट नहि कय सकैछ। संक्षेपमे पुस्तकक महत्त्व अतुलनीय अछि।

(a) पुस्तककेँ बेजोड़ किएक मानल गेल अछि?

(b) एहि कथनसँ लेखकक की अभिप्राय अछि जे 'मनोरंजनक अर्थ व्यापक अछि'?

(c) पुस्तक हमर यथार्थ मार्गदर्शक किएक अछि?

(d) गाँधीजी 'गीता'केँ मायकेर संज्ञा किएक दैत छलाह?

(e) पुस्तक समाजमे नवचेतनाक संचार कोना करैत अछि?

3. निम्नलिखित अनुच्छेदक सारांश लगभग एक-तेहाइ शब्दमे लिखू। एकर शीर्षकक उल्लेख करब आवश्यक नहि अछि। सारांश अपनहि शब्दमे लिखू : 60

श्रम संसारमे सफलता प्राप्त करबाक महत्त्वपूर्ण साधन अछि। श्रमे कयलासँ हम अपन आकांक्षासभकेँ पूर्ण कय सकैत छी। संसार कर्मक्षेत्र अछि अतएव कर्म कयनाइ सयह हमरासभक धर्म अछि। कोनो कार्यमे हमरा तखने सफलता भेटि सकैत अछि जखन हम परिश्रम करी।

श्रम सयह जीवनकेँ गति प्रदान करैत अछि। यदि हम श्रमक उपेक्षा करैत छी तँ हमर जीवनक गति रुकि जाइत अछि। अकर्मण्यता हमरा एना गछारि लैत अछि जे ओकर फन्दसँ निकलनाइ कठिन भ' जाइत अछि जखन परिश्रमी व्यक्ति सभ प्रकारक कठिनताक सामना कय आगाँ बढ़ैछ तँ चतुर्दिक् सफलता प्राप्त करैत अछि। ओ भाग्यक आश्रय नहि लैत अछि अपितु निरन्तर पुरुषार्थ करैत अछि। प्रयास कयलो पर यदि परिश्रमी व्यक्तिकेँ सफलता नहि भेटैत छैक तँ ओ निराश नहि होइत अछि। ओ ई जनबाक हेतु सचेष्ट रहैत अछि जे कार्यमे सफलता किएक नहि भेटल अर्थात् ओ अपन त्रुटिक मार्जन करैत अछि जाहिसँ सफलता ओकरा आलिंगन कय सकैक।

एहि संसारमे हमरा डेग-डेग पर संघर्ष कय अपन मार्ग स्वयं प्रशस्त करय पड़ैत अछि। हम कतबो शक्तिशाली आ साधन-सम्पन्न किएक ने होइ यदि परिश्रम करबासँ देहकेँ चोरबैत छी तँ मात्र साधन-सम्पन्नता हमरा लक्ष्य-प्राप्तिक दिशामे नहि ल' जा सकैत अछि। संसारमे जतेक महापुरुष भेलाह अछि हुनक आशातीत सफलताक जड़िमे श्रम आ शक्तिक बड़ योगदान रहल अछि।

हमर समाजमे बहुत लोक नियतिवादी अथवा भाग्यवादी छथि। एहन लोक समाजक प्रगतिमे बाधक छथि। आइ तक कोनो भाग्यवादी संसारमे कोनो महान् कार्य नहि कयलनि। बड़का-बड़का खोज, आविष्कार एवं निर्माण परिश्रमे द्वारा संभव भ' सकल अछि। हमर साधन आ प्रतिभा हमरा केवल प्रेरित करैत अछि, हमरा पथ-प्रदर्शन करैत अछि मुदा लक्ष्य तक हम मात्र श्रमक माध्यमेसँ पहुँचैत छी।

श्रम कयलासँ यश आ वैभव दुनूक प्राप्ति होइत अछि। जखन हम अपन कर्त्तव्यक पालन करबाक हेतु श्रम करैत छी तँ हमरा मोनकेँ एक अद्भुत आनन्द भेटैत छैक। अन्तःकरणक सम्पूर्ण पाप धोआ जाइत छैक आ संतोषक अनुभव होइत छैक। परिश्रमी व्यक्तिक लेल कोनो कर्मकांड महत्त्वपूर्ण नहि, अपन कर्त्तव्यपथ पर चलैत रहब सयह ओकर साधना अछि। जखन कोनो कृषक दिनभरि तिक्ख रौदमे अपन खेतमे परिश्रम करैत अछि आ संध्याकाल अपन खोपड़ीमे आनन्दमग्न भ' क' लोकगीत गबैत अछि, तँ ओहि समयमे ओकर स्वर-वितानमे दिव्य संगीतक सृष्टि होइत अछि।

शारीरिक श्रमसँ मनुष्यकेँ संतोष तँ भेंटितहिं छैक, ओकर शरीर सेहो स्वस्थ रहैत छैक। आइ-काल्हि शारीरिक श्रमक अभावक कारणेसँ मनुष्य नाना प्रकारक व्याधिसँ ग्रस्त भेल अछि। शारीरिक श्रम प्रत्येक व्यक्तिक लेल आवश्यक अछि। कहबाक आवश्यकता नहि जे शारीरिक श्रम करयबला लोक दीर्घजीवी होइत छथि। ई कहलो जाइत छैक जे स्वस्थ शरीरेमे स्वस्थ मस्तिष्कक वास रहैत छैक। ओ गंभीरातिगंभीर तथ्य सेहो सहजरूपमे ग्रहण कय लैत अछि। विषम परिस्थितिमे सेहो ओ विचलित नहि होइत अछि अपितु साहससँ ओकर सामना करैत अछि। ओ प्रत्येक समस्याक समाधान ताकि लैत अछि। मानसिक श्रमक महत्त्वकेँ बुझिये कय हमरालोकनिक ऋषि चिन्तनमे लीन रहैत छलाह एवं लोककल्याणकेँ दृष्टिमे राखि विचारशील रहैत छलाह।

श्रमक एक विशेष अर्थ सेहो छैक, एहि अर्थमे श्रम उत्पादक सेहो अछि अनुत्पादक सेहो। कृषक परिश्रमसँ खेती करैत अछि, ई उत्पादक श्रमक श्रेणीमे आयत। खेल खेलयबामे अथवा व्यायाम करबामे जे परिश्रम होइत छैक ओ अनुत्पादक श्रम कहल जायत। एहि श्रमक सेहो अपन महत्त्व छैक। गाँधीजीक कहब रहनि जे जखन श्रमे करबाक अछि तखन उत्पादक श्रम सयह किएक नहि कयल जाय। ओना गाँधीजी सभ प्रकारक श्रममे आनन्दक अनुभव करैत छलाह।

जाहि राष्ट्रक लोक परिश्रमी होइत अछि ओएह देश उन्नति करैत अछि। जापान आओर जर्मनीतँ विश्वयुद्धक विभीषिकाक असह्य कष्ट कटलाक बादो अपन पुनः निर्माण जे कय लेलक, एकर कारण ओहि ठामक लोकक परिश्रमे छैक।

निष्कर्षतः ई कहल जा सकैत अछि जे श्रम सयह जीवनक सुख अछि एवं सृजनक मूलमंत्र सेहो अछि।

4. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अंग्रेजीमे अनुवाद करू : 20

सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन सन् 1919 ई० मे इलाहाबाद नगरपालिकाक अध्यक्षक कार्यभार ग्रहण कयलनि। ई हुनका लेल कठिन परीक्षा छल कारण ओ नगरपालिकाक अध्यक्ष तँ छलाह मुदा अंग्रेजक एहन प्रभाव आ रोब छलैक जे सामान्य भारतीय हेतु ओहि मध्य काज करब दुरुह छलैक। कार्यभार ग्रहण करितहिं टंडनजी देखलनि जे छावनीक फौजीलोकनि पानिक उपयोग करैत छथि मुदा कर नहि दैत छथि। ओ छावनीक फौजीलोकनिकेँ ई सूचना प्रेषित कयलनि यदि एक मासक भीतर कर नहि जमा कयल गेल तँ पानिक आपूर्त्ति बन्द क' देल जायत।

एहि सूचनासँ फौजी छावनी, सम्पूर्ण शहर आ नगरपालिकाक कार्यालयमे हहारो मचि गेलैक। स्थानीय अखबारबला सभ एहि आदेशकेँ प्रमुखताक संग छपलक। छावनीक पानिक आपूर्त्तिक बन्द करबाक अन्तिम दिन कतिपय फौजी अधिकारीलोकनि नगरपालिकाक कार्यालयमे पहुँचलाह आ ओहिमेसँ वरिष्ठ अधिकारी टंडनजीकेँ कहलकनि जे अहाँ छावनीक जलापूर्त्ति बन्द नहि कय सकैत छी। टंडनजी शांत भावसँ कहलथिन यदि आइ कर जमा नहि कयल गेल तँ काल्हि पानिक कनेक्सन काटि देल जायत।

अधिकारी क्रोधावेशमे हल्ला-गुल्ला कयलनि मुदा टंडनजी लेल धनसन। अन्ततः सभ फौजी अधिकारी ओतयसँ चल गेलाह। कार्यालयमे सनसनी पसरि गेल। टंडनजीक धीरता आ दृढ़ता देखि सभ अचम्भित छलाह।

दोसरे दिन छावनीक अंग्रेज अधिकारी कर जमा कय देलनि।

5. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

In ancient times in most civilized countries, for example in Egypt, Iraq, India, China and in the Roman Empire, many great irrigation works were constructed. In very hot countries, water is even carried in underground channels to prevent it from being evaporated by the sun's heat. In modern times, great dams have been built across rivers and these are used for more than one purpose, hence they are called multipurpose undertakings. Firstly, such dams help to prevent floods, by controlling the amount of water which rushes down a river in the rainy season. This also prevents an enormous amount of damage and loss to farmers. Secondly, by storing up great quantities of water in the artificial lakes behind the dams, irrigation can be provided for many acres of land in the dry season, so that crops can be grown where none would have grown before. Thirdly, the people in the towns and cities in the neighbourhood can be certain of getting a sufficient supply of water for drinking and other purposes, even in the driest weather. Fourthly, the water stored up behind the dams is made to generate electric power by letting it run through turbines.

6. *(a)* निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू : 2×5=10

(i) सूर्य

(ii) घोड़ा

(iii) महादेव

(iv) राति

(v) किरण

(b) निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) जे विषय विचारलेल छोड़ि देल गेल हो

(ii) जे कहल नहि जा सकय

(iii) जे कहियो नहि भेल हो

(iv) जे सभ ठाम व्यापक हो

(v) जकर उल्लेख कयल जा सकय

(c) निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) अतिवृष्टि

(ii) अनुराग

(iii) बहिरंग

(iv) आगम

(v) संकल्प

(*d*) निम्नलिखित शब्द-युग्मme भेद स्पष्ट करू : 2×5=10

(*i*) अमर-अमार

(*ii*) कचरब-कुचरब

(*iii*) कनखा-कनखी

(*iv*) गर-गढ़

(*v*) कोस-कोष

★ ★ ★

SDF–C–MTL

मैथिली

(अनिवार्य)

समय : तीन घण्टा

पूर्णांक : 300

प्रश्नपत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व देल गेल निर्देशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू

सभ प्रश्न अनिवार्य अछि।

प्रत्येक प्रश्न/भागक अंक ओकरा सामने अंकित अछि।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखू, जाधरि कि प्रश्नमे कोनो दोसर निर्देश नहि हो।

प्रश्नमे शब्दक संख्याक ध्यान राखू, अधिक वा कम शब्दमे उत्तर लिखला पर अंक काटल जा सकैत अछि।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिकामे रिक्त छोड़ल स्थानकेँ स्पष्ट रूपसँ अवश्य काटि दी।

MAITHILI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

1. निम्नलिखित कोनो **एक** विषय पर *600* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

(*a*) सर्जनात्मकताक पोषण करयवाला शिक्षाक आवश्यकता

(*b*) भारतमे वन्यजीवनक संरक्षणक चुनौती सब

(*c*) किशोर मानस पर फिल्मक प्रभाव

(*d*) दिव्यांग सबहक सशक्तीकरण

2. निम्नलिखित गद्यांशकें ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर आधार पर अन्तमे देल गेल प्रश्नक सटीक एवं स्पष्ट उत्तर अपना शब्दमे लिखू :

12×5=60

कतेको हजारवर्ष पूर्व तक मनुक्ख धरती पर शिकारी मात्र छल। नवपाषाण युग तक ओ कृषि हेतु बसब प्रारम्भ नहि कयने छल। दूरदराजक क्षेत्रमे भ्रमण कयने बिना ओ जमीनक जोताय कय के भोजनक आपूर्ति बढ़बयमे सक्षम भेल आओर लगातार कृषिकें उन्नति करयमे लागल रहल। आइ धरि पहिनेक तुलनामे ओ अधिक आ नीक भू-उपजा लयमे सक्षम रहल अछि। मुदा जतय तक समुद्रक सम्बन्ध अछि, ओ आइ धरि सेहो शिकारी मात्र अछि। ओ माछ आ दोसर-दोसर जल-प्राणीके पकड़ैत अछि मुदा ओकर सतत वृद्धि आ आपूर्तिक हेतु ओ प्रयत्न त' सीमित मात्र कय रहल अछि। अखन तक ओकरा लोकनिकें जलीय शिकारसँ अत्यधिक पौष्टिक प्रोटीनक प्राप्ति भेल छैक। ई भू-कृषिसँ प्राप्त प्रोटीनक आपूर्तिक पूरक अछि। मुदा दुनियाक बढ़ैत आबादीक कारणें मनुष्यकें शीघ्रहि समुद्रसँ एतेक बेसी प्रोटीनक आवश्यकता पड़ि सकैत छैक जाहिसँ एतेक भारी मात्रामे सदैव आपूर्ति सेहो कम पड़ि सकैत छैक, खतरामे पड़ि सकैत छैक। ताहि कारणें मनुक्खकें समुद्री खेतीक माध्यमसँ पर्याप्त आपूर्ति प्राप्त करबाक हेतु बहुत प्रयास करय पड़तैक।

लघु स्तर पर माछ पोसब पोखरि ओ झीलमे पहिनहिसँ सफलतापूर्वक कयल जा चुकल अछि। विशेषरूपसँ जलविद्युत् परियोजना सबहक हेतु बान्हक (बाँध) निर्माण द्वारा बनाओल गेल कृत्रिम झील सबमे ई कार्य कयल गेल छैक। पीबय (मीठ) वाला पानिक पोखरिमे माछक पैदावारसँ प्रोटीनक आपूर्तिमे पहिनेसँ अधिक वृद्धि भेल छैक। ओहिमेसँ थोड़ेककें विकास ग्रामीण समुदाय सबमे कृषि-अधिकारी लोकनिक मददि ओ पर्यवेक्षणसँ भए रहल छैक।

एक बेर माछक पोखरिकें (तालाब) परिपक्व (युवा) माछसँ समृद्ध कय देला पर माछ सबहक स्वस्थ वातावरणमे विकास संभव भए पबैत छैक ओ ओकर भोजनक पर्याप्त आपूर्ति सेहो भए जाइत छैक। पानिमे भारी संख्यामे तैरैत प्लवक—सूक्ष्मजीव ओ वनस्पति—जलीय प्राणीक मुख्य खाद्य होइत छैक। छोटका माछ सब एकरा खाइत अछि पश्चात् अपनासँ पैघ माछक भोजन बनि जाएत अछि। प्लवक पानिमे विद्यमान खनिज सबसँ विकसित होइत अछि तें प्लवकक (Plankton) मात्राकें पानिमे अतिरिक्त उर्वरक द्वारा बढ़ाओल जा सकैत अछि।

यद्यपि समुद्री खेती व्यवहारिक ओ लाभदायक दुनू भए सकैत अछि, मुदा एहिसँ पहिने कइएकटा समस्याकें हल करय पड़त। उदाहरणस्वरूप समुद्रक ओहि भागमे खाध (उर्वरक) देब उपयोगी नहि होएत, जतय कि समुद्रक तेज धार ओकरा मीलक-मील दूर अनुत्पादक पानिमे लय जाइत छैक। यदि माछ पोसयवाला लोक खाध (उर्वरक)कें एक निश्चित स्थान (क्षेत्र) तक सीमित कय सकय, तखनहुँ ओकरा 'अपन क्षेत्रहि'तक खाध-पोषित माछकें राखि सकवाक तरीका ताकय

पड़तैक। माछ पोसयवाला व्यक्तिकेँ अपन खर्चक अधिकतम लाभ लेबाक हेतु माछकेँ भोजन देवाक एहन तरीका ताकय पड़तैक, जाहिसँ ओ भोजन ओहि माछकेँ भेटैक जकरा ओ खुआबै चाहैत अछि। ओकरा अखाद्य जलजीव सबकेँ हटावैक (निराई) हेतु तरीका सोचय पड़तैक, जाहिसँ कि ओ ओकर माछक भोजन साझी नहि कऽ सकय।

वस्तुतः एहि समस्या सबकेँ दूर करब बहुत आसान नहि हैत—विशेषकय समुद्रक विशालताकेँ देखैत, जे धरतीक सतहक लगभग तीन-चौथाई भागकेँ छेकने छैक। समुद्रक पानि पोखरिसभ ओ झील सभक तुलनामे निरन्तर गतिमान रहैत छैक। प्रायः समस्या सबकेँ आस्ते-आस्ते (धीरे-धीरे) हल (निदान) कएल जेतैक। निकट भविष्यमे मनुक्ख (मनुष्य) महाद्वीपक लग उत्थर (उथले) अप-तटीय पानिमे लघु स्तर पर माछ-पालन शुरू कय सकैत अछि। जतय ओ एहन माछक संग्रहण कय सकैत अछि जकर उत्पादन ओ करय चाहैत अछि। अपन माछक भोजनकेँ खा जायवाला अवांछनीय जलजीवकेँ हटा सकैत अछि। आवश्यकताक अनुसार ओहि क्षेत्रमे खाधक (उर्वरकक) उपयोग कय सकैत अछि आ अंततः समय-समय पर परिपक्व माछक फसिलकेँ एकत्रित कय सकैत अछि।

(a) शिकारक तुलनामे कृषि कोन प्रकारेँ नीक छैक तथा भविष्यमे समुद्री खेती कियैक आवश्यक हेतैक?

(b) माछ-पालनमे खाधक (उर्वरकक) की भूमिका अछि?

(c) समुद्रक कोन हिस्सामे माछक पालन प्रारम्भ कएल जा सकैत अछि?

(d) 'निराई'सँ आहाँ की बूझैत छी?

(e) भविष्यमे समुद्री खेतीक समस्याक समाधान कोना कएल जा सकैत अछि?

3. निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण मात्र एक-तेहाइ शब्दमे लिखू। शीर्षकक उल्लेख करवाक प्रयोजन नहि अछि। संक्षेपण अपन भाषामे लिखू : 60

भारतक विशाल आबादी ग्रामीण अछि। हुनक सामाजिक-आर्थिक स्थिति ओ जीवनक गुणवत्तामे सुधारक हेतु ग्रामीण बुनियादी ढाँचामे सर्वांगीण विकासक आवश्यकता अछि। जाहिसँ समान ओ समावेशी विकासक दीर्घपोषित उद्देश्य सबकेँ प्राप्त कयल जा सकय। ग्रामीण बुनियादी ढाँचाक एक महत्त्वपूर्ण घटक पेयजल व्यवस्था अछि। पानि निस्सन्देह एक महत्त्वपूर्ण लोकहित अछि। नागरिकक माँगकेँ पूरा करक हेतु पानिक बुनियादी ढाँचाक निर्माण हेतु सार्वजनिक निवेशमे वृद्धि करवाक आवश्यकता छैक। एकटा जल-सुरक्षित राष्ट्र नहि मात्र अपन नागरिककेँ स्वच्छ ओ सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराओत, अपितु एकटा स्वस्थ ओ आर्थिक रूपसँ उत्पादक समाजकेँ सेहो सुनिश्चित करत। यद्यपि भारतक विशाल ग्रामीण आबादीक पीबैक पानिक आवश्यकताकेँ पूरा करब एकटा कठिन कार्य अछि, जकर मुख्य कारण स्थापित पेयजल आपूर्तिक क्षमतामे कमी, सामाजिक-आर्थिक विकासक निम्न स्तर, शिक्षा ओ पानिक उपयोग आ उपभोगक विषयमे जानकारीक अभाव अछि।

संविधानक अनुच्छेद 47 राज्यक सार्वजनिक स्वास्थ्यकेँ नीक बनएवाक हेतु सुरक्षित पेयजल उपलब्ध करैवाक आदेश दैत छैक। स्वच्छ पेयजलक व्यवस्था, बीमारी आओर घातक घटनामे कमी आनैत अछि तथा जीवन-स्तरकेँ नीक बनएवामे मददि करैत अछि। देशक करोड़ोंक आबादीक समग्र स्वास्थ्यमे सुधारक हेतु स्वच्छ ओ सुरक्षित पेयजल एवं स्वच्छताक प्रावधान महत्त्वपूर्ण अछि।

निरन्तर विकास पानिक उपलब्धता ओ स्वच्छता हेतु निरन्तर प्रबन्धन सुनिश्चित करवाक आवश्यकता पर बल दैत छैक। सुरक्षित पेयजल तक पहुँचक मामलामे एहिसँ इएह तात्पर्य निकलैत अछि कि 'किओ पाछू नहि छूटि जाय' जेकि एहि वर्ष 'विश्व जल दिवस'क थीम सेहो छल। 'विश्व जल दिवस' प्रति वर्ष 22 मार्चकेँ मनाओल जाइत अछि।

सरकार ग्रामीणक हेतु सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित करवाक हेतु ध्यान केन्द्रित कय रहल अछि। सरकार द्वारा समय-समय पर एहि क्षेत्रमे सोझाँ आबयवाला चुनौती सबसँ निपटवाक हेतु महत्त्वपूर्ण डेग सब उठाओल जा रहल अछि। ग्रामीण जल-आपूर्ति योजना सबहक क्रियान्वयनक हेतु अनुदान देवाक संग-संग क्रियान्वयन ओ रखरखावक तरीका (पहलू) एवं भूजल पुनर्भरण हेतु सेहो कारगर डेग उठाओल गेल अछि। किछु अन्य तरीकामे वर्षाजल संचयन सेहो छै जेकि बहुत महत्त्वपूर्ण डेग अछि एवं ग्रामीण क्षेत्रमे सतत रूपसँ सुरक्षित पेयजल आपूर्तिमे सहायक सिद्ध भए सकैत अछि।

ग्रामीण क्षेत्रमे कृत्रिम पुनर्भरण ओ वर्षाजल संचयन ढाँचाक निर्माण हेतु सरकार मास्टर प्लान पर कार्य कय रहल अछि। भारतमे एहन सफलताक खिस्सा सबहक भरमार अछि जेकि जल संचयनक हमर प्राचीन परंपरागत ज्ञान ओ विवेकक दिस आकर्षित करैत अछि।

2001 मे तमिलनाडु सरकार प्रत्येक परिवारक हेतु वर्षाजल संरक्षणक आधारभूत संरचना राखब अनिवार्य कय देलक। बैंगलोर ओ पुणे एहन नगरमे सेहो एहेन प्रयोग कएल गेल जतए आवास-समिति सब द्वारा वर्षाजल संचयन अपेक्षित अछि। दोसरो राज्य सबमे एहि प्रकारक प्रयास सब भेल।

भूजलक अति दोहन भारतवर्षमे एक मुख्य समस्या अछि। एकरा रोकवाक हेतु राज्य सरकार सब द्वारा नियामक तंत्रक आवश्यकता छैक। गम्भीर रूपसँ प्रभावित क्षेत्र सबमे अत्यधिक इनारक खोदाइ पर प्रतिबन्ध लागक चाही। पेयजलक आपूर्ति योजना सबकेँ प्रभावी बनएवाक हेतु पंचायती राज संस्था सबहक अधिक भागीदारीक आवश्यकता छैक। तत्काल पंचायती राज संस्थाक भूमिका अति न्यून अछि। ग्रामीण समुदाय, गैर-सरकारी संगठन एवं सरकारक सुविधादाता तथा सह-वित्तपोषकक रूपमे भागीदारी सफल रहल अछि, हमरा स्मरण राखक चाही कि ग्रामीण क्षेत्रमे पेयजलक उपलब्धता एवं पहुँचक दायरा बढ़ावैक हेतु हमरा ग्रामीण समुदायक सक्रिय सहयोगसँ पानिक न्यायसंगत संरक्षण ओ उपयोगक हेतु सब प्रकारक प्रयास करवाक आवश्यकता अछि।

समुदायक भागीदारी, संचालन एवं रखरखावक आर्थिक व्यवहारिकताकेँ बढ़वैत अछि। ई अन्तर्निहित समुदायकताक कारणेँ बेसी नीक रखरखाव ओ तैयार कएल गेल प्रणालीक जीवन कालकेँ सेहो बढ़वैत अछि। पीबैक पानिक स्रोत लग नहि मात्र स्वच्छता बना कय राखयमे समुदायक महत्त्वपूर्ण भूमिका छैक अपितु ओहि तरीका ओ साधनकेँ सेहो सुधारवाक छैक, जकरा द्वारा संग्रह, भंडारण ओ उपयोग करैत समय प्रदूषणसँ बचवाक हेतु पानि एकत्र कएल जाइत छैक।

ग्रामीण क्षेत्र सबमे एहि योजना सबहक प्रभावी कार्यान्वयन हेतु पंचायती राज संस्था सब, स्वयं सहायता समूह ओ सहकारी समिति सबहक माध्यमसँ समुदायक सक्रिय भागीदारीक माँग कयल जाइत छैक। ताकि 2030 तक 'हर घर जल'क लक्ष्यकें पूरा कयल जा सकय ओ दीर्घकालिक टिकाउ समाधानकें साकार कयल जा सकय।

4. निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अंग्रेजीमे अनुवाद करू : 20

जखन कोनो व्यक्ति अपना आपकें देखैत अछि त ओ अपना बारेमे गलत अनुमान लगा लैत अछि। ओ अपन उद्देश्य मात्रकें देखैत अछि। बेसीतर लोक नीक उद्देश्य लय के चलैत अछि आ मानि लैत छथि कि ओ जे कोनो कार्य कय रहल छथि तकर परिणाम नीक हेतैक। कोनो व्यक्तिक हेतु अपन कार्यक तटस्थ मूल्यांकन कठिन अछि। जे भए सकैत छैक ओ प्रायः होइत सेहो छैक कि ओकर नीक उद्देश्यमे विरोधाभास उत्पन्न भए जाइत छैक। बेसीतर लोक कार्य करबाक उद्देश्यसँ अबैत छथि आ अपन कार्य तेहन ढंगसँ करैत छथि जे हुनका सुविधाजनक लगैत छनि; आ साँझकें सन्तुष्टिक भावना नेने घर चल जाइत छथि। ओ अपन कार्यक मूल्यांकन नहि करैत छथि। ओ अपन उद्देश्यक मात्र मूल्यांकन करैत छथि। एहन मानल जाइत अछि कि कोनो व्यक्ति अपन कार्यकें समयक भीतर समाप्त करवाक इच्छा रखैत अछि आ यदि एहिमे विलम्ब होइत छैक त ई ओकर नियंत्रणक बाहरक गप होइत छैक। कार्यमे देरी करबाक हुनक कोनो इच्छा नहिं रहैत अछि। मुदा यदि ओकर कार्यक तरीका वा आलस्य देरीक कारण बनैत छैक त की ई ओ जानिकें नहि कएल गेलैक?

समस्या ई अछि जे हम प्रायः जीवनके संग संघर्ष करय के बदला एकर विश्लेषण करय लगैत छी। लोक अपन असफलतासँ किछु सिखवाक बदला या ओकर अनुभव लेबाक वनिस्पत, ओकर कारण एवं प्रभावक चीर-फाड़ करय लागैत छथि। कठिनाय एवं समस्याक माध्यमसँ भगवान हमरा बढ़वाक अवसर प्रदान करैत छथि। तें जखन आहाँक उम्मीद, सपना एवं लक्ष्य चूर-चूर भए गेल हो त' कारणक भीतर जाकए अनुसंधान करू। आहाँकें ओकर भीतर नुकायल कोनो नीक अवसर अवश्य भेटत।

लोकक कार्यकुशलता बढ़ावैक हेतु हुनका प्रेरित करब एवं हताशासँ उबरवाक हेतु प्रत्येक नेताक लेल बराबर एकटा चुनौती भरल कार्य होइत छैक। संगठन सबमे बदलाव आनयके मामलामे एकटा नेता स्वीकृति ओ प्रतिरोधक बीचक रास्ताक खोज करैत अछि।

5. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

Freedom has assuredly given us a new status and new opportunities. But it also implies that we should discard selfishness, laziness and all narrowness of outlook. Our freedom suggests toil and the creation of new values for old ones. We should so discipline ourselves as to be able to discharge our responsibilities satisfactorily. If there is any one thing that needs to be stressed, it is that we should put in action our full capacity, each one of us in productive effort—each one of us in his own

sphere, however, humble. Work, unceasing work, should now be our watchword. Work is wealth, and service is happiness. The greatest crime today is idleness. If we root out idleness, all our difficulties, including even conflicts, will gradually disappear. Whether as constable or high official of the state, whether as businessmen or industrialist, artisan or farmer, each one is discharging the obligation to the state, and making a contribution to the welfare of the country. Honest work is the anchor to which we should cling if we want to be saved from danger or difficulty. It is the fundamental law of progress.

6. *(a)* निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) अनुकूल

(ii) संकल्प

(iii) आगम

(iv) उत्कर्ष

(v) अतिवृष्टि

(b) निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू : 2×5=10

(i) सत्य बजनिहार

(ii) जे सब ठाम व्यापक हो

(iii) जे कम बाजय

(iv) जकर उल्लेख कयल जा सकय

(v) जे पालन करय

(c) निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू : 2×5=10

(i) धरती

(ii) सूर्य

(iii) महादेव

(iv) वृष्टि

(v) राति

(*d*) निम्नलिखित शब्द-युग्ममे भेद स्पष्ट करू : 2×5=10

(*i*) पातर-पाँतर

(*ii*) चालि-चाली

(*iii*) जड़-जर

(*iv*) चानि-चानी

(*v*) पुरान-पुराण

★ ★ ★

C·SCM)09

Sl. No. 87

D–DTN–J–NUA

MAITHILI

Paper—I

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Section—A

1. निम्नलिखित कोनो **तीन** पर टिप्पणी लिखू : 20×3=60

(क) भाषाक आकृतिमूलक वर्गीकरण

(ख) संस्कृत ओ मैथिलीक सम्बन्ध

(ग) मैथिलीक विविध बोली

(घ) मैथिली ओ भोजपुरी

2. मध्यकालीन मैथिली भाषाक स्वरूप विवेचन करू। 60

3. मैथिली क्रियापदक विशेषता विवेचन करू। 60

4. भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान निरूपित करू। 60

Section—B

5. निम्नलिखित कोनो **तीन** पर टिप्पणी लिखू : 20×3=60

(क) मैथिली साहित्यमे कृष्णकाव्य

(ख) नेपालक मैथिली नाटक

(ग) मैथिलीक लोक-साहित्य

(घ) कवीश्वर चन्दा झाक रामायण

6. विद्यापतिक बहुमुखी प्रतिभाक विवेचन करू। 60

7. मैथिली पत्रकारिताक विकास सँ परिचय कराउ। 60

8. आदिकालीन मैथिली साहित्यक अध्ययनक सामग्री पर प्रकाश दिअ। 60

★ ★ ★

C·S(M) 09

Sl. No. 198

D–DTN–J–NUB

MAITHILI

Paper—II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Section—A

1. निम्नलिखितमे सँ कोनो **तीन** अवतरणक सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत करैत ओहिमे सन्निहित भाव आ ओकर काव्यगत वैशिष्ट्यकें स्पष्ट करू (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क)

पुतना तरुअर काली नाग,
एत दिन से बड़ अजगुत लाग।
एहि बेरि संसए लाग बिसेखी,
कृष्णक जन्म अमानुष लेखी।
के ई थिकाह ककर अवतार,
संसय बस भेल सकल गोआर।
संसय अन्त कोनहु नहि पाओल,
तखन कृष्ण पुन मोहनि लगाओल।

[P.T.O.

(ख) फूल जे गमकैत वन-वनमे लुटाबै अछि सुरभि-घट
खिलखिला कऽ जे हँसै अछि भव-भुवन-भरिमे हृदय सँ।
भ्रमर जे गुंजन करै अछि, गीत गाबै अछि विहंगम
मग्न-तन नर्त्तन कलापी जे करै अछि चिर-प्रणय सँ॥

(ग) कुल-वैभव रुचि रूप वयस शुचि चरित आचरित तूल।
दुहु कुमार सुकुमार बुझाइछ एक तरुक दुइ फूल॥
मधु माधव जनु, नभ नभस्य जनु, तप-तपस्य जनु युग्म।
एक ऋतुक दुइ मास प्रकृति गुण समगम किछु मृदु-तिग्म॥

(घ) कहलनि नीतिशास्त्र-अनुसार। चारक वध नहि अछि व्यवहार॥
दूत बेचारा मारल जयत। रामचन्द्र सौं युद्ध न हयत॥
अङ्कित हयता कहता जाय। राखक नहि थिक दूत बझाय॥
नीति विभीषण कहलहुँ नीक। मानल बचन सदर्थ अर्हीक॥

2. "लालदासक 'रमेश्वर-चरित मिथिला रामायण' मैथिली राम-काव्य परम्पराक विकासमे बहुविध कारणेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।" 'बालकाण्ड'क आधार पर लालदासक काव्य-सौष्ठवक विवेचन करैत एहि कथनक समीक्षा करू। 60

3. "गोविन्ददासक काव्य शृंगारपरक होइतहुँ समष्टिरूपेँ भक्तिभावक अभिव्यक्ति थिक।" 'गोविन्ददास भजनावली'क पठित अंशक आधार पर एहि उक्तिक समीक्षा करैत अपन स्वतन्त्र विचार प्रगट करू। 60

4. "'चित्रा'मे शब्दचित्रक द्वारा परिस्थिति, व्यक्ति ओ मिथिलाक नारीक समस्याक चित्रण तथा व्यंजना भेल अछि।" 'चित्रा'क नामकरणक सार्थकता प्रमाणित करैत एहि उक्तिक समीक्षा करू। 60

Section—B

5. निम्नलिखितमे सँ कोनो **तीन** गद्यांशक सन्दर्भ सहित व्याख्या करैत ओहिमे सन्निहित विचार आ काव्यगत विशेषताकेँ स्पष्ट करू (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क) मउगीक जिनगी महाग विचित्र होइत छैक। ओकरा नीको मोन पड़ै छै आ अधलाहो मोन पाड़ैत नीक लगै छैक। ओइ दिन मोन होअय जे भने ओकर गट्टा तोँ तोड़ि दितही। मगर फेर जखन पंचमे ओकरा जबाव भेटलै त' कहाँदन ओ बड़ हिचकि-हिचकि क' कनै। आब सोचै छियै जे ओ जेहन छैक ताहिमे ओकर कोनो दोख ने। हमहूँ जेहन छी तइमे हमरो कोनो दोख ने।

(ख) कोनो प्रियतमा अपना प्रेमीक लेल नहि कनइए। कनइए केवल कन्या। कनइए केवल कन्या अपन मायक स्तन सँ झरैत दूधक निर्झरक लेल, मायक हृदय सँ झरैत स्नेह-वात्सल्यक निर्झरक लेल। आ माय? आ मदालसा? मदालसा एहिना बेटीकेँ ओछान पर सूतलि छोड़ि अन्हार रातिमे, साओन-भादोक बरखामे अभिसारिका बन' चलि जाइत अछि।

(ग) सुगियाक आँखि नोरा गेल छलैक। एक भिनसर सँ फिरीसान भ' क' बिछने छलि, आ से एक मिनटक ककरो चंठपनीमे नाश भ' गेलैक। ओ हतप्रभ भेलि ठाढ़ि छलि, ओकर मुँह दयनीयता सँ भरल छलैक। ओकर करुण मुँह देखि सभक मन दुःखी छलैक। दुःखक ओहि धरातलकेँ फोड़ि कऽ बहार भेलैक तामस, आक्रोश आ गारि जे स्वाभाविक छलैक, जे निर्बलक प्रतिकारक साधन छलैक।

(घ) ओ दुनू धारमे स्नान कए घूरि रहल छलीह। लगइ जेना धरती पर दूटा चान उतरि आएल हो। बड़की जेना भिनसरबाक चान हो आ छोटकी सँझुका। लगइ जेना दूटा कमल छवि छिरिया रहल हो। बड़की जेना फूलडालीमे राखल उदास सरोरुह आ छोटकी जेना सरोवरमे डोलैत अर्द्धविकसित सरसिज।

6. 'कथा-संग्रह'क आधार पर एहि तथ्यकें विवेचित-विश्लेषित करू जे—''आधुनिक मैथिली कथा समकालीन सामाजिक, आर्थिक विसंगति पर विभिन्न तरहें चोट करैत अछि''। 60

7. '''लोरिक विजय' उपन्यासमे मिथिलाक माटि-पानि आ संस्कारक सम्पूर्ण सौन्दर्य ओ सौरभ उद्‌भासित भऽ उठल अछि।'' एहि उक्तिक समीक्षा करैत 'लोरिक विजय'क औपन्यासिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 60

8. ''कुचक्रमे फँसल देह आ मोनक यथावत् उपस्थापन राजकमलक कथाक निजता अछि।''—'कृति राजकमलक'क आधार पर एहि कथनक सम्यक् मूल्यांकन करैत मैथिलीक कथाकारक रूपमे राजकमल चौधरीक योगदानक विश्लेषण करू। 60

★ ★ ★

CS (MAIN) EXAM, 2010

Sl. No. 27

D–DTN–K–NJA

MAITHILI

Paper—I

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Section—A

1. निम्नलिखित कोनो **तीन** पर टिप्पणी लिखू : 20×3=60

   (क) भाषाक वर्गीकरणक आधार

   (ख) प्राकृत ओ मैथिलीक सम्बन्ध

   (ग) मैथिलीक विभिन्न बोलीक परिचय

   (घ) मैथिली भाषाक क्षेत्रानुसार विभाजन

2. मैथिली भाषाक विकास-क्रम सँ परिचय कराउ। 60

3. मैथिली एवं उड़िया भाषाक सम्बन्धक विवेचना करू। 60

4. तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकासक रूपरेखा प्रस्तुत करू। 60

Section—B

5. निम्नलिखित कोनो **तीन** पर टिप्पणी लिखू : 20×3=60

(क) कीर्त्तनियाक विशेषता

(ख) मैथिली साहित्यमे रामकाव्यक परम्परा

(ग) मैथिली लोकगीत

(घ) ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर

6. विद्यापतिक परम्परा सँ की तात्पर्य? विवेचन करू। 60

7. मैथिली कथा-साहित्यक विकास सँ परिचय कराउ। 60

8. मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग विभिन्न विद्वानक मतक समीक्षा करू। 60

★ ★ ★

CS (MAIN) EXAM, 2010

Sl. No. 198

D–DTN–K–NJB

MAITHILI

Paper—II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Section—A

1. निम्नलिखित कोनो तीन अवतरणक सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत करैत ओहिमे सन्निहित भाव आ ओकर काव्यगत वैशिष्ट्यकें स्पष्ट करू (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क) अगमने प्रेम गमने कुल जाएत
चिन्ता पंक लागलि करिणी
मञे अबला दह दिस भमि झाखञो
जनि व्याध डरे भीरु हरिणी॥
चन्दा दुरजन गमन विरोधक
उगल गगन भरि बैरि मोरा॥
कुहु भरमे पथ पद आरोपल
आए तुलाएल पंचदशी
हरि अभिसार मार उदबेजक
कञोने निबारब कुगत ससी॥

(ख) सुइ लय बेधिअ गाँथिअ ताग।
हाथ छुबिअ तओं हाथहि लाग॥
गरजि सघन घन बरिसय बारी।
तैं फनिपति फना देलन्हि पसारी॥
लागल झड़ी भुलल सब दीग।
पशु पच्छी सब परल अदीग॥
सूर्य सुधाकर खोजलों ने पाबिअ।
कमल कुमुद निसि बासर जानिअ॥

(ग) आम्र सुकानन पनसोद्यान। सुभग सुशीतल छायावान॥
सुभग पवित्रित प्रचुर तड़ाग। निर्मल वारि अमृतसन लाग॥
धेनु बकेन वत्सयुत गाय। झुराड झुराड देखल रघुराय॥
अति अपूर्व शोभा विस्तार। धर्म-निरत सभ शुद्धाचार॥
वन-उपवन मुनि आश्रम सहित। मंजुल बंजुल दूषण-रहित॥

(घ) दशरथ रथ सँ पथ प्रशस्त जत परम पुरुष अवतार।
रामराज्य आदर्श उपस्थित विश्व-शासनक सार॥

मैथिलीक पति-भक्ति एतहि भरतक भ्रातृत्व अनूप।
सौमित्रिक चारित्र्य चित्र सँ जगमग कीर्त्ति-स्तूप॥

चरण पखारथि भक्ति-भाव सँ सरयू पावन नीर।
वन उपवन फल फूल चढ़ाबथि डोलबथि चमर समीर॥

ईति-भीति नहि एको व्यापित रोग-शोक नहि रंच।
प्रजा धर्मपथ चलथि स्वयं, ने कनिञो कपट प्रपंच॥

2. ''कवीश्वर चन्दा झा 'मिथिला भाषा रामायण'मे छन्दक विविधता ओ लोकोक्तिक विलक्षणताक संगहि वर्णनक चित्ताकर्षक छवि प्रस्तुत कयने छथि''—एहि कथन पर विचार करू। 60

3. ''रसना रोचन श्रवण-विलास
रचइ रुचिर पद गोविन्ददास।''

एहि पंक्तिक आलोकमे गोविन्ददासक काव्य-सौन्दर्यक निरूपण करू। 60

4. लोकमुखी शब्दावलीक प्रयोग द्वारा साहित्यक आत्मीयता एवं व्यापकताकेँ दृढ़ करबामे प्रगतिवादी यात्रीक 'चित्रा' सर्वाधिक लोकप्रिय भेल अछि—सयुक्ति विवेचन करू। 60

Section—B

5. निम्नलिखित कोनो **तीन** गद्यांशक सन्दर्भसहित व्याख्या करैत ओहिमे निहित अभिव्यंजनागत ओ कथ्यगत विशेषता पर प्रकाश दिअ (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क) कँपैत हाथ सँ अलमुनियमक पचकलहा बाटी उठा क' रेजकी गनलक। अद्धन्नी आ पाइ मिला क' सबा तीन आना। देबालमे सटलि, जाड़ेँ थर-थर करैत छौंड़ी दिस बिन तकनहि बुढ़िआ बाजलि—"पिरथी सँ दया-धरम उठि गेलइ... एगो पइसो दइमे मोह होइ हइ लोकके त' गरीब भिखमङ्गा कोना जीउतइ... छौंड़ी घुसकि क' नानीक देहमे सटि गेलि। तेहेन ने कटकटौआ बसात चलैत छलइए। तखन, बुढ़िआ कहुना ठेंगा ध' क' उठलि। मुदा तुरन्ते ने तेहेन सन-सन करैत पछबा उठलैक जे बुढ़िआ पाकल आम जकाँ धप्पसँ खसि पड़लि। विवस्त्र शरीरक गत्र-गत्र पछबा बेध' लगलैक।

(ख) भोजने सँ प्रकृति बनैत छैक। चाली माटि खा कऽ माटि भेल रहैत अछि। साँप बसात पीबि कऽ फनकैत अछि। साहेब सभ डबल रोटी खा कऽ फूलल रहैत अछि। मुर्गा खैनिहार मुर्गा जकाँ लड़ैत अछि। और हम सभ साग-भाँटा खा कऽ साग-भाँटा भेल छी। हमरालोकनि भक्त (भात)क प्रेमी थिकहुँ, तँ एक दोसरा सँ विभक्त रहैत छी। ताहू पर की त द्विदल (दालि)क योग भेले ताकय! तखन एक दल भऽ कऽ कोना रहि सकैत छी?

(ग) जें आइ सभ नवयुवकक लक्ष्य नोकरियेटा भऽ गेलैए तें सभतरि निराशाक वातावरण बनि गेल छै। चाही ई जे नोकरीयोकें एक साधन बूझल जाय। जेना ई संसार अनन्त अछि तहिना साधनो असीमित छैक। मोनकें एके खुट्टासँ बन्हने रहब मनुक्खक मर्यादाकें आ ओकर सामर्थ्यकें अपमान करब थिक।

(घ) कुमुद' कुन्द' कदम्ब' कास' भास कैलास' कर्प्पूर पीयूषक कान्ति प्रसारी सन' क्षीरसमुद्रक दक्षिणानिले चालल तरङ्गक लहरी अइसन· अमृतक सरोवर तरङ्गक सहोदर सन· शरतक पूर्णिमाचान्दक ज्योत्स्ना अइसन· अभिनव प्रकाशित कमलकोष प्रसारि शोभा सन· कन्दर्प्पक दर्प्पप्रकाशन सन· त्रैलोक्यक नागरजन युवजन हृदयमोहन मन्त्रसन· स्वेद· स्तम्भ· रोमाञ्च· स्वरभङ्ग· कम्प· वैवर्ण्य· अश्रु· प्रलय इ ये आठओ सात्विक भाव ताक भण्डार सन·

6. "राजकमल मैथिली कथाक शब्द-शब्दमे नवीनता ओ प्रयोगधर्मिताक झलक देखबैत छथि, जेहने भाव-वस्तुमे, तेहने अभिव्यक्ति-शैलीमे।" एहि उक्तिक समीक्षा करू। 60

7. "हरिमोहन झा व्यंग्यकें विधाक मान्यता प्रदान करबैत दार्शनिक चिन्तनक संगहि लेखकीय पांडित्यक परिचय देबामे पूर्ण सफल भेल छथि"—'खट्टर ककाक तरंग'क आलोकमे एहि कथन पर विचार करू। 60

8. मैथिली भाषा-साहित्यक आदि गद्य-ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर' काव्य नहि काव्योपयोगी ग्रन्थ तँ अछि ये संगहि एहि सँ मध्यकालीन मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितिक परिचय प्राप्त होइत अछि—युक्तियुक्त विवेचन करू। 60

★ ★ ★

C. S. (Main) Exam : 2011

Sl. No.

D–DTN–L–NJA

MAITHILI

Paper—I

(Literature)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Section—A

1. टिप्पणी लिखू (शब्द-सीमा *200* सँ अधिक अपेक्षित नहि) : 20×3=60

(क) मैथिली क्रियाक भाव-भेद

(ख) मैथिली भाषाक विविध रूप

(ग) राजेश्वर झाक भाषावैज्ञानिक कृति

2. (क) पूर्वाञ्चलीय भाषाक संग मैथिलीक सम्बन्ध पर प्रकाश दिअ। 30

(ख) मध्यकालीन मैथिली भाषाक स्वरूप पर विचार करू। 30

3. (क) भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणसँ परिचय कराउ। 30

(ख) मैथिली सर्वनामक प्रमुख विशेषताक विवेचन करू। 30

4. (क) मैथिली भाषाक विकासमे अवहट्टक योगदानक मूल्यांकन करू। 20

(ख) मैथिली भाषाक इतिहासमे ग्रियर्सनक भूमिका निरूपित करू। 20

(ग) व्याकरणक दृष्टिसँ मैथिली भाषाक विशेषता देखाउ। 20

Section—B

5. टिप्पणी लिखू (शब्द-सीमा *200* सँ अधिक अपेक्षित नहि) : 20×3=60

(क) मैथिली साहित्यक सामाजिक पृष्ठभूमि

(ख) आधुनिक मैथिली कविताक प्रमुख प्रवृत्ति

(ग) हरिमोहन झाक 'खट्टर ककाक तरंग'

6. (क) मैथिलीक प्रमुख समालोचना साहित्यसँ परिचय कराउ। 20

(ख) मैथिली एकांकी नाटकक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करू। 20

(ग) मैथिली शैव साहित्यक विवेचन करू। 20

7. (क) विद्यापतिकालीन सामाजिक परिस्थिति पर प्रकाश दिअ। 20

(ख) मैथिली साहित्यक विकासमे अभिनन्दनग्रन्थक योगदान देखाउ। 20

(ग) आसामक 'अंकीया नाट'क महत्त्वक प्रतिपादन करू। 20

8. (क) मैथिली साहित्यक आदिकालीन सामग्री पर प्रकाश दिअ। 20

(ख) आधुनिक मैथिली कथा साहित्यमे सामाजिक चेतना पर विचार करू। 20

(ग) मैथिली साहित्यक विकासमे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क योगदानक मूल्यांकन करू। 20

★ ★ ★

C. S. (Main) Exam : 2011

Sl. No.

D–DTN–L–NJB

MAITHILI

Paper—II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Section—A

1. निम्नलिखित अवतरणक भावकेँ स्पष्ट करैत एकर काव्य-वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट कए सप्रसंग व्याख्या करू (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 15×4=60

(क) अभियान करक अछि आइ शक्ति-संचय हित
अभियान हमर सत्पथ पर दृढ़ निश्चय हित
दानवताकेँ निर्मूल करय भूतलसँ
अभियान हमर ई निज शक्तिक परिचय हित।

(ख) अनल अनिल बम मलयज बीख
जे छल सीतल से भेल तीख॥
चान्द सन्ताबए सविताहु जीनि
नहि जीवन एकमत भेल तीनि॥
किछु उपचार न मानए आन
एहि बेआधि अथिक पचवान॥

(ग) पाबि पराभव जे बैसथि कर जोड़ि
करइत अपन सहन शक्तिक व्यवहार
पौरुष तनिक सिरजि बहुविध सन्ताप
होइछ व्यर्थ यथा यौवन विधवाक।

(घ) बनिआ-लीडर-अफसर तीन त्रिमूर्ति,
क रहला अछि अपन मनोरथ पूर्ति।
अपना लए सभ अनका हेतु बडौर,
तइपर फाटन्हि रहि-रहि कतै बुकौर।

2. (क) 'सुन्दर-काण्ड'क आधार पर कवीश्वर चन्दा झाक काव्य-सौष्ठवक विवेचना करू। 30

(ख) "कवीश्वर चन्दा झा अपन रामायणक रचना अध्यात्म रामायणक आधार पर कएल, ओ से मूलसँ ततेक अधिक मिलैत अछि जे एकरा अधिकांशतः अध्यात्म रामायणक अनुवाद कही तँ दोष नहि"—एहि कथनक सत्यता प्रमाणित करू। 30

3. (क) सामाजिक कुचक्रमे पिसाइत नारीक मनोवैज्ञानिक अन्तर्द्वन्द्वकेँ चित्रित करएमे 'यात्री'जी अत्यन्त संवेदनशील छथि—'चित्रा'क आधार पर एहि उक्तिक समीक्षा करू। 30

(ख) तन्त्रनाथ झा-द्वारा रचित 'कीचक-वध' महाकाव्यक आधार पर हुनक काव्य-प्रतिभाक परिचय दिअ। 30

4. (क) 'कृष्ण-जन्म' महाकाव्य अछि—प्रमाणित करू। 30

(ख) भाव, भाषा ओ काव्य-सौष्ठव तीनू दृष्टिएँ गोविन्ददासक रचना नारिकेल फलसम्मतक रसास्वादन करबैछ—एहि उक्तिक समीक्षा करू। 30

Section—B

5. निम्नलिखित गद्यांशक अभिव्यंजनागत ओ कथ्यगत वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क) भाषाक विकासो तँ सरकारेक कर्त्तव्य छैक। जतेक सहयोगक आशा हमरालोकनि सरकारसँ करैत छी की तकर दसमांसो पूरा भेल? कतेको बहुमूल्य ग्रन्थ लिखल राखल अछि, तकरा दिवार खा रहल छै। एकर प्रकाशनक व्यवस्था होयबाक चाही कि नै? ताहि लेल सरकार की कऽ रहल अछि?

(ख) असलमे धरती जोतनिहारक थिक। हरबाह थिक जे धरतीक असल बेटा थिक। जे अपन पसेनासँ धरती-माताकें पूजै अछि। कएदिन देखलहक अछि मालिककें अपन पसेनासँ धरती-माताक पूजा करैत? देखहक सरकारी कानून त' जरूर सोचि विचारिक' बनै छैक ने। बटीदारक नामे खाता कि सिकभी-खाता खोलबाक कानून जरूर कोनो इनसाफसँ बनल हेतैक। हम सभ निपढ़ छी तइँ भने नै बुझियै, मगर ई सोचबाक चाही जे सब कानूनक पाछाँ कोनो निसाफ जरूर रहै छैक।

(ग) महादेव त्रिलोचन छलाह। हमरो लोकनिं त्रिलोचन छी। तेसर आँखिसँ केवल अनकर छिद्रटा सुझैत अछि। महादेव नीलकण्ठ रहथि। हमरो लोकनिक कण्ठमे केहन विष रहैत अछि से दूगोटाक विवाद भेला पर प्रत्यक्ष देखि लैह। महादेवक छाती पर साँप लोटाइत रहैन्हि। हमरो लोकनिकैं स्वजातीयक अभ्युदय देखि छाती पर साँप लोटाय लगैत अछि।

6. (क) 'लोरिक विजय' उपन्यास लोक संघर्षक सप्राण दस्तावेज अछि—एहि कथनक सार्थकता सिद्ध करू। 30

(ख) 'खट्टर-ककाक तरंग'क माध्यमसँ लेखक सामाजिक कुप्रथा पर व्यंगात्मक रूपसँ प्रहार कएलन्हि अछि—स्पष्ट करू। 30

7. (क) "जिबैत रहब पहिने जरूरी छैक संसारमे, तखन लोक-लाज, नीक-बेजाय" प्रस्तुत वाक्य-खण्डक आलोकमे 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यासक तर्कसंगत समीक्षा करू। 30

(ख) 'भफाइत चाहक जिनगी'मे लेखक की अभिप्राय छन्हि—युक्तियुक्त विवेचन करू। 30

8. (क) पठित अंशक आधार पर कतोक समीक्षाक द्वारा 'वर्ण रत्नाकर'कैं 'वर्णन रत्नाकर' कहबाक औचित्यक समीक्षा करू। 30

(ख) मैथिली साहित्यमे राजकमल चौधरीक योगदानक चर्चा करू। 30

★ ★ ★

12

G–DTN–M–NBJA

MAITHILI

Paper—I

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Important Note

Whenever a question is being attempted, all its parts/sub-parts must be attempted contiguously. This means that before moving on to the next question to be attempted, candidates must finish attempting all parts/sub-parts of the previous question attempted. This is to be strictly followed.

Pages left blank in the answer-book are to be clearly struck out in ink. Any answers that follow pages left blank may not be given credit.

Section—A

1. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू : 12×5=60

(क) जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक मैथिली व्याकरण ओ भाषा-वैज्ञानिक कृति

(ख) प्राकृत ओ मैथिलीक सम्बन्ध

(ग) भाषाक वर्गीकरणक आधार

(घ) भारोपीय भाषा परिवारक महत्त्व

(ङ) मैथिली भाषाक क्षेत्रीय विभाजन

2. (क) भारोपीय भाषा परिवारक सामान्य परिचय प्रस्तुत करू। 30

(ख) मैथिली भाषाक विकासक रूपरेखा प्रस्तुत करू। 30

3. (क) भाषा-विज्ञानक आकृतिमूलक वर्गीकरण करैत ओकर उपयोगिता सिद्ध करू। 30

(ख) मध्यकालीन आर्यभाषासँ परिचय कराउ। 30

4. (क) भाषा ओ बोलीमे अन्तर स्पष्ट करैत बोलीकेँ भाषा बनवाक कारणक उल्लेख करू। 20

(ख) नवीन भारतीय भाषाक मध्य मैथिलीक स्थान निरूपित करू। 20

(ग) मिथिलाक्षरक महत्त्व पर निबन्ध-रचना करू। 20

Section—B

5. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू : 12×5=60

(क) चर्यापद मैथिलीक सम्पत्ति

(ख) मैथिली कथामे नारी

(ग) मैथिलीक संस्मरण साहित्य

(घ) मैथिलीक मुक्तक काव्य

(ङ) मैथिलीक अनुवाद साहित्य

6. (क) ज्योतिरीश्वर ओ हुनक 'वर्णरत्नाकर'क विषयवस्तुसँ परिचय कराउ। 30

(ख) "विद्यापतिक युग मैथिली साहित्यक स्वर्णयुग छल"—एहि कथन के सिद्ध करू। 30

7. (क) मैथिली साहित्यक कोनो एक आलोचकक आलोचनासँ परिचय कराउ। 30

(ख) वर्त्तमानमे प्रकाशित मैथिली पत्र-पत्रिकाकसँ परिचय कराउ। 30

8. (क) मध्यकालीन मैथिली नाटकक विकासमे 'कीर्त्तनिञा नाट'क महत्त्व प्रतिपादित करू। 20

(ख) आधुनिक मैथिली निबन्ध-साहित्यसँ परिचय कराउ। 20

(ग) "कवीश्वर चन्दा झा आधुनिक मैथिली साहित्यक युग-प्रवर्त्तक छलाह"—सयुक्ति विवेचन करू। 20

★ ★ ★

CS(M) EXAM2012

G–DTN–M–NBJB

MAITHILI

Paper—II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Important Note

Whenever a question is being attempted, all its parts/sub-parts must be attempted contiguously. This means that before moving on to the next question to be attempted, candidates must finish attempting all parts/sub-parts of the previous question attempted. This is to be strictly followed.

Pages left blank in the answer-book are to be clearly struck out in ink. Any answers that follow pages left blank may not be given credit.

Section—A

1. निम्नलिखित अवतरणक भावकें स्पष्ट करैत एकर काव्य-वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट कए सप्रसंग व्याख्या करू (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 12×5=60

(क) मालति सफल जीवन तोर।
तोरे विरहे भूवन भमए
भेल मधुकर भोर॥
जातकि केतकि कत न अछ
कुसुम रस समान।
सपनहु नहि काहू निहारए
मधु कि करत पान॥
जकर हृदय जतए रहल
धसि पए ततहि जाए।
जेअओ जतने बान्धि निरोधिअ
निमन नीर समाए॥

(ख) नाव अरि लाव नहि, उतरक दाव नहि,
एक बुद्धि आब नहि, सागर अपारमे।
वीर अरि छोट नहि सङ्ग एकगोट नहि,
लङ्का लघुकोट नहि विदित संसारमे।
दनुज अवल नहि, पुरी गम्य थल नहि,
प्रदेश अमल्ल नहि युद्धक विचारमे॥
अहाँक समान नहि, वीर हनुमान नहि,
सर्व्वस्वक दान नहि तूल उपकारमे॥

(ग) पत्नी पञ्च पाण्डवक, द्रुपद-सुपुत्रि,
पति-प्राणा, कुलवधू कुरुक, सुकुमारि,
रति-लज्जाकर जनिकर अनुपम रूप,
पति-अज्ञात-वाससँ छथि असहाय,

जनि सुन्दर-सुविशाल-रसाल-सनाथ—
मालति, कुसुम-भार-नत, जकर सुगन्धि
लए-लए पवन करए जनमन आनन्द,
नियति-क्रमहि पाबए दुस्सह आघात
झंझानिलक, होअए आश्रय द्रुम-नष्ट,
शतशत मधुकर जत लुबुधल मधु-लोभ
भए असहाय सहए पशुपदक प्रहार,
कण्टकमय तृण-सङ्कुल भूमि लोटाए।
एहि विधि कृष्णा हतभागा सुकुमारि
मत्स्येशक अन्तःपुर कएल प्रवेश।

(घ) परम मेधावी कते बालक जत'
मूर्ख रहि हा गायटा चरबैत छथि
कते वाचस्पति कते उदयन जत
हाय! बनगोइठा बिछैत फिरैत छथि
तानसेन कतेक रविवर्मा कते
घास छीलथि वाग्मतीक कछेड़मे
कालिदास कतेक विद्यापति कते
छथि हेड़ाएल महिसवारक हेड़मे
अन ने छै केंचा ने छै कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे?
उठह कवि, तों दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे॥

(ङ) "कान पाथिकें सुनब पहर भरि।
गाबथु प्रौढ़ा लोकनि मलार॥
भीजब हम भरिपोख पहर भरि।
बदरा बरसओं मूसलाधार॥
चोभब राढ़ी आम भदईया,
सलहेसक हम करब सिङ्गार

बिसहाराक गहबर ओगरब गऽ
देखब गऽ लाबाक पथार,
सूपक मूप उझिलता अइखन
पाछाँ बरू भऽ जेता देखार,
बिला जेता भादवमे बिलकुल
मेघक लीला अपरम्पार
कान पाथि के सुनब प्रहरि भरि।
गाबथु प्रौढ़ा लोकनि मलार॥''

2. (क) 'मिथिला भाषा रामायण'क 'सुन्दरकाण्ड'मे चित्रित विरहिणी सीताक मनोदशाक वर्णन करू। 30

(ख) 'चित्रा'क नामकरणक सार्थकता पर विचार करू। 30

3. (क) ''सरस जीवनक मधुर गायक महाकवि विद्यापति सौन्दर्योपासक कवि छथि''—एहि कथनक समीक्षा करू। 30

(ख) गोविन्ददासक कवित्वशक्तिक विवेचन करू। 30

4. (क) मैथिली पद्यसाहित्यक विकासमे 'कृष्णजन्म'क स्थान निरूपित करू। 30

(ख) आधुनिक मैथिली कविताक प्रमुख प्रवृत्तिसँ परिचय कराउ। 30

Section—B

5. निम्नलिखित गद्यांशक अभिव्यंजनागत ओ कथ्यगत वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 12×5=60

(क) पूर्ण्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह। श्वेत पङ्कजकाँ दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि। काजरक कल्लोल अइसन भञुह। गथले फुले नर्म्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा।

कनिअराक कर अइसन नाक। सीन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त। वेतक साट अइसन बाँह। पारिजातक पल्लव अइसन हाथ। विकसित स्थलपद्म अइसन चरण।

(ख) चाहे मीमांसाक कर्मकांड हो वा योगक अष्टांग साधन हो वा वेदान्तक ब्रह्मज्ञान हो, सभक मूलमे एक्के भावना काज करैत छैक—भविष्यमे महत्तम आनन्दक प्राप्ति। केओ स्वर्गक स्वप्न देखैत छथि, केओ अमरत्वक कल्पना करैत छथि, केओ निरतिशय सुख चाहैत छथि। मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण—सभक एके तत्त्व छैक—आनन्दलिप्सा। साधक-गण चाहै छथि जे एहि जीवनमे अधिकसँ अधिक फीस दऽ कऽ स्वर्ग वा मोक्षक बीमा करा ली। और एहि वणिक बुद्धिकेँ 'धर्म' कहल जाइत अछि।

(ग) घरक हाइ-कमाण्ड एखन धरि इएह रहय। अइ टोकमे कोनो तेहन शक्ति रहैक जकरा नेनहिसँ मानबाक संस्कार जमि गेल रहैक। कोनो अनट-विनट काज करैत काल, कोनो अनुचित करैत काल, इएह टोक नेनासँ सुनने रहय। आ तकर बाद फेर आगाँ किछु कहबाक आ कि करबाक साहस कहियो ने होइक। आइयो ने भेलैक। नवीन पौरुषक दर्प उतरि गेलैक। हठात् घोर लज्जा घेरि लेलकै। माइक सोझाँ अपन पौरुषक प्रदर्शनसँ बड़ संकोच भेलै। धस्स दऽ बैसि गेल।

(घ) जे व्यक्ति अपने कोनो जोगरक नै रहैए सैह समाजक आ कुलशीलक नाक झंडामे टङने फिरैए आ जकरा अपन बाँहिक भरोस रहै छै से घर-परिवार वा समाजक बोझ नै बनिकऽ अपने हाथ-पयर लाड़ब पसिन्द करैए। ...जखन बैसल बेटा मायो-बापकेँ नै सोहाइत छैक, आन किए ककरो गरा लगोतैक। अहाँकेँ गौआसभक ओहि ठाम पेट पोसऽमे मर्यादा देखाइत अछि आ हमरा एहन जीवन मरणतुल्य बुझाइत अछि।

(ङ) मुदा किछुए क्षणक वार्त्तालापमे ई बूझ'मे भाङठ नहि रहल जे उदास मुँहवाली एहि स्त्रीमे किछु से विशेषता अछि जे अनकामे नहि छैक। ई साधारण स्त्री जकाँ जे नीक भानस कर'मे... पतिक सेवा कर'मे... सासुक फज्झति सून'मे... उपनयन-विवाहमे जोर-जोरसँ गीत गाब'मे, दुर्गास्थान, सेमरिया, बैद्यनाथक भीड़क प्रचण्ड धक्का सह'मे जीवन सार्थक बुझैछ, ... नहि छथि। फुलपरासवाली हमर ई भौजी किछु विशिष्ट अवस्से।

6. (क) किरणजीक 'मधुरमनि' कथाक समीक्षा करू। 30

(ख) 'लोरिक विजय' मणिपद्मक विलक्षण कृति अछि—युक्तियुक्त प्रतिपादन करू। 30

7. (क) नाट्यकलाक दृष्टिसँ 'भफाइत चाहक जिनगी'क विशेषता देखाउ। 30

(ख) ''पृथ्वीपुत्र' कोनो वर्गविशेष अथवा समाजविशेषक नहि अपितु मानवजातिक मूलभूत भावना ओ वासनाक चित्र उपस्थित करैत अछि''—सयुक्ति विवेचन करू। 30

8. (क) ''खट्टर कका अपन भांगक तरंगमे चुटकी बजबैत उनटे गंगा बहा दैत छथि''—'खट्टर ककाक तरंग'क आलोकमे एहि उक्तिक सार्थकता सिद्ध करू। 30

(ख) ''कवि राजकमलकेँ लोक बिसरि जाएत, मुदा कथाकार राजकमल मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे अमर रहताह''—एहि कथनपर विचार करू। 30

★ ★ ★

A–BRL–M–L–NBJA

MAITHILI

Paper—I

(Literature)

Time Allowed : Three Hours | *Maximum Marks : 250*

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.

There are **EIGHT** questions divided in **Two Sections**.

Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.

Question no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in **MAITHILI.**

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the answer book must be clearly struck off.

SECTION—A

Q.1. निम्नलिखित विषयपर टिप्पणी लिखू (150 शब्दसँ अधिक नहि) :— **10×5=50**

Q. 1(a) सुभद्र झा। 10

Q. 1(b) प्राकृतक विशेषता। 10

Q. 1(c) मैथिलीक क्रियापद। 10

Q. 1(d) तिरहुता लिपिक महत्व। 10

Q. 1(e) मैथिली भाषाशास्त्र। 10

Q. 2(a) मैथिली ओ असमिया भाषाक संबंधक विवेचन करू। (शब्द सीमा **250**) 20

Q. 2(b) मैथिली भाषाक विकास-क्रमक समीक्षा करू। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 2(c) तिरहुता लिपिक उद्‌भव ओ विकास पर प्रकाश दिअ। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 3(a) भारोपीय भाषा-परिवारक विश्लेषण करैत एहिमे मैथिलीक स्थान निरूपित करू। (शब्द सीमा **250**) 20

Q. 3(b) भाषाकेँ परिभाषित करैत बोलीसँ भाषा बनबाक कारणक उल्लेख करू। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 3(c) भाषाक परिभाषा दैत बोलीसँ ओकर पार्थक्य देखाउ। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 4(a) मैथिलीक सर्वनामक विश्लेषण करू। (शब्द सीमा **250**) 20

Q. 4(b) भारतीय आर्यभाषाक परिचय दैत ओहिमे मैथिलीक स्थान निरूपित करू। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 4(c) मैथिली भाषाक काल विभाजन पर विचार करू। (शब्द सीमा **250**) 15

SECTION—B

Q.5. **निम्नलिखित विषयपर टिप्पणी लिखू (150 शब्दसँ अधिक नहि) :—** **10×5=50**

Q. 5(a) शंकरदेव 10

Q. 5(b) पारिजात-हरण नाटक 10

Q. 5(c) मैथिलीक शोध-पत्रिका 10

Q. 5(d) मैथिलीमे लोककथाक विकास 10

Q. 5(e) मुक्तक काव्य। 10

Q. 6(a) मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग विद्वान लोकनिक मतक समीक्षा करू। (शब्द सीमा **250**) 20

Q. 6(b) विद्यापतिकेँ अहाँ शृंगारी-कवि बुझैत छियनि वा भक्त-कवि ? सयुक्ति प्रतिपादन करू। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 6(c) विद्यापतिक अनुशरण परम्परा पर प्रकाश दिअ। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 7(a) महाकाव्य ककरा कही ? मैथिलीमे महाकाव्यक विकासक रूपरेखा प्रस्तुत करू। (शब्द सीमा **250**) 20

Q. 7(b) मैथिलीक लोकगाथात्मक उपन्याससँ परिचय कराउ। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 7(c) नेपालमे रचित मैथिली नाटकक वैशिष्ट्यसँ परिचय कराउ। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 8(a) मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक विकासपर प्रकाश दिअ। (शब्द सीमा **250**) 20

Q. 8(b) 'कवीश्वर'क काव्य-सौष्ठवपर प्रकाश दिअ। (शब्द सीमा **250**) 15

Q. 8(c) मिथिलाभाषा रामायणक वैशिष्ट्यसँ परिचय कराउ। (शब्द सीमा **250**) 15

MAITHILI

PAPER—II

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. काव्य-वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(क) भुस्साक आगि जकाँ नहूँ नहूँ
जरै छी मने मने हमहूँ
फटै छी कुसियारक पोर जकाँ
चैतक पछवामे ठोर जकाँ।

(ख) की हम साँझक एकसरि तारा
भादव चौठिक चन्दा।
ऐसन कए पियाए मोर मुख मानल
मो पति जीवन मन्दा॥
वामहु गति जत समदि पठौलनि
से सबे कहि कहि गेलि।
तेसरि तिथि ससि सामर परवनिसि
दसमि दसा मोरि भेलि॥

(ग) पहिलहि कूल तूल-सम ऊड़ल जाकर बेनुक फूके।
धरम करम मति भरम-सरिस भेल नारी गिरिसम दुःखे॥
सजनी, किअ हम करब उपाय।
हेरइत से कान्ह अपन-अपनतन काहि करब अन्तराय॥

(घ) देवर-तीर जेहन प्रलयानल, रावणगण वन झूर।
के हम थिकहुँ ककर हम कामिनि, परिचय पओता क्रूर॥
सकल तमीचर तामस तम सम, श्रीरघुनन्दन सूर।
हमर यहन गति दैव देखै छथि, नहि उपाय कछु फूर॥

(ङ) शार्दूली की कखनहु पाबए वास
जम्बूकक? की ज्वलित तप्त अंगार
तृणचय सकय झोंकि? की चम्पक त्रास
भ्रमर तुच्छ कए सकए कतहु उपभोग?
जँ हम कएल न तजि पाण्डवपति पंच
आन पुरुष प्रति कखनहु स्वपनहु चित्त
नहि कीचक कए सकत हमर तन स्पर्श।

2. (क) 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण'क 'बालकाण्ड'क काव्यगुणक समीक्षा करू। 25

(ख) काव्य-वैशिष्ट्यक दृष्टिएँ 'दत्तवती' महाकाव्यक प्रथम सर्गक मूल्यांकन करू। 25

3. (क) ''विषयवस्तुक उपस्थापनमे आडम्बरहीन सहज, सरल भाषाक प्रयोग कए महाकवि मनबोध जेहन रचनाक सृजन कएलन्हि ओ लोकोत्तर आनन्द प्रदान करैत अछि।'' एहि कथनक आलोकमे 'कृष्णजन्म' महाकाव्यक समीक्षा करू। 25

(ख) ''समकालीन मैथिली कविताक मूल स्वर अछि सामाजिक विसंगति पर कड़गर प्रहारक स्वर।'' एहि कथनक सार्थकता सिद्ध करू। 25

4. (क) ''महाकवि विद्यापति वियोगेकें प्रेमक कसौटी मानेन छथि तें हिनक नायिकाक वियोगविगलित हृदयक कारुणिक मधुर स्वर भावुककें साधारण स्तरसँ ऊपर उठाए ब्रह्मानन्दक सुखानुभूतिसँ गद्गद् कए दैत अछि।'' एहि कथनक आलोकमे विद्यापतिक वियोग गीतक समीक्षा करू। 25

(ख) ''पठित अंशक आधार पर गोविन्ददासक भाषा-प्रयोगक सम्बन्धमे कहल जा सकैत अछि जे कविक भाव-साधना जकाँ शब्द-साधना सेहो श्लाघ्य अछि।'' एहि कथनक मूल्यांकन करू। 25

SECTION—B

5. निम्नलिखित कथ्यक अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(क) सब मात्र पगहा तोड़ि नै पड़ाइ छै। सब गाछकें बिहाड़ि नै तोड़ि-मड़ोड़ि दै छैक। बहुत गाछ बिहाड़िक दोगे-दोगे बाँचि जाइत अछि। फड़ि-फुला क' सुखा जाइत अछि। मुदा कतेक अभागल गाछ बिहाड़िक बाट पर ठाढ़ झमारल जाइत अछि, बेर-बेर मचोड़ल जाइत अछि।

(ख) जैह भेद रसगुल्ला ओ लड्डूमे छैक। रसगुल्ला सरस ओ कोमल होइछ, लड्डू शुष्क ओ कठोर। रसगुल्ला पूर्वक प्रतीक थीक, लड्डू पश्चिमक। तैं हम कहैत छिऔह जे ककरो जातीय चरित्र बुझबाक हो त ओकर प्रधान मधुर देखी।

(ग) परन्तु हुनकर मन एकरा कबूल करनि तखन ने! नेनु सन कोमल हृदय एहि दृढ़ताक आँचकें कहाँ सहि पबैत अछि? किऐक मन हरदम हुनकहि संग रह' लेल लागल रहैत छनि तकर कारण ओ स्वयं नहि बुझि पबैत छथि। परन्तु अन्तमे किछु अनुभव करैत छथि—एक प्रकारक आकुलता, एक प्रकारक आकांक्षा, एक प्रकारक वेदना ...।

(घ) मुदा जखनसँ हमरा ई बुझल भेल अछि जे बड़का-बड़का अफसर आ बड़का-बड़का जातिक बड़हु बेटी नाटक खेलाइ छै, नाच करै छै, गीत गबै छै .... हम छगुन्तामे पड़ि गेल छी। कोम्हर जा रहल अछि अपन समाज, किछु बुझाइते ने अछि। सभलोक भ्रष्ट भेल जा रहल अछि।

(ङ) अनाचारियो तेहने छल ओ (हरबा-बरबा)। दुहबी-सुहबी नामक दूटा ब्राह्मण कुमारीक अपहरण कए ओकरा सभकें अपना विलास भवनमे राखि नेने छल। ओ प्रत्येक दिन कतोक रूपसीकें पकड़ि कए मंगवालिए आ अपना विलासक हेतु किछुदिन राखि कए ओकरा सभकें घुरा दैक।

6. (क) '' 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास सर्वहारा वर्गक अपन अधिकारक प्रति साकांक्षताक संघर्ष-कथा अछि।'' एहि कथनक समीक्षा करू। 25

(ख) 'पाँचपत्र' कथाक माध्यमसँ सिद्ध करू जे प्रो० हरिमोहन झा अपन रचनामे नै मात्र हास्य-व्यंग्यक धार प्रवाहित करैत छथि अपितु मोनकें अन्तःकरण धरि द्रवीभूत करबाक सामर्थ्य सेहो रहैत अछि हिनक कथामे। 25

7. (क) पात्र चरित्रक दृष्टिएँ 'लोरिक विजय' उपन्यासक प्रमुख पात्रक चारित्रिक मूल्यांकन करू। 25

(ख) ''राजकमलक कथा मिथिलांचलक मध्यवर्गक ओहि समस्त संस्कार पर जमि क' प्रहार करैत अछि जे ओकर आर्थिक-सामाजिक संघर्षमे बाधक थिकैक।'' 'कृति राजकमल'क कथाक मादें कहल गेल एहि कथनक समीक्षा करू। 25

8. (क) 'वर्णरत्नाकर'क दोसर कल्लोलक विषयवस्तुक उपस्थापनमे कविक सूक्ष्म सौन्दर्य-दृष्टिक परिचय भेटैत अछि— प्रमाणित करू। 25

(ख) ''आनन्दमूर्त्ति मस्त खट्टरकका विषयवस्तुक प्रस्तुतिमे विनोदक गंगा प्रवाहित कए दैत छथि किन्तु भांगक तरंगोमे जे कहैत छथि से तर्कसंगत रहैत अछि।'' 'चाणक्यक जन्मभूमि' गप्पक प्रसगें कहल गेल एहि उक्तिक समीक्षा करू। 25

★★★

CS (Main) Exam : 2014

C-DRN-N-L-OBJA

MAITHILI

Paper I

(LITERATURE)

Time allowed : **Three** Hours	Maximum Marks : **250**

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

*Answers must be written in **MAITHILI**.*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION A

Q1. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखू (लगभग 150 शब्द धरि) : *10×5=50*

(a) मैथिली व्याकरण ओ पाणिनि *10*

(b) प्राकृत भाषा ओ अर्धमागधी *10*

(c) वर्ण-विपर्ययक कारण ओ महत्व *10*

(d) दीनबन्धु म्याक व्याकरणक उपादेयता *10*

(e) भाषाक महत्ता ओ वैशिष्ट्य *10*

Q2.	(a)	पूर्वाञ्चल भाषा साहित्यमे मैथिली ओ ओड़ियाक साम्य ओ वैषम्यक विश्लेषण करू ।	*20*
	(b)	भाषाक उत्पत्तिक कारण ओ मैथिली भाषाक उत्पत्तिक विषयमे वर्णन करू ।	*15*
	(c)	तिरहुताक विकासक्रमक ऐतिहासिक विवरण ओ साहित्यिक महत्वक प्रतिपादन करू ।	*15*
Q3.	(a)	विद्यापति मध्यकालीन मैथिली भाषाक स्वरूपक आधार स्तम्भ छथि, विचार करू ।	*20*
	(b)	मैथिलीक विभिन्न बोली पर प्रकाश दैत 'छिकाछिकी' पर कोन भाषाक प्रभाव छैक, से देखाउ ।	*15*
	(c)	भारोपीय भाषा परिवारक परिचय ओ वैशिष्ट्यक वर्णन करू ।	*15*
Q4.	(a)	मैथिलीक सर्वनामक व्यापकता ओ वैशिष्ट्यक उल्लेख करू ।	*20*
	(b)	मैथिली भाषाक क्षेत्र में ग्रियर्सनक अवदानक उल्लेख करैत तकर वैशिष्ट्यक वर्णन करू ।	*15*
	(c)	मध्यकालीन आर्यभाषाक विशेषताक विवेचन विश्लेषण करू ।	*15*

SECTION B

Q5. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग 150 शब्द धरि) : *10×5=50*

(a) मैथिलीक संस्मरण साहित्य ओ साहित्य अकादेमी पुरस्कार *10*

(b) मैथिलीक निबन्धक विषयगत वैविध्य *10*

(c) प्रबन्ध काव्यक औचित्य *10*

(d) मैथिलीमे अनुवाद साहित्यक महत्व *10*

(e) मैथिलीक लोकोक्ति-फकरा ओ सिद्धाचार्य *10*

Q6. (a) सिद्ध साहित्यक परीचय दिउ एवं एकर भाषाक वैशिष्ट्य देखाउ । *20*

(b) 'देसिल वयना'क कवि विद्यापति मात्र मिथिले धरि सीमित नहि रहथि – सयुक्ति प्रतिपादित करू । *15*

(c) ऐतिहासिक, राजनीतिक ओ साहित्यिक परिप्रेक्ष्यमे विवेचन करून जे चन्दाम्या आधुनिक कालक जनक रहथि । *15*

Q7. (a) नारी जागरणक पृष्ठभूमिमे रचित मैथिली उपन्यासक विकासमे विभिन्न पत्र-पत्रिकाक योगदानक उल्लेख करू । *20*

(b) मिथिलाक मध्यकालीन नाटक त्रैमाषिक अछि, एहि पर प्रकाश दिआ । *15*

(c) मैथिलीक यात्रा साहित्यक स्थिति पर विचार करैत सुभद्रम्याक योगदानक महत्व पर प्रकाश दिअ । *15*

Q8. (a) कृष्ण जन्मक महाकाव्यत्व ओ भाषाक प्रसंग सयुक्ति विचार करू । *20*

(b) मैथिलीमे महिला कथा-लेखन पर तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत करू । *15*

(c) मैथिलीक बाल-साहित्यक भूत-वर्तमान ओ भविष्यक प्रसंग तथ्यात्मक विवेचन करू । *15*

CS (Main) Exam, 2014

C–DRN–N–L–OBJB

MAITHILI

PAPER—II

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script).

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. काव्य-वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(a) प्राची दिशि भय गेल प्रकाश। नव नृप रविक उदय उल्लास॥
अरुण वसन शुभ पहिरि दिनेश। मंच उदय-गिरि बैसला बेश॥
चहु दिशि मंगल गाब विहंग। बाजए घंटा शंख मृदंग॥
शिव-शिव ध्वनि भल हो चहु ओर। मागध सूत विरूद पढ़ शोर॥
गाब भक्त सभ भैरव राग। सुनि-सुनि सभकाँ बड़ अनुराग॥
कमल प्रफुल्लित मन्द समीर। बहय सुखद सौरभयुत धीर॥

(b) सुइ लय बेधिअ गाँथिअ ताग
हाथ छुबिअ तओं हाथहिं लाग
गरजि सघन घन बरिसय बारी
तैं फनिपति फना देलन्हि पसारी
लागल झड़ी भुलल सब दीग
पशु-पक्षी सब पड़ल अदीग
सूर्यसुधाकर खोजलों ने पाबिअ
कमलकुमुद निशिवासर जानिअ।

(c) सीखल कत भाषा, लीखल जत लिपि प्रचलित जग बीच।
परिचित विविध देश व्यवहारक ऊँच रहौ वा नीच॥
भाषण, लेखन, वाचन, गायन अभिव्यक्ति हित उक्ति।
सुभाषितक उर हार पहिरि श्रुति-सूक्त सूक्ति रस उक्ति॥
तर्क-वितर्क वाद-संवादहु अनुवादहुमे दक्ष।
रहल कसरि नहि, असरि गुरुकुलक एतय भेल प्रत्यक्ष॥

(d) चाँद सार लए मुख घटना करू
लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोए आँचरे जनि पोछल
दह दिस भेल उजोरे॥
कामिनी कोने गढ़ली।
रूप सरूप मोहि कहइते असम्भव
लोचन लागि रहली॥
गुरु नितम्भ भरे चलए न पारए
माझ खीनिम निमाइ।
भांगि जाइति मनसिजे धरि राखलि
त्रिबलि लता अरुझाइ॥

(e) तोड़ि कँ हरिसिंहदेवक डाँड़
कािल्ह जँ बौआ बिआहथि मेम
महाश्वेता बहुरिआ
चिनमार पर ओ आबि
बिहुँसि लगती गोसाउनिकेँ गोड़
तेँ अहाँ की छाड़ि कँ ई माटि
पड़ाएब चल जएब मोरङ दीस।

2. *(a)* "'मिथिला भाषा रामायण'क 'सुन्दरकाण्ड'मे हनुमानक चरित वर्णित अछि।" एहि कथनक सार्थकता सिद्ध करू। 20

(b) "'महाभारत'क विराट पर्वमे वर्णित पाण्डव लोकनिक वनवासोत्तर विराट राजाक आश्रयमे अज्ञातवासक समयक वृत्तांत पर 'कीचक वध' महाकाव्यक कथावस्तु आधारित अछि"—समीक्षा करू। 15

(c) मैथिली काव्य-साहित्यमे 'कृष्णजन्म'क महत्त्व पर प्रकाश दिअ। 15

3. *(a)* "यात्रीकेँ सामान्यतः मार्क्सवादी ओ प्रगतिशील कवि कहल जाइत छन्हि"—'चित्रा'क आधार पर एहि उक्ति पर विचार करू। 20

(b) समकालीन मैथिली कविताक आधार पर मायानन्द मिश्रक कवितासँ परिचय कराउ। 15

(c) लालदासक 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण'क नामकरण पर विचार करू। 15

4. *(a)* "गोविन्ददासक काव्य नारिकेल फलक सदृश रहितहुँ श्रुति-माधुर्यसँ परिपूर्ण अछि।" पठित अंशक आधार पर एहि कथनक मूल्यांकन करू। 20

(b) "विद्यापतिक पदावली गीतकाव्य थिक जे हिनक भावाभिव्यक्तिक सूक्ष्मता राग-ताललयाश्रित कोमलकान्त पदावली प्रसादपूर्ण माधुर्यसँ ओतप्रोत अछि।" पठित अंशक आधार पर युक्तिपूर्वक विचार करू। 15

(c) "सुमनजीक रचनामे प्राचीनता ओ नवीनताक विलक्षण समन्वय भेल अछि"—युक्तियुक्त विवेचन करू। 15

SECTION—B

5. निम्नलिखित कथ्यक अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(a) अइ टोकमे कोनो तेहन शक्ति रहैक जकरा नेनहिसँ मानबाक संस्कार जमि गेल रहैक। कोनो अनट-बिनट काज करैत काल, कोनो अनुचित करैत काल, इएह टोक नेनासँ सुनने रहए। आ तकरा बाद फेर आगाँ किछु कहबाक आ कि करबाक साहस कहियो ने होइक। आइओ ने भेलैक। नवीन पौरुषक दर्प उतरि गेलैक। हठात् घोर लज्जा घेरि लेलकै।

(b) आजुक युगमे यदि क्यो सोड़हो आना भाग्यवादी बनि जाय आ हिया हारिक' अपनाकेँ भगवानक इलाका लगा देअय, त लोक ओकरा बताहे कहतैक कि! मुदा हमरा सनक भेष-भुषावाला लोक यदि समाजमे बताह कहाब' लागय तँ भरिसक संसारमे बताहक संख्या सभसँ बेसी भ' जयतैक। की सरिपहुँ लोक जानि-बुझि क' अपन बगय खराप बना लैए?

(c) पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह। श्वेत पंकजकाँ दल भ्रमर बयिसल अइसन आँखि· काजरक कल्लोल अइसन भऊह· गथले फुले नर्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा· पखाक पल्लव अइसन अधर· कनिअराक कर अइसन नाक· सिन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त। वेतक साट अइसन वाँह· पारिजातक पल्लव अइसन हाथ।

(d) स्वांग रचब हमर जीवन आ जीविका भ' गेल अछि। बीस बर्ख पहिने ई सत्य हमरा बुझवामे आबि गेल छल जे जीबाक अछि; तेँ स्वांग रच' पड़त, कोनो-ने-कोनो स्वांग-नीक लोकक वा अधलाह लोकक! बुझवामे आबि गेल छल जे सभ लोक कोनो-ने-कोनो स्वांग रचैत अछि। जे हम छी, जे हमर असली व्यक्तित्व अछि, हमर असली चेहरा, से व्यक्त कयने, व्यक्त करैत रहलासँ ने हमरा अन्न-पानि भेटि सकैत अछि, ने ठाढ़ होयबाक लेल कोनो ओसारा, कोनो आङन!

(e) देबहाक धारामे ओ राजहंस कत्ते सिनेहक संग अपना हंसिनीक संग ग्रीवामे चंचु-आघात कए रहल अछि, लगक साहोड़क गाछ पर बैसल पंडुक दम्पति कोना अपना कलकुँजनसँ वातावरणमे मधु घोरि रहल अछि। तैयो आँहाँ हमरा एहिठाम आबक कारण पूछइ छी। एत्तेक दिन व्याह भेना भेल आँहाँ गौनाक नाम नहि लेलहुँ। आँहाँ भने ठमकल रहलहुँ किन्तु समय तऽ नहि ठमकल रहल। हम पूछए आएल छी जे हम कोन अपराधेँ उपेक्षिता भए रहल छी?

6. (a) नारी हृदयक संवेदनशीलताक चित्रणमे किरणजी कतेक दूर धरि सफल भेल छथि? 'मधुरमनि' कथाक आधार पर सिद्ध करू। 20

(b) ''पृथ्वीपुत्र' उपन्यासमे ललित मानव स्वभावक नैसर्गिक प्रवृत्ति ओ भावनाकेँ जाहि प्रकारेँ प्रधानता देल अछि से हुनक स्वस्थ दृष्टिकोणक परिचायक थिक।'' एहि कथनक समीक्षा करू। 15

(c) ''हरिमोहन झाक रचनामे व्यंग्य-विनोद आ पांडित्यक त्रिवेणी प्रवाहित होइत अछि।'' एहि उक्तिक सार्थकता देखाउ। 15

7. (a) ''वर्णरत्नाकर'क द्वितीय कल्लोलमे शृंगार रसक विविध सामग्रीक चर्चा करब कविक उद्देश्य बुझि पड़ैत अछि''—प्रमाणित करू। 20

(b) ''साँझक गाछ' कथामे जीवनक संघर्ष वाह्य एवं अभ्यन्तर दुनूक समावेश पूर्णरूपेण देखवामे अबैत अछि।'' एहि कथनक समीक्षा करू। 15

(c) ''वर्णरत्नाकर'केँ काव्य नहि काव्योपयोगी कहल जाइत अछि''—सयुक्ति प्रतिपादन करू। 15

8. (a) 'लोरिक विजय' उपन्यासमे तत्कालीन मिथिलाक छोट-छोट सामन्तक अत्याचार ओ दुराचारसँ सामान्य लोकक जीवन अस्त-व्यस्त छल। लोरिक ओहि सामान्य जनजीवनमे उत्पीड़नजन्य आक्रोशकेँ सहन नहि कए सकलाह आ हुनका लोकनिकेँ संगठित कए ओहि अत्याचारी सामन्तक विरुद्ध युद्ध कएलनि—एहि विषय पर आधारित एकर कथावस्तुक मूल्यांकन करू। 20

(b) ''भफाइत चाहक जिनगी' नाटकमे नाटककार एक शिक्षित बेरोजगार युवकक चरित्रक कर्मठता ओ संघर्षक चित्रण कएलनि अछि''—विवेचन करू। 15

(c) ''मैथिली कथा-साहित्यक भव्य ललाट पर राजकमल-ललित आ मायानन्दकेँ त्रिपुंडक रूपमे देखल जाइत अछि''—एकरा युक्तियुक्त पल्लवित करू। 15

★★★

CS (Main) Exam:2015

C-AVZ-O-NULA

MAITHILI

Paper I

(LITERATURE)

*Time Allowed : **Three** Hours*

*Maximum Marks : **250***

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **MAITHILI**.*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION A

Q1. **निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखू (लगभग 150 शब्द धरि) :** *10×5=50*

(a) तिरहुताक महत्त्व *10*

(b) प्राचीन मैथिलीक विशेषता *10*

(c) संस्कृत ओ मैथिलीक सम्बन्ध *10*

(d) 'प्रयत्नलाघव'क विशेषता किछु उदाहरणक संग *10*

(e) 'अवहट्ठ'क ऐतिहासिक स्वरूप-विवेचन *10*

Q2. (a) पूर्वांचल-भाषा मे मैथिलीक बांग्लाक संग सम्बन्ध स्थापित करू । *20*

(b) मध्यकालीन मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितिक परिचय ज्योतिरीश्वरक जाहि ग्रंथसँ प्राप्त होइत अछि, तकर युक्तियुक्त विवेचन करू । *15*

(c) भारोपीय भाषा परिवारक विश्लेषणक क्रममे मैथिलीकेँ कतए पबैत छी ? सयुक्ति प्रतिपादित करू । *15*

Q3. (a) बोली कोन-कोन परिस्थितिमे भाषाक रूप ग्रहण करैत अछि ? *20*

(b) भाषाक स्वरूपक विवेचन करू । *15*

(c) भाषाक उत्पत्तिक चर्चा करैत स्पष्ट करू, जे भाषावैज्ञानिक अथवा शोधकर्त्तालोकनि कोन सिद्धान्तकेँ सर्वाधिक प्रामाणिक मानलन्हि । *15*

Q4. (a) भाषा परिवर्त्तनशील अछि, एकर कारण पर प्रकाश दिअ । *20*

(b) मैथिलीक सर्वनामक विषयमे लिखू । *15*

(c) मैथिली एक स्वतंत्र ओ समृद्ध भाषा थीक, ‘भाषा’क कसौटी पर एकरा प्रमाणित करू । *15*

SECTION B

Q5. **निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग 150 शब्द धरि) :** *10×5=50*

(a) मैथिलीक लघुकथाक विवेचन करू । *10*

(b) मैथिली उपन्यासक रूपरेखा प्रस्तुत करू । *10*

(c) असमक अंकीयानाटक विवेचन करू । *10*

(d) विद्यापतिक लोकप्रियता पर प्रकाश दिअ । *10*

(e) कवीश्वर चन्दा झा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक विवेचन करू । *10*

Q6. (a) 'वर्णरत्नाकर'क साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश दिअ । *20*

(b) गोविन्ददासक रचना 'नारिकेरफलसम्मित' अछि, एहि उक्तिकेँ चरितार्थ करू । *15*

(c) 'दत्तवती'क महाकाव्यत्व प्रमाणित करू । *15*

Q7. (a) मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग विभिन्न विद्वानक मतक समीक्षा करू । *20*

(b) मैथिली नाट्य परम्परामे नेपालक योगदान अछि । ज्ञापित करू । *15*

(c) मैथिली भाषाक आदिकालीन स्वरूप पर विचार करैत अपन मतसँ अवगत कराउ । *15*

Q8. (a) मैथिलीक विकासमे 'मिथिलामिहिर'क विशिष्ट योगदान अछि, सिद्ध करू। *20*

(b) मैथिली लोकगाथा पर प्रकाश दिअ । *15*

(c) मिथिला समाजमे व्याप्त वैवाहिक समस्याकेँ दूर करबाक हेतु कोन-कोन रचनाकार द्वारा प्रयास कएल गेल ? *15*

CS (Main) Exam:2015

MAITHILI

PAPER—II

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script).

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. काव्य-वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(a) तातल सैकत वारि विन्दु सम
सुत मित रमनि समाजे,
तोहे बिसारि मन ताहे समापलुँ
अब मझु हब कोन काजे॥
माधव हम परिनाम निरासा।

(b) हा रघुनाथ आनथ जकाँ, दशकण्ठ-पुरी हम आइलि छी।
सिंहक त्रास महावनमे हरिणीक समान डराइलि छी॥
चन्द्र-चकोरि अहँक सदा, हम शोक समुद्र समाइलि छी।
देवर-दोष कहू हम की, अपना अपराधसँ काइलि छी॥

(c) कतो एक दिवस जखन बिति गेल। हरि पुनु हथगर गोड़गर भेल।
से कोन ठाम कतय नहि जाथि। कय बेरि अंगनहुँ सौं बहराथि॥
द्वार उपर सौं धरि धरि आनी। हरखथि हँसथि जसोमति रानी।
कय बेरि आगि हाथ सौं छीनु। कय बेरि पकलाह तकला बीनु॥

(d) विधवा हमरे सन हजारक हजार
बहौने जा रहलि अछि नोरक धार
ओहिमे ई मुलुक डुबि बरु जाय
ओहिमे लोक भसिया बरु जाय
अगड़ाही लगौ बरु बज्र खसौ
एहेन जाति पर बरु धसना धसौ
भूकम्प हौक बरु फटौ धरती
माँ मिथिला रहिये क' की करती!

(e) देखु, क्षितिजसँ-इन्दु कलाक समान
मत्स्यराज—अन्तःपुरसँ बहराए
के थिक सुन्दरि सुर-रमणी-अनुरूप
जाइत राजपथहिँ एकसरि सकुमारि
मत्त-चकोर-नयनि, निज-पद-नख-चन्द्र-
बद्ध-दृष्टि, गज-गामिनि! किअ मुखकञ्ज
अछि एहन विवर्ण, किअ विद्रुम-कान्ति
अधर स्फुरित सङ्कुचित कुटिल भ्रूभंग, छूटइछ अन्तर्ज्वाल-पूर्ण निःश्वास।

2. *(a)* 'मिथिला भाषा रामायण'क 'सुन्दरकाण्ड'क वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 20

(b) 'कीचक वध' महाकाव्यक महाकाव्यत्व प्रमाणित करू। 15

(c) "मनबोध रचित 'कृष्णजन्म' मैथिली साहित्य मध्य एकटा क्रान्तिकारी डेग प्रमाणित भेल।" एहि कथनकें पुष्ट करू। 15

3. *(a)* " 'चित्रा'मे सर्वहरा वर्गक मर्मस्पर्शी वेदनाक स्वर मुखरित भेल अछि।" एहि कथनक विवेचना करू। 20

(b) 'समकालीन मैथिली कविता'क आधार पर रामकृष्ण झा 'किसुन'क काव्य-सौष्ठवसँ परिचय कराउ। 15

(c) "लालदास रचित 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण' मध्य सीताक चरित्रक प्रधानता अछि"—विवेचना करू। 15

4. *(a)* "गोविन्ददासक काव्यमे अर्थगाम्भीर्य एवं भक्तिभावनाजन्य तन्मयता दृष्टिगोचर होइत अछि।" एहि उक्तिक आलोकमे गोविन्ददासक काव्य-वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 20

(b) "विद्यापतिक काव्यक उत्कर्ष हिनक पदावलीमे देखल जाइछ।" एहि कथनकें पल्लवित करू। 15

(c) 'दत्तवती' महाकाव्यक पठित अंशक आधार पर 'सुमन' जीक पाण्डित्य-प्रकर्षसँ परिचय कराउ। 15

SECTION—B

5. निम्नलिखित कथ्यक अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(a) "असलमे धरती जोतनिहारक थिक। हरबाहक थिक जे धरतीक असल बेटा थिक। जे अपन पसेनासँ धरती-माताकें पूजै अछि। कै दिन देखलहक अछि मालिककें अपन पसेनासँ धरती-माताक पूजा करैत? देखहक सरकारी कानून त' जरूर सोचि विचारि क' बनै छैक ने। बटिदारक नामे खाता कि सिकमी-खाता खोलबाक कानून जरूर कोनो इनसाफसँ बनल हेतैक। हम सभ निपढ़ छी तँइ भने नै बुझियै, मगर ई सोचबाक चाही जे सभ कानूनक पाछाँ कोनो निसाफ जरूर रहैत छैक।"

(b) "नै, एना बुझलासँ लोकक काज नै चलि सकै छै। जँ आइ सभ नवयुवकक लक्ष्य नोकरियेटा भऽ गेलैए तँ सभतरि निराशाक वातावरण बनि गेल छै। चाही ई जे नोकरीयोकें एक साधन बूझल जाय। जेना ई संसार अनन्त अछि तहिना साधनो असीमित छैक। मोनकें एके खुट्टासँ बन्हने रहब मनुक्खक मर्यादाकें आ ओकर सामर्थ्यकें अपमान करब थिक।"

(c) "सरिपहुँ ..... बागमती, कमला, बलान, गण्डक आ खास क' क' कोसी तँ अपराजिता अछि ने। ककरहु सामर्थ्य नहि जे एकरा पराजित क' सकय। सरकार आओत ..... चलि जायत ..... मिनिस्टरी बनत आ टूटत—मुदा ई कोसी ..... ई बागमती ..... ई कमला आ बलान ..... अपन एही प्रलयंकारी गतिमे गामकें भसिअबैत, हरिअर-हरिअर खेतकें उज्जर करैत, माल-जालकें नाश करैत, घर द्वारक सत्यानाश करैत बहैत रहत आ बहैत रहत।"

(d) ''केहन मुखश्री! केहन सरल निश्छल आँखि! हृदयक गूढ़तम भाग एहि आँखिक द्वारा देखि सकैत छी। मुदा ई सरलता, ई निश्छलता रहत कतेक दिन? एखन यौवनमे प्रवेश मात्र भ' रहल अछि। नव आशा अछि नव विश्वास। संसारक अनुभव बाँकी अछि तें। आ, एकर बाद? नीक बरक अभाव, अतिशय मूल्य ..... कत' ई कान्ति, ई स्वर्गीय लावण्य। पीयर देह, आँखि धसल, मलिन मुखमण्डल .....।''

(e) पताल अइसन दुःप्रवेश· स्त्रीक चरित्र अइसन्दर्क्ष· कालिन्दीक कल्लोल अइसन मांसल· काजरक पर्व्वत अइसन निविल· पाप/क सहोदर अइसन· शरीर· आतङ्कक नगर अइसन भयानक· कुमन्त्र अइसन निष्फल· अज्ञान अइसन सम्मोहक· मन अइसन सर्व्वतोगामी· अहङ्कार। अइसन उन्नत· परद्रोह अइसन अभव्य· पाप अइसन मलिन· एवम्विध अति व्यापक· दुःसञ्चर· दृष्टिबन्धक· भयानक· गम्भीर· शूचीभेद्य· अन्धकार दे/षु·

6. (a) सामाजिक जीवन पर आधारित 'आम खयबाक मुँह' सरसताक दृष्टिएँ एक सफल कथा थिक—स्पष्ट करू। 20

(b) ''जिबैत रहब पहिने जरूरी छैक संसारमे। तखन लोक लाज। नीक बेजाय।'' एहि उक्तिक आलोकमे 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यासक मूल्यांकन करू। 15

(c) ''खट्टर कका स्वच्छन्द चिन्तन ओ बुद्धि विलासक प्रतीक थिकाह।'' एहि कथनकें पल्लवित करू। 15

7. (a) ''कवि राजकमलकेँ लोक बिसरि जाइत, मुदा कथाकार राजकमल मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे अमर रहताह।'' एहि कथन पर विचार करू। 20

(b) ''मनमोहन झाक मैथिली कथाक शब्द-शब्दमे नवीनता ओ प्रयोगधर्मिताक झलक भेटैत अछि, जेहने भाव-वस्तुमे, तेहने अभिव्यक्ति शैलीमे।" एहि उक्तिक समीक्षा करू। 15

(c) 'वर्णरत्नाकर' मैथिलीक प्राचीनतम गद्य ग्रन्थ थिक—एकर ऐतिहासिक महत्त्वक विश्लेषण करू। 15

8. (a) '' 'लोरिक विजय' सामाजिक संघर्षक अभिलेख थिक।'' एहि उक्तिक सार्थकता देखाउ। 20

(b) नाट्यतत्त्वक निकष पर 'भफाइत चाहक जिनगी' नाटकक मूल्यांकन करू। 15

(c) ''करुण रसक स्रोत प्रवाहित करबामे कथाकार मनमोहन झाक अविस्मरणीय अवदान अछि''—प्रमाणित करू। 15

★★★

MAITHILI

PAPER—I

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

मैथिली

प्रश्न-पत्र–I

(साहित्य)

समय : 3 घंटा	पूर्णाङ्क : 250

प्रश्न-पत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ

एतय दू खण्ड (Section) मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि।

प्रश्न संख्या **1** तथा प्रश्न संख्या **5** अनिवार्य अछि। शेष प्रश्नमेसँ **तीन** प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (Section)सँ कम-सँ-कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि।

प्रश्न/खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि।

उत्तर मैथिलीमे लिखब अनिवार्य अछि।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत। यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशतः लिखित उत्तरोकेँ गणना कयल जायत। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी।

SECTION—A

1. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग *150* शब्द धरि) : 10×5=50

(a) जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक मैथिली व्याकरण

(b) भाषाक वर्गीकरणक आधार

(c) मैथिली भाषाक विविध रूप

(d) मैथिली क्रियाक भाव-भेद

(e) प्राकृत ओ मैथिलीक सम्बन्ध

2. (a) पूर्वाञ्चलीय भाषाक संग मैथिलीक सम्बन्ध पर प्रकाश दिअ। 20

(b) भारोपीय भाषा परिवारक सामान्य परिचय दिअ। 15

(c) तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास पर प्रकाश दैत ओकर वर्त्तमान स्थितिक विवेचन करू। 15

3. (a) मध्यकालीय आर्यभाषाक परिचय दिअ। 20

(b) भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणसँ परिचय कराउ। 15

(c) भाषाक विकासक प्रमुख कारक तत्त्वक विवेचन करू। 15

4. (a) मैथिली भाषाक विकासमे अवहट्ठक महत्त्वक मूल्यांकन करू। 20

(b) मिथिलाक्षरक महत्त्व एवं वर्त्तमान स्थिति पर प्रकाश दिअ। 15

(c) मैथिलीक क्रियापदक सन्दर्भमे सयुक्ति अपन मन्तव्य प्रतिपादित करू। 15

SECTION—B

5. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग *150* शब्द धरि) : 10×5=50

(a) चर्यापद मैथिलीक सम्पत्ति

(b) 'वर्णरत्नाकर'क महत्त्व

(c) लोकगीत

(d) 'सुन्दर संयोग' नाटक

(e) मिथिला मिहिर

6. (a) सिद्ध साहित्यक परिचय दैत एकर भाषागत वैशिष्ट्यक विश्लेषण करू। 20

(b) विद्यापतिक लोकप्रियता पर प्रकाश दिअ। 15

(c) गीतिनाट्यक उद्भव ओ विकास पर प्रकाश दिअ। 15

7. (a) आधुनिक मैथिली साहित्यक पृष्ठाधार पर प्रकाश दिअ। 20

(b) कवीश्वर चन्दा झाकेँ आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक कहल जाइत अछि—सयुक्ति विवेचन करू। 15

(c) आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासमे पत्र-पत्रिकाक महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश दिअ। 15

8. (a) मैथिलीक ऐतिहासिक उपन्यासक विकास-यात्रा पर प्रकाश दिअ। 20

(b) मैथिली समालोचना शास्त्रक विकास ओ वर्त्तमान स्थिति पर अपन मन्तव्य दिअ। 15

(c) आधुनिक मैथिली निबन्ध-साहित्यक विकास ओ परम्परा पर प्रकाश दिअ। 15

★★★

M-ESC-D-MTL

मैथिली / MAITHILI

पेपर II / Paper II

(साहित्य) / (LITERATURE)

निर्धारित समय : तीन घंटे Time Allowed : **Three** Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ :

एतय दू **खण्ड (SECTION)** मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि ।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि ।

प्रश्न संख्या **1** तथा प्रश्न संख्या **5** अनिवार्य अछि । शेष प्रश्नमेसें कोनो **तीन** प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (SECTION) सें कमसें कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि ।

प्रश्न / खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि ।

उत्तर **मैथिली** (देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि ।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि ।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत । यदि काटल नहि गेल हो तें अंशत: लिखित उत्तरोक गणना कयल जायत । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी ।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

*Answers must be written in **MAITHILI** (Devanagari script).*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION A

Q1. **काव्य-वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य) :** ***10×5=50***

(a) नव दूर्वादल श्यामल सुन्दर कंज-नयन रनवीर ।
वाम धनुर्धर दहिन निसित सर जलधि कोटि गम्भीर ।।
श्रीपद पादुक धर भरतानुज चामर छत्र निछोड़ि ।
शिव चतुरानन सनक सनन्दन शतमुख रहु कर जोड़ि ।। *10*

(b) जन्म कर्म गुण-प्रकृति निरखि, रुचि परखि पारखी विज्ञ ।
वर्गीकृत वर्णीक वरण जत करथि नित्य कृतविद्य ।।
जनम प्रथम गृहकुलमे पुनि गुरुकुलमे उद्‌गम अन्य ।
खनिज धातु मणि चढ़ि खराज पुनि मुकुटजड़ित हो धन्य ।। *10*

(c) अनिल अनलवम मलअज वीख ।
जे छल सीतल से भेल तीख ।।
चान्द सन्ताबए सविताहु जीनि ।
नहि जीवन एकमत भेल तीनि ।।
किछु उपचार न मानए आन ।
एहि बेआधि अथिक पचवान ।। *10*

(d) सुनि लक्ष्मी कहलनि बड़वेश ।
उचित विचार कयल प्राणेश ।।
लेल अयोध्या हरि अवतार ।
चारि अंशयुत राम उदार ।।
लक्ष्मी अयलीह मिथिला भूमि ।
ऋद्धि सिद्धि संग लयिलिह जूमि ।।
सभकाँ कयल सुखी आरोग्य ।
सम्प्रति भेलिह विवाहक योग्य ।। *10*

(e) सम्मिलित स्वेच्छा प्रणोदित जयति जय जनशक्ति !

हृदयमे अछि एक केवल तोहरेटा भक्ति ।।

आन देवी देवता दिश नहि नवइ अछि माथ

आइ नहितँ काल्हि दानवदलक कखह अवस्से उच्छेद

कृषक श्रमिकक जीवनोकेँ बनबिहह पुनि वेद

लैत प्राचीनक सगुण सदज्ञान

लोकहितमे लगविहह अपना युगक विज्ञान 10

Q2. (a) "चित्रा"मे प्राचीन-मध्य ओ आधुनिकक्कालीन मिथिलाकँ सामाजिक जीवनक सम्यक् वर्णन भेल अछि – विश्लेषण करू । 20

(b) "समकालीन मैथिली कविता"क आधार पर कविवर आरसी प्रसाद सिंहक काव्य-वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ । 15

(c) "कविवर लालदास अपन रामायणमे विस्तृत मंगलाचरणमे पराप्रकृति सीता एवं परमपुरुष रामक स्मरण कयलनि अछि" – युक्तियुक्त विवेचन करू । 15

Q3. (a) "मिथिला भाषा रामायण"क 'सुन्दरकाण्ड'मे वर्णित घटनाक्रम अपेक्षाकृत अधिक सारगर्भित आ प्रसंगानुकूल भेल अछि" – एहि कथनक समीक्षा करू । 20

(b) "कृष्णजन्म प्रबन्ध-काव्यक रचनामे मनबोधकेँ मैथिली साहित्यक इतिहासमे महत्त्वपूर्ण स्थानक अधिकारी बना देने अछि" – एहि उक्ति पर विचार करू । 15

(c) "कीचक-बध" काव्यस्वरूप ओ रचनाशैलीमे भिन्न रहितहुँ प्राच्य एवं पाश्चात्य-दुनू ठाम समान भावधाराक सम्वाहक अछि – प्रमाणित करू । 15

Q4. (a) "गोविन्ददास भजनावली"क गीत सर्वथा भक्तिमूलक प्रतीत होइत अछि ओ श्रृंगार एहिमे आवरणक काज करैत अछि" – पठित अंशक आधार पर अपन विचार व्यक्त करू । 20

(b) विद्यापतिक गीतसभमे श्रृंगारक बहुविध चित्र प्रस्तुत भेल अछि – पठित अंशक आधार पर एहि उक्तिकेँ पल्लवित करू । 15

(c) "दत्तवती" महाकाव्यमे भारतीय सामाजिक चिंतन, राष्ट्रीय चेतना ओ सांस्कृतिक गरिमाक व्यापक चित्रण भेल अछि – स्पष्ट करू । 15

SECTION B

Q5. निम्नलिखित कथ्यक अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य । *10×5=50*

(a) भाइ, हम-अहाँ ओहि नजरिये देखबाक अभ्यस्त भ' गेल छी । आइ समस्त मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवीक इएह हाल छै । कमायवला एक गोट, खायवला दस । इएह 'पैरासिटिज्म' हमरा लोकनिक एहि दलित अवस्थाक कारण अछि । हजार कच्छें हमरासँ नीक एखन अहाँक श्रमजीवी अछि । से नै, अपने डेरामे जे दाइ काज करै अछि तकरे देखियौ, तीनू सासु-पुतोहु तीन डेराक काज धयने अछि .... तीस टाका महीना आ तीन थारी भात नित्त । *10*

(b) भेद रसगुल्ला ओ लड्डूमे छैक । रसगुल्ला सरस ओ कोमल होइछ, लड्डू शुष्क ओ कठोर । रसगुल्ला पूर्वक प्रतीक थीक लड्डू पश्चिमक । तेँ हम कहैत छियौह जे ककरो जातीय चरित्र देखबाक-बुझबाक हो त ओकर प्रधान मधुर देखी । *10*

(c) सोझाँमे ठाढ़ि स्त्री-छायाकेँ देखि क' घृणा होइत अछि । घृणा होइत अछि, क्रोध होइत अछि, सिनेह होइत अछि, दया होइत अछि, करुणा, वेदना, ग्लानि, परिताप, चिन्ता सभ किछु होइत अछि । अनिमेष दृष्टिसँ हमरा दिस, हम्मर चश्माक लाइब्रेरी फ्रेम दिस, रेशमी चद्दरि दिस, फिन-ले कम्पनीक धोआ धोती दिस आ हम्मर आँखिमे भरल आश्चर्य दिस तकैत स्त्री-छाया त' सत्ते छाया-मात्र छथि, स्त्री नहि छथि । *10*

(d) एक बेर उन्नैस बरखक अपन बेटीकेँ देखय जे वयसक बाढ़िमे भरल-उमड़ल परमान धारसन लगैक । फेर टोल पड़ोसक स्त्रीगणक आँखि दिस ताकय जकर आँखिमे व्यंग्य रहैक, उत्सुकता रहैक, निष्क्रिय दर्शकक क्रूरता रहैक । मने मन पजरि रहि जाय । ने धूआँ होइक ने धधरा । एहन दिन भेलै छँउड़ीकेँ । केहन भरल-पुरल सासुर छैक । *10*

(e) ओकरा दुनू हाथमे हथकड़ी आ' दूनू पएरमे बेड़ी जकड़ल रहैत छलैक । दूनू आँखि पर पट्टी बान्हल रहैत छलैक । दूनू कानमे बरकल सीसा ढारिकड ओकरा बन्न कए देल गेल छलैक । केवल भोजन कालमे ओकरा आँखिक पट्टी आ' एक हाथक बेड़ी खोलल जाइक । बड़े यंत्रणामे ओकर कारा जीवन बीति रहल छलइ । *10*

Q6. (a) "घरदेखिया" कथा मिथिलाक ग्रामीण समाजक वर्ग-विशेषक यथार्थसँ साक्षात्कार करबैत अछि – स्पष्ट करू । 20

(b) "खट्टर काकाक तरंग" मे हरिमोहन झा उनटे गंगा बहा देने छथि – एहि उक्तिक आलोकमे एकर विशेषता देखाउ । 15

(c) "पृथ्वीपुत्र" उपन्यासमे निम्नवर्गक जीवन एवं ओकर सामाजिक एवं आर्थिक संघर्षकेँ व्यापक रूपेँ व्यक्त कएल गेल अछि" – एहि उक्तिक समीक्षा करू । 15

Q7. (a) " 'वर्णरत्नाकर'मे उत्तम काव्यक वर्णन – चमत्कार, कल्पनाक सूक्ष्मता, चित्रणक रसमयता एवं उक्तिक सामर्थ्यक प्रदर्शन अछि" – द्वितीय कल्लोलक आलोकमे एहि कथनकेँ स्पष्ट करू । 20

(b) राजकमलक कथामे हुनक चारित्रिक वैशिष्ट्य कोनहु ने कोनहु रूपमे अवश्य भेटत – एहि कथन पर विचार करू । 15

(c) "पाँच पत्र" कथा पति-पत्नीक राग-वृत्ति काल-चक्र द्वारा जीवनक दशा-दिशाक बोध करबैत अछि – एहि उक्तिक आलोकमे एहि कथाक मार्मिकता देखाउ । 15

Q8. (a) " 'मफाइत चाहक जिनगी' आदर्शवादी शिक्षित बेरोजगार नवयुवकक संघर्षपूर्ण जीवन-गाथा अछि" – स्पष्ट करू । 20

(b) लोकगाथात्मक ऐतिहासिक उपन्यास "लोरिक विजय"मे चरित-नायकक चारित्रिक विशेषताक निदर्शन भेल अछि – युक्तियुक्त पल्लवित करू । 15

(c) मणिपद्मक "वालगोविन" कथाक मार्मिकता पर प्रकाश दिअ । 15

CS (MAIN) Exam : 2017

STH–P–MTLI

मैथिली

प्रश्न-पत्र–I

(साहित्य)

समय : 3 घंटा	पूर्णाङ्क : 250

प्रश्न-पत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकें सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ

एतय दू खण्ड (Section)मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि।

प्रश्न संख्या **1** तथा प्रश्न संख्या **5** अनिवार्य अछि। शेष प्रश्नमेसँ **तीन** प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (Section)सँ कम-सँ-कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि।

प्रश्न/खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि।

उत्तर मैथिलीमे लिखब अनिवार्य अछि।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत। यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशतः लिखित उत्तरोकें गणना कयल जायत। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकें अवश्य काटि दी।

MAITHILI

PAPER—I

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग *150* शब्द धरि) : 10×5=50

(a) लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया

(b) 'प्रयत्नलाघव'क विलक्षणता

(c) मैथिली ओ बांग्लाक पारस्परिक सम्बन्ध

(d) मैथिली भाषाक प्रमुख बोली

(e) राजेश्वर झाक भाषा-वैज्ञानिक कृति

2. (a) भाषोत्पत्तिक प्रमुख सिद्धान्तक विवेचन करू। 20

(b) मैथिली ओ असमिया भाषाक सम्बन्धक विवेचन करू। 15

(c) अर्धमागधीक महत्त्व पर प्रकाश दिअ। 15

3. (a) भाषाक आकृतिमूलक वर्गीकरण एवं ओकर विशेषताक मूल्यांकन करू। 20

(b) मागधीक विकासक्रमक समीक्षा करू। 15

(c) बोलीकेँ भाषा बनबाक प्रक्रिया पर प्रकाश दिअ। 15

4. (a) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा ओ मैथिलीक सम्बन्धक विवेचन करू। 20

(b) मैथिली भाषा-विज्ञानक क्षेत्रमे सुभद्र झाक योगदानक समीक्षा करू। 15

(c) व्याकरणक दृष्टिसँ मैथिली भाषाक विशेषताक मूल्यांकन करू। 15

SECTION—B

5. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग *150* शब्द धरि) : 10×5=50

(a) प्राक् मैथिली साहित्य

(b) लोचन

(c) रामविजय

(d) लोकनाट्य

(e) मिथिलामोद

6. (a) मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग विद्वानलोकनिक प्रमुख मतक समीक्षा करू। 20

(b) मध्यकालीन मैथिली नाटकक विकासमे 'कीर्त्तनिञा' नाटकक महत्त्व प्रतिपादित करू। 15

(c) मैथिलीक लोकगाथात्मक उपन्यास पर प्रकाश दिअ। 15

7. (a) विद्यापतिक व्यापक प्रभावक मुख्य कारण अछि हुनक बहुमुखी प्रतिभा—युक्तियुक्त प्रतिपादन करू। 20

(b) हरिमोहन झाक 'जीवन-यात्रा' मार्मिक संस्मरण प्रस्तुत करैत अछि—सयुक्ति विवेचन करू। 15

(c) मैथिली लघुकथाक मुख्य प्रवृत्ति पर प्रकाश दिअ। 15

8. (a) आधुनिक मैथिली कविताक पृष्ठभूमिक विवेचन करू। 20

(b) आधुनिक मैथिली नाटकक जनक जीवन झाकेँ कहल जाइत अछि—सयुक्ति विवेचन करू। 15

(c) मैथिली नाट्य साहित्यक संक्षिप्त परिचय दिअ। 15

★★★

मैथिली / MAITHILI

पेपर II / Paper II

साहित्य / LITERATURE

निर्धारित समय : तीन घंटे
Time Allowed : **Three** *Hours*

अधिकतम अंक : **250**
Maximum Marks : **250**

प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ :

एतय दू **खण्ड (SECTION)** *मे विभक्त कुल* **आठ** *प्रश्न अछि ।*

अभ्यर्थी कुल **पाँच** *प्रश्नक उत्तर देथि ।*

प्रश्न संख्या **1** *तथा प्रश्न संख्या* **5** *अनिवार्य अछि । शेष प्रश्नमेसँ कोनो* **तीन** *प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड* **(SECTION)** *सँ कमसँ कम* **एक** *प्रश्नक चयन आवश्यक अछि ।*

प्रश्न / खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि ।

उत्तर **मैथिली** *(देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि ।*

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि ।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत । यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशतः लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी ।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

There are **EIGHT** *questions divided in* **TWO SECTIONS.**

Candidate has to attempt **FIVE** *questions in all.*

Questions no. **1** *and* **5** *are compulsory and out of the remaining, any* **THREE** *are to be attempted choosing at least* **ONE** *question from each section.*

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

Answers must be written in **MAITHILI** *(Devanagari script).*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION A

Q1. **प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि । काव्य-वैशिष्ट्यकैं निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)** *10×5=50*

(a) काजर-तिमिर-भरमे जसु तन-रुचि, निबसय कुंज-कुटीर ।
बंसि-निसास मधुर विष उगिरए, गति अति कुटिल सुधीर ।।
सजनी, कान्ह से बरजु भुजङ्ग ।
से मोर हृदय-चन्दन-रुह लागल भागल धरम-विहङ्ग ।।
लोचन-कोर पडैते नव नागरि रहए न पारए धीर ।
कुंचित अरून अधर भरि पीबए कुलवति-बरत-समीर ।। *10*

(b) अगमने प्रेम गमने कुल जाएत
चिन्ता पङ्क लागलि करिणी
मञे अबला दह दिस ममि झाखञो
जनिव्याध डरे भीरु हरिणी ।।
चन्दा दुरजन गमन विरोधक
उगल गगन भरि बैरि मोरा ।।
कुहु भरमे पथ पद आरोपल
आए तुलाएल पञ्चदशी । *10*

(c) देखि ककरहु पंकमग्न, सकीतँ उबारि दिऔ
कूपमे खसइतकैं अपन बाँहि पकड़ाए दिऔ,
किन्तु कए काज ई बिसरि जाउ, बिसरि जाउ,
स्मृतिसँ मेटाए लिअ;
अन्यथा होएत तीव्र अनुताप ।
गिरह बान्हि राखू, जे एतादृश लगानी करब
सूदिक कथा कोन मूरहुसँ हाथ धोउ । *10*

(d) कविक कर्म थिक शशिकर-शीकर रसिक चकोरक प्राण ।
दोषाकर बुझि मुद्रित दृग से पंकज स्वयं न आन ।।
कविक कर्म थिक दिनकर किरणे जगतक दृग-आलोक ।
आतप वारण करथि छत्र धर अपनहि छाँयालोक ।।
स्वातिक विन्दु पड़य शुक्तिक मुख मुक्ता झलकय अंग ।
फणिक वदन कण पड़इछ, भरइछ दुर्वह गरल तरंग ।। *10*

(e) झमाझम बरसैत मूसलधार,
    माघक ठार, चैतक तस;
सभ फूसि ओकरा हेतु ।
लगाबथु ग केओ कतेकों जोर
बाप पित्तीकैँ करथु ग सोर
मुदा रोइयाँ एकोटा ओकर
उपाड़ल नहि हेतन्हि ककरो बुतें । 10

Q2. (a) लालदासक रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक बालकाण्डमे मिथिलाक विलक्षण संस्कृतिक मार्मिक चित्रण भेल अछि — युक्तियुक्त प्रतिपादन करू । 20

(b) "एहि प्रबुद्धयुगमे कोन प्रकारक कवि चाही ? एहि प्रश्नक उत्तर यात्रीक चित्रामे संकलित कवितासभ दैत अछि" — एहि कथनक समीक्षा करू । 15

(c) मैथिलीक नव्यतम काव्य-चेतनाक कवि लोकनिक कविताक संग्रह 'समकालीन मैथिली कविता'मे कयल गेल अछि — सयुक्ति विवेचन करू । 15

Q3. (a) "मैथिलीमे नव काव्य-परम्पराक प्रवर्त्तक मनबोध कृष्णाजन्ममे सर्वत्र ठेठ शब्दक ठाठ बान्हि लोकोक्ति समक सटीक प्रयोग कय भाव एवं भाषा दुनूकें अत्यन्त हृदयग्राही एवं प्रभावपूर्ण बना देने छथि" — एहि उक्ति पर विचार करू । 20

(b) 'मिथिला भाषा रामायण'मे सुन्दरकाण्डक नामकरण पर विचार करैत कवीश्वर चन्दा झाक वर्णन-कौशल पर प्रकाश दिअ । 15

(c) " 'कीचक बध'मे प्राच्य एवं पाश्चात्य शैलीक मर्मस्पर्शी समन्वय भेल अछि" — एहि तर्कक मूल्यांकन करू । 15

Q4. (a) "भावक कोमलता, शब्दक लालित्य, लय एवं तुकक कौशल, स्वरक माधुर्य एवं बिम्बक चमत्कार विद्यापति पदावलीक मुख्य विशेषता अछि" — पठित अंशक आधार पर एहि कथनक समीक्षा करू । 20

(b) "पदकेँ ललित श्रुतिमधुर, अर्थानुग्राही एवं समतासंयुक्त बनएबामे यदि शब्दकेँ तोड़हु पड़लैन्हि, ओकर स्वरूप विकृतो करए पडलैन्हि तथा अपन हृदयक भाव झाँपलो भए गेलैन्हि तथापि गोविन्ददास अर्थक प्रसादक हेतु शब्दविन्यास नहि दूरि कएलन्हि" — एहि उक्तिक आलोकमे पठित अंशक आधार पर गोविन्ददासक काव्य-प्रतिभाक विवेचन करू । 15

(c) 'दत्तवती'क द्वितीय सर्गमे वर्णित गुरुकुलक शिक्षण-व्यवस्था एवं आकर्षक वातावरण विश्वशान्तिक अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूपक चित्र प्रस्तुत करैत अछि — सयुक्ति प्रतिपादन करू । 15

SECTION B

Q5. **निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)** ***10×5=50***

(a) सरिपहुँ... बागमती, कमला, बलान, गण्डक आ खास क'क' कोसीतँ अपराजिता अछि ने ! ककरहु सामर्थ नहि जे एकरा पराजित क' सकय । सरकार आओत... चलि जायत... मिनिस्टरी बनत आ टूटत-मुदा ई कोसी... ई बागमती... ई कमला आ बलान... अपन एही प्रलयंकारीगतिमे गामकेँ भसिअवैत, हरिअर-हरिअर खेतकेँ उज्जर करैत, माल-जालकेँ नाश करैत, घर-द्वारक सत्यानाश करैत बहैत रहत आ बहैत रहत । *10*

(b) कोन काज हमरा बुतेँ हयत ? भीख माङब ? भिखमंगोकेँ तँ लोक झझकारिते छै । अहलादि कड बैसबै कहाँ छै । आ भीख की दै छै तँ एकटा पाइ । एक मुट्ठी अन्न ! ई कने बजैएतँ भरि पेट आगरह कड कड खुअबैए । कतेने सिनेह करैए । बीस गोटेक द्वारि घूमब । बीस गोटेक बात सुनब, तँ बीसटा पाइ होयत । घूरि जाइ सेहे नीक । मुदा जँ मौगी देखि लिए ई काँख महँक मोटरी ? *10*

(c) घामक टघार कपारसँ नाकक नोक दड चुबै ! भरल-चढल छाती पर घाम टघरि-टघरि चापत पेट पर बहि डाँडक धोतीमे सुखैल चलि जाइक । मोन एकदम महुरा गेल रहैक । मुँह लाल-स्याह मुदा आँखि ओहिना निश्चल आ स्थिर रहैक । जतेक गैद तबतैक, जतेक घाममे नहाजायत, जतेक मोन माहुर हेतइ, ततेक आर मस्त भय हडर जोतत । अपन घामओ गैदक माहुरमे मगन भय टिटकारलक छोट-छोट बड़दक जोरीकेँ । *10*

(d) सैह काल त हमरा सभक काल भउ गेल । आइ मासान्त, काल्हि संक्रान्ति, परसू भदवा । एकटा टाट बान्हक हो त नौ दिन पतड़ा देखैत बैसल रहू । औ, संसारक और कोनो देश भदवा मानैत अछि ? भद्रा महारानीमे वास्तविक सामर्थ्य छैन्ह त ओकरासभकेँ किऐक नहिं धरैत छथिन्ह ? पृथ्वी पर और-और लोककेँ दिक्शूल किऐक नहि लगैत छैक ? यूरोप, अमेरिका बलाकेँ अधपहरा किऐक नहि घरैत छैक ? सभसँ बुड़िबक दीनानाथ हमरे लोकनि छी ? *10*

(e) सुकर्म आ अपकर्म ककरा कहै छै से बुझबाक बुद्धि जँ अहाँमे रहैत तँ आइ अहाँकेँ हमरासँ वा हमर ऐ स्टालसँ घृणा नै होइत । एके टोकारा पर अहाँ लगले हमरा लग दौडल अबितौं... पुछितौं जे हमर व्यवसाय घाटामे चलि रहल अछि कि नफामे । अहाँ से कयलौं नै आ तेँ हम कहब जे अहाँ ने केवल समाजक, ने केवल आश्रमक वा परिवारक, अपितु अहाँ अपनो लेल भारेटा छी । *10*

Q6. (a) खट्टर ककाक विनोदपूर्ण विचार-लहरी मिथिलाक संस्कृति ओ पुरातन सभ्यता पर मार्मिक व्यंग्यक प्रहार कयने अछि — एहि कथन पर विचार करू । *20*

(b) 'लोरिक विजय' उपन्यासक कथावस्तुक मार्मिकता पर प्रकाश दिअ । *15*

(c) 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यासमे जीवनक ओ चित्र उतरल अछि जे सत्य पर आधारित अछि — एहि उक्तिक समीक्षा करू । *15*

Q7. (a) मैथिली गद्यक विकासमे 'वर्णरत्नाकर'क स्थान निरूपित करैत ओकर नामकरण पर विचार करू । *20*

(b) कोनो कथाक संगति-विसंगति कथाक नहि, ओहि समाजक रहैछ जाहिमे ओ कथाकार रहैत अछि — 'कृति राजकमलक'मे पठित प्रथम दस कथाक आधार पर एहि उक्तिक समीक्षा करू । *15*

(c) आधुनिक मैथिली कथामे वर्त्तमान समाजक चित्र अंकित रहैत अछि — 'कथासंग्रह'मे पठित कथाक आधार पर एहि कथनक औचित्य पर प्रकाश दिअ । *15*

Q8. (a) मैथिलीमे लोकगाथात्मक उपन्यासक क्षेत्रमे मणिपद्मक 'लोरिक विजय'क महत्त्व निरूपित करू । *20*

(b) "जखन बैसल बेटा मायो-बापकेँ नै सोहाइत छैक, आन किए ककरो गरा लगोतैक ।" — भफाइत चाहक जिनगी'मे महेशक एहि उक्तिमे सन्निहित व्यंग्यक समीक्षा करू । *15*

(c) 'वर्णरत्नाकर'क वर्णनक चमत्कार पर प्रकाश दिअ । *15*

मैथिली

प्रश्न-पत्र–I

(साहित्य)

समय : तीन घंटा	पूर्णाङ्क : 250

प्रश्न-पत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकें सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ

एतय दू खण्ड (Section)मे विभक्त कुल आठ प्रश्न अछि।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि।

प्रश्न संख्या **1** तथा प्रश्न संख्या **5** अनिवार्य अछि। शेष प्रश्नमेसँ **तीन** प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (Section)सँ कम-सँ-कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि।

प्रश्न/खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि।

उत्तर **मैथिलीमे** लिखब अनिवार्य अछि।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत। यदि काटल नहि गेल हो, तँ अंशतः लिखित उत्तरोकेँ गणना कयल जायत। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी।

MAITHILI

PAPER—I

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग 150 शब्द धरि) : 10×5=50

   (a) फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज

   (b) 'अर्थ-संकोच'क प्रकृति

   (c) मैथिली एवं उड़ियाक पारस्परिक सम्बन्ध

   (d) मागधी प्राकृत

   (e) मिथिलाक्षरक महत्त्व

2. (a) भाषाक परिवर्तनशीलता पर विचार करू। 20

   (b) भारोपीय भाषा-परिवारक परिचय दिअ। 15

   (c) मैथिली सर्वनामक व्यापकता ओ वैशिष्ट्यक उल्लेख करू। 15

3. (a) भाषाक पारिवारिक वर्गीकरण ओ ओकर वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 20

   (b) मैथिलीक कोनो पाँच गोट बोलीक उदाहरण-सहित परिचय दिअ। 15

   (c) मैथिली भाषाक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 15

4. (a) मैथिली भाषाक क्षेत्रमे डॉ० ग्रियर्सनक की अवदान अछि, विवेचन करू। 20

   (b) मैथिली व्याकरणक समृद्धिक दिशामे पण्डित गोविन्द झाक योगदानक मूल्यांकन करू। 15

   (c) भाषा-विज्ञानक ज्ञानक अन्य शास्त्रसँ सम्बन्ध स्थापित करू। 15

SECTION—B

5. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग 150 शब्द धरि) : 10×5=50

   (a) वर्णरत्नाकर

   (b) शंकरदेव

   (c) वैदेही

   (d) जट-जटिन

   (e) डाक-वचनावली

6. *(a)* मैथिली साहित्यक आदिकालक उपलब्ध सामग्रीसँ परिचय कराउ। 20

(b) आसामक 'अंकीयानाट' पर प्रकाश दिअ। 15

(c) मैथिली लोकसाहित्यमे ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क योगदान पर विचार प्रस्तुत करू। 15

7. *(a)* ''विद्यापतिक प्रभाव मिथिलेधरि सीमित नहि रहल''—एहि उक्तिकेँ पल्लवित करू। 20

(b) मनमोहन झा 'करुण रस'क उद्गाता छलाह, प्रतिपादन करू। 15

(c) आधुनिक मैथिली उपन्यासक स्थिति पर प्रकाश दिअ। 15

8. *(a)* महाकाव्यक निकष पर मनबोधक 'कृष्णजन्म'क मूल्यांकन करू। 20

(b) 'सुंदर-संयोग' नाटकक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 15

(c) मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक स्थितिक विवेचन करू। 15

★ ★ ★

EGT-D-MTLI

मैथिली / MAITHILI

पेपर II / Paper II

साहित्य / LITERATURE

निर्धारित समय : तीन घंटे
*Time Allowed : **Three Hours***

अधिकतम अंक : **250**
*Maximum Marks : **250***

प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लिअ :

*एतय दू **खण्ड (SECTION)** मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि ।*

*अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि ।*

*प्रश्न संख्या **1** तथा प्रश्न संख्या **5** अनिवार्य अछि । शेष प्रश्नमेसँ कोनो **तीन** प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड **(SECTION)** सँ कमसँ कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि ।*

प्रश्न / खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि ।

*उत्तर **मैथिली** (देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि ।*

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि ।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत । यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशत: लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी ।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

*Answers must be written in **MAITHILI** (Devanagari script).*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION A

Q1. **प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि । काव्य-वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)** *10×5=50*

(a) बाग्मति – कमला कोसिक धारा
जा धरि पृथिवी सागर जा धरि
जीवित रहब अहाँ तहिआ धरि
काए – बचनसँ अथवा मनसँ
हिंसा कएल न कोनो जीवक
कोटिक कोटि मनुक्खक हित लए
जिनगी अपन बिताओल गरीबक
दुख ककरो नहि देल कनेको
अपने विपति उठाओल अनेको
जिवितहिँ परसल कीर्ति भुवन भरि
तेना बहाओल शान्तिक सुरसरि । *10*

(b) चाँद सार लए मुख घटना करू
लोचन चकित चकोरे ।
अमिय धोए आँचरे जनि पोछल
दह दिस भेल उजोरे ।।
कामिनि कोने गढ़ली ।
रूप सरूप मोहि कहइते असम्भव
लोचन लागि रहली ।।
गुरू नितम्ब भरे चले न पारए
माझ खीनिम निमाइ ।
भांगि जाइति मनसिजे धरि राखलि
त्रिबलि लता अरुझाइ ।। *10*

(c) गान विशद जानथि लयताल । कंठ मधुर स्वर सुखद विशाल ।।
बालमिकी मुनि शिक्षा देल । रामचरित कंठे कय लेल ।।
जखन करथि रामायण गान । वशीकरण सन मंत्र प्रमाण ।।
सुनि सभजन हो प्रेम अधीन । मृगगण यथा विवश सुनि बीन ।।
पुलकित तन सुख हो नहि थोर । हृदय हरष दृग बरखय नोर ।।
मुनिगण जप तप देलनि त्यागि । रामचरित सुनि भेला विरागि ।। *10*

(d) गुरूजन सरुचि समापि सकल अविकल जत शिक्षा ।
ग्रन्थ-ग्रन्थि पुनि क्रिया-पन्थ, मुख-लेख परीक्षा ।।
ज्ञान चरित सन्धान दक्षता सभक समीक्षा ।
देखि सकल स्नातककेँ देलन्हि जीवन दीक्षा ।।
सत्य ध्येय, शिव समाधेय, सौन्दर्य साधना ।
जीवन काव्यादर्श प्रकृत रस गुण उपासना ।।
साध्य-साधनक पावनता तन-मनक प्रवणता ।
सत्य तथा श्रमसँ सभ अर्थक सिद्ध सफलता ।। 10

(e) जूड़क-चूड़ मयूर-शिखण्डक, मंडित मालति-माले ।
सौरभ उनमत भ्रमरि भ्रमर कत चौदिशि करत झंकारे ।।
सजनि के कह काम अनङ्ग ।
केलि कदम्बतर से रति-नागर पेखल नटवर-भंग ।।
कतहु विषमशर नयन-तूण भर संचर भौंह कमान ।
नागरि-नारि मरम मह हानए लखएन पारए आन ।। 10

Q2. (a) सामाजिक विषमता आ तकरा सँ उत्पन्न स्थितिक कुरूपता सहज आ सरल उपस्थापन यात्रीक कवितामे अनायासे देखल जा सकैछ — चित्राक आधार पर एहि उत्तिक प्रतिपादन करू । 20

(b) "समकालीन मैथिली कविता"क आधार पर कविवर मायानन्द मिश्रक काव्य-वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ । 15

(c) राम-सीता सहित अयोध्या प्रस्थान एवं बालकाण्डक महिमा कथन कए लालदास एहि काण्डक समापन कएने छथि — रमेश्वर चरित मिथिला रामायणक आधार पर सयुक्ति विवेचन करू । 15

Q3. (a) "कीचक-वध" मे कवि वर्णनक प्रति विशेष मात्सर्य नहि देखा भावनात्मक क्रमबद्ध सुनियोजित एवं चारित्रिक विकास दिस अधिक उन्मुख भेल छथि — एहि उक्ति पर विचार करू । 20

(b) मनबोधक "कृष्णजन्म" अपन वर्णन-वैभव हेतु मैथिल-संस्कृतिक उन्मुक्त दस्तावेज थिक' — विवेचन करू । 15

(c) "मिथिला भाषा रामायण"क सुन्दर काण्ड मे वर्णित हनुमानक साहस आ पराक्रमक सजीव चित्रण करू । 15

Q4. (a) "गोविन्ददास भजनावली"क सामग्री शृंगारक अछि परन्तु अपनाकेँ अलौकिक प्रणय-लीलाक साक्षी मानि गोविन्ददास अपन भक्त हृदयक परिचय दैत छथि' — एहि उक्तिक आलोकमे गोविन्ददासक भक्ति-भावनासँ परिचय कराउ । 20

(b) 'विद्यापति जनसाहित्यक निर्माण कएल, मानव हृदयक मूलभूत वासनाकेँ, नैसर्गिक भाव ओ भावावेशकेँ अत्यन्त सूक्ष्मतासँ यथावत चित्रण कएल' — पठित अंशक आधार पर उपर्युक्त कथनक समीक्षा करू । 15

(c) "दत्त-वती" सुरेन्द्र झा 'सुमन'क जीवन-जगत ओ संस्कृति-दर्शन-सम्बन्धी विचारधाराक कवित्वमय आकर-ग्रन्थ थिक — सयुक्ति प्रतिपादन करू । 15

SECTION B

Q5. निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य) *10×5=50*

(a) आ सभसँ अन्तिम दृश्य छल लस्सा लागल कमचीमे फसल चिड़ैक, जे छटपट करैत छल, अहुरिया कटैत छल, मुदा ओहि फाँससँ छुटबाक कोनोटा रास्ता ओकरा सुझाइ नहि दैत छलैक । ओ जतेक छटपटा रहल छल, जतेक कूदि फानि रहल छल ततेक ओकर पाँखिसभ औरो फँसले जाइत छलैक, लभझायले जाइत छलैक । ओहि घड़ी ओकराने प्रियाक सौन्दर्य सोहाइ, ने किछु । हड़िघड़ी ओकरा अन्तरसँ आकुल-क्रन्दन उठैक, धू-धू करैत जकर भाफ अश्रुक रूपमे आँखिक मार्गसँ बहि रहल छलैक, ओकर अतीतक अकर्मण्यतारूपी पापकेँ बहाक दूर ल' जयबाक हेतु । पश्चात्तापक धधकैत आगिमे अतीतक संचित विकार जरिक' सुड्डाह नहिभ' जाइत छैक की ...... । 10

(b) कन्दलित तारुण्य. अपगत बाल्य. उद्भूत अभिलाष. अपगति लज्जा. जागरुक भाव. अङ्कुरित. एवम्विध नायिका. कुण्डल दुइ रत्नमण्डित त(क)रा कान कइसन देषु. जनि कामदेवकाँ रथँ चक्रदुइ जालल अछ. सोनाक डोरँ मध्यभाग वाँधल कइसन देषु. जनि सौन्दर्यक तुलापुरुष काछल बाँन्धिल अछ. 10

(c) ओ छथि पुरान लोक .... पुरान मान्यतामे जिनिहार । ओ नोकरीकेँ प्रतिष्ठाक काज बुझैत छथि आ बनियाक काजकेँ नीच कर्म मानै छथि । हुनकर मान्यता पर हम किए आघात करियनि । हम जाहि संसारमे जीवि रहल छी, अपन अस्तित्वक लेल जेहन संघर्ष हमरा लोकनिकेँ करड पड़ि रहल अछि ताहिसँ ओ अपरिचित छथि । ओ अपन संसारमे रहथु, हम अपन संसारक आगिसँ हुनका किए झरकबियनु । 10

(d) पूर्णिमाक ओइ ज्योत्स्नामय सांझमे, कमलाक धार किछु दूर पर ओ लोकनि, एकटा कारी टिलहा केँ, भसिआइत चल अबैत देखलथिन्ह । हुनका लोकनिकेँ छगुनता लागि गेलन्हि जेई पाथरक टिलहा कोना भसिआइत आबि रहल छैक । तखनहि, रंग-विरंगक वस्त्राभूषणसँ सुसज्जित नारी दल झमझम-खमखम करैत बरियाती वलासँ गुआ-पान मांगए लेल अषाढ़क घटा जकाँ उमड़ि आएल । एक सँ एक कठमस्त छलि ओ सभ । ओकरा सभहिक शरीर अपना-अपना साड़ीमे अंटियो नहि रहल छलैक । 10

(e) लोक कहैत अछि, पृथ्वी पर जतेक पाप होइत अछि, सभक एकमात्र कारण थिक इऐह वस्तु – उत्सुकता ! उत्सुकता, पाप आ अपराध दुनू वस्तुक जननी ! .... हम सभ कोनो वस्तुक प्रति, ओकरा प्राप्त करबाक लेल ओहि वस्तुक सम्पूर्ण व्यक्तित्व कें अपन बाँहिमे, अपन वक्षमे, अपन अनामा आँगुरमे सोनाक अनन्त जकाँ, नीलमणि औँठी जकाँ पहिरि लेबाक लेल उत्सुक होइत छी आ उताहुल होइत छी । आ तकरा बाद हमरा सभक जीवन आ जीवनक उद्देश्य आ विधेय बदलि जाइत अछि .... । *10*

Q6. (a) "लोरिक विजय"क कथावस्तु अति-रोचक होइतहुँ एहिमे अतिशयोक्तिक अभिव्यंजना कएल गेल अछि' — एहि कथन पर विचार करू । *20*

(b) उपन्यासकार ललित "पृथ्वीपुत्र"मे मानव स्वभावक नैसर्गिक प्रवृत्ति ओ भावनाकें जे प्रधानता देल अछि से हुनक स्वस्थ दृष्टिकोणक द्योतक थिक — समीक्षा करू । *15*

(c) "खट्टर काकाक तरंग" मे वर्णित विषय विचारात्मक, सरस, मनोरंजक एवं व्यंग्यक अत्यन्त स्पष्ट रूप परिलक्षित होइछ — स्पष्ट करू । *15*

Q7. (a) "वर्णरत्नाकर" मे ज्योतिरीश्वर सर्वत्र प्रतीयमान चित्त देल अछि, त' कतौ-कतौ सम्भाव्य सेहो अछि, जाहि सँ वर्णनक आदर्श चित्रण प्रस्तुत भेल अछि — पठित अंशक आधार पर प्रमाणित करू । *20*

(b) 'मधुरमनि' कथामे किरणजी श्रमजीवी वर्गक दाम्पत्य जीवनक अनुरागक हिलसगर कथा कहने छथि' — सिद्ध करू । *15*

(c) मिथिलांचलक मध्यमवर्गक अभिजात्य छद्मक विद्रूप राजकमलक कथाक मूलतत्त्व कहल जा सकैत अछि — विवेचन करू । *15*

Q8. (a) ललितक "पृथ्वीपुत्र" नवीन शिल्पक एक एहन उपन्यास अछि जाहिमे स्वातन्त्र्योत्तर ग्रामीण समाजक परिवर्तनशील परिवेशक संघर्षशील कृषक-मजूरक निम्नवित्तीय स्थितिक कलात्मक चित्रण कएल गेल अछि — स्पष्ट करू । 20

(b) 'झगड़ा' संयोगाश्रित घटना प्रधान कथा अछि जकर उद्देश्य करुणा उत्पन्न करब थिक – एहिमे लेखककेँ प्रर्याप्त सफलता भेटल छनि — प्रमाणित करू । 15

(c) "भफाइत चाहक जिनगी"क नाटककार शिक्षित बेरोजगार युवकक माध्यमे समाजमे व्याप्त जीवनक समस्या एवं संघर्षक चित्रणक संग परिस्थितिक अनुसार अपनाकेँ अनुकूल बना सकए तकर बुद्धिवादी सामंजस्य प्रस्तुत कएलनि अछि — एहि तथ्यक मूल्यांकन करू । 15



UPSC MAINS

Union Public Service Commission

Download UPSC IAS Mains 2019 Optional Exam Paper

"Literature Subjects – Maithili (Paper - 1)"

CS (Main) Exam,2019

SDF–U–MTLI

मैथिली

प्रश्न-पत्र–I

(साहित्य)

समय : तीन घंटा

पूर्णाङ्क : 250

प्रश्न-पत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकें सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ

एतय दू खण्ड (Section)मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि।

प्रश्न संख्या **1** तथा प्रश्न संख्या **5** अनिवार्य अछि। शेष प्रश्नमेसँ **तीन** प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (Section)सँ कम-सँ-कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि।

प्रश्न/खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि।

उत्तर **मैथिलीमे** लिखब अनिवार्य अछि।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत। यदि काटल नहि गेल हो, तँ अंशतः लिखित उत्तरोकें गणना कयल जायत। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकें अवश्य काटि दी।

MAITHILI

PAPER—I

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग 150 शब्द धरि) : 10×5=50

   (a) मैथिली भाषाक महत्त्व ओ वैशिष्ट्य

   (b) पाणिनि ओ मैथिली व्याकरण

   (c) प्राकृतक भेद ओ अपभ्रंशक विशेषता

   (d) दीनबन्धु झाक व्याकरणक उपादेयता

   (e) मैथिली भाषाक उद्गम पर प्रकाश

2. (a) भारतीय आर्यभाषाक विकासक्रमसँ परिचय कराउ। 20

   (b) मध्यकालीन आर्यभाषाक विशेषताक विवेचन ओ विश्लेषण करू। 15

   (c) नवीन भारतीय आर्यभाषा-मध्य मैथिलीक स्थान निरूपित करू। 15

3. (a) भाषा-विज्ञानक आकृतिमूलक वर्गीकरण करैत ओकर उपयोगिता सिद्ध करू। 20

   (b) मैथिली भाषाक विकासमे अवहट्ठक महत्त्वक मूल्यांकन करू। 15

   (c) तिरहुता लिपिक विकासक्रमक ऐतिहासिक विवरण ओ साहित्यिक महत्त्वक विश्लेषण करू। 15

4. (a) भाषा एवं बोलीमे अन्तर स्पष्ट करैत बोलीकेँ भाषा बनबाक कारणक उल्लेख करू। 20

   (b) पूर्वाञ्चलीय भाषा साहित्यमे मैथिली, बंगला ओ असमियाक साम्य ओ वैषम्यक विश्लेषण करू। 15

   (c) मैथिलीक विभिन्न बोलीसँ परिचय कराउ। 15

SECTION—B

5. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग 150 शब्द धरि) : 10×5=50

   (a) मैथिलीमे सिद्धसाहित्यक महत्त्व

   (b) ज्योतिरीश्वरक काल निर्धारण

   (c) मैथिली लोकगीत ओ लोकगाथा

   (d) मैथिली साहित्यक विकासमे 'मिथिला मिहिर'क योगदान

   (e) महाकवि विद्यापतिक लोकप्रियताक कारण

6. (a) मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमिमे मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनसँ परिचय कराउ। 20

(b) कवीश्वर चन्दा झा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक विवेचन करू। 15

(c) "'दत्तवती' महाकाव्य थिक"—सोदाहरण प्रमाणित करू। 15

7. (a) मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग विभिन्न विद्वानक मतक समीक्षा करू। 20

(b) मिथिलाक मध्यकालीन नाटकक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 15

(c) मैथिलीक यात्रा साहित्यक स्थिति पर विचार करैत सुभद्र झाक योगदानक महत्त्व पर प्रकाश दिअ। 15

8. (a) नारी जागरणक पृष्ठभूमिमे रचित किछु प्रमुख मैथिली उपन्याससँ परिचय कराउ। 20

(b) आधुनिक मैथिलीक काव्यधाराक प्रमुख प्रवृत्तिसँ परिचय कराउ। 15

(c) मैथिली बाल-साहित्यक भूत-वर्तमान ओ भविष्यक प्रसंग पर तथ्यात्मक विचार प्रकट करू। 15

★★★

Dhyeya IAS Now on Telegram



We're Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram

Channel from the link given below

"https://t.me/dhyeya_ias_study_material"

You can also join Telegram Channel through

Search on Telegram

"Dhyeya IAS Study Material"

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Join Dhyeya IAS Whatsapp Group by Sending "Hi Dhyeya IAS" Message on 9205336039.

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

Step by Step guidance for Subscription:

- **1st Step:** Fill Your Email address in form below. you will get a confirmation email within 2 min.
- **2nd Step:** Verify your email by clicking on the link in the email. (Check Inbox and Spam folders)
- **3rd Step:** Done! you will receive alerts & Daily Free Study Material regularly on your email.

Enter email address

Subscribe



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400



UPSC MAINS

Union Public Service Commission

Download UPSC IAS Mains 2019 Optional Exam Paper

“Literature Subjects – Maithili (Paper - 2)”

CS (Main) Exam,2019

SDF-B-MTLI

मैथिली / MAITHILI

पेपर II / Paper II

साहित्य / LITERATURE

निर्धारित समय : तीन घंटे
Time Allowed : Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लिअ :

*एतय दू **खण्ड (SECTION)** मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि ।*

*अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि ।*

*प्रश्न संख्या **1** तथा प्रश्न संख्या **5** अनिवार्य अछि । शेष प्रश्नमेसँ कोनो **तीन** प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक **खण्ड (SECTION)** सँ कमसँ कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि ।*

प्रश्न / खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि ।

*उत्तर **मैथिली** (देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि ।*

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि ।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत । यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशत: लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी ।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

*Answers must be written in **MAITHILI** (Devanagari script).*

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION A

Q1. **प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि । काव्य-वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)** *10×5=50*

(a) आधक आध आध दिठि-अँचल जब धरि पेखल कान ।
कत सत कोटि कुसुम-सरे जरजर रहत कि जाएत परान ।। *10*

(b) कवरी भये चामरी गिरि कन्दरे
मुख भये चान्द अकासे ।
हरिनि नयन भये स्वर भये कोकिल
गति-भये गज वनवासे । *10*

(c) जाहि बेर जन्म महाप्रभु भेल
तखन अन्धार एहन गोट भेल
सुइ लय बेधिअ गाँथिअ ताग
हाथ छुबिअ तओं हाथहिँ लाग । *10*

(d) अन्न ने छै, कैंचा ने छै, कौड़ी ने छै,
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे ?
उठह कवि, तोँ दहक ललकारा कने,
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे । *10*

(e) हा रघुनाथ ! अनाथ जकाँ, दशकण्ठ-पुरी हम आइलि छी
सिंहक त्रास महावनमे हरिणीक समान डराइलि छी ।।
चन्द्र-चकोरि अहँक सदा, हम शोक समुद्र समाइलि छी
देवर-दोष कहू हम की, अपना अपराधसँ काइलि छी ।। *10*

Q2. (a) 'दत्त-वत्ती' महाकाव्यमे भारतीय सामाजिक चिन्तन, राष्ट्रीय चेतना ओ सांस्कृतिक गरिमाक चित्रण भेल अछि – स्पष्ट करू । *20*

(b) 'समकालीन मैथिली कविता' मे कविलोकनिक नव्यतम काव्य-चेतना प्रस्फुटित भेल अछि – विवेचन करू । *15*

(c) 'कीचक-बध' मे संस्कृतक परम्परासँ भिन्न आधुनिक प्रणालीक अनुसरण कएल गेल अछि – मूल्यांकन करू । *15*

Q3. (a) 'यात्री' जीक 'चित्रा' मे यथार्थवादी शैली, ग्राम्य-भाषा ओ मुक्त-वृत्तक प्रयोग भेल अछि – स्पष्ट करू। *20*

(b) विद्यापतिक गीत सभमे शृंगारक उभय पक्ष – संयोग एवं वियोगक चित्र प्रस्तुत भेल अछि – 'विद्यापति गीतशती'क पठित अंशक आधार पर विवेचन करू। *15*

(c) 'गोविन्ददास भजनावली'क पठित अंशक आधार पर प्रमाणित करू जे विद्यापतिक पश्चात् गोविन्ददासक मैथिली साहित्यमे सर्वोपरि स्थान अछि। *15*

Q4. (a) 'मिथिलाभाषा रामायण'क सुन्दरकाण्डमे सीताक अन्तर्द्वन्द्वक स्वाभाविक चित्रण भेल अछि – विवेचन करू। *20*

(b) मैथिली साहित्यमे 'कृष्णजन्म'क ऐतिहासिक महत्त्व अछि – सयुक्ति विवेचन करू। *15*

(c) 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण'क पठित अंशक आधार पर लालदासक काव्य वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। *15*

SECTION B

Q5. **निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)** *10×5=50*

(a) मैथिल चाह तँ ने पिबैए, मीठ पिबैए । कतबो चाहमे चीनी देने रहबै .... ऊपर सँ एक वा दू चम्मच आर चाही । एहनमे लोक बिकाइये जायत । केहन महगी छै आ चीनी कोना भेटै छै से बुझिते छिए ! *10*

(b) असलमे धरती जोतनिहारक थिक । हरबाहक थिक जे धरतीक असल बेटा थिक । जे अपन पसेनासँ धरती-माता केँ पूजै अछि । कय दिन देखलहक अछि मालिककेँ अपन पसेनासँ धरती-माताक पूजा करैत ? *10*

(c) अहाँक लिखल चारि पाँती चारि सय बेर पढ़लहुँ । तथापि तृप्ति नहि भेल । आचार्यक परीक्षा समीप अछि । किन्तु ग्रन्थमे कनेको चित्त नहि लगैत अछि । सदिखन अहींक मोहिनी मूर्ति आँखिमे नचैत रहै अछि । *10*

(d) ...... जैह भेद रसगुल्ला ओ लड्डूमे छैक । रसगुल्ला सरस ओ कोमल होइछ, लड्डू शुष्क ओ कठोर । रसगुल्ला पूर्वक प्रतीक थीक लड्डू पश्चिमक । तेँ हम कहैत छिऔह जे ककरो जातीय चरित्र बुझबाक हो त' ओकर प्रधान मधुर देखी । *10*

(e) पूर्णिमा चान्द अमृत पूरल अइसन मुह । श्वेत पङ्कजकाँ दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि, काजरक कल्लोल अइसन भञुह । *10*

Q6. (a) 'खट्टर ककाक तरंग' मे तरंगित जतेक उत्कृष्ट हास्य बूझि पड़ैत अछि ताहिसँ बेसी मिश्रण अछि व्यंग्यक – सयुक्ति विवेचन करू । *20*

(b) 'वर्णरत्नाकर'क द्वितीय कल्लोलमे वर्णित विषय-वस्तु एवं ओकर महत्त्वकेँ स्पष्ट करू । *15*

(c) 'पृथ्वीपुत्र' एक सामाजिक उपन्यास थिक जाहिमे जीवनक ओ चित्र उतरल अछि जे सत्य पर आधारित अछि – समीक्षा करू । *15*

Q7. (a) 'लोरिक-विजय' उपन्यास अपराजेय पौरुषक लोककथा थिक, संगहि आध्यात्मिक जीवन-दर्शन, शैव, बौद्ध, तन्त्र, इत्यादि सांस्कृतिक कथाक समावेश कएल गेल अछि – समीक्षा करू । *20*

(b) 'भफाइत चाहक जिनगी' आदर्शवादी शिक्षित बेरोजगार नवयुवकक संघर्षपूर्ण जीवनगाथा अछि – स्पष्ट करू । *15*

(c) मैथिली कथा साहित्यक विकासमे 'कृति राजकमल'क योगदान स्पष्ट करू । *15*

Q8. (a) मैथिली कथा साहित्यमे 'मणिपद्म'क 'बालगोविन' कथाक विशिष्ट स्थान प्राप्त छैक – स्पष्ट करू । *20*

(b) 'लोरिक-विजय' मे मिथिलाक माटि-पानि आ संस्कारक सम्पूर्ण सौन्दर्य ओ सौरभ उद्भाषित भए उठल अछि – एहि उक्तिक समीक्षा करैत 'लोरिक-विजय'क औपन्यासिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ । *15*

(c) राजकमलक कथा ने हुनक चारित्रिक विशेषता कोनहु ने कोनहु रूप मे अवश्य भेटत – एहि कथन पर विचार करू । *15*

Dhyeya IAS Now on Telegram



Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Join Dhyeya IAS Whatsapp Group by Sending "Hi Dhyeya IAS" Message on 9205336039.

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

Step by Step guidance for Subscription:

- 1st Step: Fill Your Email address in form below. you will get a confirmation email within 2 min.
- 2nd Step: Verify your email by clicking on the link in the email. (Check Inbox and Spam folders)
- 3rd Step: Done! you will receive alerts & Daily Free Study Material regularly on your email.

Enter email address

Subscribe



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

लन्तपत्नी, नुमा

SECTION—I

खण्ड—I

1. भारोपीय भाषा परिवारक अर्थ, नामकरणकें स्पष्ट करैत मैथिलीक स्थान निरूपित करू। 50

2. मैथिली भाषाक ऐतिहासिक विकासक्रमकें स्पष्ट करैत भाषाक महत्व पर विचार करू। 50

3. हिन्दी एवं बंगला भाषाक संग मैथिली भाषाक सम्बन्धक वैशिष्ट्यक उल्लेख करैत अन्तरकें स्पष्ट करू। 50

4. निबंधक स्वरूपकें स्पष्ट करैत विकासक रूपरेखा प्रस्तुत करू। 50

5. आधुनिक मैथिली कविताक प्रवृत्ति पर विचार करू। 50

6. नारी-विमर्शक दृष्टिकोणसँ आधुनिक मैथिली लघु-कथाक समीक्षा करू। 50

SECTION—II

खण्ड—II

7. विद्यापतिक शिव-विषयक गीतमे मिथिलाक संस्कृतिक अभिव्यक्ति भेल अछि—स्पष्ट करू। 50

8. गोविन्द दासक काव्य नारिकेल सदृश होइतहुँ श्रुतिमाधुर्यसँ परिपूर्ण अछि—एहि उक्तिक विवेचन करू। 50

9. मिथिला भाषा रामायणक 'सुन्दरकाण्ड'क आधार पर कवीश्वर चन्दा झाक काव्य-सौष्ठवक विवेचना करू। 50

10. "'सूर्यमुखी' चेतनाक लक्षण अछि, जे सततिकाल सूर्यक दिस उन्मुख रहैत छै आ जकर प्रतिफलन हमर काव्य-पुरुषक अभीष्ट अछि"—एहि उक्तिक आधार पर 'सूर्यमुखी' फूलक वैशिष्ट्यक वर्णन करू। 50

11. "राजकमलक कथाक नारीमे मिथिलाक आदर्श, संस्कार, त्याग, समर्पणक भाव अभिव्यक्त भेल अछि"—एहि कथनक आलोकमे अपन अभिमत प्रकट करू। 50

12. निम्नलिखित अवतरणमेसँ कोनो दूक सप्रसंग व्याख्या करू : 25×2=50

(क) एहि लिपिक मिथिलाक्षर नाम नवीन थिक; एकर आदि नाम, ओ तेँ यथार्थ नाम, थिक तिरहुता। एही नामसँ एकर विकासक कालहुक सूचना भए जाइत अछि। एहि जनपदक तीरभुक्ति नाम गुप्त साम्राज्यकालक थिक, कारण गुप्तलोकनि अपन राज्यक विभागकेँ 'भुक्ति' कहथि। तीरभुक्तिक विकृत रूप थिक 'तिरहुति'। गुप्तलिपिसँ विकासेकँ पओने प्राच्यदेशक ई लिपि गुप्तोत्तरकालमे तिरहुता नामसँ प्रसिद्ध भेल।

(ख) आधक आध आध दिठि-अंचल जब धरि पेखल कान।
कत सत कोटि कुसुम-सरे जरजर रहत कि जाएत परान॥
सजनी,जानल बिहि मोर वाम।
दुहु लोचन भरि जे हरी हेरए तसु पद मोर परनाम॥
'सुनयनि' कहैत कान्ह घन सामर मोहि बीजुरि सम लागि।
'रसवति' करक परस-रस भासत हमर हृदय जनि आगि॥

(ग) कतए भवन, कतए आँगन, बाप कतए, कतए माए।
कतहु ठहोर नहि ठेहर, के कर एहन जमाए॥
कओन कएल एहो असोजन, केओ न हिनक परिवार।
जे कएल हिनक निबन्धन, धिक थिक से पँजिआर॥
कुल-परिवार एकओ नहि, परिजन भूत-बेताल।
देखि-देखि झूर होअए तन, के सहए हृदयक साल॥

(घ) "हरि अनन्त हरि-कथा अनन्ता" एहि लोकोक्तिमे हम एतबे परिवर्त्तन करऽ चाहैत छी जे हरि-कथा आ मनुक्खक कथामे कोनो भेद, कोनो अन्तर नहि छैक। हम सभ मनुक्ख छी,...... माने, हमरा सभक देह आ आत्मामे मात्र हरि, मात्र देवता नहि, दैत्य आ राक्षसक निवास स्थान सेहो अछि। अस्तु : हमरा सभक कथा,..... हमरा सभक व्यक्तित्व आ सामाजिक चरित्रक कथा अनन्त अछि, हरि कथासँ वेसी अनन्त।

(ङ) तोँ विसरल-भूलल अपनाकेँ दुर्बल मानि रहल छऽ।
तोँ सिंहक सन्तान सनातन, छागर जानि रहल छऽ।
कतऽ गेल छऽ उर्जा? तोहर रुधिर-प्रवाह कतऽ छऽ।
कतऽ गेल छऽ आस्था? जीवन-प्रति उत्साह कतऽ छऽ।
मरि ने सकबऽ कालजयी तोँ, पीबि अमृत-रस-लहरी।
जागऽ देश हमर हे भारत, जगा रहल युग-प्रहरी।

(च) नहि अछि आज्ञा तेहन, जेहन हम कौतुक करितहुँ।
लङ्कापुरी उखाड़ि प्रभुक, पद लग लय धरितहुँ॥
दशमुख सौँ कय बेरि अपन दुहु पयर धरबितहुँ।
लाँगड़िमे लपटाय बाँधि सभ लोक फिरबितहुँ॥
जननि थोड़ दिन विपति अछि, सकुल सदल रावण मरत।
गृद्ध काकगण मगन मन, लङ्कापुर डेरा करत॥

(छ) अन ने छै केँचा ने छै कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे?
उठह कवि, तोँ दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे!
हमर वीणाध्वनि कने पहुँचैत जँ
सटल-पाँजर बोनिहारक कानमे
सफल होइत तखन ई स्वरसाधना
चिर-उपेक्षित जनक गौरव-गानमे।

★★★

SECTION—I

खण्ड—I

1. मैथिली भाषाक ऐतिहासिक विकासक्रमक विस्तृत विवरण प्रस्तुत करू। 50

2. कोनो बोलीकेँ भाषाक स्वरूप लेबामे कारक तत्त्व पर विचार करू। 50

3. कृष्णकाव्य ओ रामकाव्यक दृष्टिएँ मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण करू। 50

4. आधुनिक मैथिली लघुकथाक विकासमे स्व० राजमोहन झाक योगदान पर प्रकाश दिअ। 50

5. आधुनिक मैथिली कविताक स्वरूप ओ शिल्प पर विचार करू। 50

6. 'बंगला' एवं 'संथाली' भाषाक संग मैथिलीक सम्बन्धक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 50

SECTION—II

खण्ड—II

7. विद्यापति युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा छलाह, हुनक विभिन्न रचनाक आधार पर एहि बातक विश्लेषण करू। 50

8. कविवर चन्दा झा आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासक दिशा निर्देशित कएलन्हि, एहि पर प्रकाश दिअ। 50

9. 'सूर्यमुखी'मे चित्रित कविवर आरसी प्रसाद सिंहक काव्य-प्रतिभासँ परिचय कराउ। 50

10. प्रबन्ध-संग्रहक लेखक मानक मैथिली गद्यकारक संगहि एक उच्चकोटिक अनुसंधाता सेहो छलाह, विचार करू। 50

11. राजकमल चौधरी एक रसिक शिल्पी कथाकार छथि, युक्तियुक्त विवेचन करू। 50

12. निम्नलिखित अवतरणमेसँ कोनो दू अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू : 25×2=50

(क) कंटक गाड़ि कुसुमसम पदतल मंजिर चीरहि झाँपि।
गागरि वारि ढारि कए पिच्छर चलतहुँ आँगुरि चाँपि।।
माधव, तुअ अभिसारक लागि।
दुरतर पन्थ गमन धनि साधए मन्दिर जामिनि जागि।।
करयुग नयन मूँदि चलु भाविनि तिमिर पयानक आसे।
कर कंकन पन करि सुखबन्धन सिखए भुजग-गुरु पासे।।

(ख) ससन-परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह।
नव जलधर तर चमकए रे जनि बीजुरि-रेह।।
आज देखलि धनि जाइते रे मोहि उपजल रङ्ग।
कनकलता जनि संचर रे महि निरअवलम्ब।।
ता पुनु अपरूब देखल रे कुचयुग अरविन्द।
विगसित नहि किछु कारण रे सोझाँ मुखचन्द।।

(ग) पुरुषक जाति ओकरा के की कहतै
ओकरे समाज ओकरे बात रहतै
उठा लितथि बरु भगवान हमरो
कथी लए भारी लगितिअइ ककरो

मरब तँ कानत क्यौ नहिएँ

रहब तँ क्यौ जानत नहिएँ

इहो जीवन कोनो जीवन थीक

एहिसँ कुकुर बिलाड़िए नीक

(घ) गुड़कल गुड़कल भिड़ुकल जाय

जतय अछल दुइ व्रिच्छ अकाय

जमला अर्जुन कमलानाथ

जुगुति उखाड़ल छुइल न हाथ

खसल महातरु हँसल मुरारि

भेल अपात जगत परचारि

आँगन सुन देखि नयन नोरायल

जसोमतिकाँ हिअ हाथ हेरायल

(ङ) किछुए वर्ष मे पेट मे पिल्ही, देह मे घाव-फोसरी, आँखि मे सेर-दू-सेर काँची नेने, फाटल-चीटल फराक मे नेटा-पोटा पोछैत, खरिहाने-खरिहान, गाछिए-गाछी बउआइवाली तिरू, बाँसक नवका कोपर सन कोमल, कविश्रेष्ठ वाणभट्टक श्यामांगी नायिका भ'गेली।

(च) सुख भोगल अछि, दुख देखल अछि,

दुर्लभ अछि आनन्द।

स्वप्न भेल सुख, अमर भेल दुख,

डूबल जीवन-छन्द।।

दुख ने माँगल, सुख ने त्यागल,

आएल अपनहि आप।

शीतलता ले श्रमकेँ साधल,

सहन भेल संताप।।

(छ) हम ई नहि कहैत छी जे मिथिलामे नाटक लिखले नहि गेल, से के कहि सकैत अछि? हमर अभिप्राय अछि जे मिथिलामे नाटकक अभिनय होइत छल तकर कोनो प्रमाण हमरा लोकनिकेँ नहि भेटैत अछि। तहिना मैथिली नाटकसँ हमर आशय मिथिलामे रचित नाटक नहि अछि, ने मिथिलाक कविक रचित नाटक; हम तँ मैथिली नाटकसँ बुझैत छी ओ नाटक जे मिथिलाक जनभाषामे रचित हो, मैथिलीमे हो। एहन नाटक हमरा एहि बीसम शताब्दीसँ पूर्वक नहि भेटैत अछि मुदा से जँ भेटबो करैत तँ हम ओकर नाटकीयता ताधरि स्वीकार नहि करितहुँ जाधरि ओकर सफल अभिनयक प्रमाण हमरा नहि भेटैत।

★★★







Videha e-Learning

Gajendra Thakur

भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

भाषाक पारिवारिक वर्गीकरण ऐतिहासिक आधारपर होइत अछि, जइमे भाषाक इतिहास, एक भाषाक दोसर भाषासँ उत्पत्ति, भाषाक आकृति-प्रकृति माने रचनात्मकताक संग अर्थ-तत्वपर सेहो ध्यान देल जाइत अछि। जेना कोनो व्यक्ति वा समूह बीजीपुरुषक संकल्पना करैत अछि आ ओतऽसँ अपना धरि एकटा वंशवृक्षक निर्माण करैत अछि, तहिना भाषाक इतिहासक लेखक सेहो आदि, मध्य आ आधुनिक कालक आधारपर भाषाक पूर्ववर्ती आ बीज भाषाक संकल्पना सोझाँ अनै छथि। मुदा भाषाक इतिहासमे पुत्री भाषा आ बहिन भाषाक संकल्पना सेहो ऐ तरहेँ सोझाँ अबैत अछि।

मैथिलीक भारोपीय भाषा परिवारमे स्थान

स्थान, शब्द, व्याकरण आ ध्वनिक आधारपर भाषा एक-दोसरासँ लग होइत अछि। मुदा ऐ मध्य किछु अपवाद सेहो अछि। अवेस्ता, अंग्रेजी आ जर्मन भाषा मैथिलीसँ भौगोलिक रूपसँ दूर रहलोपर एक्के परिवारक अछि, मुदा अरबी, तमिल आदि सापेक्ष रूपेँ भौगोलिक निकटता अछैत दोसर परिवारक अछि।

फेर भाषा स्थित आयातित विदेशज शब्दावलीक आधारपर हम एक भाषाकेँ दोसर भाषाक परिवारक सिद्ध नै कऽ सकै छी। तहिना ध्वनिमूलक आ शब्दमूलक अर्थक साम्य सेहो दू भाषा परिवारकेँ एक वर्गमे नै आनि सकैत अछि, जेना संस्कृतक जाल्म आ अरबीक जालिम -शब्दमूलक साम्य वा मैथिलीक मियाऊँ आ चीनी मन्दारिन भाषाक म्याऊँ (बिलाड़ि)- ध्वनिमूलक साम्य।

ध्वनिक साम्यमे सेहो कखनो काल गड़बड़ी होइत अछि, जेना मैथिलीमे ड़, ढ़ आ चन्द्रबिन्दुक खूब प्रयोग होइत अछि मुदा ई तीनू ध्वनि संस्कृतमे नै अछि।

भौगोलिक आधारपर सेहो ‘‘भारोपीय भाषा’’, ई नामकरण पूर्ण रूपसँ समीचीन नै अछि, कारण सम्पूर्ण भारतमे भारोपीय भाषा परिवारक उपस्थिति नै अछि आ भारतमे भारोपीय भाषाक अतिरिक्त आनो भाषा परिवारक उपस्थिति अछि। यूरोपमे सेहो काकेशियन आदि भाषा परिवार भारोपीय भाषा परिवारमे नै अबैत अछि।

व्याकरण साम्यक आधार दू भाषाकेँ एक परिवारमे रखबाक सभसँ सुदृढ़ आधार अछि।

मूल रूपसँ भारोपीय परिवारक भाषामे प्रत्ययक प्रयोग खूब होइत अछि आ धातुमे प्रत्यय जोड़ि शब्द बनैत अछि। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, ई तीन तरहक लिंग अछि तँ एकवचन, द्विवचन आ बहुवचन ऐ तीन तरहक वचन। मुदा आब अधिकांश भाषामे एकवचन आ बहुवचन यएह दूटा वचन होइत अछि। जइ क्रियाक फल स्वयं प्राप्त हुअए से आत्मनेपदी आ जकर फल दोसरकेँ भेटए से परस्मैपदी, ई दू तरहक क्रिया भारोपीय भाषमे रहैत अछि। समासक प्रयोग सेहो मोटा-मोटी भारोपीय भाषाक विशेषता अछि।

भारोपीय परिवारक दू भेद अछि। सए (१००) लेल प्रयुक्त मूल भारोपीय शब्द ‘‘क्मतोम’’ दू तरहेँ बाजल जाइत अछि। संस्कृतमे ‘‘शतम्’’ आ लैटिनमे ‘‘केन्टुम्’’। ऐ आधारपर संस्कृतसँ लग भाषा समूह अवेस्ता (भाषा आ ग्रंथ दुनूक नाम, जेन्द-अवेस्ता- ओइपर भाष्य), फारसी, मैथिली, रूसी आदि अबैत अछि। केन्टुम् वर्गमे

लैटिनसँ लग भाषा जेना ग्रीक, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन आदि अबैत अछि।

शतम् वर्गमे भारत-इरानी (वा इन्डो आर्यन), बाल्टो-स्लाविक, आर्मीनी आ इलीरी भाषा समूह अबैत अछि।

इन्डो आर्यन वा भारतीय-ईरानी भाषा समूहमे ऋगवेद सभसँ प्राचीन अछि। जोराष्ट्रियन धर्मक अवेस्ता ग्रन्थ जे वैदिक कालक अछि ओ अवेस्ता भाषाक ग्रन्थ अछि। ईरानी भाषा समूहमे अवेस्ता, प्राचीन फारसी, पहलवी, पश्तो, बलूची आ कुर्द भाषा प्रमुख अछि। भारतीय आर्यभाषा समूहमे वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली (प्राचीन प्राकृत ५००. ई.पू.सँ १०० ई.पू. धरि), प्राकृत (मध्य प्राकृत १०० ई.पू. सँ ५०० ई. धरि), अपभ्रंश (५०० ई. सँ ९०० ई. धरि) आ अवहट्ट (९०० ई. सँ ११०० ई. धरि) आ तकर बाद मागधी प्राकृतसँ मैथिली, बंगला, ओड़िया, असमी आदि भाषा (११०० ई. सँ) अबैत अछि।

विश्वक भाषाक पारिवारिक वर्ग

(अ) यूरेशिया, (आ)अफ्रीका, (इ)प्रशान्त महासागरक क्षेत्र (पैसिफिक), (ई)अमेरिका

(अ) यूरेशिया- (क)भारोपीय, (ख)द्राविड़, (ग)बुरुशस्की, (घ)काकेशी, (ङ)यूराल-अल्ताई, (च)चीनी, (छ)जापानी-कोरियाई,

(ज)हाइपरबोरी, (झ)बास्क, (ञ)सेमीटिक-हेमिटिक- *अफ्रीकामे*

(क)भारोपीय- (i) इन्डो आर्यन, (ii)बाल्टो-स्लाविक, (iii)आर्मीनियन, (iv) इलीरी, (v)ग्रीक, (vi)केल्टिक, (vii)जर्मानिक, (viii)इटालिक, (ix)हित्ती, (x)तोखारी

(i) इन्डो आर्यन- (a)भारतीय आर्यभाषा, (b)ईरानी

(a)भारतीय आर्यभाषा

(A)प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२५०० ई.पू.सँ ५०० ई. पू.)

(B)मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (५०० ई.पू.सँ १००० ई.)

(C)आधुनिक भारतीय आर्यभाषा(१००० ई. सँ आइ धरि)

(A)प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२५०० ई.पू.सँ ५०० ई. पू.)- वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत (वाल्मीकि - ‘‘मानुषिमिह संस्कृताम्’’- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषा।)

(B)मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (५०० ई.पू.सँ १००० ई.)- पहिल प्राकृत (पाली), दोसर प्राकृत (साहित्यिक प्राकृत- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्द्धमागधी, पैशाची, ब्राचड, खस), तेसर प्राकृत (अपभ्रंश- प्रथमे-प्रथम व्याडि आ पतंजलि द्वारा उल्लेख।)

(C)आधुनिक भारतीय आर्यभाषा(१००० ई. सँ आइ धरि) (अ) **शौरसेनी**सँ खड़ी बोली, वृजभाषा, बाँगरू, कन्नौजी, बुन्देली,

मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती, गुजराती (आ)**महाराष्ट्री**सँ मराठी, कोंकणी, नागपुरी, बरारी (इ) **मागधी**सँ भोजपुरी, मगही, बांगला, ओड़िया, असमी, मैथिली (ई) **अर्धमागधी**सँ अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी (उ) **पैशाची**सँ लहँदी (ऊ) **ब्राचड**सँ सिन्धी, पंजाबी (ए) **खस**सँ पहाड़ी भाषाक विकास रेखांकित होइत अछि।

वाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाएल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर- ''पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ'' संगे ज्योतिरीश्वर द्वारा सात *''उपभाषाक''* चर्च भेल अछि। प्राकृतक कएकटा प्रकार छल। ओइमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्टक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जइमे एकर सभ शब्दक स्वरांत हएब, क्रियारूपक जटिल हएब (मुदा तइमे लैंगिक भेद नै हएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्टमे दृष्टिगोचर हएब शुरू भऽ गेल छल। ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ट (अवहट्ठ) कें ''मैथिल अपभ्रंश'' तइ कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी

प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। अवहट्ट मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ ऐमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक ‘‘कीर्तिलता’’ अवहट्टमे अछि, मुदा ‘‘चर्या गीत’’ आ ‘‘वर्णन रत्नाकर’’ कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती हेबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्टसँ सेहो लग अछि। दामोदर पंडितक ‘‘उक्ति व्यक्ति प्रकरण’’ सेहो कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि आ अवहट्टसँ लग अछि। भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्टक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि।

मैथिली वा कोनो भाषाक उत्पत्तिक मूलमे मनुक्खक मुँहसँ बहराएल ध्वनि आ ओइ ध्वनिक अर्थ कोनो वस्तु, व्यक्ति वा विचारसँ हएब सिद्ध हएत। ध्वनि तँ चिड़ै, चुनमुनी, माल-जाल आ बौक व्यक्ति द्वारा सेहो उत्पन्न होइत अछि मुदा से अर्थपूर्ण नै भऽ पबैए आ भाषाक निर्माण नै कऽ पबैए।

१८६६ ई. मे पेरिसमे ‘‘ला सोसिएते द लिंग्विस्टीक’’ नाम्ना संस्था भाषाक उत्पत्ति आ विश्वक भाषा सभक निर्माण’’ ऐ विषयकेँ अपन कार्यकारिणीसँ हटा देलक कारण ऐ विषयक विवेचन अनुमानपर आधारित हेबाक कारणसँ ई वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ दूर रहैत अछि।

वैदिक संस्कृतसँ लौकिक संस्कृत आ ओइसँ पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ मैथिलीक क्रम ताकल जा सकैत अछि। मुदा वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ ओ भाषा

अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओइमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल ‘‘गाथिन’’, ‘‘गातुविद्’’ आ ‘‘गाथपति’’ ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक संस्कृतक उत्पत्ति दैवी रूपमे भेल वा आंगिक-वाक संकेतक संप्रेषणीयता बढ़ेबाक लेल से मात्र अनुमानेक विषय भऽ सकैत अछि। भाषामे ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य आ अर्थक परिवर्तन भेलासँ वैदिकसँ लौकिक संस्कृत बहराएल आ फेर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ मैथिली। पाणिनी द्वारा भारतक विभिन्न क्षेत्रसँ लेल शब्दावली लौकिक संस्कृतकेँ ततेक समृद्ध केलक जे ओइसँ आन सभ भाषाक कतेको तरहक रूप बहार भेल। कतेक तरहक क्षेत्रीय प्राकृत आ अपभ्रंश ओइ भौगोलिक क्षेत्रक विस्तारकेँ लैत बहार भेल आ ओइसँ आइक आधुनिक भारतीय आर्य भाषा सभक उत्पत्ति भेल।

मैथिली भारोपीय भाषा परिवारसँ सम्बन्धित अछि। भारोपीय भाषा परिवारक भीतर विश्वक लगभग चालीस प्रतिशत जनसंख्या अबैत अछि। ई सभसँ पैघ भाषा परिवार अछि, सभसँ समृद्ध सेहो। मोटा-मोटी एकर दू विभाग छै, पहिल यूरोपक आर्य भाषा आ दोसर भारत-ईरानी शाखा। भारत-ईरानी आर्यभाषाक भीतर ईरानी, दरद आ भारतीय आर्यभाषा अबैत अछि। दरद भाषामे कश्मीरी आ पामीर पठारक पूर्व दक्षिणक भाषा सभ अछि। मैथिली भाषाक उद्‌गम आ विकास भारतीय आर्यभाषाक भीतर ताकल जाइत अछि।

भाषाक उद्‌गम तँ अनुमानक विषय थिक। भाषाक उद्‌गमक आ तकर प्रयोगक कतेक वर्षक पश्चात् ओइमे साहित्य रचना होइत

अछि। तखन जा कऽ ओकर रूप स्थिर होइत अछि। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेद, लौकिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण, पालि भाषाक प्राचीनतम ग्रन्थ बुद्ध त्रिपिटक, प्राकृतक प्राचीनतम ग्रन्थ विमल सूरिक पउमचरिउ, अपभ्रंशक प्राचीनतम ग्रन्थ योगीन्द्रक परमात्म प्रकाश अछि। आदि मैथिलीक प्राचीन साहित्य सिद्ध साहित्य, बौद्धगान आ ज्योतिरीश्वरक वर्णन रत्नाकर अछि।

सिद्ध सरहपाद 700-780 **सरहपाद-''सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ ,मण्ड पिबन्तोँ बिसरउ एमइउ'',** मिथिलामे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु (गणेशजीक अंकुश आँजी) सँ होइत अछि। मिथिलामे ई धारणा अछि जे माँड़ पीलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि। दोसर उदाहरण- बलद बियायल गबैया बाँझे- बड़द बिया गेल आ गाए बाँझे अछि।

मध्यकालीन मैथिलीक ग्रन्थ विद्यापतिक मैथिली साहित्य आ तकर बाद चतुर चतुर्भुज, शंकरदेव, विभिन्न मल्ल नरेश द्वारा रचित साहित्य, कीर्तनिया आ अंकिया नाटसँ मनबोध धरि अबैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्य चन्दा झासँ प्रारम्भ होइत अछि।

प्राचीन भारतक आर्यभाषाक क्षेत्र वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदमे वर्णित धार सभक आधारपर निर्धारित कएल जा सकैत अछि आ एकर प्रसार कोना आन क्षेत्रमे भेल सेहो ऐसँ निर्धारित होइत अछि। ऋगवैदिक आर्य ''सप्त सैन्धव'' माने सात धारक क्षेत्रमे रहै छला- ई सात धार छल वितस्ता, अश्किनी, परुष्णी, शतुद्रु, विपाशा, क्रुमु आ गोमती। ऐमे पहिल पाँचटा धार पंजाब आ

शेष दूटा अफगानिस्तानमे बहै छल। ई सातो धार ऋगवेद कालक सभसँ उपयोगी धार सिन्धुक सहायक छल। ऋगवेदमे सरस्वती धारक वर्णन "धार सभक माय"क रूपमे भेल अछि। ऋगवेदमे यमुनाक दू बेर आ गंगाक एक बेर वर्णन अछि। ऋगवेदक दसम मण्डलमे "धारक स्तुति" मे सिन्धु आ सप्तसैन्धवक स्तुति भेल अछि। ओइ कालमे पुरु, अनु, द्रुह्य, यदु आ तुर्वस नाम्ना पंचजन बसै छला। क्रिवि, त्रित्सु, सेहो ओइ कालमे छला। पुरु आ सभसँ शक्तिवान भरत कबीला मिलि बादमे कुरु कबीला बनल। भरत कबीला दाशराज्ञ युद्धमे पाँच आर्य आ पाँच अनार्य कबीलाक संगठनकेँ हरेलक, जइमे भरतक पुरहित वशिष्ठ रहथि आ पाँच आर्य आ पाँच अनार्य (दस्यु) कबीलाक संगठनक पुरहित रहथि विश्वामित्र। बोगजकोई एशिया माइनरमे हित्ती शासकक १४म शती ई.पू.क उत्कीर्णित अभिलेखमे इन्द्र, दशरथ, अर्त्ततम आदि राजाक, इन्द्र, वरुण, नासत्य, आदि देवताक उल्लेख अछि। यजुर्वेदक प्रचलित संहिता वाजसनेयी आ सामवेदक संहिता कौथुम, सामवेदक आरण्यक आ उपनिषद छान्दोग्यक आधारपर मिथिलामे ब्राह्मणक वाजसनेयी आ छान्दोग्यमे उर्ध्वाधर विभाजन एखन धरि अछि। यजुर्वेदमे विदेहक वर्णन अछि तँ ऋगवेदमे वैदिक जनकक (सीताक पिता सीरध्वज जनक पछाति भेला।)

"वैदेह राजा" ऋगवेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छला, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेला, ऋगवेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ तइमे इन्द्र हुनका बचेलन्हि। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतऽसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ

भेल। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ केलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग **जयन्त** आ मिथि - जिनका मिथिला नामसँ सेहो सोर कएल जाइ छन्हि, **मिथिला** नगरक निर्माण केलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नै भऽ सकल अछि, अनुमानित अछि ई जनकपुरक लग छल। सीरध्वज जनक सीताक पिता छथि आ एतऽसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ़ परम्परा देखबामे अबैत अछि। ‘‘कृति जनक’’ सीरध्वजक बादक 18म पुस्तमे भेल छला। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छला आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छला। याज्ञवलक्य हिरण्याभक शिष्य छला, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छला। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भऽ गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।अर्थशास्त्रमे(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक चर्चा अछि। तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।

वैदिक संस्कृतक कालमे आर्य सप्तसन्धवसँ विदेह धरि आबि गेल छला। अनार्य (दस्यु)सँ ओइ कालमे हुनकर सम्पर्क भऽ गेल छल आ शाब्दिक आदान-प्रदान सेहो भऽ गेल छल। यजुर्वेदमे आ बादमे अथर्ववेदमे ई आदान-प्रदान दृष्टिगोचर होइत अछि। अनार्य (दस्यु) आ व्रात्य (अनार्यसँ आर्य बनल जाति) दुनुक भाषा सप्तसैन्धव आर्यक भाषासँ मिलि गेल आ पुबरिया आ आन क्षेत्रीय बसात

लगलासँ वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल। निरुक्तक समयमे सेहो वैदिक शब्दावली कठिन भऽ गेल छल, ओकर उत्पत्तिपर विवेचन शुरू भऽ गेल छल। पाणिनीक भाषा पुबरिया, दछिनबरिया, पछबरिया आ उत्तरबरिया सभ क्षेत्रक दस्यु आ व्रात्य भाषाक शब्दावलीकेँ समाहित कऽ बनल छल। ई संस्कारित भाषा बादक लोक मध्य संस्कृतक रूपमे विख्यात भेल। पाणिनी लौकिक संस्कृतकेँ जेना ‘‘भाषा’’ कहलन्हि, तहिना यास्क आ पाणिनी वैदिक संस्कृतकेँ ‘‘छन्दस्’’। यएह छन्दस् अवेस्ता भाषाक भाष्य लेल जेन्द (छन्द) कहल गेल।

संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली

१. संस्कृत

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणक (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह क वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य परम्परामे एकर उच्चारण नै होइत अछि मुदा वाजसनेयी परम्परामे खूब होइत अछि- जेना छान्दोग्य उच्चारण सभूमि तँ वाजसनेयी उच्चारण सभूमीग्वंङ), ग्वाङ ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ क॓) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) क प्रयोग संस्कृत जकाँ

होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द’ (दऽ क बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओइ फॉण्टमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा आकार क बाद बिकारीक आवश्यकता नै अछि।

जेना फारसीमे अलिफ बे से आ रोमनमे ए बी सी होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जइमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

स्वरक वर्णन ऐ प्रकारेँ अछि- जइ वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नै रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जइमे बाजैमे एक मात्राक समय लागए से भेल ह्रस्व, जइमे दू मात्राक समय लागल से भेल दीर्घ आ जइमे तीन मात्राक समय लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहै छला।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहै छला।

लृ दीर्घ नै होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नै होइत अछि।

अ इ उ ऋ ऐ सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ क ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लृ३), तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ ऐ चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कऽ २२ टा स्वर।

ऐ सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तेँ उदात्त कहल जाइत अछि।

नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जइ अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि, से भेल स्वरित।

स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।

दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तटपर बनबाएल, एतऽ इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ *दात्त* आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नै भेलोपर स्वरमे भेद अछि। ऐसँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करै छला।

स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकै छी- जेना ऐमे अन्तिम स्वरक तीव्र स्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।

आब व्यञ्जन पर आउ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

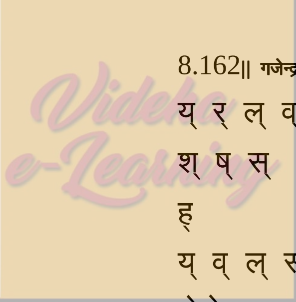
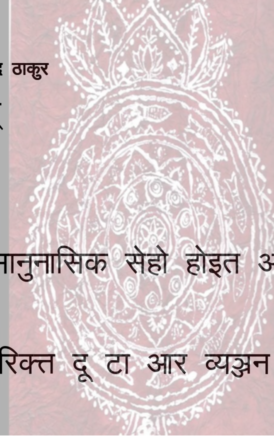
क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्
श् ष् स्
ह्
य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।
एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा विसर्ग।
ई दुनूटा, स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।
विसर्जनीय मूल वर्ण नै अछि, वरन् स् वा र् क विकार अछि।
विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।
अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।
उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।
कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति) पञ्चम वर्ण आगाँ रहला पर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।
यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।
अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय क उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।
इ ई चवर्ग य श क उच्चारण तालुमे होइत अछि।
ऋ ॠ टवर्ग र ष क उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।
लृ तवर्ग ल स क उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।
उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय क उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।

व क उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठक सहायतासँ होइत अछि।
ए ऐ क उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।
ओ औ क उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।
य र ल व अन्य व्यञ्जन जकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नै करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ ऐमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नै होइत अछि।
क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।
सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।
अनुस्वार आ यम क उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण ऐ सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् क उच्चारण नै हेबाक चाही।
जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यएह गुंजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।

श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल ‘‘अघोष’’ , आ नाद प्रकृतिक भेल ‘‘घोषवान्’’। जइ वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि ‘‘अल्पप्राण’’ आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल ‘‘महाप्राण’’।
कचटतप क पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगे कचटतप क पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए । मुदा ऐसँ ई नै बुझबाक चाही जे आइक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार निअमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद, मे परिगणित होइत अछि तकर चरचा नीचाँ जा कऽ हएत - जेना यदि अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादकँ बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि। जेना- वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः।

आइक नव कविताक संग हाइकू लेल मैथिली भाषा आ भारतीय, संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वएह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान

अछि, जइमे जे लिखल जाइत अछि सएह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व "इ" एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नै अछि- यथा *अछि* ई बाजल जाइत अछि अ- ह्रस्व इ -छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हाइकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि, मुदा की इंग्लिशमे संधि नै अछि? तँ ई की अछि - आइम गोइङ टूवाड्र्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवाड्र्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनेलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नै होइ छै, आइ एम कँ ओना *आइम* फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कऽ लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द ।

वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि मात्रिक छन्दक नै ।

वार्णिक छन्दमे वर्ण/ अक्षरक गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकँ नै गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकँ। संगे अ सँ ह कँ सेहो एक गानल जाइत अछि। एकसँ बेशी मान कोनो वर्ण/ अक्षरक नै होइछ। मोटा-मोटी तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-०

२. संयुक्त अक्षर-१

३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू-

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+३+१=२०

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=२

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=२

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतऽ छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत

अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कऽ सेहो अक्षर पूर कए सकैत छी।

ए = अ + इ

ओ = अ + उ

ऐ = अ/आ + ए

औ = अ/आ + ओ

छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त ‘गुरु’ आ ‘लघु’ छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ,इ,उ,ऋ,लृ ई पाँच ह्रस्व आर आ,ई,ऊ,ॠ,ए.ऐ,ओ,औ, ई आठ दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ ‘गुणिताक्षर’ बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का ।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नै मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा ।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर 'लघु' मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आ दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओइ अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। ऐमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओइ युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि:- १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४. अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओला पर उत्पन्न होइत अछि)।

१. उदात्त- जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकरा लेल कोनो चेन्ह नै अछि। २. उदातात्तर-

कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि। ३. अनुदात्त- जे कण्ठादि स्थानमे अधोभागमे उच्चारित होइछ। नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ। ४. अनुदातात्तर- कण्ठादिसँ अत्यंत नीचाँ बाजल जाइत अछि। ५. स्वरित- जइमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, ऐमे। ६. अनुदाक्तानुरक्तस्वरित- जइमे उदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ। ७. प्रचय-स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक, तानक उत्पत्ति होइत अछि।

१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकँ संबोधित गीत अछि। तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि। आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एकरा प्रकृतिगण कहै छी। २.उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहै छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कऽ क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण कऽ उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२,३, आ ४ मंत्रक समूह) मे ऐ लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लय पर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ।

उत्तरार्चिक उहागण आ उह्यगण प्रत्येक लयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्ताव, प्रस्तोतर द्वारा, उद्गीत उदगातर

द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उदगातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कय गाएल जाइछ। प्रस्तावक पहिने हिंकार (हिं,हुं,हं) तीनू द्वारा आ ॐ उदगातृ द्वारा उदगीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।

हाथक मुद्रा- हाथक मुद्रा १.१.आँठा(प्रथम आँगुर)-एक यव दूरी पर २.२. आँठा प्रथम आँगुरकेँ छुबैत ३.३. आँठा बीच आँगुरकेँ छुबैत ४.४. आँठा चारिम आँगुरकेँ छुबैत ५.५. आँठा पाँचम आँगुरकेँ छुबैत ६.११. छठम क्रुष्ट आँठा प्रथम आँगुरसँ दू यव दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद ८.७. अभिगीत ऋग्वेद

ग्रामगेयगान- ग्राम आ सार्वजनिक स्थल पर गाएल जाइ छल। आरण्यक गेयगान- वन आ पवित्र स्थानमे गाएल जाइ छल।

ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान ऐ विधिसँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थान पर गाएल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- १.स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९

सात टा स्वर सा,रे,ग,म,प,ध,नि, आ तीन टा ग्राम-मध्य,मन्द,तीव्र। ७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान।

ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ ऐ सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। मुदा युगलदेव अछि विशेषण-विपर्यय।

वेदपाठ-

१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।

अग्निमीळे पुरोहितं यग्यस्यदेवम्त्विजम।होतारंरत्न धातमम्।

२. पद पाठ- ऐमे प्रत्येक पदकें पृथक कऽ पढ़ल जाइत अछि।

३. क्रमपाठ- एतऽ एकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कऽ पाठ कएल जाइत अछि।

४. जटापाठ- ऐमे जँ तीन टा पद क, ख, आ ग अछि तखन पढ़बाक क्रम ऐ रूपमे हएत, कख, खक, कख, खग, गख, खग। ५. घनपाठ-ऐ मे उपरका उदाहरणक अनुसार निम्न रूप हएत- कख,खक,कखग,गखक,कखग। ६. माला, ७. शिखा, ८. रेखा, ९. ध्वज, १०. दण्ड, ११. रथ। अंतिम आठकेँ अष्टविकृति कहल जाइत अछि।

साम विकार सेहो ६ टा अछि, जे गानकेँ ध्यानमे रखैत घटाएल, बढ़ाएल जा सकैत अछि। १. विकार-अग्नेकेँ ओग्नाय। २. विश्लेषण- शब्द/पदकेँ तोड़नाइ ३. विकर्षण-स्वरकेँ खिंचनाइ/ अधिक मात्राक बड़ाबर बजेनाइ। ४. अभ्यास- बेर-बेर बजनाइ। ५. विराम- शब्दकेँ तोड़ि कऽ पदक मध्यमे ‘यति’। ६. स्तोभ-आलाप योग्य पदकेँ जोड़ि लेब। कौथुमीय शाखा ‘हाउ’ ‘राइ’ जोड़ै छथि। राणानीय शाखा ‘हावु’, ‘रायि’ जोड़ै छथि।



मात्रिक छन्दक प्रयोग वेदमे नै अछि वरन् वर्णवृत्तक प्रयोग अछि आ गणना पाद वा चरणक अनुसार होइत रहए। मुख्य छन्द गायत्री, एकर प्रयोग वेदमे सभसँ बेशी अछि। तकर बाद त्रिष्टुप आ जगतीक प्रयोग अछि।

१. गायत्री- ८-८ केर तीन पाद। दोसर पादक बाद विराम। वा एक पदमे छह टा अक्षर।

२. त्रिष्टुप- ११-११ केर ४ पाद।

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

४. उष्णिक- ८-८ केर दू तकर बाद १२ वर्ण-संख्याक पाद।

५. अनुष्टुप- ८-८ केर चारि पाद। एकर प्रयोग वेदक अपेक्षा संस्कृत साहित्यमे बेशी अछि।

६. बृहती- ८-८ केर दू आ तकरा बाद १२ आ ८ मात्राक दू पाद।

७. पंक्ति- ८-८ केर पाँच। प्रथम दू पदक बाद विराम अबैछ।

यदि अक्षर पूरा नै होइत अछि, तँ एक वा दू अक्षर निम्न प्रकारेँ घटा-बढ़ा लेल जाइत अछि।

(अ) वरेण्यम् केँ वरेणियम् स्वः केँ सुवः।

(आ) गुण आ वृद्धि सन्धिकेँ अलग कऽ लेल जाइत अछि।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

अहू प्रकारेँ नै पुरलापर अन्य विराडादि नामसँ एकर नामकरण होइत अछि।

यथा- गायत्री (२४)- विराट् (२२), निचृत् (२३), शुद्धा (२४), भुरिक् (२५), स्वराट्(२६)।

ॐ भूर्भुवस्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहै छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ऐ कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतऽ आध्यात्म चेतना, अधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि।

वैदिक (छन्दस्) आ लौकिक संस्कृत (भाषा) क व्याकरण :

वैदिक आ लौकिक दुनू संस्कृतमे संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, तीन वचन- एक, दू आ बहुवचन रहल, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, लिंगक द्योतक

नै अछि, दारा- पुल्लिंग, कलत्र- नपुंसक लिंग आ भार्या- स्त्रीलिंग; मुदा तीनू पत्नीक पर्यायवाची अछि। तहिना ईश्वरः (पुल्लिंग), ब्रह्म (नपुंसक लिंग) आ चितिः (स्त्री लिंग) होइत अछि। संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक आठटा कारक (विभक्ति) सेहो होइत अछि। दस गणक धातुक रूप परस्मैपदी (फल दोसराकेँ), आत्मनेपदी (फल अपनाकेँ) आ उभयपदी ई तीन तरहक होइत अछि। कर्तृ, कर्म आ भव ई तीन वाच्य आ बारह लकार (लट्, लिट्, लङ्, लुङ्, लुट्, लृट्, लोट्, विधिलिंङ्, आर्शीलिंङ्, लृङ्, लेट् आ लेङ्) होइत अछि। लेट् आ लेङ् लकार लौकिक संस्कृत (भाषा) मे नै होइत अछि।

संस्कृतमे तीनटा पुरुष- प्रथम (आन भाषाक अन्य पुरुष), मध्यम आ उत्तम होइत अछि। उद्देश्य आ विधेय; कर्ता आ क्रिया; विशेष्य आ विशेषण आ संज्ञा आ सर्वनामक परस्पर गुण-समानता रहै छै।

वैदिक संस्कृतमे गीतात्मक आ बलात्मक स्वराघात रहए मुदा लौकिक संस्कृतमे खाली बलात्मक स्वराघात रहि गेल। वैदिक उच्चारण उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (संगीतशास्त्रक आरोह, अवरोह आ सम सँ तुलना द्रष्टव्य) लौकिक उच्चारणमे खतम भऽ गेल।

वैदिक छन्दमे एक चरण, जकरा पाद कहै छिऐ ओइ पादमे वर्णक गनती होइत अछि। छन्दमे गति (लय) आ यति (विराम) सेहो होइत अछि। ह्रस्व स्वर लघु होइत अछि, ह्रस्वक बाद संयुक्त वर्ण एलासँ लघु स्वर गुरु स्वर भऽ जाइत अछि।

उपसर्ग: लौकिक संस्कृतमे उपसर्ग क्रियासँ पहिने अबैत अछि मुदा

वैदिक संस्कृतमे पहिने, बादमे, अलगसँ आ कतौ अन्तरालक बाद सेहो अबैत अछि। संगे वैदिक संस्कृतमे जे एक बेर उपसर्ग क्रियाक संग आबि गेल तँ तकरा बाद ओइ मंत्रमे मात्र उपसर्गक प्रयोग हएत आ वएह उपसर्गयुक्त क्रियाक द्योतक हएत।

समास: वैदिक संस्कृतमे समासमे सेहो कखनो काल भिन्नता छै, जेना अष्टक बाद कोनो शब्द होइ तँ ओ अष्टा भऽ जाइ छै- अष्टापदी। पितृ आ मातृक द्वन्द्व समास भेलापर दुनूमे *आ* लगै छै आ गुण होइ छै- पितरामातरा।

लेट लकार: लौकिक संस्कृतमे लेट लकारक प्रयोग नै होइत अछि मुदा वैदिक संस्कृतमे होइत अछि जेना भवाति, पताति लौकिकमे मात्र भवति, पततिसँ निदृष्ट होइत अछि।

वैदिक आ लौकिक संस्कृत कोनो दू भाषा नै अछि वरन् लौकिक संस्कृत, वैदिक संस्कृतिक सरल रूप अछि। वैदिक संस्कृतमे लौकिक संस्कृतसँ सभ किछु बेशी अछि (अपवाद- लुट् आ लृट् लकारक वैदिक संस्कृतमे कम उपयोग।)

संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक आ उपनिषदक भाषा वैदिक संस्कृत कहल जाइत अछि आ तकर बादक संस्कृत लौकिक संस्कृत कहल जाइत अछि।

दुनू संस्कृतमे धातु, शब्द आ अर्थ प्रायः एक्के अछि।

दुनूमे तीन लिंग, तीन वचन आ तीन पुरुष होइत अछि।

दुनूमे सभ शब्द प्रायः धातु अछि; रूढ़ शब्द बड्ड कम अछि।

समास दुनूमे अछि, हँ लौकिक संस्कृतमे एकर बेशी प्रयोग देखबामे अबैत अछि।

छन्द सेहो दुनूमे मोटा-मोटी एक्के रङ्क भेटत।

धातुक गण मध्य विभाजन सेहो दुनूमे एक्के रङ भेटत।

णिच्, सन् प्रत्यय दुनूमे एक्के रङ भेटत।

पदक निर्माण दुनूमे एक्के तरीकासँ होइत अछि।

सुप्-तिङ-कृत्-तद्धित दुनूमे एक्के रङ भेटत।

दुनूमे शब्दक क्रम आगाँ पाछाँ भेने अर्थक परिवर्तन नै होइत अछि। दुनूमे सन्धि, कारक आ विभक्ति होइत अछि।

मुदा:-

लौकिक संस्कृतमे उपध्मानीय आ जिह्वामूलीय ध्वनिक प्रयोग नै होइत अछि आ तकर स्थानमे विसर्गसँ काज चलैत अछि।

वैदिक संस्कृतमे ळ, ळह होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे दू स्वर मध्य ‘‘ड’’ ळ भऽ जाइत अछि आ ‘‘ढ’’ ळह भऽ जाइत अछि। लौकिक संस्कृतमे से नै अछि।

ग्वाङ (ह्रस्व आ दीर्घ) लौकिक संस्कृतमे नै अछि। यजुर्वेदमे ह, श, ष, स, र एहि सभसँ पूर्व अनुस्वार ग्वाङ भऽ जाइत अछि।

उदात्त, अनुदात्त आ स्वरितक उच्चारण लौकिक संस्कृतमे स्पष्ट रूपसँ नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे लेट् लकारक प्रयोग होइत अछि, लौकिक संस्कृतमे नै।

वैदिक संस्कृतमे उपसर्ग धातुसँ पृथक् मुदा लौकिक संस्कृतमे संगमे प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे कृत् प्रत्ययक तुमुन् से, सेन्, असे, अध्यै इत्यादि १५ टा प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे खाली ‘‘तुम्’’ प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतक सन्धि निअम शिथिल होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतक दृढ़ होइत अछि।

वैदिक कतेको शब्दक अर्थ लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल अछि। जेना असुर वैदिक संस्कृतमे शक्तिवानकेँ कहल जाइ छल मुदा लौकिक संस्कृतमे राक्षसकेँ कहल जाइत अछि।

धातुरूप सेहो वैदिक संस्कृतमे भिन्न अछि, अन्तिम स्वर दीर्घ सेहो होइत अछि। जेना चक्र- चक्रा: द्वित्वक अभाव होइत अछि जेना ‘‘ददाति’’क स्थानमे ‘‘दाति’’; कखनो काल परस्मैपदिक स्थानमे

आत्मनेपद आ आत्मनेपदिक स्थानमे परस्मैपद धातुक प्रयोग होइत अछि; शप् स्थानपर कखनो काल दोसर गणक विकरणक प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे शब्द रूप, धातु रूप, प्रत्ययक विविधता बेशी अछि।

वैदिक संस्कृतक काल-पुरुष-वचन-लिंगक ऐच्छिक परिवर्तन लौकिक संस्कृतमे मोटामोटी खतम भऽ गेल अछि।

वैदिक संस्कृतक अच्, अम्, जिन्व्, पिन्व् आदि धातु लौकिक संस्कृतमे प्रयोग नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे तर-तम प्रत्यय संज्ञा शब्द सन आ लौकिक संस्कृतमे विशेषण सन प्रयुक्त होइत अछि।

छन्दक हिसाबसँ वैदिक संस्कृतमे स्वर्-सुवर् आ दर्शत, दरशत लिखि लेल जाइत अछि। मुदा लौकिक संस्कृतमे से नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे "आन्" पदक अन्तमे रहलापर आ तकर बाद अ, इ, उ स्वर एलापर न् लुप्त भऽ जाइत अछि आ आकारक बाद अनुस्वार भऽ जाइत अछि। जेना महान् इन्द्रः= महा इन्द्रः। लौकिक संस्कृतमे से नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृत-धातुरूपः-

लट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन परस्मैपदि धातु थ, त, थन, तन

ई चारू प्रत्यय लगैत अछि। जेना वद्- वदथ, वदथन, वदत, वदतन।

लट् लकार उत्तमपुरुष-बहुवचन परस्मैपदि धातु मस् (मः), मसि ई दूटा प्रत्यय प्रयोग होइत अछि। जेना नाशयामः- नाशयामसि। इमः इमसि। स्मः- स्मसि।

लोट् लकारक मध्यमपुरुष एकवचन परस्मैपदि धातुमे हि, धि ई दूटा प्रत्यय होइत अछि। जेना श्रुणुहि, श्रुणुधि।

लोट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन आत्मनेपद धातुमे ध्वम् आ ध्वात् ई दूटा प्रत्यय होइत अछि। जेना वारयध्वम्, वारयध्वात्।

(छन्दसि लुङ् लङ् लिटः):- वैदिक संस्कृतमे लुङ्, लङ् आ लिट् लकारक प्रयोग लोट्, लट् लकारक अर्थमे प्रयोग होइत अछि। जेना आगमत् (वैदिक लुङ्)= आगच्छतु (लोट)। अवृणीत (वैदिक लङ्)= वृणीते (लट्)। ममार (वैदिक लिट्)= म्रियते (लट्)।

वैदिक संस्कृत:-शब्दरूप:-

[संस्कृत (सं= स्+म- ई ठीक अछि; एकर उच्चारण सं= स्+न गलत अछि।)]

वैदिक संस्कृतमे शब्दरूपक भिन्नता लौकिकसँ बेशी होइत अछि। जेना अकारान्त पुल्लिंग देवः प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन-द्विवचन वैदिकमे देवा, देवौ दुनू होइत अछि मुदा लौकिकमे मात्र देवौ होइत अछि।

प्रथमा-सम्बोधन-बहुवचन वैदिकमे देवासः, देवाः मुदा लौकिकमे मात्र देवाः होइत अछि। तृतीया-एकवचन वैदिकमे देवा, देवेन दुनू होइत अछि मुदा लौकिकमे मात्र देवेन होइत अछि। तृतीया-बहुवचन वैदिकमे देवेभिः, देवैः मुदा लौकिकमे देवैः होइत अछि।

तहिना वैदिक संस्कृतमे ऋकारान्त शब्दक रूप पुल्लिंग-स्त्रीलिंगमे लौकिक संस्कृत जकाँ होइत अछि, खाली प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन-द्विवचनमे दू रूप होइत अछि। जेना दातृ- दातारा, दातारौ। पितृ- पितरा, पितरौ। मातृ- मातरा, मातरौ।

अस्मद्:- प्रथमा-द्विवचन वैदिक- वाम्, आवम्; लौकिक आवाम्। चतुर्थी-एकवच वैदिक- मह्य, मह्यम्; लौकिक- मह्यम्। पञ्चमी-द्विवचन वैदिक आवत्, आवाभ्याम्; लौकिक- आवाभ्याम्। सप्तमी-बहुवचन वैदिक-अस्मे, अस्मासु; लौकिक- अस्मासु।

छन्द

पिङ्गल मुनिक छन्द शास्त्रक आठमे सँ पहिल चारिम अध्यायक सातम सूत्र धरि वैदिक छन्दक आ तकरा बाद लौकिक छन्दक वर्णन अछि।

वैदिक छन्दमे अक्षरक गणना होइत अछि। ओतऽ लघु आ गुरुक विचार नै होइत अछि। ऋगवेदमे सभसँ बेशी त्रिष्टुप्, फेर गायत्री आ तखन जगती छन्दक प्रयोग भेल अछि।

त्रिष्टुप्- ४४ अक्षर- ११ अक्षरक ४ पाद;

गायत्री- २४ अक्षरक (ई २,३,४,५ पदक होइत अछि), सभसँ बेशी लोकप्रिय ८ अक्षरक तीन पादक गायत्री जइमे दोसर पादक बाद विराम होइत अछि। २३ अक्षरक गायत्री निचृद् गायत्री, २२ अक्षरक गायत्री विराड् गायत्री, २५ अक्षरक गायत्री भुरिग् गायत्री, २६ अक्षरक गायत्री स्वराड् गायत्री कहल जाइत अछि। सभ पादमे एक अक्षर कम भेलासँ ‘‘पादनिचृद् गायत्री’’ कहल जाइत अछि।

जगती- ४८ अक्षर- १२ अक्षरक चारि पाद।

पाठ

वैदिक संस्कृतकेँ स्मरण रखबाक कएकटा विधि अछि।

संहिता पाठ- मूलमंत्र सन्धि सहित सस्वर पढ़ल जाइत अछि।

पदपाठ- मन्त्रक पदक पृथक पाठ होइत अछि।

क्रमपाठ- क्रमसँ दू पदक पाठ होइत अछि।

जटापाठ- अनुलोम १-२, विलोम २-१, अनुलोम १-२

शिखापाठ- जटापाठमे परिवर्तित उत्तरपदक योगसँ शिखापाठ होइत अछि।

घनपाठ- शिखामुक्त विपर्यक पदक पुनः पाठ होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे यज्ञ आ आध्यात्मिक विषयक चर्च होइत अछि।

लौकिक संस्कृतमे इहलौकिक विषयवस्तु सेहो अबैत अछि।

प्राकृत

संस्कृतसँ पहिने प्राकृत रहए वा बादमे ई विवादक विषय भऽ सकैत अछि कारण ऋगवेदक शिथिर, दूलभ, इन्दर आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकरणक प्रमाण अछि। ओना एकर प्रारम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेरहम शताब्दी ई. धरि भेटि जाएत मुदा पारिभाषिक रूपमे जइ प्राकृतक एतऽ चर्चा भऽ रहल अछि ओ पहिल ई.सँ छठम ई. धरि साहित्यिक भाषा दू अर्थे रहल। पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौरसेनी, महाराष्ट्री आ मागधीक (वररुचि चारिम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृच्छकटिकम्, श्रीहर्षक रत्नावली, भवभूतिक उत्तररामचरित, विशाखादत्तक मुद्राराक्षस) आ दोसर जे फेर ऐ प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल। फेर ऐ प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकरणमे बान्हल गेल आ तखन ई भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्टक प्रयोग लोक करऽ लगला, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत रहए तकर प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि।

अशोकक अभिलेखमे शाहबाजगढ़ी आ मानसेराक अभिलेख उत्तर-पच्छिम, कलसी, मध्य, धौली, जौगड़ पूर्व आ गिरनार दक्षिण पच्छिमक जनभाषाक क्षेत्रीय प्रकारक दर्शन करबैत अछि। राजशेखर प्राकृतकेँ मिट्ठ आ संस्कृतकेँ कठोर कहै छथि (विद्यापति पछाति कहै छथि देसिल बयना सभ जन मिट्ठा)।

प्राचीन प्राकृत पालिकेँ कहल जाइत अछि जइमे अशोकक अभिलेख, महावंश आ जातक लिखल गेल। मध्य प्राकृतमे साहित्यिक प्राकृत अबैत अछि। बादक प्राकृतमे अपभ्रंश आ अवहट्ठ अबैत अछि।

मोटा-मोटी गद्य लेल शौरसेनी, पद्य लेल महाराष्ट्री आ धार्मिक साहित्य लेल मागधी-अर्धमागधीक प्रयोग भेल। नाटकमे स्त्री-विदूषक बजैत रहथि शौरसेनीमे मुदा पद्य कहथि महाराष्ट्रीमे, नाटकक तथाकथित निम्न श्रेणीक लोक मागधी बजै छला।

प्राकृतमे सुप् तिङ् धातुक संग मिज्झर भऽ जाइत अछि।

प्राकृतमे धातुरूप १-२ प्रकारक (भ्वादिगण जकाँ) आ शब्दरूप ३-४ (अकारान्त जकाँ) प्रकारक रहि गेल, माने दुनू रूप कम भऽ गेल। मुदा ऐसँ अर्थमे अस्पष्टता आएल जकर निवारण कारकक चेन्ह केलक।

चतुर्थी, द्विवचन, लङ् लिट् लुङ् आत्मनेपद आदिक अभाव भऽ गेल प्रथमा आ द्वितीयाक बहुवचन एक भऽ गेल। ध्वनि परिवर्तन भेल। ऋ, ऐ, औ, य, श, ष आ विसर्गक अभाव भेल (अपवाद मागधीमे य आ श अछि मुदा स नै)।

अन्तमे आएल व्यंजन लुप्त भेल (ह्रस्व स्वरक बाद दू आ दीर्घ स्वरक बाद एकसँ बेशी व्यंजन नै रहि सकैत अछि।)

न ण मे, य ज मे आ श, ष स मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

पदमे उत्तरपदक पहिल अक्षरक लोप भऽ जाइत अछि, मुदा से धातुरूप अछि तखन लोप नै होइत अछि। जेना आर्यपुत्र= अज्जउत्त मुदा आगतम्= आगदं

अनुदात्त अव्ययक पहिल अक्षरक लोप होइत अछि। जेना च= अ

भू धातुक भ परिवर्तित भऽ ह भऽ जाइत अछि। जेना भवति= होइ

क ख मे आ प फ मे बदलि जाइत अछि। पनस= फणस, क्रीड्= केल

उच्चारण स्थानक परिवर्तनक क्रममे दन्त्य उच्चारण स्थान तालव्यमे बदलि जाइत अछि। जेना त् = च्

मध्यक य लोपित भऽ जाइत अछि। क, ग, च, ज, त, द क सेहो किछु अपवादकेँ छोड़ि लोप होइत अछि। प, ब, व क लोप सेहो कखनो काल होइत अछि। जेना- प्रिय= पिअ, लोक= लोअ, अनुराग= अणुराअ, प्रचुर= पउर, भोजन= भोअण, रसातल= रसाअल, हृदय= हिअअ, रूप= रूअ, विबुध= विउह, वियोग= विओअ

मध्यक क, त, प क्रमसँ ग, द, ब भऽ जाइत अछि। ख, घ, थ, घ, फ, भ ई सभ ह भऽ जाइत अछि। जेना नायकः= णाअगु, आगतः= आगदो, दीप=दीब=दीव। मुख= मुह, सखी= सही, मेघ= मेह, लघुक= लहुअ, यूथ= जूह, रुधिर= रुहिर,

वधू= वहू, शाफर= साहर, अभिनव= अहिणव।

कखनो काल मध्यक व्यंजन दोबर भऽ जाइत अछि। जेना एक= एक्क

मध्यक ट, ठ क्रमसँ ड, ढ भऽ जाइत अछि। जेना कुटुम्ब= कुडुम्ब, पठन= पढण

मध्यक प, ब परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना दीप= दीव। शबर= सवर।

ड, त, द परिवर्तित भऽ ल बनि जाइत अछि। जेना क्रीडा= कीला, सातवाहन= सालवाहण, दोहद= दोहल।

म परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना ग्राम= गाँव।

अन्तिम स्पर्श वर्णक लोप होइत अछि, अन्तिम अनुनासिकमे अनुस्वार नै होइत अछि, अः बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि वा ओकर लोप भऽ जाइत अछि।

मोटा-मोटी शब्दक प्रारम्भमे एकेटा व्यंजन आ मध्यमे बेशीसँ बेशी दूटा व्यंजन सेहो द्वित्वमे जेना क्क वा क्ख रूपमे रहैत अछि।

व्यंजनक बलक अनुरूपेँ निम्न प्रकारक क्रम होइत अछि।(अ) कवर्ग, चवर्ग,, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग मे क (सभसँ बेशी बलगर) सँ भ (क्रमसँ कम बलगर) धरि, सभ वर्गक पाँचम वर्ण छोड़ि कऽ। जेना कवर्गक ङ, चवर्गक ञ, टवर्गक ण, तवर्गक न आ

पवर्गक म छोड़ि कऽ। फेर (आ) कचटतप वर्गक पाँचम वर्ण। फेर (इ) ल, स, व, य, र। ऐमे समानबलक वर्णमे बादबला वर्ण प्रबल होइत अछि, अन्यथा अधिक बलबला बेशी बलगर होइत आछि। जेना- उत्पल= उप्पल, खड्ग= खग्ग, अग्नि= अग्गि। फेर जे कचटतप वर्गक पाँचम वर्णक ओइ वर्गक कोनो दोसर वर्ण हएत तँ पाँचम वर्ण ओहिना रहत, नै तँ ओकर परिवर्तन अनुस्वारमे भऽ जाएत। जेना क्रौञ्च= कोञ्च, दिङ्मुख= दिंमुह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ ओ ज्ज बनि जाइत अछि। मनोज्ञ= मणोज्ज।

कचटतप वर्गक बाद श, ष, स रहलासँ च्छ होइत अछि। जेना अप्सरा= अच्छरा, मत्सर= मच्छर।

क्ष बदलि कऽ क्ख भऽ जाइत अछि। जेना दक्षिण= दक्खिण।

शौरसेनीमे क्ष बदलि कऽ क्ख आ मागधीमे च्छ भऽ जाइत अछि। जेना कुक्षि= कुक्खि (शौरसेनी), कुच्छि (मागधी)।

प्राकृतमे ऋ आ लृ स्वर नै होइत अछि। ऋ बदलि कऽ (अ) रि भऽ जाइत अछि। जेना ऋषि= रिषि, (आ) अ भऽ जाइत अछि। जेना कृत= कद। (इ) इ भऽ जाइत अछि। जेना दृष्टि= दिट्ठि। (ई) उ भऽ जाइत अछि। जेना पृच्छति= पुच्छदि।

ऐ, औ बदलि कऽ ए भऽ जाइत अछि। जेना कौमुदी=

कोमुदी।

संयुक्ताक्षरसँ पूर्व ह्रस्व स्वर रहैत अछि।

उ बदलि कऽ अ वा ओ भऽ जाइत अछि। जेना मुकुल= मउल। पुस्तक= पोत्थअ।

ऊ बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि। जेना मूल्य= मोल्ल।

ए बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना एतेन= एदिणा।

ओ बदलि कऽ उ भऽ जाइत अछि। जेना अन्योन्य= अण्णुण्ण।

अनुस्वार+ अपि= पि आ अनुस्वार+इति= ति भऽ जाइत अछि। खलु= ख भऽ जाइत अछि।

य् बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना कथयतु= कधेतु।

प्राकृतमे अन्तिम व्यंजनक लोप भऽ जाइत अछि। व्यंजन सन्धिक मोटा-मोटी अभाव रहैत अछि।

स्वर सन्धिमे सेहो मध्य वर्णक लोप भेलोपर सन्धि नै होइत अछि।

शब्दरूपमे द्विवचन खतम भऽ गेल। चतुर्थीक रूप षष्ठीमे मिलि गेल। व्यंजन अन्तबला शब्द खतम भऽ गेल।

धातुरूपमे शब्दरूपसँ बेशी अन्तर आएल। व्यंजन अन्तबला धातु खतम भऽ गेल। धातुरूप एक्के रीतिसँ चलऽ लागल, द्विवचन खतम भऽ गेल, रूपक भिन्नता कम भऽ गेल। आत्मनेपद रूप मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। लिट्, लिङ्, लुङ् रूप सेहो मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। भूतकाल लेल कृदन्त प्रत्ययक प्रयोग होमए लागल। भ्वादिगण आ चुरादिगणक अलाबे सभ गण खतम भऽ गेल।

शौरसेनीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ ज्ज् भऽ जाइत अछि।

शौरसेनी आ माहाराष्ट्री- संस्कृतक मध्यक त शौरसेनीमे द भऽ जाइत अछि मुदा माहाराष्ट्रीमे ओ लोपित भऽ जाइत अछि। जेना- संस्कृत- जानाति= शौरसेनी जाणादि= माहाराष्ट्री जाणाइ

संस्कृतक मध्यक थ शौरसेनीमे घ मुदा माहाराष्ट्रीमे ह भऽ जाइत अछि। जेना संस्कृत अथ= शौरसेनी अघ= माहाराष्ट्री अह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ मागधीमे ञ्ञ बनि जाइत अछि।

मागधीमे श, ष, स ई तीनू परिवर्तित भऽ श; र परिवर्तित भऽ ल; ज परिवर्तित भऽ य बनि जाइत अछि। अकारान्त प्रथमा एकवचनमे ए लगैत अछि। जेना दरिद्र= दलिद्द।

मागधीमे ज बदलि कऽ य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ य्य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ण्य, न्य,ज्ञ,ञ्ज बदलि कऽ ञ्ञ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे मध्यक च्छ बदलि कऽ श्च भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ष्क= स्क वा श्क, ष्ट= स्ट वा श्ट, ष्प= स्प, ष्फ= स्फ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे र्थ बदलि कऽ स्त भऽ जाइत अछि।

विधिलिङ् क प्रयोग जैन प्राकृत- अर्धमागधी आ जैन महाराष्ट्रीमे प्रचलित रहल, आन प्राकृतमे ई मोटा-मोटी खतम भऽ गेल।

संस्कृतक तुम् शौरसेनीमे दुं, मागधीमे सेहो दुं रहैत अछि मुदा महाराष्ट्रीमे उं भऽ जाइत अछि।

प्राकृतक शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्रीक अतिरिक्त पैशाची प्राकृतक सेहो उल्लेख भेटैत अछि। गुणाढ्यक वृहत्कथा ऐ प्राकृतमे लिखल गेल जे आब स्वतंत्र रूपसँ उपलब्ध नै अछि। एकर उल्लेख उद्धरण रूपमे कखनो काल भेटैत अछि। ई पश्चिमोत्तर भारतक प्राकृत छल, उद्धरण रूपमे उपलब्ध साहित्यक अनुसार ऐमे निम्न विशेषता छल। ण बदलि कऽ न भऽ गेल। र बदलि कऽ ल भऽ गेल। ल बदलि कऽ र भऽ गेल। सघोष अघोष बनि गेल। दू स्वरक बीचक ल बदलि कऽ ळ भऽ गेल। स्वरक बीचमे ष बदलि कऽ श वा स, ज्ञ बदलि कऽ न्य आ ण्य बदलि कऽ ञ्ञ भऽ

गेल। ऐमे आत्मनेपद आ परस्मैपद दुनू अछि।

पश्चिमोत्तरक खोतानसँ प्राकृत धम्मपद खरोष्ठी लिपिमे दहिनसँ वाम लिखल लेख प्राप्त होइत अछि जइमे श, ष, स तीनूक प्रयोग अछि।

मोटा-मोटी प्राकृतमे शब्द-धातुरूपक सरलीकरणक प्रक्रिया दृष्टिगोचर होइत अछि, द्वित्व, मूर्धन्यीकरण, अघोषीकरण आ सघोषीकरण, लकारक बदला कृदन्तक प्रयोग सेहो बढ़ि गेल।

प्राकृत आ पालि:

प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतऽ दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४)। आ वैदिक कालमे संस्कृतकेँ संस्कृत नै भाषा कहल जाइ छल। आ जकरा आइ प्राकृत कहै छिऐ से पालिक बाद ओइ रूपमे बुझल गेल (साहित्य लेखन सम्बन्धमे)।

भरत (नाट्यशास्त्रमे) ७ टा आ वररुचि ४ टा प्राकृतक चर्चा करै छथि।

ओना तँ महावीरक वचन अर्ध-मागधी प्राकृत आ बुद्धक वचन

मागधी-प्राकृतमे देल गेल मुदा ई दुनू मूलतः जनभाषा रहए।

मुदा जखन विभिन्न क्षेत्रक लोक जुमलाह तँ बुद्ध सभकेँ अपन क्षेत्रक भाषामे बुद्धवचन सिखबा लेल कहलन्हि: अनुजानामि भिक्खवे, सकायनिरुत्तियाबुद्धवचनं परियापुणितं- माने भिक्षु लोकनि, अपन-अपन भाषामे बुद्धवचन सिखबाक अनुमति दै छी। आ बुद्धवचनमे प्रधान तत्व जनभाषा मागधीक रहल मुदा आन आन भाषाक तत्व सेहो फेंटाएल; आ से भाषा पालि भऽ गेल।

पालिमे:

‘‘ऋ’’, ‘‘लृ’’, ‘‘ऐ’’, ‘‘औ’’ आ ‘‘अः’’ नै होइए आ ‘‘अं’’ स्वर नै व्यंजन होइए।

तालव्य श आ मूर्धन्य ष सेहो नै होइए मात्र दन्त स होइए।

संस्कृतक ‘‘ळ’’ व्यंजन होइए।

संस्कृतक संयुक्त व्यंजन ‘‘क्ष’’, ‘‘त्र’’ आ ‘‘ज्ञ’’ नै होइए।

‘‘ऋ’’ बदलि कऽ ‘‘अ’’, ‘‘इ’’, ‘‘अ,इ’’, ‘‘इ,उ’’ भऽ जाइए। ‘‘वृ’’ बदलि कऽ ‘‘रु’’ भऽ जाइए।

‘‘लृ’’ बदलि कऽ ‘‘उ’’भऽ जाइए।

‘‘ऐ’’ बदलि कऽ ‘‘इ’’ वा ‘‘ए’’ भऽ जाइए।

''औ'' बदलि कऽ ''उ'' आ ''ओ'' भऽ जाइए।

संस्कृतक ह्रस्वक दीर्घ भेनाइ: सिंहः= सीहो

संस्कृतक दीर्घक ह्रस्व भेनाइ: मुनीन्द्रः= मुनिन्दो

निकटक स्वर: निषण्णः= निसिन्नो

बलाघात: मध्यमः= मज्झिमो

प्रसार: जयति=जेति

स्वरलोप: इति= ति

पालिमे ड आ ढ सेहो नै होइत अछि। तालव्य श आ मूर्धन्य ष लेल ''स'' वा ''छ'' प्रयुक्त होइए; ड लेल''ळ'' आ ढ लेल ''ळ्ह'' प्रयोग होइए।

क बदलैए ''य'' मे: जेना लौकिकः= लोकियो वा ''व'' मे जेना शुकः= सुवो

आगाँ-पाछाँ सेहो होइए: जेना मशकः=मकसोः, करेणुः=कणेरु

कवर्ग चवर्गमे बदलैए: कुन्दः=चुन्दो

तवर्ग टवर्गमे बदलैए: प्रथमः=पठमो

''ख'' उष्मीकृत भऽ ''ह''मे बदलैए: प्रखरः= पहरो

“क” घोषीकृत भऽ “ग” भऽ जाइए: मूकः=मूगो

“ग” अघोषीकृत भऽ “क” बनि जाइए: तडागम् = तळाकं

“झ” अल्पप्राणीकृत भऽ“ज” बनि जाइए: झल्लिका = जल्लिका

“प” महाप्राणीकृत भऽ “फ” बनि जाइए: परशुः= फरसु

व्यञ्जनक लोप सेहो होइए: पविसिष्यामि= पविस्सामि

दुर्बल संयुक्त व्यंजनक लोप: क्षत्रियः= खत्तियो

ध्वजः= धजो

आब सरलताक संधान देखू- गर्हा= गरहा; रत्नम् = रतनं

पालिमे तीनटा सन्धि अछि: स्वर, व्यंजन आ अनुस्वार (निग्गहीत) सन्धि।

स्वर सन्धि: स्वरक बाद स्वरमे पूर्ववर्ती/ परवर्ती स्वरक लोप वा ककरो लोप नै होइत अछि।

व्यंजन सन्धि: ह्रस्व वा दीर्घ स्वरक बाद व्यंजन एलापर ओ स्वरक्रमसँ दीर्घ आ ह्रस्व भऽ जाइए।

निग्गहीत सन्धि: अनुस्वार (निग्गहेत)क कतौ आगमन तँ कतौ लोप भऽ जाइए। जेना- त+खणे= तंखणे; आ सं+रागो=

सारागो

पालिमे दुइयेटा वचन होइत अछि- एकवचन आ बहुवचन; आ सात टा विभक्ति: पठमा, दुतिया, ततिया, चतुत्थी, पञ्चमी, छट्ठी, सत्तमी, आलपन। ५०० सँ ८०० धरि धातु नौ गणमे आठ लकार (आशीर्लिङ आ लुट् लकार नै होइत अछि) होइत अछि।

पालिमे समास संस्कृत सन होइत अछि।

प्राकृतमे:

ओना मूल बात यएह अछि जे सभ प्राकृत शब्दक संस्कृत रूप नै अछि।

साहित्यिक प्राकृतक कएक प्रकार होइत अछि।

पैशाची प्राकृतमे ''ट'' लेल ''त'' आ ''ल'' लेल''ळ''

अर्धमागधी प्राकृतमे मध्यक स्वतंत्र ''क'' बदलि जाइए ''ग'', ''त'' वा ''य'' मे। दू टा स्वरक बीच ''प'' बदलि जाइए ''व'' मे।

शौरसेनी प्राकृतमे दू टा स्वरक बीचक स्वतंत्र ''त'' बदलि जाइए ''द'' मे आ ''थ'' बदलि जाइए ''ह'' वा ध'' मे।

मागधी प्राकृतमे ''र'' क स्थानपर ''ल'', ''य'' केर स्थानपर ''य्य'' वा ''ज्ज'', ''स'' आ ''ष'' क स्थानपर ''श'' क प्रयोग

होइत अछि।

प्राकृत मे ह्रस्व आ दीर्घ ‘‘ऋ’’, ‘‘लृ’’, ‘‘ऐ’’ आ ‘‘औ’’ नै होइत अछि। न केर बदला ‘‘ण’’ होइत अछि।

ऋ बदलि जाइए: अ, आ, ई, उ, रि

लृ बदलि जाइए: इलि

ऐ बदलि जाइए: ए

औ बदलि जाइए: उ

दू स्वरक बीच क, ग, च, ज, त, द, य, व केर लोप होइत अछि जेना: लोक=लोअ, लावण्य= लाअण्ण

ख परिवर्तित भऽ जाइए ह मे: शाखा= शाहा

प्रारम्भक य भऽ जाइए ज, जेना: यम=जम

श आ ष भऽ जाइए स; क्ष भऽ जाइए ख वा छ वा झ; ज्ञ भऽ जाइए ण; त्व भऽ जाइए च; थ्व भऽ जाइए छ, द्व भऽ जाइए ज; ध्व भऽ जाइए झ।

सन्धि संस्कृत सन अछि। वचन दू- एकवचन आ बहुवचन, विभक्ति सात। संस्कृत जेकाँ धातु दस गण मे रहैत अछि, तुदादिगणक रूपक लोप भऽ जाइत अछि । भूत आ भविष्य मे

एक्के-एक्के टा रूप होइत अछि।

प्राकृतमे समास संस्कृत सन होइत अछि।

अवहट्ट

अपभ्रंश जखन समापनपर छल तखन मोटामोटी एगारहमसँ चौदहम शताब्दी धरि ''अवहट्ट'' साहित्यिक भाषाक रूपमे उपस्थित रहल। मैथिलीसँ एकर निकटताक कारण एकरा ''मैथिल अपभ्रंश'' सेहो कहल गेल आ ई अपभ्रंशक प्रकारक रूपमे सेहो मर्यादित रहल।

विद्यापति स्वयं कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक भाषाकेँ अवहट्ट कहै छथि मुदा ताहूसँ पूर्व ऐ शब्दक प्रयोग भाषाक सन्दर्भमे पहराज केने छथि ''पाउअकोस''मे। अद्दहमाण अपन कृति संदेशरासकमे आ वंशीधर प्राकृत पैंगलम् क टीकामे अवहट्टक भाषाक रूपमे उल्लेख केने छथि। ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरमे लिखै छथि- *''पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ''*। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्टक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जइमे एकर सभ शब्दक स्वरांत हएब, क्रियारूपक जटिल हएब (मुदा तइमे लैंगिक भेद नै हएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्टमे दृष्टिगोचर हएब शुरू भऽ गेल छल। खास कऽ विद्यापतिक अवहट्टमे मैथिली वर्तनीक इकार, ओकार, आ अनुनासिकक बदलामे ''कचटतप'' वर्गक पाँचम अनुनासिक वर्णक प्रयोग देखबामे अबैत अछि मुदा हुनकर अवहट्ट भाषामे कखनो काल बुझाइत अछि जे ई भाषा खाँटी मैथिली

अछि तँ कखनो ऐमे प्राकृत, फारसी, गुजराती-सौराष्ट्री अवधी आ कोशली भाषाक शब्दावलीक बेशी प्रयोग भेटैत अछि। आ सएह कारण रहल हएत जे हुनकर अवहट्ट सर्वदेशीय (राजशेखर कहै छथि ''विश्व-कुतुहली'') बनि सकल। एकर दूटा देवनागरी पाण्डुलिपि दू ठामसँ- गुजरातक स्तम्भतीर्थमे आ उत्तर प्रदेशक फतेहपुर जिलाक असनी गाममे भेटल आ एकटा मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि नेपालसँ भेटल। ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ट (अवहट्ठ) केँ ''मैथिल अपभ्रंश'' तइ कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्टक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि। अवहट्ठ मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ ऐमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक ''कीर्तिलता'' अवहट्टमे अछि, मुदा ''चर्या गीत'' आ ''वर्णन रत्नाकर'' कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती हेबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्टसँ सेहो लग अछि। दामोदर पंडितक ''उक्ति व्यक्ति प्रकरण'' सेहो कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि आ अवहट्टसँ लग अछि। संगे ईहो सत्य जे कीर्तिलता आ कीर्तिपताकामे विद्यापति अवहट्टक कतेको प्रकारसँ प्रयोग करै छथि। पहिने तँ ई अपभ्रंशक पर्यायक रूपमे प्रयुक्त होइ छल मुदा जेना जेना अपभ्रंशक विशेषताकेँ ई छोड़ैत गेल आ आधुनिक भारतीय भाषाक व्याकरणिक विशेषताक, खास कऽ मैथिलीक व्याकरणिक

विशेषताक आधार बनऽ लागल तखन ई अपभ्रंशसँ पृथक् अवहट्टक रूप लेलक। एकर प्रमुख व्याकरणिक विशेषता अछि- स्वर संयोग, क्षतिपूर्तिक लेल दीर्घीकरण, व्यंजनक अपन खास विशेषता, रूपक विचार (लिंग-वचन), निर्विभक्तिक प्रयोग, कारक-परसर्ग, कारक विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, क्रिया, कृदन्त, आज्ञार्थक, पूर्वकालिक, संयुक्त क्रिया, क्रिया विशेषण, शब्दावलीक विशेषता, पूर्व स्वरपर स्वराघात, स्वर सानुनासिकतामे परिवर्तन, अकारण सानुनासिकताक प्रवृत्ति, एक संग अनेक स्वरक प्रयोग, अक्षर लोप, परसर्गक स्थानपर मूल शब्द, सर्वनामक प्रचुरता, क्रियापदक विकास आ वाक्य रचना।

अवहट्ट भाषामे जैन धर्मसँ सम्बन्धित रचना ढेर रास अछि आ ओइमे शौरसेनीक प्रभाव अछि।अवहट्टक मुख्य क्षेत्र छल मान्यखेत, गुजरात, बंगाल आ मिथिला। जैन धर्मसँ सम्बन्धित लोक मुख्य रूपसँ मान्यखेतमे रहथि। ‘‘वज्जालग्ग’’ श्वेताम्बर मुनि जयवल्लभ द्वारा संकलित सुभाषितक संग्रह अछि जइमे अवहट्टक प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि। शालिभद्र सूरीक ‘‘भरतेश्वर बाहुवली रास’’, एकटा दोसर शालिभद्र सूरीक ‘‘पंच पाण्डव चरित’’, स्थूलिभद्र रास, जयशेखर सूरीक ‘‘नेमिनाथ फागु’’, सकलकीर्तिक ‘‘सोलह कारण रास’’क अतिरिक्त मौखिक काव्य जेना बौद्ध सिद्ध साहित्य, डाक, धर्ममंगल काव्य, शून्यपुराण, माणिकचन्द्र राजार गान, लोरिकाइन जनक मध्य आएल। अवहट्टक बाद ब्रजबुली द्वारा राय रमानन्द, शंकरदेव आ चैतन्यदेव लोकभाषाक माध्यमसँ जन धरि पहुँचला। अवहट्टक प्रभाव ब्रजबुली आ मैथिलीपर पड़ल। बारहम

शताब्दीक डाकार्णव नेपालमे रचित अछि जकर लिपि मिथिलाक्षर आ भाषा अवहट्ट अछि। मिथिलामे कर्णाट आ ओइनवार राजवंशक कालमे अवहट्टमे रचना कएल गेल। सिद्ध साहित्य, बौद्धक दोहाकोश-चर्यागीत आ ज्योतिरीश्वरक वर्णन रत्नाकरमे अवहट्टक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल छल। मुनिराम सिंहक पाहुड दोहा आ बौद्ध धर्मक वज्रयानक ग्रन्थमे सेहो अवहट्टक रूप देखबामे अबैत अछि। दामोदर पंडितक उक्तिव्यक्तिप्रकरण अवहट्टमे रचित अछि, ई संस्कृत सिखेबाक ग्रन्थ अछि। बारहम शताब्दीक पूर्वार्धमे उद्दहभाण ‘‘संदेश रासय’’क रचना केलन्हि, रचयिता स्वयं ऐ ग्रन्थक भाषाकेँ अवहट्ट कहै छथि। प्राकृत् पैंगलम् -जे छन्दशास्त्रक संकलन अछि आ जकर संकलनकर्ताक नाम अज्ञात अछि- क टीकाकार सेहो ऐ ग्रन्थक भाषाकेँ अवहट्ट कहि सम्बोधित केने छथि। विद्यापतिक कीर्तिलता आ कीर्तिपताका सेहो अवहट्टमे रचित भेल।

अवहट्टक अपभ्रंशसँ व्याकरणिक भिन्नता आ मैथिलीसँ सन्निकटता: दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ; पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहै छला। संस्कृतक ऐ, औ क्रमसँ अइ, अउ ध्वनि बनि गेल आ ओइसँ किछु आर स्वर बहार भेल। संस्कृतक बादबला भाषा खास कऽ मध्यकालिक भाषामे लगातार दू वा तीन स्वरक प्रयोगसँ ध्वनि आ लेखन दुनूमे विचित्रता आएल। आधुनिक भाषाक लेल आवश्यक छल जे पुनः व्यंजनक बेशी प्रयोग कऽ, तत्समक बेशी प्रयोग कऽ पूर्वस्थिति आनल जाए, जइसँ उच्चारण आ लेखन सरल भऽ सकए। क्रियाक अन्तमे आ आन पदक सभ स्थानमे स्वरकेँ

संयुक्त करब प्रारम्भ भेल। ऐमे ‘‘ऐ’’ आ ‘‘औ’’ अवहट्ठक विशेषता रूपमे परिगणित भेल। जेना टुट्टै=टूटै, गुण्णइ=गुणै, पइ=पै, रहइ=रहै, करउ=करौ, चअउर=चौरा, दुण्णउ=दूणौ, तउ=तौ, आअउ=आऔ।

ऋ ऐ तीन रूपमे ध्वनित होमए लागल। र्+अ, र्+इ , र्+उ आ मध्य रूप माने रि (र्+इ) ऐ रूपमे स्थिर होमए लागल। जेना अमृत= अमिअ ऐमे मृ=मि भऽ गेल अछि।

स्वरमे किछु आर परिवर्तन भेल। शब्द प्रारम्भक स्वरक दीर्घ हएब स्वाभाविक लगैत अछि, जेना आँचल=आँचर। स्त्रीलिंगमे अन्तिम आ लुप्त होमए लागल जेना भिक्षा=भीख। स्वरक बहुलताबला शब्दमे सन्धि आ लुप्तीकरण बढ़ल, जेना धरित्री=धरती, उपआस=उपास।

अपभ्रंशक अंधआर=अंधार (संधि) बनि गेल।

कज्ज=काज बनि गेल (दीर्घ)
अंचल=आँचर (अनुनासिक)

व्यंजन ओहिना रहल मुदा ण कम आ ञ बेशी प्रयोगमे आबए लागल आ ड़, ढ़ ई दुनू नव व्यंजन आएल। क्ष=क्+ष बदलि कऽ ष्ख होमए लागल। न आ ल मे सेहो पर्याय बनल जेना नहिअ=लहिअ आइ काल्हि सेहो मैथिलीमे लोर आ नोर दुनू बाजल जाइत अछि।

उ सँ अन्त होमएबला संज्ञा रहल मुदा अ, आ, इ, ई, ऊ, ऐ,

ओ सेहो संज्ञाक अन्तमे आबए लागल। न्हि अन्तिममे लगा कऽ बहुवचन बनेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, जेना युवराजन्हि। द्विवचन खतम भऽ गेल आ तकर बदला बहुवचनक प्रयोग भेल आ तइ लेल सव्वउं (सभ) क प्रयोग प्रारम्भ भेल।

लिंगसँ विशेषणक रूप परिवर्तन आ लुप्तविभक्ति-निर्विभक्तिक प्रयोग बेशी होमए लागल। विशेषणक रूप परिवर्तित भेल। जेना अइस, एत्ते, कतहु, पहिल, चारु।

कारकक विभक्तिक संग सन, सउं, क, माझ, केर, लागि आदिक प्रयोग होमए लागल।

पश्चिमी अवहट्टमे विभक्तिक प्रयोग घटल मुदा पूर्वी अवहट्टमे ए, हि विभक्तिसँ ढेर रास काज लेल गेल।

सर्वनाम कर्ता लेल हौ, तोञ, सो आ संबंध लेल मोञ, तुम्ह, तिसु प्रयुक्त होमए लागल।

क्रियामे करउँ, करसि, करथि प्रयुक्त होमए लागल। कृदन्त रूपमे पढ़न्ता, चलु, उपजु, गेल, भेल, कहल, मारल, चलल, करहुं, कहसि, जाहि, पावथि प्रयुक्त होमए लागल।

संयुक्त काल जेना *आवत्त हुअ* प्रयुक्त होमए लागल।

भविष्यत् कालक पूर्वी रूपमे व लगैत छल आ पछबरिया रूपमे ह लगैत छल।

क्रियाविशेषणमे जनु, नहु, बिनु अबस प्रयुक्त होमए लागल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात, जेना: अक्खर= आखर।

सर्वनामक संख्यामे वृद्धि भेल।

क्रियापदमे विकासक फलस्वरूप कृदन्तक प्रयोग वर्तमानकालमे बेशी होमए लागल।

आब वाक्यमे शब्दक स्थानक निर्धारण आवश्यक भऽ गेल। मोटामोटी कर्ता, कर्म आ आखिरीमे क्रिया राखल जाए लागल।

संयुक्त कालक प्रयोग सेहो आरम्भ भेल।

शब्दक पहिल अक्षरक स्वरक दीर्घ हेबाक प्रवृत्ति अवहट्टमे बेशी अछि, स्त्रीलिंग शब्दमे शब्दक अन्तिम अक्षरक आ लुप्त होमए लागल। अनुनासिक शब्दक संख्यामे वृद्धि भेल। संज्ञाक लिंग आ वचन तँ दुइयेटा रहल मुदा एकवचनक प्रयोग बहुवचनमे होमए लागल। प्रातिपदिक अधिकांशतः स्वरान्त अछि आ अकारान्त सेहो। विभक्तिक बदलामे परसर्गक प्रयोग होमए लागल। अपादान लेल हुंते, सउँ प्रयोगमे आबए लागल आ अधिकरण लेल माँझ, उप्परि आ ऐ दुनू (अपादान आ अधिकरण) लेल कखनो काल चन्द्रबिन्दु टा सँ काज चलि गेल, ''हिं'' विभक्ति सेहो कतेको कारकक लेल प्रयुक्त भेल आ ''ए'' विभक्ति सँ कर्म, करण, अधिकरण सभ टाक भान होमए लागल। संज्ञाक ऐ तरहक सरलीकरण सर्वनाममे सेहो देखबामे अबैत अछि। क्रियाक निर्माणमे सरलता आएल आ से

भेल कृदन्तक बेशी प्रयोगसँ आ संयुक्त क्रियाक बढ़ोत्तरीसँ। भूतकाल ''ल'' लगा कऽ सेहो बनऽ लागल, आ भविष्यत् काल ''व'' लगा कऽ सेहो, जेना थाकल, पढ़ब जे बादमे मैथिलीमे सेहो आएल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात आ स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरण अवहट्टक मुख्य विशेषता अछि। अपभ्रंशक अक्खर, ठक्कुर आ नच्चइ क्रमसँ आखर, ठाकुर आ नाचइ भऽ गेल। स्वरक सानुनासिकतामे परिवर्तन भेल जइसँ पुरान निअममे परिवर्तन भेल। पहिने स्पर्श व्यंजनमे अनुस्वारक अभाव छल आ कचटतप क पाँचम वर्ण तकर बदलामे संयुक्त भऽ प्रयुक्त होइत छल। अपवादमे य सँ ह धरिक वर्णक उपस्थितियेमे अनुस्वार लगै छल। पूर्व स्वरपर स्वराघात आ क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त युक्ताक्षरक पूर्वस्वरपर स्वराघातक संग अनुस्वार आबए लागल, जेना- ऊसास/ आंग/ आँकुस/ आँचर/ काँट/ लाँघि/ पाँच/ चाँद/ आँगन/

क्रमसँ

उस्सास/ अंग/ अंकुस/ अंचल/ कण्टक/ लघ्/ पंच/ चन्द्र/ अंगण/ क बदलामे आबि गेल। स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त अनुस्वारकँ ह्रस्व कएल जाए लागल आ आधुनिक मैथिलीक अकारण आनुनासिकताक प्रवृत्तिक आरम्भ भेल, जेना- कज्ज=काँज, कच्चुः=काँच, भग्ग=भाँग, ओष्ठ=ओँदिम।

अक्षर लोप: संकोच वा अक्षर लोपक कारणसँ

अन्धकार=अन्हार, देवकुल= देउर, देवगृह=देवहा, कोट्टशीर्ष=कोसीस, उपवास=उपास, उत्तिष्ठ=उँट, सहकार=सहार, स्वर्णकार=सोनार, सुन्नाअर=सुन्नार, सहयार=साहार भऽ गेल।

परसर्गक प्रयोगमे वृद्धि: अपभ्रंशक परसर्गक प्रयोगमे अवहट्ट कालमे आर वृद्धि भेल। जेना-

कर्ता- एन्ने

करण-सन, सउं

सम्प्रदान-लागि, लग्गि, लागे, प्रति, कारण

अपादान-सओ, हुत, हुते, हुंति, सिउ

संबंध- केर, कर, के, करेउ, कइ, क

अधिकरण- माझ, ऊपर, माँझ, भीतर, माहि

सर्वनामक आधिक्य: कीर्तिलतामे जेन्ने, आ आन ठाम मोर, मेरहु, तोरा, तोहार, तोहर, तोरा आदि सर्वनामक प्रयोग प्रारम्भ भेल। संबधवाचक सर्वनाम- जञोन, जेन्ने, जस, जसु, जे; प्रश्न वाचक- केहु, कोए; अनिश्चयवाचक- कोइ, केहु; निजवाचक- अपन, अपनेहु, निअ आदिक प्रयोग होमए लागल।

कृदन्तक प्रयोग क्रियापदक विकसित रूप: आब कृदन्तक प्रयोगमे वृद्धि भेल जेना भूतकालक कृदन्तक प्रयोग वर्तमान

जकाँ हएब आ कखनो काल अपन पूर्ण रूपमे सेहो हएब।

वर्तमान लेल कृन्तक प्रयोग पढ़न्ता, कहन्ता, आवन्ता; भविष्यत् काल लेल करहुं, करिहि आ भूतकाल लेल कृदन्तक प्रयोग जेना चलु, लागु क प्रयोग भेल।

‘‘अन्त’’ सँ आधुनिक ‘‘ता’’ निकलल अछि आ ‘‘अन्त’’ क प्रयोग बढ़ि गेल। संयुक्त क्रियाक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल- जेना ‘‘ले’’ जोड़ि कऽ क्रिया बनाएब ‘‘खाइले’’; सामर्थ्यसूचक पार आ आरम्भसूचक चाह/ लागु क प्रयोग आरम्भ भेल।

मैथिली

ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्टकेँ ‘‘मैथिल अपभ्रंश’’ तइ कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। अवहट्ट मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ ऐमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक ‘‘कीर्तिलता’’ अवहट्टमे अछि, मुदा ‘‘चर्या गीत’’ आ ‘‘वर्ण रत्नाकर’’ कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती हेबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्टसँ सेहो लग अछि। भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्टक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि।

ध्वनि: दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम, मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नै सटैए तँ उच्चारण दोष

अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य **श**मे जीह तालुसँ , **ष**मे मूर्धासँ आ दन्त **स**मे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे **ष** कें वैदिक संस्कृत जेकाँ **ख** सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जेकाँ (यथा संयोग आ गणेश **संजोग** आ **गड़ेस** उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जेबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

पानि-पाइन-पैन

अछि- अ इ छ **ऐछ**

छथि- छ इ थ छैथ

पहुँचि- प हुँ इ च

तखन प्रश्न उठैत अछि जे ‘‘छथि’’ कें छैथ लिखबामे की हर्ज? हर्ज अछि, कारण मिथिलाक बहुतो क्षेत्रमे छथि, छथी, पानि, पानी, पहुँचि, पहुँची सेहो बाजल जाइत अछि। से पानि, रहथि, पहुँचि लिखलासँ सभ क्षेत्रक प्रतिनिधित्व होइत अछि।

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ऐ सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा ऐमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ कँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ कँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- ऐ लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजै छी, तखनो पुरनका लोककँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि।

फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।

फेर **कँ** / **सँ** / **पर** पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा **तँ**/ **के**/ **कऽ** हटा कऽ। **ऐ मे सँ** मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ (जेना ऐमे सँ)। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ जेना **छहटा** मुदा **सभ टा**। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नै। घरबलामे **बला** मुदा घरवालीमे **वाली** प्रयुक्त करू।

रहए- **रहै** मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।

मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से

कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास **रहै** ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्रा ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत **रहए**।

छलै, छलए मे सेहो अही तरहक भेद अछि। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

संयोगने- (उच्चारण **संजोगने)**

कैँ/ के / कऽ

केर- **क** (**केर** क प्रयोग नै करू)

क (जेना रामक) **रामक** आ संगे (उच्चारण **राम के** / **राम कऽ** सेहो)

सँ- सऽ

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकेँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

केँ जेना रामकेँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकेँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा

कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ तऽ त केर ऐ सभक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थें प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना *के कहलक?*

नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ ऐ सभक उच्चारण- नै

अ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मन=मोन, वन=बोन (वर्तुल)

अ कखनो काल आ भऽ जाइत अछि, जेना- फंदा=फान, चन्द्र=चान (स्वराघात)

घर=घऽर (उच्चारण) (स्वराघात)

बुद्ध=बुद्धऽ (उच्चारण) (स्वराघात)

घमसान=घमऽसान (दीर्घक पहिनेक ह्रस्व स्पष्ट उच्चरित- स्वराघात)

''इ'' क पहिने ''आ'' रहलापर ''ऐ'' उच्चरित होइत अछि- जेना पानि=पैन, मुदा विभिन्न क्षेत्रमे पानी, पानि बाजल जाइत अछि तेँ वर्तनीमे पानि, आगि लिखब उचिते अछि।

आ कखनो काल अ भऽ जाइत अछि, जेना काका=कक्का।

इ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना रिवाज=रेबाज।

ऋ कखनो काल इ/ ई/ ऊ भऽ जाइत अछि जेना कृष्ण=किसुन, पृष्ठ=पीठ, वृद्ध=बूढ़।

अन्तमे "ई" क बदलामे इ लिखल जाइत अछि।

ऋ कखनो काल अ भऽ जाइत अछि जेना- वृषभ=बसहा, अहृदी=अहदी।

उ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना दुकान=दोकान

ऊ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मूल्य=मोल।

अए कखनो काल ए भऽ जाइत अछि जेना कएलनि=केलनि।

ऐ कखनो काल अइ/ अए भऽ जाइत अछि जेना भैया=भइया, पैर=पएर।

आ+ओ कखनो काल औ भऽ जाइत अछि जेना गमाओल=गमौल।

क कखनो काल ख/ ग भऽ जाइत अछि जेना पुष्करि=पोखरि, भक्त=भगत।

ष कखनो काल शब्दक प्रारम्भ वा अन्तमे रहलापर ख भऽ

जाइत अछि जेना षष्ठी=खष्ठी, भेष-भूषा=भेख-भूखा।

क्ष कखनो काल ख भऽ जाइत अछि जेना क्षीर=खीर।

ज्ञ कखनो काल ग भऽ जाइत अछि जेना यज्ञ=जाग।

ग कखनो काल घ भऽ जाइत अछि जेना गर्ग=घाघ।

त्य कखनो काल च भऽ जाइत अछि जेना सत्य=साँच।

त्स्य कखनो काल छ भऽ जाइत अछि जेना मत्स्य=माँछ।

य कखनो काल शब्दक प्रारम्भमे रहलापर ज भऽ जाइत अछि जेना यम=जम।

द्य कखनो काल ज भऽ जाइत अछि जेना विद्युत=बिजुली।

ध्य कखनो काल झ भऽ जाइत अछि जेना वंध्या=बाँझ।

त कखनो काल ट भऽ जाइत अछि जेना कर्तन=काटब।

न्थ कखनो काल ठ भऽ जाइत अछि जेना ग्रन्थि=गेंठ।

द कखनो काल ड भऽ जाइत अछि जेना दण्ड=डाँट।

त कखनो काल लुप्त भऽ जाइत अछि जेना जाइत=जाइ।

स्त कखनो काल थ भऽ जाइत अछि जेनाप्रस्तर=पाथर।

द कखनो काल ड भऽ जाइत अछि जेना दाह=डाह।

ध कखनो काल शब्दक अन्तमे रहलापर दह भऽ जाइत अछि जेना गधा=गदहा।

ल कखनो काल न भऽ जाइत अछि आ न कखनो काल ल भऽ जाइत अछि जेना नोर=लोर।

प कखनो काल फ भऽ जाइत अछि जेना पाश=फाँस।

फ कखनो काल ‘‘प’’ आ ‘‘ह’’ भऽ जाइत अछि जेना बेवकूफ=बेकूफ।

ब कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना शैबाल=सेमार।

म्भ कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना खम्भा=खमहा।

म्ब कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना कम्बल=कम्मल।

ल कखनो काल र भऽ जाइत अछि जेना हल=हर।

व कखनो काल भ भऽ जाइत अछि जेना वाष्प=भाप।

ह कखनो काल शब्दक अन्तमे रहलापर लुप्त भऽ जाइत अछि जेना गेलाह=गेला।

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतऽ अर्थ बदलि जाए ओतै मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग

उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नै- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नै)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नै)।

मे कँ सँ पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेशी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकँ सटाऊ।

एकटा दूटा (मुदा कएक टा)

बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नै। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नै (जेना दिअ, आ)।

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारी (ऽ -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि) क बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतऽ एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d’etre ततऽ सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नै दैत अछि वरन तारतम्य जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।

मैथिलीक मात्रात्मक आघातमे ह्रस्व स्वरपर आघात पड़लापर ओ

दीर्घ भऽ जाइत अछि।शब्दमे जौँ दीर्घ स्वर रहत तँ आघात ओइपर, दीर्घ नै रहत तँ उपान्त्य स्वरपर आ जतऽ दूटा दीर्घ लगातार अछि ओतऽ सेहो उपान्त्य दीर्घपर आघात पड़ैत अछि। पा'नि, ओसा'रा। बलात्मक आघात सेहो गपपर जोर देबा काल प्रयुक्त होइत अछि जेना- अपन=अप्पन। जइ स्वरपर आघात पड़त तकर पूर्वक सभ स्वर ह्रस्व भऽ जाइत अछि।

मैथिलीक उच्चारण आ लेखनक विशेषता:

१.*पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार:* पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जइ वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द

झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक ऐ बातकेँ नै मानै छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइ छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छै। किएक तँ ऐमे समय आ स्थानक बचत होइ छै। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नै भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबे देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतौ कोनो विवाद नै देखल जाइछ।

२.*ढ आ ढ़* : ढ़क उच्चारण ‘‘र् ह’’जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ ‘‘र् ह’’क उच्चारण हुअए ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आन ठाम खाली ढ लिखल जेबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया

शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। यएह निअम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३.*व आ ब* : मैथिलीमे ''व''क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नै लिखल जेबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। ऐ सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४.*य आ ज* : कतहु-कतहु ''य''क उच्चारण ''ज''जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नै लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएबला शब्द सभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, यावत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५.*ए आ य* : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। ऐ शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नै करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे ''ए''केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ ''य''क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि ऐ पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नै अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छै। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतौ-कतौ लिखल जाएब सेहो ''ए''क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६.*हि, हु तथा एकार, ओकार* : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दै काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइ छै। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आन्हु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७.*ष तथा ख* : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८.*ध्वनि-लोप* : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओइमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (' / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़' गेलाह, कऽ लेल, उठ' पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नै लगाएल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९.*ध्वनि स्थानान्तरण* : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई निअम लागू नै होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नै कहल जा सकैत अछि।

१०.*हलन्त()क प्रयोग* : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क



आवश्यकता नै होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नै होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्द सभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि।

११. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जइ वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः तइ वर्त्तनीमे लिखल जाइत अछि- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन
ठाम
जकर, तकर
तनिकर
अछि

अग्राह्य
अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।
१२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाइत अछि: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर’ गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

१३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाइत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

१४. 'ऐ' तथा 'औ' ततऽ लिखल जाइत अछि जतऽ स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

१५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द ऐ रूपे प्रयुक्त हएत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

१६. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

१७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाइत अछि, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाइत अछि। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

१८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि, तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाइत अछि। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

१९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाइत अछि वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

२०. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'कऽ क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

२१. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

२२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाइत

अछि।
२३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नै लिखल जाइत अछि, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।
२४. हलंत चिह्न निअमतः लगाएल जाइत अछि, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाइत अछि। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।
२५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा कऽ लिखल जाइत अछि, हटा कऽ नै, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाइत अछि, यथा घर परक।
२६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कएल जाइत अछि। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कएल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

२७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाइत अछि।
२८. समस्त पद सटा कऽ लिखल जाइत अछि, वा हाइफेनसँ जोड़ि कऽ , हटा कऽ नै।
२९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि- (ऽ) नै लगाओल जाइत अछि।
३०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाइत अछि।
३१.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जेबाक चाही। जा ई नै बनल अछि ताबत ऐ दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाइत अछि। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाइत अछि।

(भारतक आ नेपालक सरकारी पोथी सभक आधारपर)

मैथिली व्याकरणक विशेषता: मैथिलीक विकास बौद्ध सिद्ध आचार्य, फेर कर्णाट आ ओइनवार राजवंश, मल्ल राजवंश आ मध्यकालक मैथिली आ आधुनिक मैथिलीक तथाकथित मानक आ पूब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण भिन्नताक अनुसार परिवर्तित होइत रहल अछि आ मैथिली व्याकरण ऐ सभ विशेषताकेँ संग लऽ कऽ चलैत अछि।

मैथिलीमे सभ शब्द स्वरांत, अ वृत्ताकार, ए, य, ऐ, यै, ओ, औ ई सभ स्पष्ट उच्चरित होइत अछि। सम्बन्ध कारक लेल सँ, क, केर (बेशी पद्यमे प्रयुक्त) प्रयुक्त होइत अछि। संज्ञा रूप कम-सरल (एकवचनसँ बहुवचन करबा लेल सभ आदि जोड़ि दियौ) मुदा क्रिया-धातुरूप बेशी होइत अछि। आदर आ अनादरपूर्ण प्रयोगमे क्रियापदमे परिवर्तन होइत अछि। मैथिलीमे क्रियाक रूप कर्ता आ वाक्यक दोसर संज्ञा, सर्वनाम (कर्तासँ सम्बद्ध) द्वारा निर्धारित होइत अछि। मैथिलीमे क्रिया पुरुष-भेदक अनुरूप बदलैत अछि। मैथिलीमे ब द्वारा भविष्यत् कालक अलाबे क्रियार्थी संज्ञा सेहो बनाओल जाइत अछि। ल प्रयुक्त कए कृदन्त कहल, गेल मे परिवर्तन मैथिलीक विशिष्टता अछि।

मैथिलीमे शब्दक भिन्न-भिन्न वर्णपर बलाघात होइत अछि। मैथिलीमे कारक विभक्तिसँ ओना तँ तिर्यक रूप नै देखबामे अबैत अछि, जेना गामक, मुदा सम्बन्ध कारकमे ई अपवाद अछि, जेना साँझ-साँझुक। क्रियार्थ संज्ञा रूपमे सेहो तिर्यक रूप होइत अछि।

संज्ञा:कोनो वस्तुक नाममे लघु, गुरु आ गुरुतर ई तीन रूप

होइत अछि- मनोज्, मनोज, मनोजबा।

लिंग: लिंग रूप सरल अछि। निर्जीवक लिंग पुल्लिंग भऽ गेल अछि। संज्ञामे लिंगसँ शब्दक रूप परिवर्तन नै होइत अछि मुदा विशेषण आ क्रियामे होइत अछि।

वचन: संज्ञामे वचनक भिन्नतासँ परिवर्तन नै होइत अछि। लोकनि, रास आदि शब्द जोड़ि कऽ तकर बोध कराओल जाइत अछि। ‘‘हम’’ एकवचन अछि आ ‘‘हमसभ’’ बहुवचन।

विभक्ति: करण -ए- जेना काजे। अधिकरण- आँ-हि- जेना परुकाँ, चोट्टहि ।

कारक: कर्ता- रिक्त, कर्म- कैं, करण- सँ, संप्रदान- लए, अपादान- सँ, संबंध-क, केर(पद्यमे), अधिकरण–मे।

सर्वनाम: उत्तम पुरुष- हम, हमे

मध्यम पुरुष- तूँ, तोँ, अहाँ, अपने, ई

अन्य पुरुष-ताहि, तकरा, तकर, हुनका, हुनि, ओकरा, हुनकर, ओकर, हिनका, एकर, हिनकर, जाहि, जकरा, जकर, के, की, ककरा, अपन, कोन, किछु, केदन, केहनदन, कोनादन, एतबा, कतबा, ततबा, ततेक।

क्रियाविशेषण: एतए, कहाँ, कखन, जखन, जाबे, ताबे, आबे, आब, जहिआ, तहिआ, कहिआ, जेना, तेना, एम्हर, ओम्हर, जेम्हर, तेम्हर, भर(दक्षिणभर)। कालबोधक-आइ, काल्हि, परसू,

लगले, परुकाँ; स्थानबोधक- जेना आगाँ, पाछाँ; प्रकारबोधक- जेना भने, कने-मने; संयोजक जेना मुदा, आर; सम्बोधन जेना रौ, हौ; समुच्चयबोधक जेना ईह, छी; बलद्योतक जेना ए ; नहि, भरिसक आदि विविध क्रियाविशेषण होइत अछि।

उपसर्ग: अ, अन, अध, अब, दु, नि, भरि, कम, ब, बद, बे, सर।

प्रत्यय: अक्कड़, अंत, इल, आइन, आइ,आउ, आकू, आन, आना, आप, आयत, आर, इन, बाह, आरि, आरी, आहु, औन, इअल, इआ, ई, गर, ऐत, ओड़, ओला, औटी, औती, ओना, औबिल, क, त, औत, आइ, बान, म, बला, हार, हा, ई, कार, बाह, आनी, खाना, खोर, गरी, ची, बाज।

विशेषण: ऐमे आदर आ लिंगक अनुसार परिवर्तन होइत अछि। सिलेबी, गोल, चर्की ई गाए-बड़द लेल प्रयुक्त होइत अछि आ विशेषणसँ प्राणिक बोध भऽ जाइत अछि। पढ़ल (पुल्लिंग) आ पढ़लि (स्त्रीलिंग), मझिला छौड़ा-माँझिल भाइ (आदर)।

क्रिया: वचन भेद मैथिली क्रियामे नै होइत अछि। पुरुषक अनुसार क्रियामे भेद अबैत अछि। आदर प्रदर्शनमे सेहो क्रियारूप बदलैत अछि। तिङन्त मे लिंगभेद नै होइत अछि मुदा कृदन्तमे लिंगक अनुसार क्रियापद बदलि जाइत अछि। क्रिया कारकक अनुसार बदलैत अछि। ऐ प्रकारसँ क्रिया देखि कऽ मात्र ई पता लागत जे कर्ता आदरणीय अछि वा नै, क्रियाक कर्म कोन पुरुषमे अछि आ आदरणीय अछि वा नै।

क्रियाक चारि रूप जेना स्वयं मरब (मरैत अछि), मारब (मारैत अछि), दोसरासँ मरबाएब (मरबैत अछि) आ कर्मवाचानुसार ककरो कहि कऽ मरबाएब (मरबबैत अछि)- होइत अछि।

धातुरूप- मैथिलीमे लगभग १२२५ धातुरूप दीनबन्धु झा संकलित केने छथि जे पाणिनीक २००० धातुसँ कनिये कम अछि। आ यएह १२२५ टा धातु मैथिली भाषाक स्वतंत्र अस्तित्वकेँ असगरे बनओने रखबा लेल पर्याप्त अछि। किछु उदाहरण:

छक- अविरोधपूर्वक अन्यक्रियासँ दबब अर्थमे- रूपलाल फुल तोड़बामे सोनेलालसँ **छकलाह-** जीतल गेला।

ठक- परतारब, वञ्चना- ठक बुड़िबककेँ ठकैत अछि- ओकर वस्तु लऽ लेबाक हेतु भ्रम उत्पन्न करबैत अछि।

डक- अपन उत्कट गन्धक प्रसारण- हीँगु डकैत अछि- अपन तीव्र गन्धक प्रसार करैत अछि।

ढक- मिथ्या अपन अति प्रशंसा करब- जयलाल ढकैत छथि- अपन मिथ्या अति प्रशंसा बजै छथि।

बक- अश्रव्य बहुत बाजब- जयलाल *बकैत* छथि- नै सुनबाक योग्य कथा बहुत बजै छथि।

मक- हर्षसँ मालक धावनक्रीड़ा- बाछा मकैत अछि, लीलसँ एम्हर ओम्हर दौगि रहल अछि।

वाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाओल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर वर्णन रत्नाकरमे लिखै छथि- *“पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ”* संगे ज्योतिरीश्वर द्वारा सात *“उपभाषक”* चर्च भेल अछि। प्राकृतक कएकटा प्रकार छल। ओइमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्टक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जइमे एकर सभ शब्दक स्वरांत हएब, क्रियारूपक जटिल हएब (मुदा तइमे लैंगिक भेद नै हएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्टमे दृष्टिगोचर हएब शुरू भऽ गेल छल।





Videha e-Learning

Gajendra Thakur







Videha e-Learning



Gajendra Thakur

मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धांत

मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व-

मैथिली कथा-कविताक समीक्षाक आवश्यक तत्वपर विचार करए पड़त।

नव वातावरणमे अवस्थित नव समस्याकेँ चिन्हित करब, व्यक्तिगत अनुभवकेँ सार्वजनिक जीवनसँ जोड़बाक प्रयासकेँ चिन्हित करब, सूत्रबद्धता अछि वा नै, कारण विवादित वस्तुकेँ घोसिआएब, वादक प्रतीक-चिन्हकेँ ठूसि कऽ साहित्यमे देबाक प्रवृत्तिक आधारपर ब्लैकमेलर साहित्यकेँ चिन्हित करब, अपन प्रशंसा आ दोसराक प्रति आक्षेपक कथा-कवितामे ब्लैकमेलर साहित्यकार द्वारा प्रयोग करबाक गुंजाइश रहैत अछि। मुदा तथ्यपूर्ण मूल्यांकन ऐ प्रवृत्तिकेँ चिन्हित करत।

गपाष्टक आ समीक्षाक अंतरकेँ चिन्हित करब। एकर मुख्य लक्षण "कियो हुनका कहियो पुछलकन्हि, सुनैत छिऐ जे ओ ई करए चाहैत रहथि .." आ ऐ तरहक आर गप सभ। संगे हिनकर रचनाकेँ पाठक नै बूझि पबैए- समीक्षक सेहो नै बूझि पबैए- मुदा हिनकामे असली गप ई छन्हि। ई फलनाक बेटा छथि तँ नीक आकि अधला लिखै छथि, ई ऐ पदपर छथि तँ नीक आकि अधला लिखै छथि। ई पाइबला छथि, होटल छन्हि तँ साहित्यकार नै छथि आ ई पर्चा फेकै छथि, पत्रकार छथि तँ महान साहित्यकार छथि। ई सहरसा-सुपौलक छथि तँ नीक आकि अधला आ ई दरभंगाक सोति आकि ब्राह्मण-कायस्थ तँ नीक आकि अधला लिखै छथि।

एक पाँतिक वक्तव्य- ऐ रचनाक हम विरोध आकि समर्थन करै छी। ई हमरा लेल नीक लोक छथि तँ नीक लिखै छथि। ई हमर

जातिक छथि वा हमरा भविष्यमे फाएदा पहुँचेता तँ अद्भुत लिखै छथि। हिनकर हम प्रशंसा करबन्हि तँ ईहो हमर प्रशंसा करता। ऐ सभ प्रवृत्तिकेँ चिन्हित करब।
मूल्यांकनमे ककरो प्रति पूर्वाग्रह वा घृणा राखब। ओकर सम्पूर्ण गप बुझबासँ पूर्वे निर्णय सुनाएब। ऐकेँ चिन्हित करब।

मैथिली साहित्य, जतए मूल धारामे पाठकक संख्या शून्य छै, एक साहित्यकार दोसराक समीक्षा करैत अछि आ एतऽ व्यक्तिगत अहम् आ ब्लैकमेलिंगक पूर्ण गुंजाइश छै। अहाँ दू-चारिटा कवि-कथाकार सम्मेलनमे चलि जाउ, उद्घोषकक उद्घोषणा आ थोपड़ी उद्घोषकक आ साहित्यकारक पूर्वाग्रहकेँ चिन्हित कऽ देत। जेना गौरीनाथ लिखै छथि जे हिन्दीयोमे -प्रेमचन्द, मोहन राकेश आ उत्तराखण्डी- एना कऽ कए संग्रह अबैत अछि जेना उत्तराखण्डी प्रेमचन्द आ मोहन राकेशक कोटिक होथि। तहिना मैथिलीमे कुलानन्द मिश्र-हरेकृष्ण झा आ ई; वा यात्री-राजकमल आ ओ, वा राजकमल-ललित आ ई, मात्र यएह कवि कथाकार छथि एहन सन वक्तव्य अबैत अछि आ ऐ मे ***ई*** आ ***ओ*** क प्रति देखाओल पूर्वाग्रहयुक्त दुटप्पी चिन्हित भऽ जाएत। खूब साहित्य पढ़ू- भारतक आ नेपालक दुनू दिसुका मैथिली साहित्य। आ ऐ क्रममे जे रचना आ जे रचनाकार नीक लागथि आ जे तथाकथित स्थापित रचनाकार वा रचना अधला लागए तकरा चिन्हित करू, विसंगतिकेँ सेहो। आ से बिना भयक, कारण ब्लैकमेलर आ गोल बना कऽ कविता-कथा रचनिहारक दिन खतम करबाक लेल साहस जरूरी अछि। बिना पाठकक ई लोकनि मैथिली साहित्यकेँ सोंगरपर रखने छथि, एकटा छद्म वातावरण बना कऽ। गपाष्टक आ समीक्षाक अंतर चिन्हित करब आवश्यक।

स्वतंत्रता/ आरक्षण- ऐ दूटा पर घमर्थन। स्वतंत्रता सतही छल, मतदान नकली अछि आ आरक्षण भेदभावपर आधारित, ई घमर्थन करैत शोषक वर्ग। स्वतंत्रता मतदानकेँ जन्म देलक आ पाँच सालपर ई सामाजिक परिवर्तनक ढेर रास नव समीकरणकेँ जन्म दैत अछि- से शोषित वर्ग लेल हितकारी। असमान सामाजिक स्तरकेँ समान अधिकार देबाक कोनो मतलब नै। तँ शोषक वर्ग कहत- ओहू आरक्षित वर्गमे ऊँच नीचक जन्म भऽ रहल अछि। मुदा से जातिक आधारपर तँ नै भऽ रहल अछि आ पहिनेक तुलनामे कम भऽ रहल अछि। जे शूद्र ऋषि कवि ऐलूष वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, जे महिला अपाला वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, से करोटमे किए ठाढ़ रहथि? पुरातन व्यवस्थाक जातिक भीतरक स्तरीकरण, कर्ण-कायस्थ आ मैथिल ब्राह्मणक भीतर पञ्जी-प्रथा द्वारा कएल गेल स्तरीकरण, पाइ-पैरवी लऽ दऽ कऽ होइत स्तरीकरणक स्थितिमे नीचाँ ऊपर केनाइ। समाजक बाल-विवाह पक्ष आ विधवा-विवाह विपक्ष आधारित आ पञ्जी आधारित बतहपनीक प्रतीक रूपमे रहैत आइ काल्हिक व्यवस्था सभ।

आत्मकेन्द्रित, भाषा-संस्कृति छोड़ैत समाज- कारण ऐ सभसँ प्रेम मात्र प्रतीक रूपमे ओ बाल्यकालसँ देखने अछि। पढ़ाइक रूप अखनो असमानतापर आधारित अछिये मुदा पुरनका तुलनामे अकाश पतालक अंतर अछि। कियो पढ़ि-लिखि कऽ अपन समाजमे उच्चसँ उच्चतम स्तर प्राप्त कऽ सकैत अछि आ तखन ने ओकरा पाँजि चाही आ ने किछु आर। फेर ओ ग्राम पंचायतसँ लऽ कऽ संसद धरि पहुँचैत अछि। ठिकेदारी करबासँ लऽ कऽ बस-टेम्पू धरि

चला-चलबा सकैत अछि। हम ऐ द्वारे नै पढ़ि सकलौं, कलक्टर नै बनि सकलौं, कहलापर आब लोक कहैत अछि जे तखन फलनांक बेटा कोना से बनि गेल। शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत मरड़पर लिखल जाएबला कथा-कवितामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए।

व्यक्तिक प्रतिष्ठा स्थान-जाति आधारित। किछु प्रतिष्ठा आ विशेषाधिकार प्राप्त जाति। किछुकेँ तिरस्कार आ हुनकर जीवन कठिन। अनुसूचित जाति (११००, पहिल सरकारी सूची) +पिछड़ल जाति ३७४३ (मंडल आयोग)= ४८४३, वर्ण-व्यवस्था धार्मिक नै सामाजिक प्रथा जकर आब कोनो उपयोग नै। विघटनकारी तत्वक रूपमे विदेशी मानसिकता आ जड़ मानसिकता द्वारा उपयोग संभव।

भावनात्मक वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त। प्रकृति कलाविशिष्ट प्रभावशाली स्थिति, शोकजनक, हास्य, मानवक सौंदर्यक अनुभव ओकर अनुभव बिना सम्भव नै। ऐसँ समाजक सौंदर्यीकरणक प्रति दृष्टिकोण सोझाँ अबैत अछि।

मानसिक क्रिया- मनुष्य सोचैबला प्राणी, मानसिक आ भौतिक दुनूक अनुभूति करएबला प्राणी। शरीर आ मस्तिष्क, दिनुका काज आ रातुक स्वप्न।

विरोधाभास वा छद्म आभास- अस्पष्टता। सैद्धांतिक लाभ।

काण्टक दर्शन- मछहरमे दू इंचक अवकाश बला जाल फेकब तँ दू इंचसँ कमबला माँछ नै भेटत, तखन ई निर्णय जे ऐ पोखरिमे दू इंचसँ छोट माँछ नै! समीक्षकक जाल जतेक महीन हुअए ततेक नीक।

बाल-किशोर साहित्य- जे बच्चा किशोर पढ़त तँ बादोमे भाषाक प्रति घुरत- नोकरी-चाकरी स्थिर भेलाक बाद। कारण स्कूल-कओलेजमे जकर विषए मैथिली नै अछि वा मैथिली बाल साहित्य नै पढ़ने अछि से किए मैथिलीसँ प्रेम करत- अहाँ ओकरा लेल नै तकबै तँ ओहो नै ताकत।

सगर राति दीप जरय आ मैथिली समीक्षा- युद्धक कारण- सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक आ तात्कालिक। मात्र तात्कालिक रटि लिअ आ सभमे सभटा खरापे-खराप लिखि दियौ- आर्थिक स्थिति खराप- सामाजिक स्थिति खराप आदि। मुदा जँ फ्रांसीसी क्रान्तिमे से लिखि देबै तँ ओइ समए ओतुक्का किसानक आर्थिक दशा इंग्लैंडसँ नीक रहै आ सएह फ्रांसकेँ क्रान्ति लेल सक्षम बनेलकै, प्रतिकार लेल सक्षम बनेलकै। तहिना सगर राति दीप जरयमे समीक्षा होइए- शिल्प नीक/ खराप, कथ्य नीक/ खराप...।

दलित साहित्य- महेन्द्र नारायण राम, बिलट पासवान विहंगम आदि केँ छोड़ि दियन्हि तँ मैथिलीक मूल धारामे दलित लेखक आ दलित साहित्य शून्य अछि।

उपन्यासमे आषाढ़क आ दोसर मासक तिथि दुइये पृष्ठक अन्तरपर / मोहन भारद्वाज । कुमार पवन

धूमकेतु मोड़ पर पृष्ठ १- एक पाँतीसँ ठाढ़ आ कतौ अरड़ा कऽ ओलड़ि गेल धानक सीस- कोसक कोस पसरल हरियर कचोर खेसारीक गद्दा (माने अंतिम स्थिति)- मुदा खेसारी तँ अगहनक बाद (धानक बाद- गद्दरि तँ आर पहिने होइए) होइत अछि।

यात्री समग्र-पृ.२२० जेठ सुदी चतुर्दशी कऽ रहनि पीसाक वर्षी। पहिले वर्षी..पृ.. २२२- ..कहाँ जे एको दिनक खातिर जाइ, कर्ता बना, अषाढ़ बढ़ि तृतियाक तिथिपर पहिल।

बलचनमाक समीक्षामे मोहन भारद्वाज लिखै छथि- क्यो यात्रीजीकेँ पुछलकन्हि जे बलचनमाक दोसर भाग लिखबा लेल..यात्री कहलखिन्ह जे बलचनमाकेँ तँ आब धोधि भऽ गेल हेतै। यात्रीकेँ के पुछलकन्हि (काल्पनिक प्रश्नोत्तरी)- फेर जे बलचनमा पढ़ने छथि तिनका बुझल छन्हि जे बलचनमाकेँ मारि कऽ पाड़ि देल गेलै से मृत बलचनमाकेँ धोधि हेतै से यात्रीजी ओइ काल्पनिक प्रश्नकर्ताकेँ किए कहथिन्ह।

कुमार पवनक पइठ सर्वश्रेष्ठ मैथिली दीर्घ कथा मुदा अहूमे अन्त दुनू भाइक लड़ाइ आदि..एकर बदला दोसर लक्ष्य हेबाक चाही-जेना शोषण।

साहित्यक विभिन्न विधा जेना पद्य, प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज,

नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐमे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै- कारण जिनगीक उत्थल-धक्कामे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि।

प्राचीन कालमे कला, साहित्य आ संगीत एक खाढ़ीसँ दोसर खाढ़ी मध्य हस्तांतरित होइ छल। पदपाठ, क्रमपाठ, जटा पाठ, शिखापाठ, घनपाठ आदि स्मृतिक वैज्ञानिक पद्धति छल। घर, वेदी आ आन कलाकृतिक बनेबाक विधिक यजुर्वेदमे वर्णन छल जे भाष्य सभमे आर विस्तृत भेल आ पुरातत्वक प्राचीनतम आधार सिद्ध भेल। संगीतक पद्धति सामवेदकेँ विशिष्ट बनेलक। ऐ तरहेँ साहित्य, कला आ संगीतकेँ बान्हबाक प्रयत्न भेल, जइसँ ई विधा दोसरो गोटे द्वारा ओही तरहेँ अनुकृत भऽ सकए। आ ऐ क्रममे कला, साहित्य आ संगीतक समीक्षा वा ओकर गुणक विश्लेषण प्रारम्भ भेल। कला, साहित्य आ संगीतक समाज लेल कोन प्रयोजन, एकर नैतिक मानदण्ड की हुअए, ऐ दिस सेहो प्राच्य आ पाश्चात्य विचारक अपन विचार राखलन्हि। प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किए तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि।

मुदा कला, संगीत आ साहित्य कखनो काल **स्वान्तः सुखाय सेहो** होइत अछि, एकरा पढ़ला, सुनला, देखला आ अनुभव केलासँ प्रसन्नता होइ छै, मानसिक शान्ति भेटै छै तँ कखनो काल ई उद्वेलित सेहो करै छै। एरिस्टोटल मुदा कहै छथि जे कलाकार ज्ञानसँ युक्त होइ छथि आ विश्वकेँ बुझबामे सहयोग करै छथि।

शब्दोचारण आ कला निर्माणक बाद बोध्य बौस्तुक उत्पत्ति होइ छै। शब्द आ ध्वनि, रूप, रस, राग, छन्द, आ अलंकारसँ ओकर औचित्य सिद्ध होइ छै।

जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि कला। सौंदर्यक कला उपयोगिताक संग। कलापूर्णता कलाक जीवन दर्शन- संप्रदाय संग। भावनात्मक वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त।

मानसिक क्रिया- मनुष्य सोचैबला प्राणी, मानसिक आ भौतिक दुनूक अनुभूति करऽबला प्राणी। विरोधाभास वा छद्म आभास- अस्पष्टता। ***मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि।***

फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानै छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनै छथि तँ **नव फ्रायडवाद** ***जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबै छथि।***

नव-समीक्षावाद ***कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।***

उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहै छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कऽ विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल।

मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छला, द्वन्द्वात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनेलन्हि। आइ-काल्हिक ''डिसकसन'' वा द्वन्द्व जइमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कऽ षडदर्शनक- माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनेसँ विद्यमान छल।

से इतिहासक अन्तक घोषणा केनिहार फ्रांसिस फुकियामा- जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा केने छला- किछु दिन पहिने ऐसँ पलटि गेला। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि।

अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ **संश्लेषणात्मक समीक्षा** प्रणालीमे सम्मिलित भऽ अपन अस्तित्व बचेने अछि।

साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्द्वात्मक प्रणाली जकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

कोनो कथाक आधार **मनोविज्ञान** सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे हेबाक चाही। मुदा संगमे ओइ समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ ऐमे ओइ समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि। जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कऽ रहनाइ सिखबैत अछि। जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि। मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक ''मसनवी'' फारसी

साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि। आजुक कथा ऐ सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय समाजक निर्माण दिस आगाँ बढ़ैत अछि।

कम्यूनिज्मक समाप्तिक बाद लागल जे इतिहास, जे दूटा विचारधाराक संघर्ष अछि, एकटा विचारधाराक खतम भेलाक बाद समाप्त भऽ गेल। **फ्रांसिस फुकियामा** घोषित केलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ासँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन पहिने ओ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयता मध्य एखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि।

उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टिकोण-विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका, सत्य-असत्य, सभक अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन, आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावनाक रहि-रहि खतम हएब, सत्य कखन असत्य भऽ जाएत तकर कोनो ठेकान नै, सतही चिन्तन, आशावादिता तँ नहिये अछि मुदा निराशावादिता सेहो नै, जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नै कएक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण, कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नै, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास, गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास, भूमंडलीकरणक कारणसँ मुख्यधारसँ अलग भेल कतेक समुदायक आ नारीक प्रश्नकेँ (विरोधे स्वरमे सही) उत्तर आधुनिकता सोझाँ

अनलक। विचारधारा आ सार्वभौमिक लक्ष्यक विरोध केलक मुदा कोनो उत्तर नै दऽ सकल।

तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक **जैक्स देरीदा** भाषाकेँ विखण्डित कऽ ई सिद्ध केलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नै लगा सकै छी।

आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास हेबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास ।

प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नै, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि ।

विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रिया रूपमे भेल। ऐसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि।

अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओइसँ पृथक ओ किछु नै अछि, स्वतंत्र हेबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र)।

हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन

अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर हएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।

क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित केने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकतासँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करऽ पड़ैत अछि।

तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक “अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम” सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि, जे शुरू भेल अछि से खतम हएत भलहि ओकर आयु बेशी हुअए।

जेना **वर्चुअल रिअलिटी** वास्तविकताकेँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जँ सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नै पहुँचि सकब।

साहित्यक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि। होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करऽ पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।

पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ,

व्याकरणक निअम सँ नै वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नै होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नै होइत अछि। आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल ।

मुदा फेर **नव-वामपंथी आन्दोलन** फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल। पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाएल गेल- लंगुएज गेम। आ ऐ सभ सत्ता, वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जइमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कऽ ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दै छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नै केने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ ऐ वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नै होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लऽ ओकरा फॉर्मेट कऽ देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट !

पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब **पोस्ट**

इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। *डी कन्सट्रक्शन* आ *री कन्सट्रक्शन* क विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन कैँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि।

इतिहास तँ नै मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ विखंडित भऽ सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

नीक साहित्य/कला त्वरित उपस्थापनक आधारपर नै वरन ओइमे तीक्ष्णतासँ उपस्थापित मानव-मूल्य, सामाजिक समरसताक तत्व आ समानता-न्याय आधारित सामाजिक मान्यताक सिद्धान्त आधार बनत। समाज ओइ आधारपर कोना आगू बढ़ए से संदेश तीक्ष्णतासँ आबैए वा नै से देखऽ पड़त। पाठकक मनसि बन्धनसँ मुक्त होइत अछि वा नै, ओइमे दोसराक नेतृत्व करबाक क्षमता आ आत्मबल अबै छै वा नै, ओकर चारित्रिक निर्माणक आ श्रमक प्रति सम्मानक प्रति सन्देह दूर होइ छै वा नै- ई सभटा तथ्य साहित्यक मानदंड बनत। कात-करोटमे रहनिहार तेहन काज कऽ जाथि जे सुविधासम्पन्न बुते नै सम्भव अछि, आ से कात-करोटमे रहनिहारक आत्मबल बढ़लेसँ हएत।

हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? बदलैत

सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन, कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति हुअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइ छै। आ एहने साहित्य बेर-बेर अपनाकेँ परिमार्जित-परिवर्धित करितो मूल दोषसँ दूर नै भऽ पबैत अछि, अपन व्यक्तिगत प्रशंसा आ दोसराक प्रति आक्षेपक कथा-कवितामे ब्लैकमेलर साहित्यकार द्वारा प्रयोग करबाक गुंजाइश रहैत अछि। जातिवाद-सांप्रदायिकतावाद आबिये जाइ छै। शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत लिखल जाएबला कथामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए।

मेडियोक्रिटी चिन्हित करू- तकिया कलाम आ **चालू ब्रेकिंग न्यूज**- आधुनिकताक नामपर। युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार ऐमे नै भेटत, आधुनिकीकरण, लोकतंत्रीकरण, राष्ट्र-राज्य संकल्पक कार्यान्वयन, प्रशासनिक-वैधानिक विकास, जन सहभागितामे वृद्धि, स्थायित्व आ क्रमबद्ध परिवर्तनक क्षमता, सत्ताक गतिशीलता, औद्योगीकरण, स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद नवीन राज्य राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया, कखनो काल परस्पर विरोधी। सामुदायिकताक विकास, मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया।

से ऐ अन्तर्राष्ट्रिय परिदृश्यक, बुश-सद्दामक आलोचनामे धार ओइ कारणसँ नै आबि पबैत अछि। कोनो मन्दिर-मस्जिदकेँ जे ओ समर्थन-विरोध करैत छथि वा कोनो नन्दीग्राम-लालगढ़क सेहो तँ ओइमे सेहो तइ तरहक धार नै अबैत अछि। दारू पीबि मँतल मानववाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, वामपंथ आ दक्षिणपंथपर हुनकर विचार लागत ओँघाएल। युगक सभ शब्दावली भरता आ कविता-कथा

तैयार। अमेरिकाक आलोचनामे धार कोना आएत आ वामपंथक पक्षमे सेहो- जखन अपन दिनचर्यामे दक्षिणपंथ शामिल अछि। संघर्षक अभाव सृजनात्मकताक स्तरकेँ समए बढ़लासँ बढ़ेबाक बदला घटबैत अछि। युगक अनुरूप सभ चलैए, ओकर विपरीत चलब तखन ने सृजनात्मकताक संग चाही। दोसराकेँ पलायनवादी कहनिहार ऐ तरहक सुविधावादी तत्वकेँ चिन्हित करू, गहींर पैसब जिनका लेल संभव नै।

इतिहाससँ जुड़ाव ऐतिहासिक मनोभावनासँ जोड़ि सकत। वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाकेँ माटि देबामे धारक अभाव- हीनभावनाग्रस्त आ अपराध भावसँ भरल लेखकसँ संभव नै।

न्याय वैशेषिक आ सांख्य-योगक वस्तुवाद, बाह्यक यथार्थ आ मायाक विरोध, गृहस्थ जीवन, लोक हित। कला आ साहित्यक कृति, आत्माक भीतरक ज्ञान प्रज्ञापर आधारित होइत अछि जे अखण्ड अछि- गति, स्वतंत्रता, सर्जनात्मक परिवर्तन। इतिहास वा साहित्यक इतिहास हम बदलि नै सकै छी आ एतऽ उच्च आ मध्यवर्गक स्मृति आधारित **मिथिलाक स्वर्णयुग** ! मुदा तकर महत्व दूरदर्शन आ चलचित्र टामे भऽ सकैत अछि। उदारवाद। औद्योगिकरण आ तकर आर्थिक विकासक सफलता-असफलता। सामाजिक रूपमे समाजक पिछड़ल वर्गक विरोधकेँ आरक्षण आ स्वतंत्रता पसारि देलक मुदा संगे एकर तीव्रता कम केलक से चाहे ओ नक्सलवाद हुअए वा माओवाद वा मार्क्सवाद-लेनिनवाद। बुर्जुआ वर्ग लेल ई फाएदा रहल। बुर्जुआ वर्गक राजनैतिक आ सांस्कृतिक संगठन पसरए आ सर्वहारा वर्ग धरि पहुँचए, से प्रयास आ महिला लोकनिकेँ ऐमे सम्मिलित करबाक प्रयास। पाइ आ सुविधा अपना संग परम्परागत नैतिकताकेँ तोड़लक।

कम्पनी अपन स्वतंत्र अस्तित्व बनेलक आ परिवार आ व्यक्ति ऐ तरहक कम्पनीकेँ नौकरीपेशा लोकक संग चलबऽ लागल।

प्रकृतिपर नियन्त्रण आ मानवीय व्यवहारक अवलोकन। काजक लेल अन्न आ काजक बदला पाइ, रोजगार गारन्टी कार्यक्रम, जनवितरण प्रणालीक दोकान। रोजगार लेल देश-विदेश छोट हएब, परिवारक आधारपर आघात।

पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था, परिवर्तन आपरूपी नै वरन् संघर्ष आ प्रयाससँ भेटत। स्वतंत्र मानवीय संवेदना जे नीक भविष्यक गारंटी नै दैत अछि तँ ई अधलाक सेहो गारंटी नै दैत अछि। हमरा सभ लग विकल्प अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जीवनक जे किछु प्रमाण भेटि रहल अछि से कम नै अछि। विकल्प हमरा सभकेँ तकबाक अछि जे सनसनी पसारी आकि कार्य करी।

आदिवासी- सतार, गिदरमारा आदि विविधता आ विकासक स्तरकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। प्रकृतिसँ लग, प्रकृति-पूजा, सरलता, निश्छलता, कृतज्ञता। व्यक्तिक प्रतिष्ठा स्थान-जाति आधारित। दिनकर, सामाजिक-धार्मिक उत्सव, सूर्य-चन्द्र-वृक्ष-पर्वत पूजा, पृथ्वी स्तुति आ जलाशय आ नक्षत्रक प्रति आस्था, जनक माने जन (विश)सँ निकलल, मिथिलावासीमे सेहो ई आस्था।

किछु प्रतिष्ठा आ विशेषाधिकार प्राप्त जाति। किछुकेँ तिरस्कार आ हुनकर जीवन कठिन।

महिला आ बाल-विकास- महिलाकेँ अधिकार, शिक्षा-प्रणालीकेँ सक्रिय करब, पाठ्यक्रममे महिला अध्ययन, महिलाक व्यावसायिक आ तकनीकी शिक्षामे प्रतिशत बढ़ाओल जाए।स्त्री-स्वातंत्र्यवाद, महिला

आन्दोलन।

धर्मनिरपेक्ष- राजनैतिक संस्था संपूर्ण समुदायक आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित- धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित। विकास आर्थिकसँ पहिने शैक्षिक हुअए तखने जनसामान्य ओइ विकासमे साझी भऽ सकैए। ऐसँ सर्जन क्षमता बढ़ैत अछि आ लोकमे उत्तरदायित्वक बोध होइत अछि। सामुदायिक आ राष्ट्रीय जीवन। गतिशील प्रबन्धन, विकास-प्रक्रियामे स्थान। स्वतंत्रता आन्दोलन आ पर्यावरण आन्दोलन, दहेज-विरोधी आन्दोलनमे सहभागिता, आर्थिक समानता लेल संघर्ष, महिला श्रमिकक बच्चा लेल बालाश्रय-गृह, बालवाड़ी, आंगनवाड़ी। प्रतिद्वंदिताक कारण कम वेतन, काज करबाक दशा प्रतिकूल, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिसँ महत्वहीन स्थान।

धर्म-आस्था वा सामाजिक मूलक आधारपर व्यक्ति वा समूहक बीच विभाजन अस्वीकार। सभ समुदाय शक्तिक उपयोग उत्तरदायित्व आ कर्तव्यक निर्वहन जकाँ, माने वितरणात्मक न्याय। धर्म-आस्थाक आधारपर कोनो भेद नै आ राज्य धर्म द्वारा नियंत्रित नै हएत। टैगोरक कलात्मकतावाद, गाँधीक नैतिकतावाद, अरविन्द घोषक रहस्यवादी आध्यात्म दर्शन, विवेकानन्दक व्यावहारिक वेदान्तवाद।

विज्ञान आ प्रौद्योगिकी विकसित आ अविकसित राष्ट्रक बीचक अंतरक कारण मानवीय समस्या, बीमारी, अज्ञानता, असुरक्षाक समाधान- आकांक्षा, आशा सुविधाक असीमित विस्तार आ आधार। ऐसँ वैयक्तिक आ राष्ट्रीय शक्तिक अभिवृद्धि होइत अछि। विधि-व्यवस्थाक निर्धन आ पिछड़ल वर्गकेँ न्याय दिअएबामे प्रयोग हेबाक चाही। न्याय पंचायतकेँ पुनःजीवन।

नागरिक स्वतंत्रता- मानवक लोकतांत्रिक अधिकार, मानवक स्वतंत्र चिन्तन क्षमतापूर्ण समाजक सृष्टि, प्रतिबन्ध आ दबाबसँ मुक्ति। अधिकारक उत्पीड़नसँ बचाव।

भारतमे राजनीतिक क्रान्तिक बाद औद्योगिक आ सामाजिक क्रान्तिक संकल्प कएल गेल, विकसित देशमे औद्योगिक क्रान्तिक पहिने सामाजिक क्रान्ति भेल। तइ कारणसँ हमरा सभकेँ कठिन परिस्थितिक सोझाँ हेबऽ पड़ल। लोकाचार, चिन्तन क्रम आ दृष्टिकोणक अलाबे पोषण, स्वास्थ्य, सफाइ, चिकित्सा, शिक्षा, आयु-प्रत्याशामे वृद्धि, मृत्युदरमे कमी। आधुनिकीकरण, लोकतंत्रीकरण, राष्ट्र-राज्य संकल्पक कार्यान्वयन, प्रशासनिक-वैधानिक विकास, जन सहभागितामे वृद्धि, स्थायित्व आ क्रमबद्ध परिवर्तनक क्षमता, सत्ताक गतिशीलता, औद्योगीकरण।

समाजक **धनाढ्य आ निर्धन**मे विभाजन- दुनू वर्गक आकार, स्तर आ बीचक दूरी।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद **नवीन राज्य राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरण**क प्रक्रिया, कखनो काल परस्पर विरोधी।

मानवशास्त्रीय, जातीय, धार्मिक, भाषिक- प्राथमिक आ लघु निष्ठा-स्थानिक, जातीय, धार्मिक-भाषिक आस्था। सामुदायिकताक विकास, मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया।

कला- ऐ लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन हेबाक चाही ? जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि कला। सौंदर्यक कला उपयोगिताक संग। कलापूर्णताक कलाक जीवन दर्शन- संप्रदाय संग। भावनात्मक

वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त।

जल थल वायु आ आकाश- भौतिक रासायनिक जैविक गुणमे हानिकारक परिवर्तन, **प्रदूषण,** प्रकृति असंतुलन।

प्रेस- शासक आ शासितक ई कड़ी, सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक जीवनमे भूमिका, मुदा आब प्रभावशाली विज्ञापन एजेंसी जनमतकेँ प्रभावित केनिहार। उद्योगपति प्रेसक मालिक आ सरकार शासन संचालक- प्रेसक स्वतंत्रताकेँ खतरा। नेपाल-भारत सन देश लेल ई खतरा आर बेशी। नव संस्थाक निर्माण वा वर्तमानमे सुधार, सामन्तवादी, जनजातीय, जातीय आ पंथगत निष्ठाक विरुद्ध, लोकतंत्र, उदारवाद, गणतंत्रवाद, संविधानवाद, समाजवाद, समतावाद, सांवैधानिक अधिकारक अस्तित्व, समयबद्ध जनप्रिय चुनाव, जन-संप्रभुता, संघीय शक्ति विभाजन, जनमतक महत्व, लोक-प्रशासनिक प्रक्रिया-अभिक्रम, दलीय हित-समूहीकरण, सर्वोच्च व्यवस्थापिका, उत्तरदायी कार्यपालिका आ स्वतंत्र न्यायपालिका।

मिकेल फोकौल्ट- ज्ञान आ सत्य बनाओल जाइत अछि।

डेलीयूज आ गुटारी कहै छथि जे हम सभ इच्छा ऐ द्वारे करै छी कारण हम सभ इच्छा मशीन छी।

मिकाहिल बखतिन भाषाकेँ सामाजिक क्रियाक रूपमे लै छथि आ हुनकर कार्य उपन्यासपर अछि।

रूसक **रूपवादी** साहित्यकेँ मात्र भाषाक विशिष्ट प्रयोग मानै छथि।

जीन फ्रान्कोइस लियोटार्ड-सत्यक आ इतिहासक सत्यता मात्र आभासी अछि। **बौड्रीलार्ड**- विज्ञापन आ दूरदर्शन सत्य आ आभासीक बीच भेद मेटा देने अछि। दुनू उत्तर आधुनिकताक मुख्य विचारक छथि।

लाकानक विशेषता छन्हि जे ओ फ्रायडक पद्धतिक भाषिकी अनुप्रयोग केलन्हि। ओ कहै छथि जे अचेतनताक संरचना भाषा सन छै। जखन बच्चा भाषा सीखैए तखन ओकरा एकटा चेन्ह लेल एकटा शब्द सिखाओल जाइ छै। इच्छा, त्रुटि आ आन ई तीनटा तथ्य लाकान नीक जकाँ राखै छथि। इच्छा आवश्यकता आ माँगनाइ दुनू अछि मुदा एकरा ऐ दू रूपमे विखंडित नै कएल जा सकैत अछि। आनक वर्णनमे त्रुटि आ रिक्तता अबैत अछि। विषय अर्थक क्षणिक प्रभाव अछि आ ई आन सन हएत जखन ई आभासी हएत आ त्रुटिक कारण बनत, जइसँ इच्छाक उदय हएत।

उत्तर उपनिवेशवादक तीन विचारक छथि- होमी भाभा(फोकौल्ट आ लाकानसँ लग), गायत्री स्पीवाक (फोकौल्ट आ डेरीडासँ लग) आ एडवर्ड सईद(फोकौल्टसँ लग) जे उपनिवेशवादीक पूर्वक धूर्तताक, शिथिलता आदिक धारणाक लेल कएल गेल कार्य आ सिद्धांतीकरणक व्याख्या करै छथि।

रेमण्ड विलियम्सक संस्कृतिक अध्ययन साहित्यक आर्थिक स्थितिसँ सम्बन्ध देखबैत अछि। नव इतिहासवाद इतिहासक शब्दशास्त्र आ शब्दशास्त्रक ऐतिहासिकताक तुलना करैत अछि।

इलाइन शोआल्टर महिला लेखनक मानसिक, जैविक आ भाषायी विशेषताकेँ चिन्हित करै छथि। सिमोन डी. बेवोइर नारीक नारीक प्रति प्रतिबद्धतामे वर्ग आ जातिकेँ (जकर बादक नारीवादी सिद्धांत विरोध केलक) बाधक मानै छथि। वर्जीनिया वुल्फ नारी लेखक लेल आर्थिक स्वतंत्रता आ निजताकेँ आवश्यक मानै छथि। हिनकर विचारकेँ क्रान्तिकारी नै मानल गेल। मेरी वोल्स्टोनक्राफ्ट नारी शिक्षामे क्रान्ति आ औचित्यक शिक्षाकेँ सम्मिलित करबापर जोर देलनि।

नव समीक्षा- इलिएट कवितामे भावनाक प्रधानताक विरोध केलन्हि आ एकरा गएर वैयक्तिक बनेबाक आग्रह केलनि। समीक्षकक काज लोकक रुचिमे सुधार करब सेहो अछि। विमसैट आ वर्डस्ले कहलनि जे कविता उद्देश्य वा ऐतिहासिक अध्ययनपर समीक्षा आधारित नै रहत। ई पाठकपर पड़ल भावनात्मक प्रभावपर सेहो आधारित नै रहत कारण से सापेक्ष अछि। ओ आधारित रहत वास्तविक शब्दशास्त्रपर।

फिलिप सिडनीसँ अंग्रेजी समीक्षाक प्रारम्भ देखि सकै छी- ओ कविताकेँ सौन्दर्य, अर्थ आ मानवीय हितमे देखलन्हि।

जॉन ड्राइडन- प्राचीन साहित्यमे नैतिक प्रवचनपर आ एकर लाभहानिपर विचार केलनि।

सैमुअल जॉनसन सेक्सपिअरक नाटकमे हास्य आ दुखद तत्वपर लिखलन्हि।

रूसोक रोमांशवाद मनुक्खक नीक हेबापर शंका नै करैए (क्लासिकल समीक्षक शंका करै छथि मुदा नव-क्लैसिकल कहै छथि जे मानव स्वभावसँ दूषित अछि मुदा संस्था ओकरा नीक बना सकैए) मुदा संगे ई कहैए जे संस्था सभ दूषित अछि आ मात्र दूषित लोकक मदति करैए। रोमांशवाद कविताक व्यक्तिगत अनुभव हेबाक गप कहैए।

आधुनिक स्थितिवाद (साहित्यक अवस्थितिपर कोनो प्रश्न चिन्ह नै) पर संरचनावाद प्रहार केलक आ तकरा बाद लेखक स्वयं लिखल टेकस्टक विश्लेषण करबाक अधिकार गमेलक।

उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्य ओइसँ आगाँक वस्तु अछि जे संरचनावाद बुझै अछि। उत्तर-संरचनावादक एकटा प्रकार अछि उत्तर आधुनिकता। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्यमे संरचना संस्कृति आ सिद्धान्त मध्य कार्य करैत अछि जत्तऽ किछु भाव आ सोच वंचित अछि जे निरन्तरताक विरोध करैए। विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकता उत्तर संरचनावादक बाद आएल। उत्तर उपनिवेशवाद उपनिवेशक नव रूपकेँ नै मानैए आ अव्यवस्थाक सिद्धांत सन असफल उद्देश्यकेँ उचित परिणाम नै भेटबाक कारण मानैए।

संरचनावाद दमित करैबला पाश्चात्य व्यवस्था आ समाजपर चोट करैए आ ऐ सँ मार्क्सवादकेँ बल भेटलै (अलथूजर)।

आधुनिकतावादी-स्थितिवादी, नव समीक्षा, संरचनावाद आ **उत्तर संरचनावादक बाद विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकतावाद** आएल जकरा विलम्बित पूँजीवाद कहल गेल (फ्रेडरिक जेनसन)।

अठारहम शताब्दीमे आधुनिक माने छल जड़विहीन मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे एकर अर्थ प्रगतिवादी भऽ गेल। १९७० ई.क बाद आधुनिक शब्द एकटा सिद्धांतक रूप लऽ लेलक से **उत्तर-आधुनिक** शब्द पारिभाषिक भेल जकर नजरिमे लौकिक महत्वपूर्ण नै रहल। आधुनिक काल धरिक सभ जीवन आ इतिहास अमहत्वपूर्ण भेल आ खतम भेल। ई सिद्धांत भेल इतिहासोत्तर, विकासोत्तर आ कारणोत्तर। सत्य आ आपसी जुड़ावक महत्व खतम भऽ गेल।

जादुइ वास्तविकतावाद जइमे वास्तविक स्थितिमे जादुइ वस्तुजात घोसिआओल जाइत अछि। स्पेनिश उपन्यासकार गैब्रिअल गार्सिया मार्क्विसक ‘‘वन हंड्रेड ईयर्स ऑफ सोलीट्यूड’’ आ सलमान रुस्डीक ‘‘मिडनाइट्स चिल्ड्रेन’’ ऐ तरहक उपन्यास अछि। रचनाकार ऐ तरहक प्रयोग कऽ वास्तविकताकेँ नीक जकाँ बुझबाक प्रयास करै छथि।

जोसेफ कोनरेड उपन्यासकेँ इतिहास कहै छथि। जोसेफ कोनरेड पोलिश भाषी रहथि मुदा अंग्रेजीक प्रसिद्ध उपन्यासकार छथि जे धाराप्रवाह अंग्रेजी नै बजैत रहथि। **रोलेंड बार्थेज** कहै छथि जे उपन्यास इतिहास सेहो छी आ उपन्यास इतिहासक विरोध सेहो करैए। रोलेंड बार्थेज फ्रांसक साहित्यिक सिद्धांतकार रहथि आ हिनकर लेखनीक प्रभाव संरचनावाद, मार्क्सवादी आ उत्तर संरचनावादी साहित्यिक सिद्धांतपर पड़ल।

उत्तर आधुनिक पाश्चात्य बुर्जुआ दृश्य-श्रव्य मीडियाक प्रयोग कऽ असमता, अन्याय आ वंचितक अवधारणाकेँ मात्र शब्द कहै छथि जे

समता, प्राप्ति आ न्यायक लगक शब्द अछि। गरीबी जे पाश्चात्यमे समस्या नै अछि से आइ भारतमे पैघ समस्या अछि। उत्तर आधुनिकता नारीवादक आ मार्क्सवादक विरोधमे अछि आ एकर नारीवाद आ मार्क्सवाद विरोध केलक अछि। जेना ऐतिहासिक विश्लेषणक पक्षमे मार्क्सवाद अछि आ ओइसँ ओ अपन सिद्धांत फेरसँ सशक्त केलक अछि, संरचनावाद-उत्तर-संरचनावाद आ उत्तर आधुनिकतावादक परिप्रेक्ष्यमे। मार्क्सवाद लौकिक पक्षपर जोर दैत अछि मुदा तँ ई उपयोगितावाद आ चार्वक दर्शनक लग नै अछि, कारण उपयोगितावाद आ चार्वकवाद मात्र शारीरिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो उत्तर आधुनिकतावादक यथास्थिवादक विरोध केलक अछि कारण यावत से खतम नै हएत ताधरि नारीक स्थितिमे सुधार नै आएत।

महिला- ऋगवेदमे अपाला,घोषा, श्रद्धा, शची, सार्पराज्ञी, यमी, वैवस्वती, देव जामय, इन्द्राणी, शश्वती, रोमशा, गोधा, उर्वशी, सूर्या, अदिति, नदी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, वाक् जुहू, सरमा आ यमी ऐ २१ टा ऋषिकाक वर्णन अछि। देवता माने प्रतिपाद्य विषय नै कि गॉड (जेना ग्रिफिथ अनुवाद केने छथि।) मन्त्रार्थमे महर्षि पतञ्जलिक वैज्ञानिक मन्तव्य ‘‘यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्’’ माने जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैत अछि सएह हमरा लेल प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे वेदे प्रमाण अछि- गलत रूपेँ भेल।

प्लेटो- प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। प्लेटोक ई विचार स्पार्टासँ एथेंसक सैन्य संगठनक न्यूनताकेँ देखैत देल विचारक

रूपमे सेहो देखल जेबाक चाही, काव्य/ नाटकक ऐ रूपेँ विरोध केलन्हि जे सम्वादकेँ रटि कऽ बाजैसँ लोक एकटा कृत्रिम जीवन दिस आकर्षित हएत।

अरिस्टोटल कविताकेँ मात्र अनुकृति नै मानै छथि, ओ ऐ मे दर्शन आ सार्वभौम सत्य सेहो देखै छथि। ओ नाटकक दुखान्तकेँ आ अनुकृतिकेँ निसास छोड़ैबला कहै छथि जे आनन्द, दया आ भयक बाद अबैत अछि।

सम्वाद दू तरेहेँ भऽ सकैए- अभिभाषण वा गप द्वारा। गपमे दार्शनिक तत्व कम रहत। प्राचीन ग्रीसमे कविता भगवानक सनेस बूझल जाइ छल। एरिस्टोफिनीस नीक आ अधला ऐ दू तरहक कविता देखै छथि तँ थियोफ्रेस्टस कठोर, उत्कृष्ट आ भव्य ऐ तीन तरहेँ कविताकेँ देखै छथि। कविता आ संगीत अभिन्न अछि। मुदा यूरोपक सिम्फोनी जइमे ढेर रास वादन एके संगे विभिन्न लयमे होइत अछि, सिद्धांतमे अन्तर अनलक। यएह सभ किछु नाटकक स्टेज लेल सेहो लागू भेल।

डेरीडाक विखण्डन पद्धति ऊँच स्थान प्राप्त रचना/ लेखक केँ नीचाँ लऽ अनैत अछि आ निचुलकाकेँ ऊपर। रोलेण्ड बार्थेस लिखै छथि जे जखन कृति रचनाकारसँ पृथक भऽ जाइए आ ओकर विश्लेषण स्वतंत्र रूपेँ होमए लगै छै तखन कृति महत्वपूर्ण भऽ जाइए जकरा ओ रचनाकारक मृत हएब कहै छथि।

उत्तर-संरचनावाद संरचनावादक सम्पूर्ण आ सुगठित हेबाक अवधारणाकेँ माटि देलक। सौसरक भाषा सिद्धान्त- बाजब/ लिखब,

वास्तविक समयक साहित्य वा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक शब्दशास्त्र, महत्वपूर्ण कोनो कृति वा मनुक्ख अछि/ महत्ता एकटा भाव अछि, वास्तविक समयमे भाषा वा एकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; मुदा एकरा सेहो डेरीडाक विखण्डन सिद्धान्त उल्टा-पल्टा करऽ लागल।

लिंग एकटा जैव वैज्ञानिक तथ्य अछि मुदा महिला/ पुरुषक सिद्धान्त सामाजिकताक प्रतिफल अछि। महिला सापेक्ष साहित्य कला पुरुष द्वारा निर्मित अछि आ पुरुखक नजरिसँ महिलाकेँ देखैत अछि। साहित्यक नारीवादी सिद्धान्त ऐ समस्याक तहमे जाइए। मिथिलाक सन्दर्भमे महिलाक स्थिति ओतेक खराप नै छै मुदा मैथिली साहित्यक एकभगाह प्रवृत्तिक कारण उच्च वर्गक नारीक खराप स्थिति साहित्यमे आएल। आधुनिकीकरण तथाकथित सामाजिक रूपसँ निचुलका जाति सभमे सेहो नारीक स्थितिमे अवनति अनलक अछि। दोसर एकटा आर गप अछि जे जाति आ धर्म नारीक अधिकारकेँ कैक हीसमे बाँटि देने अछि।

नारीवादी दृष्टिकोण सेहो कहैए जे सभटा सिद्धांत पुरुष द्वारा बनाएल गेल से ओ पूर्ण व्याख्या नै कऽ सकैए। सरल मानवतावाद सिद्धांतक विरुद्ध आएल मुदा ई सेहो एकटा सिद्धांत बनि गेल। सार्थक साहित्यक निर्माण एकर अन्तर्गत भेल।

पोथी समीक्षामे अत्यधिक आलोचनासँ बचबाक चाही। समीक्षककेँ अपन विद्वत्ता प्रदर्शनसँ बचबाक चाही। अत्यधिक आलोचनाक क्रममे लोक अपन विद्वता देखबऽ लगै छथि। आलोचनाक क्रममे संयम रखबाक चाही, खराप शब्दावलीक प्रयोग समीक्षकक खराप लालन-पालन देखबैत अछि। पोथीक बिना पढ़ने समीक्षा अनैतिक अछि।

उदाहरणस्वरूप कर्मधारयमे धूमकेतुक विषयमे तारानन्द वियोगी लिखै छथि- मिथिलाक संस्कृतिमे युग-युगसँ प्रतिष्ठापित साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैत हिनक कथा ''नमाजे शुकराना'' बहुत महत्वपूर्ण थिक। (कर्मधारय, पृ. १२७) (!) कथाक शीर्ष देखि कऽ ऐ तरहक समीक्षा भेल अछि कारण ऐ कथामे हाजी सैहेबक नमाजक समएमे पिंजराक सुग्गा ''सीता...राम...।'' बजैए आ सुग्गाक पिंजराकेँ हाजी सैहेब ताधरि महजिदक देबालपर पटकै छथि जाधरि सूगा मरि नै जाइए। सईदा कानऽ लगैए आ कथा खतम भऽ जाइए। आ ई कथा समीक्षकक मतमे साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैए!

समीक्षककेँ अति प्रशंसासँ सेहो बचबाक चाही। पोथीक समीक्षामे ई देखाएल जेबाक चाही जे ऐ विषयपर लिखल आन पोथीसँ ई पोथी कोन रूपेँ भिन्न अछि, कोना ई पोथी रिक्त स्थलक पूर्ति करैए, पोथीमे की-की छै आ ओइ विषयपर लिखल आन पोथीसँ एकर तुलना हेबाक चाही। पोथीक विस्तारकेँ ध्यानमे राखि समीक्षा हजारसँ दू हजार शब्दमे हेबाक चाही। समीक्षा सम्बन्धित पोथीक हेबाक चाही, लेखकक नै। लेखकक दोसर रचनाक विश्लेषणसँ समीक्षाकेँ भरब नीक समीक्षा नै, जे ऐ सभ पोथीसँ समीक्षित पोथीक कोनो सोझ सम्बन्ध हुअए तखने ओकर प्रयोग करू। मिथिलाक विविध संस्कृति आ इतिहासकेँ देखैत मैथिली साहित्यक एकभगाह स्थिति विशेष रूपमे- व्यक्तिगत आक्षेपक आ जिला-जबारकेँ ध्यानमे रखबाक सेहो परम्परा रहल अछि। जाति-धर्म आ क्षेत्रीय मैथिली भाषा समीक्षामे कम्मे अबैए मुदा जिला-जवारक/ दोस-महीमक-पड़ोसक आधारपर नीक वा अधलाह समीक्षाक प्रवृत्ति वा आग्रहक

भयंकर प्रभाव समीक्षकक मध्य छन्हि।

कोनो खास समीक्षासँ ओइ पोथीपर प्रकाश पड़ैए वा नै से देखू। ई तँ नै अछि जे ओ समीक्षा लेखकपर टिप्पणी कऽ रहल अछि वा लेखकक आन रचनापर- गहींरमे जाएब तँ बूझि जाएब जे समीक्षा पोथी पढ़ि लिखल गेल छै आकि नै। आलंकारिक भाषाक दिन गेल, शब्दक सटीक प्रयोग करू, अनावश्यक शब्द आ पाँतीकेँ निकालू। आत्मकथात्मक पोथीक समीक्षा लेल लेखकक जिनगीपर प्रकाश दऽ सकै छी। पोथीक रूप, रंग आ आवरणक फोटोक समीक्षासँ आगाँ बढ़ू आ पोथीक समीक्षा करू। पोथीमे महिला विरोधी वा जाति-क्षेत्रक बन्हनसँ बान्हल मानसिकताकेँ दूर राखू। पोथी लेखकक नामक वा आवरणक चित्रक अनावश्यक न्यून विश्लेषणसँ अपनाकेँ दूर राखू।

उपन्यासक अंग अछि वातावरणक निर्माण जइमे लेखक कथा कहैत अछि, ओकर पात्र सभक विवरण, कथाक प्रारूप आ तकरा लेल लोकक आ परिस्थितिक वर्णन। ऐ मेसँ कोनो एक टा पक्ष लऽ कऽ अहाँ कथा लिख सकै छी। नाटकमे भावनापूर्ण सम्वाद आ क्रियाकलापक योग रहत। पद्यमे शब्दक प्रयोगसँ चित्रक निर्माण करऽ पड़त आ लोकक भावनाकेँ उद्वेलित करबा योग्य बनबऽ पड़त, ऐ लेल कविक वातावरणमे हस्तक्षेपयुक्त सलाहक औचित्य आ ध्वनि-विज्ञानक योग सेहो चाही।

कोनो कृति कोना उत्कृष्ट अछि आ ओइमे की छुटि गेल अछि से समीक्षककेँ देखबाक चाही। ओकर मूल्यांकन एकभगाह नै हेबाक चाही, ओइ रचनामे की संदेश नुकाएल छै, लेखक कोन दिस

निर्देशित कऽ रहल अछि, से समीक्षककेँ बुझबाक आ लिखबाक चाही। आब प्रश्न उठैए जे समीक्षाक पोथीक समीक्षा कोन हुअए। ऐ मे समीक्षककेँ ओइ पोथीक मुख्य धाराकेँ चिन्हित करबाक चाही।

जे समीक्षा/ निबन्धक पोथीमे कएक तरहक निबन्ध/ समीक्षा अछि आ मारते रास लेखकक रचना संकलित अछि तँ से सोद्देश्य अछि वा निरुद्देश्य से समीक्षककेँ देखबाक चाही।

समीक्षित पोथीक अतिरिक्त ओइ विषयपर आन पोथीक सेहो जत्तऽ धरि सम्भव हुअए चर्चा हेबाक चाही। अपन विचारधाराकेँ समीक्षित पोथीपर आरोपण नै हेबाक चाही। ओइ पोथीक आइक समएक सन्दर्भमे की आवश्यकता अछि से देखाउ। ओइ पोथीक महत्ता कोन रूपमे अछि से देखाउ, ओकर मुख्य तत्व चिन्हित करू। लेखकक जीवन दर्शन, वास्तविक, काल्पनिक आ आदर्शक सम्बन्धमे ओकर दृष्टि, संदेहकेँ चिन्हित करू। लेखकक लेखनशैलीक कलात्मक पक्ष, ओकर गप कहबाक क्षमता, रचनाक ढाँचा आ ओकर विभिन्न भागकेँ जोड़बाक कलाक चर्चा करू, जेना नीक कमार ठोस आ कलात्मक पलंग बनबैत अछि, तँ दोसर कमारक जोर मात्र ठोस हेबापर होइ छै आ तेसरक कलात्मकतापर, तहिना।

सिद्धान्तक आवश्यकता की छै? सरल मानवतावाद कहैए जे साहित्यक सिद्धान्तक बदलामे रचनाक की मानवीय दृष्टिकोण छै, ओइमे सार्थकता छै आकि नै से सामान्य बुद्धिसँ कएल जा सकैए। अपन बुद्धिक प्रयोग कऽ रचनाक गुणवत्ता अहाँ देखि सकै छी, कोनो साहित्यिक सिद्धान्तक आवश्यकता समीक्षा लेल नै छै। मुदा

सरल मानवतावाद स्वयं एकटा सिद्धांत बनि गेल।

काव्यक भारतीय विचार: मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक **सीता** आ **राम** अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण)। **कृष्ण** भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो।

कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि।

रस सिद्धान्त:

भरत:- नाटकक प्रभावसँ रसक उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी)सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी।

भट्ट लोलट:- स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करै छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि।

शौनक:- शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा

सन।

भट्टनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानै छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार।

रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि।

बार्थेजक संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युकेँ आवश्यक मानै छथि- लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि।

ध्वनि सिद्धान्त:

आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोक साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब कहै छथि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त।आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानै छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि, ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से

सभ शब्द द्वारा वर्णित हएब सम्भव नै अछि।

स्फोट सिद्धांत:

भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण हेबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति, समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि।

अलंकार सिद्धान्त:

भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ

आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे।

औचित्य सिद्धान्त:

क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, प्रबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फाजिल, काल, देश कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे।

कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे।

भारत आ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक ‘‘नाट्यशास्त्र’’ आ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक ‘‘काव्यशास्त्र’’। भरत नाट्यकेँ ‘‘कृतानुसार’’ ‘‘भावानुकार’’ कहै छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहै छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे

अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नै। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतौ चरचा नै अछि।
अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दै छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। भरत कहै छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जाएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु हुअए से आवश्यक नै।
कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत अछि।
अरस्तू कथानककेँ सरल आ जटिल दू प्रकारक मानै छथि।
फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आ इतिहास ऐ तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मानै छथि।
अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र य़शस्वी आ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण।
भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहै छथि।
भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत अछि। प्रास्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांतमे अछि आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे ओझराहटि अबैत अछि, अन्तिम दू मे सोझराहटि।
कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आ कार्य अछि।

अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आ अवसान कहैत छथि। आब आउ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आ कार्यकेँ जोड़एबला।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नै हुअए आ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नै हुअए।

मुदा ऐ त्रिकक विरोध ड्राइडन केने छला आ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओ समर्थन केलन्हि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन केलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन केलन्हि तँ ड्राइडन नाटकक पठनीयताक समर्थन केलन्हि। देसियर पठनीयता आ दृश्यत्व दुनूक समर्थन केलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छला जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि, मुदा पठनसँ सेहो रसास्वाद भेटैत अछि।

पश्चिमी रंगमंचक नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहै छथि- इति शरसंधानं नाटयति।

अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतौ अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइ छल।

गद्यक विभिन्न विधा जेना प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प,

उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज आदिक मध्य कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास, अनुभव मिश्रित कल्पनापर विशेष रूपसँ आधारित अछि। जकरा हम सभ खिस्सा-पिहानी कहै छिऐ तइसँ ई सभ लग अछि। कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास आ किछु दूर धरि नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐमे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै- कारण जिनगीक भागदौड़मे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि।

विहनि-कथा/ लघुकथा/ दीर्घकथा/ उपन्यास: अंग्रेजीक शॉर्ट स्टोरी आ मैथिलीक विहनि आ लघु कथा। मैथिलीमे एक पन्नासँ छोट कथा भेल विहनि कथा आ ओइसँ पैघ आ ४-५ पन्नासँ १५-२० पन्ना धरि लघु कथा आ ओइसँ पैघ दीर्घ कथा। फेर ५०-६० पन्नासँ उपन्यास शुरू। लघुकथा कहने एकटा एहेन विधा बनि सोझाँ आएल अछि जे पहिने कथा थिक फेर लघुकथा। विहनि कथा, लघुकथा, दीर्घ कथा, उपन्यास, नाटक आ एकांकी एकटा अनुभव मिश्रित कल्पनापर आधारित अछि। अंग्रेजीमे सेहो लम्बाइक आधारपर शॉर्ट-स्टोरी/ नोवेलेट/ नोवेला/ नोवेल क विभाजन कएल जाइत अछि। मैथिलीमे सभ विधामे शब्द संख्याक घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी अंग्रेजी वा दोसर यूरोपियन भाषासँ बेशी होइत अछि, ओना अंग्रेजी वा दोसर यूरोपियन भाषामे सेहो सभ विधामे लेखकक व्यक्तिगत रुचि आ कथ्यक आवश्यकताक अनुसार घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी होइते अछि। तहिना वन-एक्ट प्ले भेल एकांकी आ प्ले भेल नाटक। से विहनिकथा/ लघुकथा कथा तँ छीहे।

अहाँक अनुभवमिश्रित कल्पना अहाँसँ किछु कहबा लेल कहैत अछि। आ ई कथ्य हास्य-कणिका वा अहास्य-कणिका बनि सकैत

अछि। लोक अहाँकेँ कहि सकै छथि जे अहाँकेँ गप्प बड़ड फुराइए, अहाँ हाजिर जवाब छी। आ तकर बाद अहाँक हिम्मत बढ़ैत अछि आ अहाँ ओइ कथ्यकेँ शिल्पक साँचामे ढलैय्या कऽ विहनि कथा बना दै छी। हास्य-कणिकाक संग सभसँ मुख्य अवरोध छै जे अहाँक सुनाओल हास्य-कणिका घूमि-फिरि अहीं लग आबि जाएत, माने मौलिकता कतौ हेरा जाएत। हास्य-कणिका सेहो एक-दू पाँतीसँ आध-एक पृष्ठ धरिक होइत अछि। कथा-उपन्यासमे एकर समावेश कएल जा सकैत अछि मुदा लघुकथा एकर पलखति नै दैत अछि। मुदा कथा-उपन्यासमे जेना कएल जाइत अछि जे एकरा कोनो पात्रक मुँहसँ कहाबी वा कोनो आन प्रसंगसँ जोड़ि सार्थक बनाबी तँ से अहाँ लघुकथामे सेहो कऽ सकै छी। गल्प आख्यानसँ होइत अछि आ नैतिक शिक्षा, प्रेरक कथा आ मिस्टिक टेल्स सेहो लघुसँ दीर्घ रूप धरि होइत अछि। एकर लघु रूप विहनि कथा नै भेल सेहो नै।

विहनि कथामे जे त्वरित विचारक उपस्थापन देखल जाइत अछि से उपन्यासमे सेहो रहैत अछि। मुदा जे त्वरित विचारक उपस्थापन नै रहलासँ ओ विहनि कथा नै रहत सेहो गप नै। उनटे जखन विहनि कथाक समीक्षा करऽ लागब तखन समीक्षकक ध्यान स्थायी तत्व दिस हेबाक चाही नै कि त्वरित उपस्थापन दिस। त्वरित विचारक उपस्थापनक प्रति बेसी झुकाव ओकरा अहास्य-कणिका बना दैत अछि, ओ विहनि कथा आकि विहनि कथा तँ रहत मुदा श्रेष्ठ विहनि वा लघुकथा नै रहत। विहनि वा लघुकथा झमारि देत तँ ओ विहनि वा लघुकथा वा श्रेष्ठ विहनि वा लघुकथा भेल आ जे ओ झमारि नै सकत तँ ओ विहनि वा लघुकथा भेबे नै कएल- ई गप नै छै। कोनो त्वरित विचार आएल, ओकरा कागचपर लिखि लेलौं,

ऐ डरसँ जे कतौ बिसरा ने जाए- एतऽ धरि तँ ठीक अछि। मुदा हरबड़ा कऽ एकरा विहनि वा लघुकथा बना देबासँ पहिने विचारकेँ सीझऽ दिऔ। ओइमे की मिज्झर करब तँ ओइमे स्थायी तत्व आबि सकत तइपर मनन करू। ओना बिना सिझने जे झमारैबला विहनि वा लघुकथा लिखि देलौं तँ ओ विहनि वा लघुकथा तँ भेल मुदा श्रेष्ठ विहनि वा लघुकथा ओ सेहो भऽ सकत तकर सम्भावना कम। ई ओहिना अछि जेना कोनो झमकौआ गीत अपन प्रभाव बेसी दिन रखबे करत से निश्चित नै अछि तहिना कथाक ई स्वरूप ट्वेंटी-ट्वेंटी सन नै भऽ जाए तइपर विचार करऽ पड़त।
उपन्यास तँ एक उखड़ाहामे नै पढ़ल जा सकैए मुदा दीर्घकथा एक उखड़ाहामे पढ़ल जा सकैत अछि। एक उखड़ाहामे अहाँ कएकटा विहनि वा लघुकथा पढ़ि सकै छी। उपन्यासमे लेखक वातावरणक, प्लॉटक, व्यक्तिक जइ विशदतासँ वर्णन कऽ सकैए से दीर्घ कथामे सम्भव नै। ओ एकटा पक्षपर रहैए आ लघुकथा तँ एकटा घटनापर केन्द्रित रहैए आ ऐ क्रममे वातावरण आ व्यक्तिक जीवनक एकटा मोटामोटी विवरणात्मक स्केच मात्र खेंचि पबैए। विहनि कथामे वातावरण आ व्यक्तिक जीवनक एकटा मोटामोटी विवरणात्मक स्केच सेहो नै खेंचि सकै छी, से पलखति विहनि कथा अहाँकेँ नै देत, हँ तखन विहनि कथा सेहो एकटा पक्षपर वा एकटा घटनापर केन्द्रित रहैए। आ ई पक्ष वा घटना तेहन रहत जे लेखककेँ ललचबइत रहत जे एकरा स्वतंत्र रूपसँ लिखू, एकरा दीर्घ/ लघु कथा वा उपन्यासक भाग बना कऽ एकर स्वतंत्रता नष्ट नै करू।
तखन उपन्यासक प्लॉटसँ विहनि वा लघु कथाक प्लॉट सरल हएत, पक्ष वा घटनाक वर्णन शिल्पक साँचामे ढलैय्या केलौं आ पूर्ण विहनि वा लघुकथा बनि कऽ तैयार।

विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र

विहनि/ लघु कथा एक पक्ष वा घटनाक वर्णन अछि। अहाँ ओइ घटनाकेँ ३-४ पृष्ठमे सेहो लिखि सकै छी। जेम्स जॉयसक ‘‘डब्लाइनर’’ लघु-कथा संग्रहक सभ कथा एकटा घटनासँ अनचोके कोनो वस्तुक त्वरित ज्ञान दर्शबैत अछि। १५ टा शॉर्ट-स्टोरीक संग्रह जेम्स जॉयसक ‘‘डब्लाइनर’’ २०० पृष्ठक अछि आ मैथिली विहनि कथाक सभ विशेषतासँ युक्त अछि। तहिना खलील-जिब्रान आ एंटन चेखवक ढेर रास शॉर्ट-स्टोरी नमगर रहितो विहनि कथा अछि, मुदा मैथिलीक लघुकथा लेल सेहो ऐ विशेषताक खगता छै। नॉवेल जकरा बांग्ला आ मैथिलीमे उपन्यास आ मराठीमे कादम्बरी कहै छिऐ-क विस्तार बेशी होइ छै। मैथिलीमे ५०-६० पृष्ठसँ उपन्यास शुरू भऽ जाइ छै जे अंग्रेजीक शॉर्ट-स्टोरी / नोवेलेट/ नोवेला/ ऐ सभक ऊपरी सीमाक्षेत्रमे अबैत अछि। मुदा मैथिलीक स्थिति अंग्रेजीसँ फराक छै। ऐमे बालकथा कएक राति धरि चलैत अछि तँ पैघ लोकक कथा मिनटमे सेहो खतम भऽ जाइत अछि। मैथिलीक सन्दर्भमे ई तथ्य आब सोझाँ आबि गेल अछि जे विहनि कथाक सीमा एक पृष्ठ, लघु कथाक तीन-चारि पृष्ठ, दीर्घकथाक १५-२० पृष्ठ आ उपन्यासक ६०-५०० पृष्ठ अछि।

विहनि कथाक समीक्षा कोना करी? विहनि कथामे कोनो कथा पूर्ण रूपसँ कहल गेल तँ फेर ओ विहनि कथा नै कहाएत। हँ जँ ओइमे एकटा घटनाक शृंखलाक वर्णन एकटा कथ्य कहक लेल आवश्यक अछि तँ शृंखला पूर्ण हेबाक चाही। ऐ शृंखलाक कड़ी कनेक नमगर भऽ सकैए। त्वरित उपस्थापनाक हरबड़ी ऐ शृंखलाकेँ कमजोर कऽ सकैए। सदिखन उल्टा धार बहाबी आ त्वरित

उपस्थापना आनी- ई पद्धति किछु गणमान्य विहनि कथा लेखकक फार्मूला बनि गेल अछि। एकाध-दूटा विहनि कथामे ई सिनेमाक ‘‘आइटम गीत’’ सन सोहनगर लगैत अछि मुदा फेर समीक्षकक दृष्टि एकरा पकड़ि लैत अछि, कारण ई प्रो-एक्टिव हेबाक साती रिएक्टिव बनि जाइत अछि। स्थायी प्रभाव ऐसँ नै आबि पबै छै, विहनि कथा लेखकक प्रतिभाक कमी ऐमे प्रतीत होइ छै। विहनि कथा वएह श्रेष्ठ हएत जे एकटा घटनाक शृंखलाक निर्माण करत आ अपन निर्णय सुनेबा लेल पाठककेँ छोड़ि देत। फरिछेबाक पलखति विहनि कथाकेँ नै छै, मुदा तकर माने ई नै जे दू-चारि पाँतीमे बात कएल जाए। मुदा लेखक जौँ दू-चारि पाँतीक गपकेँ विहनि कथा कहै छथि तँ समीक्षक ओकरा विहनि कथा मानबा लेल बाध्य छथि मुदा ओ श्रेष्ठ विहनि कथा हएत तकर सम्भावना घटि जाइत अछि।

विहनि कथाक वर्ण्य विषय मात्र चलैत-फिरैत घटना नै अछि। विहनि कथा-लेखककेँ बच्चा लेल, नैतिक शिक्षापर आ धार्मिक विषयपर सेहो विहनि कथा लिखबाक चाही। ट्रेनमे बसमे जाइ छी, घरमे दलानपर घूरतर गप करै छी आ तकर अनुभव मात्र विहनि कथामे आबि रहल अछि। सामाजिक आ आर्थिक समस्या सेहो एकर स्थायी वर्ण्य विषय भऽ सकैत अछि। राजनैतिक प्रश्न आ प्राकृतिक आपदाकेँ वर्ण्य विषय बनाएल जा सकैत अछि। विहनि कथा समीक्षक समीक्षा करबा काल पौराणिक रूपमे शिव पुराणमे सभसँ पैघ शिव आ गरुड़ पुराणमे सभसँ पैघ गरुड़ ऐ तरहक समीक्षा नै करथि। माने ई नै होमऽ लागए जे, जे अछि से विहनि कथा। जेना उपन्यासमे लेखककेँ अपन पूर्ण प्रतिभा देखेबाक लेल पलखतिक अभाव नै रहै छै से लघु कथामे नै रहै छै आ विहनि कथामे तँ से आरो कम रहै छै। मुदा विषयक विस्तार कऽ

पाठकक माँगकेँ पूर्ण कएल जा सकैत अछि। कथोपकथनक गुंजाइश कम राखि वा कोनो उपस्थापनासँ पहिने राखि विहनि कथा आ लघु कथाकेँ सशक्त बनाओल जा सकैत अछि, अन्यथा ओ एकांकी वा नाटक बनि जाएत। विहनि कथाक समावेश लघुकथा-उपन्यासमे भऽ सकैए मुदा विहनि कथामे हास्य-कणिकाक समावेश नै हुअए तखने ओ समीक्षाक दृष्टिसँ श्रेष्ठ हएत, कारण एक तँ कम जगह, तइमे जे कथोपकथन आ हास्य कणिका घोसियेलौं तखन ओकर प्रभाव दीर्घजीवी नै हएत।





Videha e-Learning

Gajendra Thakur



Videha
e-Learning



Gajendra Thakur





Videha e-Learning



Gajendra Thakur

HISTORY, GEOGRAPHY, ECONOMICS, CIVICS (POLITICAL SCIENCE, SOCIOLOGY), PHYSICS, CHEMISTRY, BIOLOGY (ANIMAL BIOLOGY-ZOOLOGY & PLANT BIOLOGY-BOTANY), MATHEMATICS

Sometimes we feel learned, but a child's query brings us to our senses.

Instead of going after the lengthy specialized subjects, used as headlines to this write-up, there is nothing wrong if we start and learn Sciences, Social Sciences and Mathematics from the scratch.

So we deduce and reduce-
HISTORY, GEOGRAPHY, ECONOMICS, CIVICS (POLITICAL SCIENCE, SOCIOLOGY), PHYSICS, CHEMISTRY, BIOLOGY (ANIMAL BIOLOGY-ZOOLOGY & PLANT BIOLOGY-BOTANY), MATHEMATICS-

to

ENVIRONMENTAL STUDIES & MATHEMATICS.

LESSON No. 1
ENVIRONMENTAL STUDIES

What we see, what we observe, be it natural, be it social is Environment.

The Natural Environment includes living as well as non-living. It includes Atmosphere as well as Vegetation. It includes natural phenomena like thunder.

The Social environment is created by human action like infrastructure of home as well as workplace and includes society. The Sciences and Social Sciences of Environment will help unravel the challenges that human actions are posing even to the Natural Environment, which are otherwise not created by human action.

Thus the study of Environment begins with the care and understanding of one’s own body, which extends to the understanding of sleep, dream, sunrise, moonrise, winter, and summer seasons and rainy season affecting rivers. We react andrelatewith the surroundings, and these surroundings are environmental components.

The biotic, social, psychological and cultural components of environment constitute the surroundings, and the environmental components include physical as well as biotic-emotional components.

Q.What are the biotic components of environment?
A.(i)Plants
(ii)Animals
Q.What are the Abiotic Components of environment?
A.(i)Air
(ii)Land
(iii)Water
Q.What are the Social components of environment?
A.(i)Society
(ii)neighbours and relatives
(iii)demographic/ urbanization factors/ processes
(iv) social processes
Q.What are the psychological components of environment?
(i).Philosophy of Life, Aims & Goals of Life
(ii).Theorems upon which decisions are made
Q.What are the cultural components?
A.(i) religion
(ii) ethics



Thus the understanding of Environment equips us with:-

-thinking skill
-social skill
-emotional skill
-practical skills (lack of which necessitates vocational education
-visual art skills
-performing art skills
-discipline in life
-respect towards ideals, respected teachers, respected relatives, elders, neighbours and colleagues.
-respect for place of learning & place of worship, for home, for workplace, fields and surroundings (hill, river, pond, lake)
-skill-enabling language usage
-leadership skills
-quick decision making skills in various fields
-health and hygiene

Environment consists of :-
-naturally occurring (science)
-man-made and social (social science)

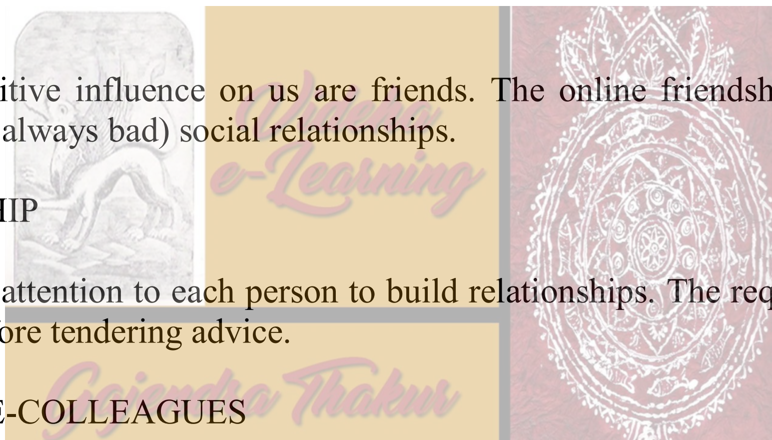
FAMILY

Family is an oldest and most common human institution. It's the first educational institution which teaches empathy/ civility.

It may be a joint family or a nuclear family.

It may be a communal family based on a common ideology, belief or religion or may be based on co-habitation resembling marriage.

FRIEND



Who have positive influence on us are friends. The online friendship are based on fabricated (not always bad) social relationships.

RELATIONSHIP

It requires full attention to each person to build relationships. The required element is understood before tendering advice.

WORKPLACE-COLLEAGUES

The colleagues are those with whom we work and interact at workplace.

PLAYMATES

The playmates are those with whom we play.

ANIMALS/ PLANTS

The earth is called green planet as it has over 3 lac species of plants out of which 2.5 lacs produce flowers.

Plants areof various types:-
-big plants
-small plants

-shrubs
-herbs
-climbers
-creepers
-thorny plants
-water plants

PARTS OF PLANTS-

Roots- e.g. radishes, carrots, beets
Stems- Xylem cells take from soil water and carry it from roots to stem. Phloem cells conduct the food made by leaves to other parts.
Leaves- the leaves containing chlorophyll carry photosynthesis in the presence of sunlight and using inputs carbon dioxide and water, the output of photosynthesis is Sugar and Oxygen.
Flowers- male part of it is stamen (made up of anther where pollen is produced), and thin filament of female part is pistis, composed of stigma, the thin style and ovary.In pollination pollen is transferred from anther to stigma. After pollination seed is formed inside a fruit. Seed turns into seedling and this process is called germination. Flowers contain pollen, tiny eggs are called ovules. After pollination of the flowers and fertilization of the ovule, ovule develops into fruit.

Mango and Jamun are single-seed fruits.
Guava and Apple are multiple-seed fruits.

Seed contains an embryo which is having genetic information. Inside it is Endosperm which is the food required to sustain early growth. Seed coat protects it from disease.

BIODIVERSITY

Genes are within Populations,
Populations are within Species,
Species are within Communities,
Communities are within Landscapes,
Landscapes are within Biomes,
Biomes are within Biosphere.

Out of 18 Biodiversity Reserves India has two (one in Western Ghats and other in Eastern Himalayas).

India has 45,000 plant species (7% of World flora).

India has 81,000 animal species (6.5% of World fauna).

However legal protection is available to National Parks (89 nos.) and Wildlife Sanctuaries (504 nos.), which is together 4.5% of India's land area.

MULTI-PARTY ENVIRONMENTAL AGREEMENTS

1992- Convention on Biological Diversity signed. By now morethan 190 Governments approved it. It asks for:-

-Conservation of Biological Diversity
-Sustainable use of Components of Biological Diversity
-Fair and equitable sharing of the benefits arising from the use of genetic resources.

BIOSPHERE RESERVES
In India-
-till 1999 ten Biosphere Reserves
-India is accommodating 10% of world species
-Project Brahma- for creating awareness by increasing the participation of people in biodiversity certification and conservation, creating awareness regarding consequences of biodiversity loss.
-legal protection is available to national parks and wildlife sanctuaries only, not to biosphere reserves.

CONSERVATION RESERVES
-it is acknowledged by Indian State Governments
-the area would be declared as conservation reserves by the States, the area would be adjacent to national parks/ wildlife sanctuaries
-act as a buffer zone between national parks/ wildlife sanctuaries and open area
-decision to declare an area as conservation reserve would be taken after holding consultation with local people.

CONSERVATION METHODS
-in-situ method and ex-situ method
-In in-situ method species of plants and animals are conserved in their natural habitats, The breeding programmes are cheaper here.
-in ex-situ method conservation is done outside of natural habitat viz. zoos, acquariums, game farms, private breeders, botanical gardens,zoological gardens, arboretums (botanical garden for scientific study), seed banks. The breeding programmes are costlier here.

Some captive breeding techniques are:-

-cross fostering, artificial incubation, artificial insemination, embroyo transfer, cloning and collection of DNA, sperm, eggs and embroyos used in captive breeding as genetic library.

Besides breeding programmes other method of preserving plant is preserving germ plasm in a gene bank.

Ex-situ conservation functions are:-
-saving the threatened germplasm
-produce material for conservation of biological research
-Grow the target species with recalcitrant (that do not survive drying and freezing during ex-situ conservation) seeds that cannot be maintained in aseed store
-habitat restoration, reintroduction, reinforcement.

FOOD

Rice contains carbohydrate.
Dals (made from Pulses) and Pulses contain Protein.

Food provides energy to body, make it work, grow and timely-repair, energy provided by it enables heart-beats and pump blood, enables stomach to assimilate food and enables lungs to breathe.
Food is converted into heart and transported to body parts through veins.

Nutrients have three functions:-
1.Energy
2.Regulate blood pressure and temperature
3.Build and repair muscles, bones, cells.

Proteins and Fats perform all the above three functions.
Minerals and Water participates in two out of three functions (2^{nd} and third).
Vitamins only do one out of the above three functions (2^{nd}).
Carbohydrate do only one function, it provides energy (1^{st}).

CARBOHYDRATE
-compounds of Carbon, Hydrogen and Oxygen.

-These compound are of two types- simple (glucose) which iseasily digested and Complex (Sugar, Starch) which after being cooked breaks down into glucose by the action of enzymes.

1 gram of Carbohydrate gives 4.2 calories of energy.
If supply of Carbohydrate and Fat is less, Protein is utilized for Energy and its main function, i.e., body-building takes a back-seat.

PROTEIN
-Complex Compound, Nitrogen, Carbon, Hydrogen, Oxygen.
-made up of chain of nitrogen containing building blocks (amino acids)
-living organisms have 22 Amino Acids out of which human body cannot produce 8 Amino Acids and these are called "Essential Amino Acids", the rest 14 Amino Acids that our body is capable of manufacturing are called "Non-essential Amino Acids".



RAMSAR WETLAND SITES IN INDIA-26
TIGER RESERVES IN INDIA (PROJECT TIGER STARTED IN 1973)- 50
ELEPHANT RANGES AND RESERVES- 10 RANGES, 33 RESERVES
MIKE SITES IN INDIA- 10
UNESCO "MAN AND BIOSPHERE" RESERVESIN INDIA- 18
UNESCO'S WORLD NETWORK OF BIOSPHERE RESERVES (WNBR) IN INDIA- 11
UNESCO'S WORLD HERITAGE SITESIN INDIA-1. CULTURAL-29, 2.NATURAL-7, 3.MIXED-1 (TOTAL-37).

SACREDGROVES IN INDIA- 7332 (IN 15 STATES, MORETHAN $1/3^{RD}$ IN MAHARASHTRA- HIGHEST)
MANGROVE SITESIN INDIA-38 (ANDHRA PRADESH TAMILNADU, KERALA, KARNATAKA, GOA & MAHARASHTRA (8 COASTAL STATES)+ ANDMAN & NICOBAR ISLANDS= IN TOTAL 9 STATES).

Flags were invented in India (in ancient times).
Indian Flag has:
-tricolour rectangular panels- top saffron, middle white and bottom-green.
-In middle panel 24 spoked-wheel of navy blue colour visible on both sides of flag.
24 spoke=360 degrees
Thus each spoke at 360/24= 15 degrees angular distance.

There are three elements of design:
(i) Form (aesthetics)
(ii) Function (teleology) &
(iii) Meaning (semiotics).

Designers of International Prominence:-
US- Donna Karan & Calvin Klein
UK-Alexander Mcqueen & Vivien Westwood
Italy-Giogio Armani & Missoni
Japan- Issey Miyake & Kenzo



COUTRE INDUSTRY

France- Paris Houte Coutre
Italian Houses in Rome, Florence, Milan.

READY TO WEAR
Brand- Gucci, Calvin Klein, Kenzo, Paul Smith.
-Sonia Rykiel (lower in price than Coutre items)

-Haute-Coutre isa French word for high class dress making.
-Pret-o-Porter is a French word for ready-to-wear garments
-Milan, London, New York & Paris are four big fashion capitals of the world.
-Milan since 16^{th} century is the oldest fashion capital. New York is the business capital of fashion.
-Rose Bertin was named the Minister of Fashion in 18^{th} century France.

FILM DESIGNERS
Ms Bhanu Athaiya- Lagaan, Sir Richard Attenborough's Gandhi (she won Academy award for best costume design in 1983 for GANDHI).
Shama Zaidi- Shatranj ke Khiladi of Satyajit Roy
Aki Narula- Bunty aur Babli, Don.
Ameira Punwani- Guru

Arjun Bhasin- Dil Chahta Hai, Lakshya, The Namesake, The Life of Pi
Dolly Ahluwalia- Omkara, Bhaag Milkha Bhaag, Water, Bandit Queen, (National Award for Best Costume)
Leena Daru- Tezaab
Loveleen Bains- Rang De Basanti
Niharika Khan-BandBaaja Baraat, Rock On, Delhi Belly, The Dirty Picture (National Award for Best Costume).
Neeta Lulla- Jodha akbar, Devdas (President Award)
Priyanjali Lahiri- Tare Zameen Par
Sabyasachi Mukherjee-Black (National Award for Best Costume)

INDIAN DESIGNERS ON THE GLOBAL RUNWAY
Ashish Soni & Sabyasachi Mukherjee- New York Fashion Week
Rajesh Pratap Singh, Anamika Khanna & Manish Arora- Paris Fashion week
Sabyasachi Mukherjee, Rocky S & Tarun Tahiliani- Milan Fashion week
Manish arora- London Fashion week

-Wills India Fashion week (WIFW) is organized by FDCI (Fashion Design Council of India)
-Lakme Fashion Week is organized in Mumbai.
-"Bridal Asia" showcases wedding wear.
-White knit ensembles worn for sports like tennis are called "Tennis Whites".
-the restrictions called "less than 4 meters for coat and less than 1 meter for blouse" in clothing were enforced on the general public during world war II.
-the women's uniform during World War II was called "victory suits".
-Coco Chanel- practical elegant clothing
-Paul Poiret-avoided designing corset dresses
-Madeline Vionnet- use of bias grain on fabric
-Elsa Schiaparelli- whimsical motifs on clothes
-Jean Patou- creator of the 1920s Flapper Look.
-Christian Dior- Newlook
COLOUR THEORY
-the Prang System
(i)Three Primary Colours- Red, Blue & Yellow
(ii)Three Secondary Colours- Orange (Red+Yellow); Green (Yellow+Blue); Violet (Red+Blue)- mixing of two primary colours in equal proportion.
(iii)Six Tertiary Colours- Primary+Secondary colours in equal proportion. RV,RO, BV, BG, YG & YO.

SYNTHETIC DYES
Acid Dyes: Silk, Wool, Nylon

Basic Dyes: Acrylic

FIBRES

Natural: (i) Cellulosic (Cotton, Jute, Hemp); (ii)Protein (Silk, Wool, Camel Hair); (iii) Mineral (Asbestos).

Man-made: (i)Cellulosic (viscose rayon); (ii)Synthetic (Polyester, Nylon, Acrylic, Polythene); (iii)Protein (soyabean fibre); (iv)Mineral (Glass & Ceramic fibre); (iv) Metallic (Aluminium, Silver & Tungsten fibre).

Designer	**Main Label**	**Pret Label**
Ritu Kumar	Ritu	Label
Manish Arora	Manish Arora	Fish Fry, Indian by Manish Arora
Rohit Bal	Rohit Bal	Balance
Ashish Soni	Ashish Soni	A&S
Tarun Tahiliani	Tarun Tahiliani	TT
Issey Miyake	Issey Miyake	Pleats Please
Donna Karan	Donna Karan	DKNY

“Avant Garde” (French) refers to the “advance guard” of art & culture, which differentiates it from the mainstream.

-Words like ‘chintz, muslin, calico, shawl, khakhi, kamarbandh, jodhpurs, pyjama etc. are of Indian origin.

Sir William Perkin invented the first Dye.

Joseph Jacquard designed predecessor of “computerized punch-card complex weaving looms.

John Tobias Mayer obtained several colour shades for textile manufacturer.

Issac Singer invented first domestic sewing machine.

Eli Whitney invented automatic Ginning machine for cotton.

-“Chikan” work of Lucknow

-“Phulkari” embroidery of Punjab

-“Kantha” embroidery of Bengal

-“Patola” of Orissa.

-“CMYK”- Cyan Magenta Yellow Black

-NIFT has currently 16 campuses

-IKAT is a dyeing technique

-Raja Ravi Varma- painter

-Jehangir Art Gallery is in Mumbai

-Hornbill Festival is held in Nagaland

-Pablo Picasso first suggested white pigeon as a symbol of peace.

-“RK Films” logo has Rajkapoor & Nargis.
-Homai Vyarawalla was India’s first Photo-journalist.
-“Cubist”s borrowed from the African art-traditions of the past.
-Post-impressionist’s like “Paul Gauguin” borrowed from ancient Egyptian or old Polynesian art traditions.
-Classicism valued Greek Art practices and themes.
-Individuality is basic unifying factor of all modern art movements.
-French Academie had rejected a large number of paintings. “Salos des Refuses” the exhibition of such rejected paintings were held in 1863, which signified liberation of artists. Academie arranged separate exhibition of the rejected paintings which included the paintings of some of the founders of the impressionist movement- Cezanne, Pissarro, Monet, and the painter Whistler.
-To the traditional painters the work of “Claude Monet” called “Impression-Sunrise” looked unfinished as colours were squeezed straight on the canvas. This was called contemptuously by the journalist Louis Leroy as “Impressionist” painting.
-The Impressionists have one thing in common- love of nature, effect of light, paintings mainly of landscapes and seascapes, continuously shifting light and its effect on objects.
-It led to Neo-Impressionism, which experimented with colour and light and no new thinking. The best neo-impressionist was “Georges Seurat” the “Pointillist”. He used dots of colours to build mosaics of forms on canvas.
-Cezanne drifted from “Impressionism” to “Neo-Impressionism” and began to discover squares, circles and cones in nature, the elementary forms of all objects in nature. Cubists later on derived inspiration from Cezanne.
-Post-impressionism- 1.Vincent Van Gogh; 2.Paul Gauguin. Both friends moved to Tahiti and remained among Polynesians. Gauguin produced flat areas of glowing colours showing exotic women in unspoilt nature. Gogh never sold a single painting in his life time and shot himself (suicide). Now Art Collectors buy his works for millions of dollars.; 3.Henri Rousseau; 4.Henri Marie Raymond de Toulouse-Lautrec.
WOOD BLOCK PRINTS

Japan (Hokusai, Hiro Shige, Utamaro) has influence on Impressionists. The Hollywood Film “The Moon and Six Pence” isbased on Gaguin, Van Gogh & Lautrec.
Rodin- Sculptor. He was influenced by Michel Angelo. His sculptures- “Homage to Honore de Balzac”, “The Kiss”, “The Thinker”, and “The Burghers of Calais”.

EXPRESSIONISM

-reaction against Impressionism andNaturalism.
-based in Germany and Scandinavia.

-objects and figures got distorted and colours were imbued with emotions.
-Horror, Pain, anguish.
-Edvard Munch (Norway), Mark Beckman, James Ensor, Nolde, Oskar Kokoschka, Georges Rouault and Chaim Soutine.
-they were in two groups- The Bridge and The Blue Rider.
-Max Bekman (Germany) painted horrors of war and tyranny.
-Ensor (Belgian) painted death and decay.
-Edvard Munch (Norway)
-Nolde (Germany)
-Kokoschka (Austrian)
-Rouault- concentrated on biblical themes
-Soutine (Russian)- series on slaughter houses
-Henry Matisse was called to be belonging to Fauves (The WildBeasts) by the press because they rejected academic naturalism. He was influenced by Asian and African arts.
-The greatest was Kathe Koll Witz- a woman- living among the working class.

CUBISM
-starting point- Cezanne
-Pablo Picasso (Spain)
-Georges Braque
-Juan Gris
-three dimensional nature of objects viewed from different angles on a two-dimensional canvas.
-"Guernica" by Pablo Picasso- it was name of a town in Spain, it was based on atrocities by Nazis and Fascists during Spanish civil war, when Guernica was bombed into heaps of rubble.
-Pablo Picasso- "The Women of Avignon", where he painted nude woman, this launched Cubist movement.

AUTOMATISM
CONSTRUCTIVISM
DADAISM
FUTURISM
SURREALISM
SUPREMATISM

DADAISM- shocking anti-art movement, started in a restaurant in Zurich, Switzerland.
-founder Tristan Tzara
-precursor of Surrealist movement.

-Tzara issued manifestos in “Dada” journal.

ABSTRACT ART
Painters- Kandinsky, Arp, Miro, Leger, Klee.
Sculptors- Brancusi, Pevsner, Gabo.

SURREALISM
-inspiration- Sigmund Freud’s psycho-analysis.
-Pioneers-Andre Breton
-Theme- Dream World
-Salvador Dali (Spain)

SOCIALIST REALISM
-Soviet Russia after the Bolshevik revolution made “Socialist Realism” as the only officially approved art.
-theme- toiling workers, peasants
-Kandinsky left Russia.

ENGLISH ARTISTS
-Francis Bacon- horror effect in his paintings
-Henry Moore- Rodin of 20th century.

USA
-in 1913 the first comprehensive exhibition of European Art the “Armory Show” was held in New York, but the newspapers and the public considered the show absurd and “unadulterated check”. New York Times dismissed it as “pathological” and accused cubists and Futurists as “cousins to the anarchists in politics”.



POP ART
-Pop Art or Popular Art was parallel to Pop Music named by Lawrence Alloway, the curator of Guggenheim Museum, New York.
-Theme- American flag, Life magazine covers, photographs of actresses like Marilyn Monroe and Elizabeth Taylor, familiar consumer goods like Campbell’s soup-cans, letters of alphabet, road signs, stuffed birds.

Op ART
-as a reaction to Pop Art
-European response
-known also as Retinal Art, derivation from Optical Art.
-impact of lines, stripes, dots, circles, triangles, squares
-biggest thing since Cubism

-derived their art from Cezanne's idea of colour, Seurat's Pointillism, Mondarin's geometrical compositions.

KINETIC ART
-sum and substance- motion
-American sculptor Alexander Calder's 'Mobiles'
-metal sculptures suspended in air, moved and rotated
-Frank Malina- electro-paintings.
-Nicholas Schofler

MUSICAL PAINTINGS
-that which can be seen and heard
-Gunter Mass (German) travelled in Europe, Egypt and India, invented audio-visual paintings
-A circle has one sound, a triangle another and a rectangle still different.



NEON ART
-sculpture cum paintings
-inspiration- neon light advertisements of the Times Square in New York.
-Mortial Raysse (French), his 'Flower Pot'

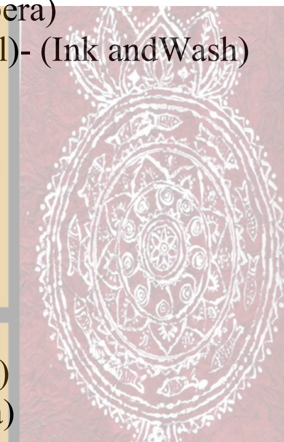
INDIA
-shortly after 1857 art schools were founded in Bombay, Calcutta and Madras.
-Syllabus based on Royal Academy
-Nandlal Bose and others visited and studied cave temples, wall paintings
-Raja Ravi Varma of princely family of Travancore studies art in Madras, welded Royal Academy naturalism with Indian myths and legends.
-Bangal School led by Abanindranath Tagore (nephew of Rabindranath Tagore), EB Havell (Principal of Art School, Calcutta) and Ananda Coomaraswamy (from Sri Lanka, then called Ceylon), son of a Tamil Political leader.
-Abanindranath influenced by Japanese technique of water colour wash paintings.
-At 'Shantiniketan' Rabindranath Tagore had set up the 'Kala Bhawan'.
-Nandlal Bose, Binode Behari Mukherjee, Ramkinkar Baij.
-Nandlal Bose decorated pandal for Haripura session of the congress, inspired by folk tradition.
-Binod Behari Mukherjee inspired by oriental art traditions.
-Ramkinkar Baij was sculptor
-Jamini Roy emerged out of Bengal school, folk traditions of mainly Bengal and Orissa and the Kalighat paintings of the 19th century Calcutta.
-Jamini Roy painted images with minimum of lines and bright colour schemes on a plain base.

-Modern European Art influenced Amrita Sher-Gil and George Keyt (Ceylonese of Dutch-Sinhalese parents)
-Amrita-Sikh father and Hungarian artist mother, art education in Paris and Budapest, died in early 30s. started as impressionist and switched over to post-impressionism of Gauguin.
-George Key- His own version of Cubism.
-During world war II around 1943 Paritosh Sen, Nirode Mahumdar and Pradosh Das Gupta
-Progressive Artists Group in Bombay in 1948, vision of Francis Newton Souza, who was expelled from JJ School of Art (Bombay)- paintings in expressionist colours-rebel painter, he joined hands with K.H. Ara (motor-cleaner), third was S.A. Raza (self-taught water colourist, paintingsof monsoon-drenched Bombay)
-other three- S K Bakre-sculptor, H A Gade-painter and M F Hussain (started as sign-board painter).
-large group of young painters from School of Art in Baroda University during the tenure of W S Bendre as principal, e.g. Shanti Dave, G R Santosh, Jyoti Bhatt and Ghulam Sheikh.
-Madras School of Art under Debi Prasad Roy Chowdhury and KCS Panikker- K G Subramanyan, Tyeb Mehta, Satish Gujral, Krishen Khanna, Ram Kumar, K S Kulkarni, Akbar Padamsee, J Swaminathan, A Ramachandran, Jehangir Sabavala.

GOVERNMENT INSTITUTIONS
-National Gallery of Modern Art, Delhi (contemporary modern art)
-Lalit Kala Akademi (organizes triennale- once in three years)

ARTWORK
Paule Cezanne- Landscape, Still Life with Basket of Apples (oil)
Vincent Van Gogh- Self portrait, The Starry Night (oil)
Edvard Munch- The Cry
Kathe Kollwitz- The Call of Death
Pablo Picasso- The Women of Avignon, Girl with a Mandolin (oil)
Raoul Hausmann- Tatlin at Home (Dadaist Art)
Grant Wood- American Gothic
George Keyt- Venu Gopala, Rishyanga and Courtesan (oil)
Bishamber Khanna- Enamel Painting
Amar Nath Sehgal- Dancing Girl
Mrinalini Mukherjee-Basanti
Fernand Leger- Three Women (oil)
Constantin Brancusi- Mile, Pogany, Marble
Marcel Duchamp- Nude, Descending a Staircase (oil)
Salvador Dali- Soft Construction with Boiled Beans (premonition of civil war)

Marc Chagall- Birthday (oil)
Rabindranath Tagore- Brooding (ink on paper), Laughing Face (Ink), Trees (Ink)
Nandlal Bose- Head of Shiva (Wash in tempera), Radha Viraha (Tempera), Mother Feeding her Child (Tempera)
Jamini Roy- Three Pujaris (Tempera), Krishna and Balrama (Tempera), Mother and Child (Tempera), Sketch-17 (Pen and Ink), Cat andLobster.
Amrita Sher-Gill- Three Women (oil), Woman on Charpai (oil), Haldi Grinders (oil), Unfinished Painting, Self-portrait (oil)
Raja Ravi Varma- Maharashtrian Woman (oil), A Woman holding a Fruit (oil), Lady in Moonlight (oil)
A N Tagore (Abanindranath Tagore)- Morning (pastel), Robbers (water colour), Natir Puja, Nati with Ektara (pastel)
G N Tagore (Gagnendranath Tagore)- Meeting in the staircase (water colour) Temple Cubistic (detail)- (wash in Tempera), Composition (water colour), Ball Room Dance (Ink and Water Colour)
A R Chughati- Gloomy Radhika (Wash and Tempera)



Zainul Abenin- Tidal Bore, Manpura Island (detail)- (Ink andWash)
Pestonji Bomanji- Feeding the Parrot (oil)
S L Haldankar- A Mohamedan Pilgrim
A A Bhonsale- Portrait of Gladstone Soloman
J M Ahivasi- Messenger (Tempera)
P T Reddy- Mrs Krishna Huthee Singh (oil)
M T Bhople- Lovers (oil)
N S Bendre- Portrait of a House (oil), Thorn (oil)
Babuji Shilpi- Quit India Meeting-1942 (Tempera)
Gopal Ghose- A Village near Mussorrie (Tempera)
B B Mukherjee- Village Shop (Tempera)
Ram Kinkar Vaij- Famine (Tempera), Home-ward Bound (water colour)
Pradosh Das Gupta- In Bondage (bronze), Twins(bronze)
R N Chakravorty- Pigeoneer (oil)
D P Roy Choudhury- He has a long way to go (Tempera)
KCS Paniker- Life of Malabar Peasant, Fruit Seller (oil)
B C Sanyal- Beggar (oil)
Dhan Raj Bhagat- Bride (wood), Shiva Dance (plaster)
Prem Nath Mago- Catching Fish (oil), Rumours (oil), Mourners (oil), The lone traveler (Linocut), Jallian WalaBagh-Symbol of urge for freedom (Charcoal on paper), Siesta (oil)
Roop Krishna- Composition (Gouache), Trees (Ink)
B Sen- Blue and Gold (Water colour and Tempera)
Sudhir Khastagir- Rest (Tempera)
Sailoz Mukherjea- Dance (oil)

K N Majumdar- Woman Plucking Flowers (Wash and Tempera)
Mukul Dey- Tarpan (Wash and Tempera)
Ash Goverdhan- Startled (Tempera)
Nirode Mazumdar- Neta's Ghat (oil)
Gopal Ghose- Dawn (Tempera)
Rathin Mitra- Open Air Restaurant (oil)
F N Souza- Nude (Gouache), Christ Tormented (oil), Untitled (oil)
K H Ara- Still Life (oil)
H A Gade- Huts (Water colour)
K K Hebbar- Threshing (Tempera), Draught (oil)
B C Sanyal- Gole Market (oil)
Satish Gujral- Hero (oil), Desolation (oil), Playmates (Acrylic), Meditation (Brunt Wood), Khilari (Acrylic), Horse (Black Granite)
S H Raza- Painting (oil)
M F Hussain- Portrait of an Umbrella (oil), Karbala (Acrylic), Splash Front Page (Ink on Newspaper), Mother Teressa (Triptych Acrylic), Riders.
K S Kulkarni- Bullocks (oil)
Shanti Dave- Painting (Impasto)
G R Santosh- Untitled (Acrylic)
Anjolee Ela Menon- Frau Radikee (oil), November Mutation Series (mixed media)
Akbar Padamsee- Orange Nude (oil), Nude-I (computer aided Acrylic)
KG Subramanyan- Fairy Tales of Purva Palli (detail) (Mixed media on Acrylic Sheet)
Krishen Khanna- Bandwala(oil)

Tyeb Mehta- Celebration (Triptych Acrylic)



The name change from JOURNALISM to JOURNALISM AND MASS COMMUNICATION to now MEDIA COMMUNICATION reflects the course of journey in print and media reporting.
8000 daily newspapers are published today, out of which over 1600 are published in India, some of them are over 100 years old.
NEWS AGENCIES
Associated Press (AP)- headquarters New York City (USA)
Reuters- headquarters- Canary Wharf, London (UK)
Agence France-Presse (AFP)- headquarters- Paris (France)
Australian Associated Press (AAP)- headquarters- Sydney (Australia)
Kyodo News- based in Minato, Tokyo (Japan)
RIA Novosti- Russian News and Information Agency- headquarters Moscow (Russia)
Europa Press- Madrid (Spain)

INDIAN NEWS AGENCIES
Press Trust of India (PTI)- headquarters- New Delhi (it took over the operations of Associated Press from Reuters soon after India's independence)
Indo-Asian News Service (IANS)- private Indian news agency located in NOIDA (UP)
Samachar Bharati (SB)- headquarters-Bhopal
United News of India (UNI)- multi-lingual newsagency in India. Its Hindi news service is called 'Univarta'.

Major International News Agencies:-
1.United Press International (UPI)
2.Associated Press (AP)
3.Reuters
4.Agence-France-Presse
5.TASS (a few years ago was called Soviet News Agency).

The first four agency disseminate 80% on news in non-socialist countries.
Regular Radio Broadcasting started in 1920s. Television introduced on a small scale in 1930s.
In India Radio Broadcast was first started in 1927 by two private Broadcasters. In 1930 these two were taken over by the Government. In 1936 radio broadcasts operated by All India Radio, in 1957 its name changed to Akashvani (now AIR & Akashvani both). Television Service started on experimental basis in 1959, called Doordarshan. Colour TV broadcast started in 1982 during Asian Games (9^{th} Asiad started in Delhi on 19th November 1982).

CINEMA
Motion pictures developed in 1890s.
1915- D. W. Griffith's 'Birth of a Nation' is considered as first important full length film- silent movies.
In 1926 sound was introduced in Films.
In India first feature film in 1912 and first talkie (with sound) in 1931.

FAMOUS DIRECTORS
-Sergei Einstein
-Charles Chaplin
-Akira Kurosawa
-Vittorio de Sica
-Satyajit Ray
-Ingmar Bergman
-Bresson
-Fellini
-Alfred Hitchcock.

Presently largest numbers of films are made in India.

NEWSPAPERS
1st newspaper 'Public Occurrences' published by Ben Harris in 1690.
In India 1st Newspaper was'Bengal Gazette' by James Augustus Hicky in 1780, was called 'Hicky's Gazette' also. The author of 'The Jungle Book' Rudyard Kipling started 'The Pioneer' from Allahabad in 1866.
The Amrit Bazar Patrika- 1868
The Statesman- 1875
The Hindu- 1887
The Tribune- 1880
The Hindustan Times- 1923
Malayala Manorama (Malayalam)- 1888
Mahatma Gandhi, after returning to India took over 'Young India' weekly started by Home Rule party. He launched 'Navjeevan' in Gujarati and 'The Harijan' under the editorship of Mahadev Desai.

NEWSPAPER FORMATS
1.Broadsheet
2.Tabloid
3.Berliner

TOP 10 NEWSPAPERS OF WORLD

1.The New York Times-USA
2.The Guardian-UK
3.The Daily Mail- UK
4.China Daily-CHINA
5.The Washington Post- USA
6.The Daily Telegraph- UK
7.The Wall Street Journal- USA
8.USA Today- USA
9.The Times of India- INDIA
10.The Independent- UK

IMPORTANT NEWSPAPERS OF INDIA

ENGLISH- The Times of India, The Economic Times, The Hindu, The Statesman, Deccan Chronicle, Deccan Herald, The Telegraph, The Tribune, Mid-day, The Indian Express, The Pioneer, The Hindustan Times.

HINDI- Jansatta (Indian Express Group), Navbharat Times (Times of India Group), Hindustan (Hindustan Times Group), Punjab Kesari, Rajasthan Patrika, Dainik Jagaran, Dainik Bhaskar.

MARATHI

Loksatta (Indian Express Group), Maharashtra Times (Times of India Group), Lokmat.

TELUGU (Andhra Pradesh, Telangana)

Andhra Prabha (Indian Express Group), Eenadu.

BENGALI

Anand Bazar Patrika, Bartaman.

GUJARATI

Gujarat Samachar, Sandesh.

MALAYALAM (Kerala)

Malayala Manorama.

PUNJABI

Daily Ajit.

KANNADA (Karnataka)

Prajavani, Kannada Prabha

TAMIL
Daily Thanthi.

ORIYA
Samaya, Samaj.

MAGAZINES/ JOURNALS OF WORLD

English- Time, Newsweek, National Geographic, Outlook (India), India Today (India).

HISTORY OF BOOKS
2400 BC Babylonia- tiny clay tablets (cuneiform characters)
Paper- first Papyrus in Egypt (4000BC)
First Known book- The Book of the Dead (Egypt, c. 1400 BC), Epic of Gilgamesh (Mesopotamia on 12 clay tablets c. 1500-1200).
Earliest known Printed Book- The Diamond Sutra- 16 feet scroll printed in China (c. 868 AD).
Before advent of printing press bookswere made of vellum (calf or lamb skin).
In 1452 AD Gutenberg conceived movable type (print), oil based ink, paper and the nine press to print books – the first book printed through printing press was bible.

FOLK THEATRE
1.Bhand Pather- traditional satirical theatre from Kashmir
2.Nautanki- North India.
3.Rasleela- North India
4.Jatra- Bengal, Orissa.
5.Bhavai- Gujarat, Sothern Rajasthan.
6.Tamasha- Maharashtra.
7.Dashavatar- Konkan (Maharashtra), Goa.
8.Yakshagana- Karnataka.

FOLK SONGS
Bengal- Baul, Batiali
Gujarat- Duha, Ras, Garba
Assam- Bihu
Kashmir- Rouf, Chakri

NARRATIVE FORMS
Andhra Pradesh- Burrakatha
Odisha- Dasa Kathia

Uttar Pradesh- Alha
Punjab- Naqal
Tamil Nadu- Villupattu
Maharashtra- Powada

PUPPET TRADITIONS
String Puppets- Rajasthan, Odisha, Karnataka, Tamil Nadu, Andhra Pradesh
RodPuppets- West Bengal
Clove Puppets- Odisha, Kerala, Tamilnadu.
Shadow Puppets- Andhra Pradesh, Karnataka, Kerala, Odisha.

EVENTS/ PEOPLE
Prof. AS Bukhari- First head of AIR (All India Radio) in 1939.
Sardar Vallabh Bhai Patel- first minister of Information and Broadcasting in Independent India.

Motto of AIR- 'Bahujan Hitaya, Bhaujan Sukhaya'
1956-AIR also called Akashvani

1957- Vividh Bharati started to compete with Radio Ceylon (earlier Srilanka was known as Ceylon) in entertainment.
1959- Satellite Television introduced in India.
1976- AIR and Doordarshan separated
1995- FM stations open to private players, Radio Mirchi (Times of India Group), Radio City, BIG FM, RED FM etc are famous FM channels.
-Karl Marx & Frederick Engels- 'Manifesto of the Communist Party (1848)
-Dostoevsky- Brothers Karamazov
-Tolstoy- War and Peace, Resurrection.
-Thomas Hardy, William Morris and John Ruskin were from Britain.
-Zola (French)- Germinal
-Henrik Ibsen- Norway
- the following lived in Paris (the City of Light)- Marcel Proust (French), Paul Valery (French), Spanish Painter Pablo Picasso, Russian painter Marc Chagall, Russian Composer Igor Stravinsky, Italian painter Modigliani, Poland's Paul Klee.
-Marcel Proust- Remembrance of Things Past (novel)
-Italian Poet Filippo Tommaso
-Marinetti- a new manifesto of Poetry (Futurist)
-Vladimir Mayakovsky (Russian poet- Futurism)
-Ezra Pound- Imagism
-Spengler- The decline of the West
-TS Eliot- Wasteland

-Thomas Mann- The Magic Mountain
-James Joyce- Ulysses
-D H Lawrence- Virginia Woolf's Psychological novels
-Joseph Conrad (Pole but settled in UK)- Heart of Darkness
-E M Forster- A Passage to India
-Andre Malraux- The Human Condition
-Jaroslav Hasez (Chez)- The Good Soldier Svejk.
-Federico Garcia Lorca (Spain)- famous for his lyrics and poetic plays.
-The following Irish people became famous English writers- G B Shaw, W B Yeats, James Joyce, John M Synge.

EXISTENTIALISM

Jean-Paul Sartre- La Nausee (Nausea or absurdity of life)
Albert Camus- L' Stranger
Franz Kafka (German writer of Czechoslovakia)- The Trial.
Bertolt Brecht (Theatre/ Drama)- The Mother Courage, The Caucasian Chalk Circle. He is known for 'EPIC Theatre' and 'Alieanation Effect'.
Theodore Dreiser- An American Tragedy
John Steinbeck- The Grapes of Wrath
American Novelist Ernest Hemingway- his novel- Old Man and the Sea
-1920s saw the emergence of a great cultural movement associated with the self-assertion of the black people, called the Harlem (New York slum inhabited by the blacks).
Literature theory- Deconstruction- Jacques Derrida (French)
Magic Realism- Gabriel Garcia Marques (Novel- One Hundred Years of Solitude)
Jorge Luis Borges stories written in the style of fables are considered unparalleled in world literature.
Maxim Gorki- Mother
Mikhail Sholokov- And Quiet Flows the Don
Alexander Solzhenitsyn left Russia and was given Nobel prize in 1970. He returned to Russia after the collapse of the Soviet Union (communist regime).
Rabindranath Tagore was the first Asian writer to win Nobel prize for literature for Gitanjali (it was in Bengali translated into English by the author himself). He wrote Gulpa-Guchchha- collection of stories in 3 volumes. His novels Gora, Ghare Baire. Mahatma Gandhi used to address him as 'Gurudev'.
-Hindi-Urdu- Prem Chand- Rangbhoomi, Godan.
-Bengali- Bankim Chandra Chatterjee (Anand Math- it contains Vande-Mataram song); Bibhuti Bhushan Banerjee (Pather Panchali- filmed by Satyajit Ray); Tara Shankar Banerjea (Ganadevta); Manik Banerjee (Padma Nadir Manjhi).
-Phaniswar Nath Renu- Maila Anchal (Hindi)

-Gopinath Mohanty- Praja (Oriya)
-Takazhi Shivashankar Pillai- Chemeen (Malayalam)
-Panna Lal Patel- Makelajeet (Gujarati)
-Shivaram Karanth (Choman Doodi- Kannada)
-Bhal Chandra Nemade (Kosla- Marathi)
-UK Anantamurthy (Samskara- Kannada)
-Qurratual Ain Haider- Aag Ka Dariya (Urdu)
-Daya Pawar- Achhoot (Marathi)
-Subramaniya Bharati - Tamil Nationalist poet
-IPTA- Indian People's Theatre Association- 1936
-Japanese poetry is known the world over for its 'Haiku' an ancient form of poetry.
-Ameen Rihani and Khaleel Gibran also known as Mahjari or the New York poets are the pioneers of modern Arabic poetry.
Leopold Sedor Senghor is the first African writer to have become famous. He was elected first president of Senegal. He is called apostle of negritude, he brought an anthology of African poems dealing with 'negritude theme, its preface was written by Jean-Paul Sartre.
Wole Soyinka, a Nigerian English writer was given Nobel prize for literature (first African).

PRASAR BHARATI BILL (1989) and ACT gor President's assent in 1990 to grant autonomy to AIR and Doordarshan. Finally implemented in 1997.

FILM-BOLLYWOOD

Dada Sahab Phalke made (directed and produced) first full-length feature film 'Raja Harishchandra' in 1913.
First Talkie- Alam Ara (Director Ardeshir Irani) in 1931.
First Bengali feature film- Nal Damyanti in 1917.
First silent South Indian feature film 'Keechak Vadham' in 1919.
Dada Sahab Phalke's daughter Mandakini was first female child star, who played child Krishna in Phalke's 'Kaliya Mardan' in 1919.
First Talkie in Bengali- Jamai Shashthi in 1931.
First Tamil Talkie 'Kalidas' in 1931.
First Marathi Film 'Ayodhecha Raja' directed by V Shantaram in 1932.

PRESS LAWS

Censorship of Press Act, 1799- Lord Wellesly brought it relaxed by Lord Hastings.
Vernacular Press Act, 1878 (Lord Lytton), it was repealed by Lord Ripon in 1882.

Indian Press Act 1910, the Act of 1908 and 1910 were repealed on the recommendation of the Sapru Committee on the forefeiture orders within two months.



Painting ‘patas’ mentioned in ‘Mudrarakshasha’ (Sanskrit play by Vishakhadatta).
In ‘Vishnudharmottar’ ‘Chitrasutra’ describes tenets of painting.

Bhimbetka Rock Shelters (more than 500 smaller rocks/ caves containing thousands of paintings). Some are morethan 15000-30000 years old.
-Cave paintings of Ajanta, Ellora, Bagh.
-Tanjore paintings (Thanjavur).
-Rajasthani paintings (miniature).
-Patachitra- Odisha
-Madhubani painting-Bihar
-Kalamkari painting (Pen-craft)- hand painted or block printed on cotton textile (Machilipatnam style-Andhra; small place sri-kalahasti is best known centre of Kalamkari Art)

WARLI PAINTINGS
-Maharashtra (depiction of daily/social events)
GOND ART
-Central Indian Gondi Tribe
BASHOLI PAINTINGS
-Kathua district of J&K (school of Pahari painting)
KALIGHAT PAINTING
-Kalighat, Kolkata (God/ Godesses)
KISHANGARH (BANITHANI) PAINTING
-Rajasthan, offshoot of Jodhpur school (Radha and Krishna).

INDIAN MUSIC
-Samaveda- Seven notes
-Bharata’s Natya Shashtra
-Sarangadeva- Sangeet Ratnakara
-Matanga’s Brihaddeshi
-Narada- Sangeet Markanda
-Ramamatya- Swaramela Kalanidhi
MusicSchools- 1. Hindustani, 2. Carnatic (South India).

-Hindustani- Dhrupad, Khayal, Thumri, Dadra, Dhamar-Hori.
-Bhimsen Joshi (Khayal), Mallikarjun Mansur (Khayal)
-Pandit Jasraj (classical vocalist), Begum Parveen Sultana (classical vocalist)
-Kumar Gandharva (classical singer)
-Siddheswari Devi (Khayal, Thumri)

-Girija Devi (Khayal, Thumri)
-Gangubai Hangal- Khayal

MUSIC INSTRUMENTS
-Mridangam- Palakkud Mani Iyer
-Sitar- Pt. Ravishankar, Vilayat Khan, Nikhil Banerjee
-Sarod- Amjad Ali Khan
-Violin- V G Jog, T N Krishnan, Yehudi Menuhin, L. Subramanyam, Zubin Mehta (western)
-Santoor- Shiv Kumar Sharma
Flute- Hariprasad Chaurasia, Pannalal Ghosh
Mandolin-S. Balamurali Krishna
Piano-Sorabjee
Shehnai- Bismilla Khan, Bade Ghulam Ali
Tabla- Alla Rakha, Zakir Hussain, Kishan Maharaj, Pt. Samta Prasad
Veena- Chitti Babu, Kumara Swami Iyer (Carnatic)
Sarangi- Pt Ram Narayan
Clarinet- Sheikh Mohammad Arif

CARNATIC MUSIC
Tamil classic of 2nd century AD titled 'Silapadhikaram' contains vivid description of music of the period.
-flourished in Deogiri (Capital of Yadavas), after invasion by Muslims it shifted to Vijayanagara (Krishnadeva Raya's) Carnatic Empire and since known as Carnatic music.
Musical Trinity- Thyagaraja, Muthuswami Dikshitar and Syama Sastri (at Tiruvarur between 1750 to 1850 AD)
-Raga and intricate Tala System
-Gitam- simplest composition
-Tillana-corresponding to Tarana of Hindustani music.
-terms- tanam, javali, kirtanam, jatisvaram, pada

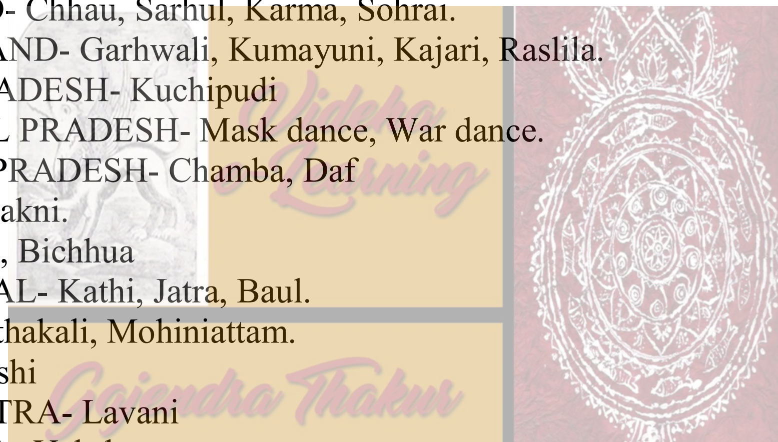
VOCALISTS
-Carnatic- MS Subbulakshmi, Balamurali Krishna.
-Hindustani- Bhimsen Joshi, Mallikarjun Mansur, Pandit Jasraj, Parveen Sultana, Siddheswari Devi, Girija Devi, Kumar Gandharva.

DEVOTIONAL MUSIC
Abhanga- also referred Vittala or Vittoba in Maharashtra (in praise of Krishna)
Bhatiyali- East Bengal boatman
Tevaram- sung by Oduyars

Shabad- Sikh Devotional Songs
Qawwali- in praise of Allah

KIRTAN/ BHAJAN
Indian classical dance
ODISHI- Odisha- Kelucharan Mahapatra, Sonal Man Singh.
BHARATNATYAM- Tamilnadu- Yamini Krishnamurthy, Mrinalini Sarabhai, Padma Subramanyam.
KUCHIPUDI- Andhra Pradesh- Raja and Radha Reddy
KATHAK- Lucknow, Benares, Jaipur- Pt Birju Maharaj, Shovna Narayan
MOHNIYATTAM- Kerala- Jayaprabha Menon.
MANIPURI- Manipur- Rajkumar Singhajit singh.
YAKSHAGANA- Karnataka.

CLASSICAL/ FOLK DANCE



JHARKHAND- Chhau, Sarhul, Karma, Sohrai.
UTTARAKHAND- Garhwali, Kumayuni, Kajari, Raslila.
ANDHRA PRADESH- Kuchipudi
ARUNACHAL PRADESH- Mask dance, War dance.
HIMACHAL PRADESH- Chamba, Daf
GOA- Khol, Dakni.
ASSAM- Bihu, Bichhua
WEST BENGAL- Kathi, Jatra, Baul.
KERALA- Kathakali, Mohiniattam.
ODISHA- Odishi
MAHARASHTRA- Lavani
KARNATAKA- Yakshagan.
GUJARAT- Garba, Dandiya Ras, Bhavai.
PUNJAB- Bhangra, Giddha.
RAJASTHAN- Ghumar.
J&K- Rauf.
TAMILNADU- Bharatnatyam (classical)
UTTAR PRADESH- Nautanki, Kajri.
BIHAR- Jat-Jatin, Sama-Chakewa.
HARYANA- Daph.

THEATRE/ FESTIVAL/ COSTUME
Asvaghosh- Sariputra Prakarana
Vishakadatta- Mudrarakshasha
Kalidasa- Malvikagnimitra, Abhijnana Shakuntalam.

Koodiyattam- Kerala theatre.

Vijay Tendulkar- Ghasiram Kotwal.
Manjula Padmanabhan- Bitter Harvest

Parsi Festival- Jamshed Navroj.
Sikh festival- Holla Mohalla, Guruparab.

Paithani Sari- Paithan near Aurangabad made of silk.
Maheswari and Chanderi Sari of Madhya Pradesh
Jamdani of Tanda andBenaras (Uttar Pradesh)
Tangail Cotton- West Bengal.
Tusar Silk- Bihar
Sambalpuri and Vichitrapuri Saris- Odisha
Kancheepuram Silk- Tamilnadu.
Sanganer (near Jaipur)- finest hand black printing
Bagru prints- floral designs
Barmer prints- floral design
Ajrakh (Barmer prints)- geometrical designs
Pashmina/ Shahtoosh shawls- Kashmir
Hyderabad- Sonabai Bangles
Varanasi- thin glass tikuli
Saharanpur- toys filled with coloured Panch Kora
Kolhapuri Chappals- Maharashtra



Matsya Purana mentions various methods of casting bronze images.
'Sthapatis' produced stylish images during Pallava, Chola, and Nayaka periods.
Odisha- Dhocra casting, silver filigree work.
Marwar (Rajasthan)- zinc pots (called 'badla')
Delhi and Jaipur- Meenakari.

ROCK PAINTINGS
-rock shelters on banks of the river Suyal at Lakhudiyar (it literally means one lakh caves), paintings are of man, animal, and geometric patterns in white, black and red ochre.
-granite rocks of Telangana and Karnataka- Kupgallu (Telangana), Piklihal (Karnataka), Tekkalkota (Karnataka).

Bhimbetka Caves-(45 kms south of capital of Madhya Pradesh i.e. Bhopal), in an area of 10 square kilometers it has 800 caves out of which 500 bear paintings. In some places there are 20 layers of paintings, one on top of another.

INDUS VALLEY

Harappa & Mohenjodaro
-stone statues- two male figures
-bronze castings- using 'lost wax' technique
-Mohenjodaro- dancing girl, buffalo with uplifted head, goat

Lothal- copper dog and bird
Kalinangan- bronze bull
Seal- unicorn seal, pasupati seal, mother deity seal.

Beads- made of cornelian, amethyst, jasper, crystal, quartz, steatite, turquoise, lapis lazuli.

Bronze dancing girl- Mohenjodaro.
Bronze bull- Mohenjodaro.

Mauryan pillars are rock cut, Achamenian pillars are in pieces.
Top of the Mauryan pillar was carved with capital figures like the bull, the lion, the elephant etc.

Ashokan-Mauryan Pillars are at Basarh-Bakhira, Lauriya Nandangarh, Rampurva, Sankisha, Sarnath (lion capital at Sarnath is our national emblem).

Sarnath Lion Capital- four roaring lions, 24-spoke wheel (dharma chakra), carved with a horse, a bull, a lion and an elephant, it symbolizes first sermon of Buddha (Dharmachakrapravartan).

Yaksha/ Yakshnis found at Patna, Vidisha and Mathura.

Monumental rock-cut elephant at Dhauli (Odisha).

Rock-cut cave at Barabar Hills, Gaya(Bihar).

POST MSAURYAN ART
Bharhut, Sanchi, Mathura, Sarnath, Gandhara, Amravati

CAVE TRADITION IN WESTERN INDIA
Ajanta, Pitalkhora, Bhaja, Kanheri, Karla, Ellora, Elephanta (sea-island).

Padmapani Bodhisattva- Ajanta cave no.1
Mara Vijay- Ajanta cave no. 26
Maheshmurti- Elephanta

TEMPLE ARCHITECTURE
Kandariya Mahadeo Temple- Khajuraho
Sun Temple- Konark
Dashavatara Vishnu Temple- Deogarh
Vishwanath Temple- Khajuraho
Sun Temple- Modhera, Gujarat
Jagannath Temple- Puri
Meenakshi Temple- Madurai
Brihadishwara Temple- Gangaikondacholapuram
Brihadishwara Temple- Tanjore (also called Rajarajeshwara temple, it was a shiva temple)
Shore Temple- Mahabalipuram,
Five Rathas- Mahabalipuram
Kailashnath Temple- Ellora
Durga Temple- Aihole
Virupaksh Temple- Pattadkal
Nalanda University- Nalanda (Bihar)
Mahabodhi Temple- Bodhgaya (Bihar)
Lakshman Temple- Sirpur
Lord Bahubali- Gomateshwara (Karnataka)
Dilwara Temple- Mt. Abu
Lakshmana Temple- Khajuraho



Qutb Minar- Delhi

Intricate Jali work- Amer Fort Jaipur
Dodo panel on the wall- Agra
Pietra dura work- Agra
Chand Minar- Daulatabad
Tomb of Itmaduddaula- Agra (first use of pietra dura)
Jahaaz Mahal- Mandu
Jama Masjid- Mandu
Taj Mahal- Agra (from 1632 it took 20 years and 20,000 specialised workers to complete this monument).

JamaMasjid- Delhi
Descent of Ganga in Granite- Mahabalipuram
Tomb of Salim Chisti- Fatehpur Sikri (in marble)
Nijamuddin Auliya's Dargah- Delhi
Adhai Din ka Jhopra- Ajmer
Ajmer Sharif- Khwaja Gari Nawaz

ORNAMENTS
Kashmir- 'Kan-balle' worn by Muslim women on both sides of the head.
Andhra Pradesh: The belts worn have intricate clasps of the double head of a rakshas or kirtimukha.
Kerala- Garuda necklace.
Meenakari- enamel work, Jaipur main centre, meenaakari is combined with kundan (fixing of stone in empty places).

Bangles- Firozabad



NATURAL FIBRE
Japanese fibre cloth 'basho fu' and traditional dress 'kimano' is made out of edible banana plant fibre.

Natural fibre made of cellulose or plant matter can be obtained from almost every part of the plant, such as root stem or shoot, leaf, fruit and bark.

Root- Khus
Branch- willow
Fruit/ seed- Cotton, Coir, Arecanut
Leaf- Palmyra, Palm date, Palm Coconut, Sisal, banana, pineapple, Arecanut palm, screw pine
Stem: Bamboo, Jute, Hemp, Banana, Moonj, Grass, Sarkanda, Sikki, Grass, Cannabis, Flax, Arhar/ pigeon pea.
-women mats from natural fibre
-Shital Pati (Assam, Tripura)
-In Madhubani (Bihar) figurines of deities, animals, birds are made with Sikki (golden) grass.

In Arunachal Pradesh even the suspension bridges are made of can. Canes are slender stems pertaining to Palm family. India has about 30 species of Cane.
Egypt- Papyrus (papers for manuscripts)

Factory made paper is now made of tightly packed and pressed fibres of rags, straw, wood, bamboo etc.
Handmade paper is made of pulp (obtained from bark of certain trees) mixed with glues and waste cloth from garment manufacturers.

Indian muslins were used as shrouds for royal Egyptian mummies.

Kanjeevaram sari- Silk saree made in Kanchipuram, Tamilnadu.
-Mashru and Himru in Gujarat.
-Tussar, eri & Moga

India is the only source of silk that comes from the 'Antheria Assamia' moth, which feeds on the leaves of the 'Som' and 'Wali' trees. Tussar silk has a coarse, uneven texture and slightly yellowish brown colour, it isles strong in texture and cannot be refined, it does not have the sheen or fineness as mulberry silk.

Assamese woman's traditional 'mekla chador' costumes are made of 'moga' and 'eri' silk, which come from worms that feed on 'Ashoka' and 'Castor' leaves rather than 'mulberry' leaves.

WOOL
Jamawar Shawl- Kashmir
Zain-ul-Abidin, King of Kashmir brought Turkistan weavers in 15th century, who taught Kashmiri weavers 'twill tapestry' technique, at least 50 colours used on one shawl.

Goat wool rough 'dhabla' worn by shepherds and camel herders in Kutch (Gujarat) and the Thar (Rajasthan) deserts.

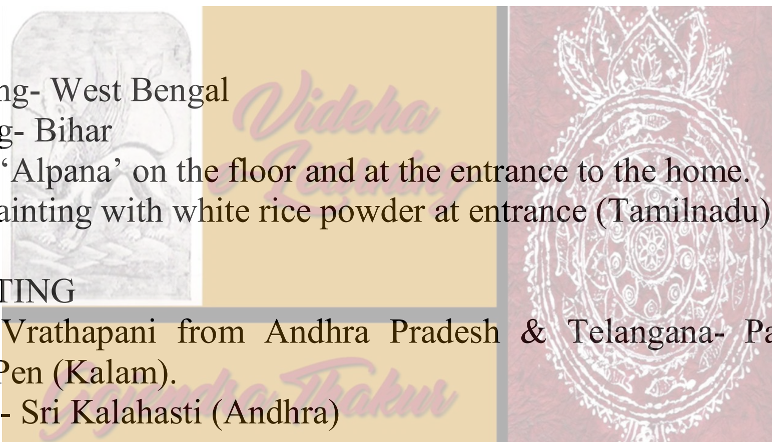
Kinnauri Shawls- Himachal Pradesh
Kashmiri Shahtoosh shawl was made from the fleece of the wild Himalayan ibex- it is banned now.

TEXTILE TECHNIQUES
A.Loom decorated fabrics are provided with artistic treatment when on the loom.
B.Post loom decorated fabrics are textiles in which artistic treatment is given after it iswoven, such as:-
(i) dyeing- tie and dye
(ii)hand printing, hand painting
(iii)embroidery
(iv)Patchwork and appliqué.

EMBRODERY
-Kashmir- do-rukha (same design in different colours on each side)
-Punjab- Phulkari
-Sujni- Bihar
-Kutch- wonderful colours, mirrors

22 different ‘chikan’ stitches (legend it that Noorjehan invented chikan).
Bengal- Kantha embroidery
North Karnataka- Kasuti (combination of four different stitches), indigo dyed chandrakala sarees.

Zardozi, kamdani and Mukesh- intricate gold wire and sequin work of Uttar Pradesh.
Tillla work now a major business for A.wedding costumes, B.movie costumes and C.the fashion ramp.



PAINTING
Kalighat painting- West Bengal
Mithila Painting- Bihar
‘Rangoli’- and ‘Alpana’ on the floor and at the entrance to the home.
Kolam- floor painting with white rice powder at entrance (Tamilnadu).

CLOTH PAINTING
Kalamkari or Vrathapani from Andhra Pradesh & Telangana- Painting is made exclusively of Pen (Kalam).
-painted stories- Sri Kalahasti (Andhra)

WALL PAINTINGS
-Ajanta
-All wall painting are not necessarily ‘mural’ paintings. The term is reserved for churches, temples and palaces, also called fresco paintings.
-pre-historic painting revived in ‘mural’ (Waynad, Kerala).

-Warli Tribals of thane district in Maharashtra; rice paste and red ochre powder used to tell stories and to invoke blessings of their Goddess of fertility ‘Palaghata’.
Tanjore Painting- Thanjavur (Tamilnadu) under Maratha influence, main colours Red, Yellow, Black&White.
Mithila Painting (popularly known as Madhubani art).
Jharnapata Chitra- West Bengal
Patachitra- Odisha

THEATRE ART
Chhau- West Bengal, Jharkhand, Odisha
Puppetry- String, glove, rod & shadow puppets
Nautanki- U.P.
Tamasha- Maharashtra
Bhavai- Gujarat
Jatra- West Bengal
Yakshagana- Karnataka.

MASKS
-Kathakali Mask- Kerala
-head dress worn by Chhau dancers of West Bengal Jharkhand, Odisha
-demon dance masks of the Buddhist monasteries of Ladakh.
-Chhau dance in tribal belt (Bhulya, Santhals, Mundas)
-Leather puppets- 'Tholu Bomalatta' of Andhra Pradesh.

MUSICAL INSTRUMENTS
Percussion- manjeera or cymbals, chikka
Wind-Bansuri or Flute, Been
String- Veena or Ektara
Drums- Dholak or Mridangam, Tabla, Damru, Maggadas, Chendas.

Meghalaya- people trained aerial roots of the Ficus Elastica tree to form living bridge across the river.
Sangam classics mentions weaving of silk and cotton cloth.

Ramayan, Tamil Sangam literature and plays from the Gupta period write in detail about the 'trade guilds' or 'shrenis' , professional bodies of jewelers, weavers, ivory carvers, salt makers.
Jajmani System- reciprocal arrangement between craft producing castes and the wider village community for the supply of goods and services.

Meenakari- Art of colouring the surface of metals by fusing brilliant colours (brought to Varanasi by Persian-Iranian enamellists).

TEXTILE EXPORTS
Sarongs to South East Asia
Muslins to Middle East
Christian Altar to West Africa
Silk and Wooden Fabrics to Europe
-considered luxury goods in these countries

With the arrival of British Textiles, thriving textile towns Dacca, Murshidabad, Surat and Madurai were laid waste and British city of Manchester was nick named ‘cottonpolis’.

-Archaeological Survey of India established- 1861- by Alexander Cunningham (first Director General)
-Asiatic Society established in 1784 by the British Indologist William Jones at Kolkata.
After 1857 British established Art Schools at Kolkata, Mumbai and Chennai (School of Art).

CRAFT
-could be in metal, wood, clay, textile, gem-cutting, jewellery, leather, cane and bamboo; tailoring.
Malakar- is a garland maker.
Gem and Jewellery sector is the largest foreign exchange earner for India.

TOURISM
Two Asian countries Thailand and India are top ten destinations in the world.

POPULAR SOUVENIRS FROM INDIA
-folk art- Madhubani Paintings, Bastar metal work.
-Carpets, Durries.
-Kundan, silver and semi-precious jewellery
-block printed fabric embroideries
-pashmina shawls from Kashmir- most popular.

NATIONAL HANDICRAFTS AND HANDLOOM MUSEUM- NEW DELHI
ASHUTOSH MUSEUM OF INDIAN ART- UNIVERSITY OF KOLKATA
CALICO MUSEUM OF TEXTILES-AHMEDABAD
SALAR JUNG MUSEUM- HYDERABAD
RAJA DINKAR KELKAR MUSEUM-PUNE

INDIRA GANDHI RASHTRIYA MANAV SANGRAHALAYA- BHOPAL.

ELEMENTS OF DESIGN

1.Point- does not have shape or volume still its presence is felt
A light can be essentially a volume or a plane but in macro space it is a dot or point.
2.Line: extended point is line, it possesses length but lacks depth or width
3.When a line is extended a plane is formed. A plane has- A.length, B.Width, C.Shape,D.Orientation,E.Surface and F.position;
When a plane is extended-
-three dimensional volumes of mass and space are defined by planes.
Visual quality of space is qualified by colour, texture, shape, size etc.
4.Shape- 3 primary shapes- A.Square- four lines of equal length; B.Triangle- enclosure of three lines; C.Circle- every point is equidistant from central point.
Square denotes A.purity; B.rationality.

5.Form- Active volume:Actually defined and fully enclosed by clearly visible surfaces
Passive volume: Act as transitional spaces between two or more active volumes. Volume can be enclosed by any number of planes.
Primary solid geometrical forms-A.Cube, B.Pyramid,C.Sphere,D.Cone and E.Cylinder.

6.Texture- roughness or smoothness
-how light passes off or bounces off determines whether the texture would be fine or coarse.
-feeling of roughness created by larger leaves, stems and buds
-testure affected by number of branches and leaves in addition to the spacing between them.
-beautiful effects through contrasts- like rough with smooth or matt with shiny.
Rough- stone chip, dry stone walls, wooden surfaces, prickly plants
Glossy- Mirrored surfaces, glass, polished granite, steel, water, porcelain, glazed ceramic, leaves of various evergreen plants and trees.
Smooth- Flat or rounded surfaces like concrete cubes, polished wood
Matt- neither reflective nor purely rough (between rough and glossy), best suited for combining with glossy surfaces e.g. finely cut timber, brushed steel, galvanized metal, sandstone, kota stones.
Soft- green leafy plants, invitestouch, fabric finishes of upholstered outdoor furniture.

PRINCIPLES OF DESIGN
-used in architecture, interior design, graphic design, industrial design, fine arts, cinematography, photography.

-used for selection and composition of forms and materials
-lack or absence of usage of design may be aesthetic or not but will be unpleasant or uninteresting
-use of these principles makes design visually appealing.

PRINCIPLES
1.Unity- unity through colour, texture, size, shape, form etc; avoidusing too much contrast; make one space dominating by increasing its size

2.Balance- equal weight on either side of axis; can be symmetrical, asymmetrical or radial;
Symmetrical like Charbagh, one side is mirrored on the other.
Asymmetrical- equal visual weight on either side of axis but elements chosen of different forms etc.
Radial Balance- elements of a composition are arranged in such a way that they radiate from a common central point.
Rhythm- When an element or a group of elements are repeated with a defined interval between them, rhythm is created; also created by inter-connecting, planting or green spaces with pathways, feature walls or fences; through incorporation of contrast ; spacing of space is crucial.
3.Scale:- relative magnitude when an object is compared to another object in a composition.
4.Proportion:- when two ratios are equally compared; in a garden small shrubs, trees, benches; in the case of big garden big trees, long pathways.
5.Contrast:-opposite elements for creating visual interest e.g. yellow flowered tree amongst trees with green foliage; through change in form; through change in texture
6.Focus: attention to a particular element, contrasting values made focal point, achieved by the placement of the object requiring special emphasis.
7.Harmony:- like unity, when all elements of a composition complement each other; like unity complete or partial repetition of characteristics.
8.Variety:use of different elements within a composition to add interest; use of strong contrast or opposites.
COLOUR AND COLOUR SCHEMES
Our eyes can perceive 10 million different colours, these are derived from three primary colours- red, blue, yellow, these three cannot be obtained by mixing other colours.
By mixing two adjacent primary colours three secondary colours are obtained.
R+Y=ORANGE
Y+B=GREEN
B+R=PURPLE

PRIMARY+SECONDARY=TERTIARY
TERTIARY COLOURS ARE SIX:
B+G
Y+G
B+P
R+P
R+O
Y+O

Warm Colours are Red, Orange, Yellow and steps between them
Cool Colours are Blue, Violet, Green and steps between them.
Out of three, two colours are warm (Primary Colours)- Red & Yellow and only Blue is cool.
Thus entire colour spectrum is more warm than cool.
Colour schemes:
Monochromatic- One colour and shades of it, to lower value of the tone, white is added, to darken the tone black is added.
Complementary- colours that are directly opposite on colour wheel:- Yellow and Purple; Red and Green; Orange and Blue.
Yellow-Green:: Purple-Red
Blue-Green::Red Orange
Blue-Purple::Yellow-Orange.

Split Complementary, it utilizes 3 colours (one colour and two colours adjacent to its complement on the colour wheel).

Triadic Colour Scheme:
-uses colour that are evenly spaced on colour wheel
-Red and Yellow can make spaces appear smaller and intimate
-White light splits into seven colours
V-violet
I-indigo
B-blue
G-green
Y-yellow
O-orange
R-red

ADJACENT COLOUR SCHEMES (ANALOGOUS)
-incorporates colours that are immediately adjacent to each other in colour wheel
-eye-pleasing feeling of harmony and order

-one colour may be chosen to dominate and others to support

RED/ ORANGE
-Feeling of warmth and passion, excitement and energy
-eye-pleasing contrasts against ‘Neutral’ Green
-suitable for sunny spaces
-too much however creates unhealthy visual heaviness

YELLOW
-sunny, cheerfulness
-warm, work quite well with red and orange
-greenish yellow cooler

BLUE
-dark blue is intense and bold
-lighter blue is more airy and make atmosphere calm and soothing
-feeling of peace, coolness
-purples have some properties of Red & Blue.



GREEN
-most abundant in nature-
-it cools the environment
-natural healing agent
-varieties from cool Blue-Green to warm Yellow-Green.

WHITE
-all other reflected colours combine to form white
-symbolises purity, peace, harmony
-use of it in spaces make them appear larger

BLACK
-black and greys are absence of colour
-when all coloured components of light are observed, it is black.

PROPERTIES OF COLOUR
-hue
-intensity or tone
-shade or value
-hue is original name given to colour (black, yellow etc)
-intensity- how saturated and strong- control by adding white
-shade- measure of darkness, colour becomes shade darker upon adding black.

Pure colour gives vibrant effect, mixed colour gives less intense effect, tinted colour (white mixed in it) appear airy, lighter and farther away, shaded colour (that has black mixed in it) will appear to be closer.

GESTALT PERCEPTION

ONE POINT AND TWO POINT PERSPECTIVES





Videha
e-Learning





Videha
e-Learning

Gajendra Thakur

Gajendra Thakur

